

BED-19



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

अर्थशास्त्र शिक्षण
Teaching of Economics

BED-19



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

अर्थशास्त्र शिक्षण
Teaching of Economics

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच

कुलपति

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

संयोजक / समन्वयक

डा. दामीना चौधरी	4. प्रो. डी. एन. सनसनवाल	9. डा. अनिल शुक्ला
सह आचार्य, शिक्षा	देवी आहिल्या विश्वविद्यालय	लखनऊ विश्वविद्यालय
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय	इन्डौर (मप्र.)	लखनऊ (उप्र.)
कोटा (राज.)	5. प्रो. एस. बी. मेनन	
सदस्य	दिल्ली विश्वविद्यालय	
1.प्रो. पी. के. साहू	दिल्ली	
शिक्षा विभाग	6. प्रो. स्नेह. एम. जोशी	
इलाहाबाद विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश)	एम. एस. विश्वविद्यालय,	
2 प्रो. आर. पी. श्रीवास्तव (से.नि)	बड़ौदा	
जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय	7. प्रो. सोहनवीर सिंह चौधरी	
नई दिल्ली	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त	
3 प्रो आर जे सिंह	विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	
लखनऊ विश्वविद्यालय	8. डा. एम. एल. गुप्ता	
लखनऊ (उप्र.)	सह आचार्य शिक्षा (से.नि.)	
संपादन तथा पाठ लेखन	वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय	
संपादक	कोटा (राज.)	

प्रो. दिव्यप्रभा नागर

हेड एवं डीन (शिक्षा)

लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक

जनर्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ,, उदयपुर

उदयपुर (राज.)

पाठ लेखक

1. प्रो. आर. एस. खान	3. डॉ. रमेशचन्द्र शर्मा
पूर्व उपाध्यक्ष	उपचार्य
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्	हरिभाऊ उपाध्याय महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
नई दिल्ली	हट्टूण्डी अजमेर
2. प्रो. दिव्यप्रभा नागर	
हेड एवं डीन (शिक्षा)	
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक	
जनर्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ,, उदयपुर	
उदयपुर (राज.)	

पाठ्यक्रम निदेशन एवं उत्पादन

निदेशक (शैक्षणिक)

प्रो. अनाम जैटली

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,

कोटा (राजस्थान)

निदेशक (सामग्री उत्पादन एवं वितरण)

प्रो. पी. के. शर्मा

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय,

कोटा (राजस्थान)

उत्पादन जुलाई 2007

सर्वोधिकार सुक्षित :

इस सामग्री के किसी भी अंश की व. म. खु. वि., कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

व. म. खु. विश्वविद्यालय, कोटा की ओर से निदेशक शैक्षणिक द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।



वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

अनुक्रमणिका

इकाई	पृष्ठ संख्या
1. अर्थशास्त्र विषय का परिचय Introduction of Economics	9 - 24
2. अर्थशास्त्र शिक्षण के भविष्योन्मुखी उद्देश्य Objectives of Teaching Economics with Futuristic Vision	25 - 40
3. अर्थशास्त्र में पाठ्यक्रम Syllabus in Economics	41 - 61
4. अर्थशास्त्र में सम्प्रत्यय मानचित्र Concept Map in Economics	62 - 70
5. अर्थशास्त्र विषय की शिक्षण पद्धतियां एवं उपागम Approaches and Teaching Methods of Economics Subject	71 - 99
6. संचार माध्यम एवं अर्थशास्त्र शिक्षण Media and Economics Teaching	100 - 113
7. नियोजन-सत्रीय, इकाई एवं दैनिक पाठ योजना Planning - Sessional, unit and daily Lesson Plan	114 - 129
8. अर्थशास्त्र शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन Measurement and Evaluation in Economics Teaching	130 - 154
9. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक Text Books of Economics	155 - 160
10. अर्थशास्त्र विषय सन्दर्भित शिक्षण सामग्री की तैयारी एवं मूल्यांकन Preparation and evaluation of Teaching Aids In Economics	161 - 172
11. अर्थशास्त्र का शिक्षक Economics Teacher	173 - 181

12.	अर्थशास्त्र विषय के शिक्षण में संसाधन	182 - 191
	Resources In Teaching Economics	
13.	अर्थशास्त्र शिक्षण में नवाचार	192 - 202
	Innovations in Economics Teaching	

इकाई-1

अर्थशास्त्र विषय का परिचय

(Introduction of Economics)

इकाई की रूपरेखा

(Outline of the Unit)

- 1 अर्थशास्त्र विषय का परिचय
- 1.1 इकाई के उद्देश्य
- 1.2 अर्थशास्त्र का इतिहास
- 1.3 अर्थशास्त्र का सम्प्रत्यय
 - 1.3.1 अर्थशास्त्र की परिभाषा
 - 1.3.1.1 धन विज्ञान
 - 1.3.1.2 भौतिक कल्याण का विज्ञान
 - 1.3.1.3 सीमित साधनों का विज्ञान
 - 1.3.1.4 विकास सम्बन्धी विज्ञान
 - 1.3.2 अर्थशास्त्र का विषय क्षेत्र
 - 1.3.2.1 उपभोग
 - 1.3.2.2 उत्पादन
 - 1.3.2.3 विनियम
 - 1.3.2.4 वितरण
 - 1.3.2.5 सर्वजनिक वित्त
 - 1.3.3 अर्थशास्त्र की प्रकृति
 - 1.3.4 अर्थशास्त्र की सीमाएं
- 1.4 अर्थशास्त्र की संरचना
- 1.5 भविष्य में अर्थशास्त्र
 - 1.5.1 Throw Away Society
 - 1.5.2 वस्तुओं की नित्य परिवर्तनशील मॉग
 - 1.5.3 उत्पादन की नित नयी तकनीक
 - 1.5.4 अदृश्य अर्थव्यवस्था में वृद्धि
 - 1.5.5 Prosumer वर्ग में वृद्धि का महत्व
 - 1.5.6 ई- अर्थव्यवस्था का उदय
 - 1.5.7 अर्थव्यवस्था में नैतिकता
 - 1.5.8 शब्दावली का पुनर्परिभाषीकरण
 - 1.5.9 उपभोक्ता सत्ता
 - 1.5.10 उत्पादन का प्रमुख साधन-ज्ञान

- | | |
|-----|-------------------|
| 1.6 | सार-संक्षेप |
| 1.7 | इकाई का मूल्यांकन |
| 1.8 | सन्दर्भ पुस्तकें |

1.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

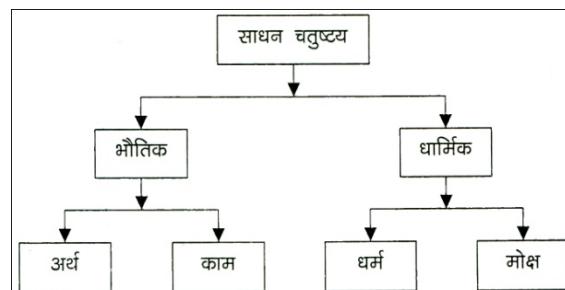
इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जाने चाहिए कि :

- अर्थशास्त्र विषय की प्रमुख प्रवृत्तियों और उनके समर्थकों के विचारों को समझ सकें।
- आधारभूत आर्थिक विचारों के सम्बन्ध को स्पष्ट कर सकें।
- अर्थशास्त्र के क्षेत्र से सम्बन्धित पहलुओं-अर्थशास्त्र की विषय सामग्री, अर्थशास्त्र की प्रकृति और अर्थशास्त्र की सीमायें आदि का विवरण दे सकें।
- अर्थशास्त्र के भावी परिप्रेक्ष्य को समझ सकें।

1.2 अर्थशास्त्र का इतिहास (History of Economics)

एडम स्मिथ की पुस्तक An Enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations का प्रकाशन 1776 में हुआ इसके विचारों के मंथन के साथ ही अर्थशास्त्र का उद्भव माना जाता है। किन्तु यह भ्रम मात्र है। भारत में इसके पूर्व से ही आर्थिक विचार व्याप्त थे। इसकी जानकारी प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों से प्राप्त होती है। भारतीय दर्शन एवं संस्कृति मानव जीवन को धर्म से परे नहीं देखता अतः सम्पूर्ण जीवन व्यवहारों का वर्णन धार्मिक पुस्तकों में वर्णित हैं। आर्थिक व्यवहारों का वर्णन भी उसी में सम्मिलित है। दिये गये विचार अत्यधिक व्यापक हैं। वह स्पति, शुक्र, शनि, वैदिक, ऋषियों, उपनिषदों, मनु एवं कौटिल्य के दर्शन में आर्थिक विचारों को सम्पन्न किया है। उनके अनुसार मानव जीवन में आर्थिक क्रियाएं दैनिक कार्य-कलाप का ही अनिवार्य अंश है अतः यह सामाजिक विज्ञान के रूप में ही देखा गया। मानव के विभिन्न आयामी क्रियाओं के अनुरूप समस्त सामाजिक विज्ञान अन्योन्याश्रित हैं। अतः समस्त प्रकार के लेखन के प्रारम्भ से ही आर्थिक विचारों का शुभारम्भ हो गया था।

भारतीय ग्रन्थों में साधन चतुष्टयँ का वर्णन प्राप्त होता है- अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। इसमें दो भौतिक एवं दो धार्मिक पक्ष से जुड़े हुए हैं।



इसमें 'अर्थ' भौतिक सम्पन्नता तथा 'काम' सांसारिक सुख से संबन्धित है। जबकि 'धर्म' कर्तव्य की शिक्षा है एवं 'मोक्ष' बंधन मुक्त (किन्तु मर्यादित) जीवन की कामना है। हमारे देश में समाज के विचार के प्रादुर्भाव के साथ ही मानव-जीवन तथा क्रियाओं का संचालन इन्हीं आधारों पर होता रहा है। जीवन संपोषित करने हेतु धन/अर्थ की प्रमुख आवश्यकता है। क्योंकि खाली

पेट धर्म संभव नहीं है। दूसरे शब्दों में धर्म के अनुसरण के लिए अर्थ की आवश्यकता है। सृष्टि को सतत् चलायमान रखने के लिए वंश-वृद्धि आवश्यक है। अतः काम भी आवश्यक है। इसमें भी धर्म को प्रधानता दी गई। अशुद्धता को घृणा की दृष्टि से देखा जाता रहा है। अतः अर्थ व काम भौतिक आधार लिए हुए धर्म को पोषित करते हैं तथा ये तीनों साधन शक्ति के मोक्ष के लिए आवश्यक हैं। किन्तु धन के अधिक संचय को धर्म विरुद्ध माना गया है। इसके कारण व्यक्ति धर्म के पथ से विचलित हो जाता है। इस प्रकार भारतीय विचार में आर्थिक गतिविधियों में आत्म संयम एवं अनुशासन अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

जैसा कि इतिहास से स्पष्ट है - भारत पर होने वाले सतत् ऐतिहासिक आक्रमणों के कारण यहाँ का साहित्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया। फिर भी स्वतन्त्रता संघर्ष के काल के विद्वत् नेताओं के व्याख्यानों एवं विचारों में अर्थशास्त्र संबंधी विचारों को देखा जा सकता है। भारत में लिखे गये चारों वेद, उनकी टीका, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, महाकाव्य, पुराण, स्मृति आदि इनके प्रमुख स्रोत हैं। विदुर के नीतिशास्त्र एवं कोटिल्य के अर्थशास्त्र प्रसिद्ध ही हैं। इन्होंने अर्थशास्त्र को संकीर्ण दृष्टि से नहीं देखा। उन्होंने इसके अन्तर्गत संगठित समाज के समस्त पहलुओं उसके दैनिक जीवन और उसके उचित प्रशासन को सम्मिलित किया है। कोटिल्य का अर्थशास्त्र, कामदंक का नीतिसार, जो कनिष्ठ के राज्य में हुआ था, बाणभट्ट का 'कादम्बरी', दण्डी का 'दशकुमार चरित', 'मुद्राराक्षस' सभी में प्राचीन जीवन व्यवहार के व्याख्यान मिलते हैं। 'शुक्र नीति' में आर्थिक प्रशासन पर सामान्य निर्देश व अन्य बातें दी गई हैं। कानून सम्बन्धी विषयों पर मनु की पुस्तकों एवं नारद की स्मृतियों में वर्णन मिलता है। इन प्राचीन पुस्तकों के अतिरिक्त चीनी एवं बौद्ध विद्वानों/यात्रियों ने भी भारतीय जीवन के विविध पक्षों को गहराई से देखा व वर्णन किया। चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल में प्रतिपादित मौलिक आर्थिक सिद्धान्तों का ज्ञान आइने-अकबरी से भी ज्ञात होता है।

पाश्चात्य दृष्टिकोण से भिन्न भारतीय विचारधारा में अर्थशास्त्र केवल भौतिकवादी पक्ष से ही नहीं जुड़ा था। यहाँ भौतिक एवं नैतिक क्षेत्र सम्पूर्ण रूप से संयुक्त ही रहे। अतः अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र अलग नहीं थे। 'धन' में भूमि, महाजन एवं पशु सम्मिलित किये जाते रहे। साथ ही उनकी चर्चा में वार्ता जिसमें राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का वर्णन भी प्राप्त होता है। अर्थात् 'व्यष्टि' एवं समष्टि दोनों ही स्वरूपों का चिन्तन उपलब्ध है। इनमें उत्पादन, उपभोग एवं वितरण की विधियाँ भी सम्मिलित हैं। यह समस्त तथ्य वे आवश्यक प्रमाण हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि अर्थशास्त्र विषय का उद्धव मानव सभ्यता के जन्म के साथ ही हो गया था।

एडम स्मिथ (1776) ने अपनी पुस्तक के लेखन में इस विषय को राज्य-अर्थव्यवस्था (Political Economy) कहा। एक सदी तक यही नाम प्रचलित रहा। 1890 में प्रो. मार्शल ने आर्थिक चिन्तन पर जो पुस्तक लिखी उसका नाम 'अर्थशास्त्र के सिद्धान्त' (Principle of Economics) रखा। क्योंकि इस समय तक मानव व्यवहार के आर्थिक पक्षों में पर्याप्त चिन्तन हो चुका था। परिणामस्वरूप वह मात्र राजनीति का विषय ही नहीं रह गया था। वास्तव में तब से अब तक अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के रूप में प्रचलित यह चिन्तन आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अतः अब इस विषय को 'आर्थिक-विश्लेषण' (Economics Analysis) भी कहा जाता है।

1.3 अर्थशास्त्र का सम्प्रत्यय (Concept of Economics)

अर्थशास्त्र के सम्प्रत्यय को समझने के लिए निम्न बिन्दुओं पर चर्चा आवश्यक है :-

- 1.3.1 अर्थशास्त्र की परिभाषा
- 1.3.2 अर्थशास्त्र का विषय-क्षेत्र
- 1.3.3 अर्थशास्त्र की प्रकृति
- 1.3.4 अर्थशास्त्र की सीमाएं

इन चारों का क्रमबद्ध विवरण निम्न प्रकार है :-

- 1.3.1 अर्थशास्त्र की परिभाषा (Definition of Economics)

हम सबको यह मालूम है कि आधुनिक काल में किसी भी देश के आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण कारण शिक्षा है क्योंकि शिक्षा का प्रमुख कार्य मानवीय संसाधनों का विकास (Development of Human Resources) करना है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन लाने का एक साधन माना जाता है, इसके लिये इसे जन-जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबद्ध किया जाता है। भारतीय सन्दर्भ में इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, उत्पादन, समाज का आधुनिकीकरण और सहज एवं आध्यात्मिक मूल्यों आदि को शिक्षा और इसके पाठ्यक्रम में प्रतिलक्षित किया गया है। इस प्रकार से शिक्षा के जो भी उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं, उनकी प्राप्ति के लिये सीखने के अनुभवों की योजना बनानी होती है और विषयों के चयन और उनसे प्राप्त उद्देश्यों के बारे में विचार करने की आवश्यकता होती है।

विषयों के चयन करने में विद्यार्थियों के स्वभाव एवं विषय की अपनी विशेषताओं की ओर ध्यान दिया जाता है। ऐसे विषय, जो कि वैदिक प्रशिक्षण और महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान करते हों और साथ में उनकी उपयोगिता भी होती हो, पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाते हैं। अर्थशास्त्र इन कसौटियों पर पूरा उत्तरता है, इसीलिए शालीय शिक्षा में माध्यमिक स्तर तक आर्थिक शिक्षा (Economic Education) जिसका उद्देश्य प्रकार्यात्मक आर्थिक साक्षरता पैदा करना होता है, दी जाती है और सीनियर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

एक सफल अध्यापक को प्रभावशाली ढंग से शिक्षण करने के लिए तीन प्रमुख बातों का जान रखना आवश्यक है : विषय, शिक्षण विधियों और विद्यार्थियों के स्वभाव का। इस पुस्तक के अगले पृष्ठ में अर्थशास्त्र शिक्षण और उससे संबन्धित विभिन्न पहलुओं के विषय में बात-चीत की गई है, इसलिये हमें एक बार फिर से यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि अर्थशास्त्र क्या है? इसका क्षेत्र क्या है? आदि। इन बातों के पुनर्मरण से हम इस विषय की शिक्षण विधियों को भली-भांति समझ सकेंगे।

अर्थशास्त्र के जन्मदाता एडम स्मिथ ने (Wealth of Nations) पुस्तक लिखी। इससे पहले भी अर्थशास्त्र से संबन्धित विषयों पर पुस्तकें लिखी गयी थीं जैसे North dh Defence of Free Trade, Petty की Analysis of Theory of Value; Steuart dh Principles, परन्तु इन पुस्तकों में आर्थिक विचारों का एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप नहीं दिया जा सका था। बहुत से लोग निर्बाधावादियों (Physiocrats) को अर्थशास्त्र का प्रतिस्थापक मानते हैं। जीड एवं रिस्ट के अनुसार, निर्बाधावादियों को मौलिकता और शक्ति के बावजूद उन्हें

अर्थशास्त्र का पूर्वकल्पक ही कहा जा सकता है, यह भी निर्विवाद है कि एडम स्मिथ ही इसका सच्चा प्रतिस्थापक है ।

एडम स्मिथ के जमाने से लेकर आज तक विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को भिन्न-भिन्न परिभाषाएं दी हैं । इसलिए अर्थशास्त्र का सही अर्थ समझने के लिये, नीचे इस विषय की प्रमुख प्रवृत्तियों और उनके समर्थकों के विचारों का वितरण दिया:-

1.3.1.1 धन का विज्ञान (Science of Wealth)

प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने सम्पत्ति या धन को केन्द्र बिन्दु मानकर अर्थशास्त्र को परिभाषित किया । इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक एडम स्मिथ, जे.बी.से. और वाकर हैं, जिनकी परिभाषाएं नीचे दी जा रही हैं -

एडम स्मिथ : अर्थशास्त्र में राष्ट्रों की सम्पत्ति का स्वरूप और उसके कारणों की छानबीन की जाती है ।

जे.बी.से. : अर्थशास्त्र वह शास्त्र है जो धन की विवेचना करता है ।

वाकर : अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जो धन से संबन्धित है ।

उपर्युक्त परिभाषाओं में धन को अनुचित रूप से प्राधान्य प्रदान किया गया है जिससे एक अमात्मक धारणा यह पैदा हुई कि अर्थशास्त्र धन कमाने के उपायों का शास्त्र है । अर्थशास्त्र के अध्ययन में 'मनुष्य' को एक गौण स्थान दिया गया है और धन जो कि मनुष्य की केवल 'भौतिक समृद्धि' का साधन मात्र है अधिक महत्ता दी गयी । धन को भी बहुत संकुचित अर्थों में लिया गया अर्थात् स्पर्श दृष्टिगोचर तथा भौतिक वस्तुएं, जिससे कि अर्थशास्त्र का क्षेत्र संकुचित हो गया । इस प्रकार से इन परिभाषाओं में एक आर्थिक मनुष्य की कल्पना की गई जो कि केवल धन कमाने के लिये ही कार्य करता है जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य बहुत से कार्य मानवता के नाते भी करता है ।

इन्हीं पहलुओं को सामने रखकर कार्लाइल, रस्किन, मोरिस, डिकेन्स जैसे विद्वानों ने अर्थशास्त्र को "कुबेर का सन्देश", "निकृष्ट व दुःखदायी विज्ञान", "रोटी टुकड़े का विज्ञान" कहा ।

1.3.1.2 भौतिक कल्याण का विज्ञान (Science of Material Welfare)

अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान माने जाने पर जिस प्रकार इस विषय की कटु आलोचनाएं की गयी, उससे बहुत से अर्थशास्त्रियों जैसे मार्शल, पीगू, कैनन, पेन्सन, फेयर चाइल्ड आदि ने इन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न किया । इनके द्वारा दी गयी परिभाषाओं में मनुष्य को प्रथान माना गया और धन को उसके कल्याण का एक साधन । इस प्रकार से अर्थशास्त्र अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य मानव और उसका कल्याण है । इस मत के कुछ मुख्य समर्थकों की परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं -

मार्शल : अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मनुष्य की क्रियाओं का अध्ययन है । यह इस तथ्य की विवेचना करता है कि वह किस प्रकार धन प्राप्त करता है और वह किस प्रकार उसका उपयोग करता है । इस प्रकार यह एक और धन का अध्ययन करता है और दूसरी ओर, जो कि अधिक महत्वपूर्ण है, मानव अध्ययन का एक भाग है ।

पीगू : अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का अध्ययन है, इससे हमारा अभिप्राय सामाजिक कल्याण के उस भाग से है, जिसे मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबन्धित किया जाता है ।

कैनन : राजनीतिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन सामान्य कारणों का स्पष्टीकरण करना है, जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर करता है ।

मार्शल और उनके साथियों की परिभाषाएँ बहुत समय तक मान्य रहीं । बाद में रॉबिन्सन जैसे आलोचकों ने इन परिभाषाओं की तीव्र आलोचना की । इन आलोचकों का विचार है कि अर्थशास्त्र में केवल भौतिक वस्तुओं का ही अध्ययन नहीं किया जाता बल्कि अभौतिक साधनों का भी अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता है । यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य के सभी कार्यों से मानव कल्याण में वृद्धि होती है फिर मानव कल्याण को मापना अति कठिन है । चूंकि अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है, इसलिए इस तरह के प्रश्न कि कौन-सा कार्य मानव के कल्याण से सम्बन्धित है और कौनसा नहीं, इसके क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आते हैं इसी प्रकार से आलोचकों, विशेषतया राबिन्सन ने यह भी कहा कि अर्थशास्त्र में आर्थिक एवं अनार्थिक दोनों क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है क्योंकि साधनों में न केवल धन का समावेश होता है बल्कि- समय का भी, ये साधन सीमित हैं और उनके अनेक उपयोग हो सकते हैं जिससे चुनाव की समस्या सामने आती है । यह चुनाव संबंधी कार्य आर्थिक है चाहे इसका संबंध धन से हो या न हो ।

1.3.1.3 सीमित साधनों का विज्ञान (Science of Seacrh Resources)

राबिन्स एवं उसके अनुयायियों फीडमैन, केर्नकोस, स्टिगलर आदि ने अर्थशास्त्र को सीमित साधनों का विज्ञान बताया । निम्नांकित परिभाषाओं से यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

राबिन्स : अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जिसमें साध्यों और वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों से संबन्धित मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है ।

फीडमैन : अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि कोई समाज-विशेष अपनी आर्थिक समस्याओं को कैसे हल करता है । एक आर्थिक समस्या उस समय मौजूद रहती है जबकि सीमित साधन वैकल्पिक साध्यों की संतुष्टि में लगाए जाते हैं ।

राबिन्स और उसके अनुयायियों की परिभाषाओं में निम्नलिखित मूल तत्व हैं-

- (अ) मनुष्य की आवश्यकतायें अनन्त हैं और उनकी तीव्रता में अन्तर पाया जाता है ।
- (ब) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उपलब्ध साधन सीमित होते हैं ।
- (स) सत्य साधनों के बहुत से प्रयोग हो सकते हैं ।

इसलिए मनुष्य के सामने हमेशा चुनाव की समस्या रहती है कि बहु उपयोगात्मक सीमित साधनों की विभिन्न आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये किस प्रकार से प्रयोग किया जाये कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र चुनाव की समस्या से सम्बन्ध रखने वाले मानव व्यवहार का अध्ययन करता है । साध्य और साधन की अच्छाई ब बुराई से अर्थशास्त्री का कोई संबंध नहीं होता है । इस प्रकार की विचारधारा अर्थशास्त्र के विषय को अधिक वैज्ञानिक एवं सार्वभौमिक बना देती है ।

राबिन्स और उसके साथियों की परिभाषाओं की भी आलोचना हुई । आलोचकों का विचार है कि अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान मानना अनुचित है । ऐसी धारणा अर्थशास्त्र विषय को महत्वहीन बना देती है । अर्थशास्त्र के अध्ययन का अन्तिम लक्ष्य मानव कल्याण ही होना चाहिए । इसके अतिरिक्त राबिन्स ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को अनावश्यक रूप से विस्तृत कर दिया और उसकी परिभाषा में प्रयुक्त साधन एवं साध्य शब्दों का अन्तर स्पष्ट नहीं है ।

1.3.1.4 विकास सम्बन्धी विज्ञान (Science Related to Growth)

राबिन्स को परिभाषा के तत्वों को आधार मानकर सेमुअल्सन ने अर्थशास्त्र की एक विकास केन्द्रित परिभाषा दी है, जो इस प्रकार है-

अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन है कि शक्ति और समाज मुद्रा की सहायता से या मुद्रा की सहायता के बिना, किस प्रकार अनेक प्रयोग में आ सकने वाले उत्पादन के सीमित साधनों का चुनाव, एक समयावधि में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में और उनको समाज में विभिन्न शक्तियों और समूहों में उपभोग हेतु वर्तमान व भविष्य में बॉटने के लिये करते हैं।

सेमुअल्सन द्वारा दी गयी उपर्युक्त परिभाषा काफी अच्छी मानी जाती है क्योंकि इसमें राबिन्स की परिभाषा की अच्छी बातों को लेते हुए समय तत्व को भी सम्मिलित किया गया है जिससे कि विकास से संबन्धित पहलू उजागर हुआ और विकास ही आज के समाज का लक्ष्य है।

अभी हमने जिन चार विचारधाराओं का अध्ययन किया है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु का सबक प्रतियोगी साध्यों में सीमित साधनों के बटवारें से होता है। यह समस्या न केवल व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics) में अक्सर सम्प्रत्यय में नजर आती है बल्कि समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) और आर्थिक विकास में भी नजर आती है।

स्व-मूल्यांकन-1

1. अर्थशास्त्र विषय के विकासक्रम को समझाएं।
2. आर्थिक शिक्षा का क्या अर्थ होता है?
3. एडम स्मिथ द्वारा दी गयी अर्थशास्त्र की परिभाषा को लिखिये।
4. मार्शल द्वारा दी गयी अर्थशास्त्र की परिभाषा को समझाइये।
5. राबिन्स की परिभाषा में क्या मूल तत्व है?
6. अर्थशास्त्र को विकास सबंधी विज्ञान किस अर्थशास्त्री ने माना उसके द्वारा दी गयी अर्थशास्त्र की परिभाषा क्या है?
7. आपके विचार में अर्थशास्त्र की क्या परिभाषा होनी चाहिए।

1.3.2 अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Economics) :

किसी भी विषय की स्पष्ट परिभाषा होने से उसका क्षेत्र काफी कुछ स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। अर्थशास्त्र की परिभाषाओं को अध्ययन करते हुए हमने देखा कि अर्थशास्त्र की क्या उचित परिभाषा हो? इस बारे में अर्थशास्त्री एकमत नहीं हैं। अर्थशास्त्र को जिस तरह से परिभाषित किया गया है और उनसे जो प्रवृत्तियाँ उभरी हैं, उसी आधार पर अर्थशास्त्र के क्षेत्र को समझने का प्रयत्न किया जाता है।

अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject matter of Economics) :

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की जो भी परिभाषाएं दी हो और उनमें जो भी मतभेद हो किन्तु इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आवश्यकता, आर्थिक प्रयत्न एवं संतुष्टि का चक्र ही अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का आधार है अर्थात् मनुष्य और इसकी

आर्थिक क्रियाएं अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है। इन आर्थिक क्रियाओं या प्रयत्नों को मुख्यतया पाँच भागों में विभाजित किया जाता है।

1.3.2.1 उपभोग (Consumption)

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आर्थिक प्रयत्न करता है। इसलिये अर्थशास्त्र में सर्वप्रथम आवश्यकताओं की आपूर्ति से प्राप्त होने वाली सन्तुष्टि का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन क्षेत्र को उपभोग कहा जाता है। मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में आर्थिक वस्तुओं एवं वैयक्तिक सेवाओं का प्रयोग करना उपभोग होता है। उपभोग अर्थशास्त्र का आदि और अन्त माना जाता है, क्योंकि उपभोग की इच्छा ही सभी आर्थिक क्रियाओं को जन्म देती है। उपभोग के अंतर्गत आवश्यकताओं के लक्षण एवं प्रकार, तुष्टिगुण नियम, उपभोक्ता की बचत, माँग, माँग का नियम, माँग की मूल्य सापेक्षता, पारिवारिक बजट आदि का अध्ययन किया जाता है।

1.3.2.2 उत्पादन (Production)

उत्पादन का अर्थ है पदार्थ में तुष्टिगुण का सृजन करना, इस दिमाग में हम मनुष्य द्वारा किये गये धनोत्पादन के विषय में अध्ययन करते हैं। उत्पादन प्रक्रिया में पाँच प्रमुख साधन सहयोग देते हैं। यह हैं- भूमि, श्रम, पूँजी, उद्यम एवं साहस। उत्पादन दिमाग के अन्तर्गत हम प्रत्येक उत्पादन के साधन का स्वरूप, उसके लक्षण, उसकी कार्यक्षमता, उत्पत्ति के नियम, उत्पादन का पैमाना, श्रम विभाजन आदि के बारे में अध्ययन करते हैं।

1.3.2.3 विनिमय (Exchange) :

आरम्भ में मनुष्य की आवश्यकतायें सीमित थी और इनको वह स्वयं उत्पादित करता था। समय के साथ-साथ आवश्यकताएं बढ़ती गई और मनुष्य अपने लिए आवश्यक सभी वस्तुओं का उत्पादन करने में असमर्थ हुआ। किन्तु वस्तु का अधिक मात्रा में उत्पादन करके, अन्य वस्तुओं को इनसे बदल कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगा। यही से एक प्रमुख आर्थिक क्रिया विनिमय का प्रारुद्धारा हुआ औद्योगीकरण के फलस्वरूप मशीनों के प्रयोग और बड़े पैमाने पर उत्पादन, इसके अतिरिक्त मुद्रा के प्रचलन से क्रय-विक्रय होने लगा। विनिमय प्रक्रिया में वस्तु-विनिमय एवं क्रय-विक्रय दोनों ही सम्मिलित हैं, इस दिमाग में इनसे संबन्धित धारणाओं सिद्धान्तों एवं समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। वस्तु-विनिमय प्रणाली, द्रव्य, बाजार, मूल्य निर्धारण, बैंकिंग संस्थाएं, विदेशी-विनिमय, आन्तरिक व अन्तर्राष्ट्रीय-व्यापार आदि विषय विनिमय विभाग में अध्ययन किये जाते हैं।

1.3.2.4 वितरण (Distribution)

वर्तमान काल में उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के सभी साधन भूमि, श्रम, पूँजी, संगठन एवं साहस कार्य में लाये जाते हैं। इसलिए प्राप्त उत्पादन को इनमें वितरित करना आवश्यक हो जाता है। इसी प्रक्रिया को वितरण कहा जाता है। वितरण अर्थशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विभाग है और इसके अन्तर्गत वितरण की समस्याओं, लगान, मजदूरी, ब्याज, लाभ, राष्ट्रीय आय आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है।

1.3.2.5 सार्वजनिक वित्त (Public Finance)

सरकार अपने उत्तरदायित्व को निभाने के लिये कर, शुल्क एवं सरकारी उपकरणों से प्राप्त धन एकत्रित करती है। इस धन को सरकार जनहित के कार्यों पर व्यय करती है। अर्थशास्त्र का

वह विभाग जिसमें सरकार के आय एवं व्यय के बारे में अध्ययन किया जाता है, सार्वजनिक बिल कहलाता है। सार्वजनिक बिल के अन्तर्गत सरकार की आय के साधन और व्यय के मद, सार्वजनिक ऋण, वित्तीय प्रशासन जैसे विषय सम्मिलित होते हैं।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र की विषय सामग्री के अन्तर्गत उपभोग, उत्पादन, विनियम, वितरण और सार्वजनिक वित्त से संबंधित अध्ययन किया जाता है।

1.3.3 अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics)

किसी घटना के कारण एवं परिणाम के परस्पर सम्बन्ध के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान की वह शाखा है जिसमें वर्तमान स्थिति का अध्ययन करते हुए कार्य और कारण में संबंध स्थापित किया जाता है और आदर्श प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार विज्ञान के दो भाग होते हैं -

1. वास्तविक विज्ञान (Positive Science)

जिसमें कि वास्तविक स्थिति का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार का विज्ञान 'क्या है?' प्रश्न का उत्तर देता है।

2. आदर्श विज्ञान (Normative Science)

इसका संबंध आदर्श से है अर्थात् क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये। इस प्रकार से आदर्श विज्ञान मानव व्यवहार के लिये आदर्श-प्रस्तुत करता है। इसमें इसका संबंध आदर्श से है अर्थात् क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। इस प्रकार से आदर्श विज्ञान मानव व्यवहार के लिये आदर्श-प्रस्तुत करता है। इसमें "क्या होना चाहिए?" प्रश्न का उत्तर दिया जाता है। विज्ञान का अर्थ और इसकी विशेषताएं देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थशास्त्र में आर्थिक घटनाओं के कारण और परिणाम का परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। इस आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं और नियम प्रतिपादित किये जाते हैं। उपभोग के क्षेत्र तुष्टिगण, हास नियम, समसीमांत तुष्टिगण नियम, उत्पादन में उत्पादन के नियम, विनियम में ग्रेशम का नियम, वितरण में लगान, मजदूरी, ब्याज और लाभ निर्धारण के विभिन्न सिद्धान्त आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है।

अर्थशास्त्र को एक आदर्श विज्ञान भी माना जाता है क्योंकि यह विभिन्न आर्थिक बातों के बारे में आदर्श प्रस्तुत करता है। आदर्श विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र हमें बताता है कि हमारी अर्थव्यवस्था का स्वरूप कैसा हो? लगान, मजदूरी और ब्याज की उचित दरें क्या हो आदि।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्थशास्त्र में विज्ञान की लगभग सभी विशेषताएं पायी जाती हैं जिससे कि इसे विज्ञान कहना उचित है।

अर्थशास्त्र एक कला है (Economics is an Art)

किसी कार्य को अच्छे ढंग से करने को कला कहा जाता है इस तरह से यह हमें आदर्शों को प्राप्ति के मार्ग बताती है। कला में "कैसे होना चाहिए?" प्रश्न के उत्तर की तलाश की जाती है।

अर्थशास्त्र एक कला भी है, क्योंकि इसमें आदर्शों को प्राप्त करने के तरीकों को भी बताया जाता है। आर्थिक विकास और समृद्धि किन तरीकों से हो सकती है। विभिन्न आर्थिक

समस्याओं को कैसे हल किया जाये? ऐसे प्रश्नों के उत्तर अर्थशास्त्र में दिये जाने का प्रयत्न किया जाता है।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि अर्थशास्त्र विज्ञान और कला दोनों हैं।

1.3.4 अर्थशास्त्र की सीमायें (Limitations of Economics)

मार्शल और राबिन्स जिनका कि अर्थशास्त्र विषय के विकास में सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा, है, कि परिभाषाओं और विचारों से अर्थशास्त्र की सीमायें भी उभर कर आती हैं। दोनों ने अर्थशास्त्र की सीमायें भिन्न रूप से बतायी हैं, जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

मार्शल के अनुसार :

1. अर्थशास्त्र में केवल सामाजिक, सामान्य एवं वास्तविक शक्ति की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
2. अर्थशास्त्र में केवल आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
3. अर्थशास्त्र वास्तविक और आदर्श विज्ञान दोनों हैं और साथ में यह एक कला भी है।

राबिन्स के अनुसार :

1. अर्थशास्त्र में सामाजिक और एकान्तवासी दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है।
2. अर्थशास्त्र में आर्थिक एवं अनार्थिक दोनों प्रकार की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
3. अर्थशास्त्र केवल एक वास्तविक विज्ञान है।

स्व-मूल्यांकन-2

1. अर्थशास्त्र को कितने भागों में विभाजित किया जाता है?
2. "उपभोग अर्थशास्त्र का आदि और अन्त है" इस कथन की व्याख्या कीजिये।
3. उत्पादन के प्रमुख साधन कौन से हैं?
4. विनिमय और सार्वजनिक वित्त के अन्तर्गत किन विषयों का अध्ययन किया जाता है?
5. अर्थशास्त्र को वास्तविक एवं आदर्श विज्ञान क्यों कहा जाता है? ?
6. अर्थशास्त्र की मार्शल एवं राबिन्स द्वारा दी गयी सीमायें क्या हैं?

1.4 अर्थशास्त्र की संरचना (Structure of Economics)

अर्थशास्त्र के सम्प्रत्यय में समविष्ट अध्ययन क्षेत्र की संरचना समस्त आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करती है। इन गतिविधियों की इकाई की मात्रा व परिवर्तन की प्रक्रिया के आधार पर समस्त विषय-क्षेत्र को दो संरचनात्मक स्वरूप प्रदान किये जाते हैं। वे निम्न प्रकार हैं:-

सूक्ष्म एवं व्यापक अर्थशास्त्र (Micro and Macro Economics)

सूक्ष्म अर्थशास्त्र को व्यष्टि अर्थशास्त्र, वैयक्तिक पद्धति अर्थशास्त्र, आर्थिक व्यष्टि भी कहा जाता है। यह छोटी इकाइयों अर्थात् व्यक्तिगत इकाइयों जैसे एक फर्म, किसी एक वस्तु का मूल्य आदि का अध्ययन करता है। एक बाजार या एक उद्योग का अध्ययन भी सूक्ष्म अर्थशास्त्र में किया जाता है। वास्तव में एक उद्योग बहुत सी फर्मों का योग है, परन्तु एक उद्योग सम्पूर्ण

अर्थव्यवस्था का एक छोटा भाग है। इन छोटी विशिष्ट आर्थिक इकाइयों को सूक्ष्म चर (Micro Variables) या सूक्ष्म मात्राएं (Micro-quantities) कहा जाता है। इसे सामान्य अर्थशास्त्र भी कहा जाता है।

व्यापक अर्थशास्त्र को समष्टि अर्थशास्त्र, सामूहिक पद्धति अर्थशास्त्र तथा आर्थिक समष्टिभाव भी कहा जाता है? इसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया जाता है। वे समस्त बड़ी इकाइयाँ उसमें सम्मिलित हैं जिनका संबंध सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से होता है। जैसे - कुल राष्ट्रीय आय, कुल बचत, कुल विनियोग आदि।

साथ ही इन सबके संबंधों को भी समझने का प्रयास करता है जिससे समस्त अर्थव्यवस्था के - कारण-प्रभाव सम्बन्ध भी स्थापित किये जा सके। अर्थव्यवस्था से संबन्धित बड़े योगों को व्यापक मात्राएं (Macro Quantities) एवं व्यापक चर (Macro Variables) कहा जाता है। इनमें परिवर्तन होते रहते हैं।

सूक्ष्म अर्थशास्त्र में आय व साधनों का वितरण, कीमतों के सापेक्षिक ढाँचे, एक फर्म एक परिवार, एक व्यक्ति, एक उद्योग से संबन्धित आय, व्यय, उपभोग, बचत, विनियोग आदि का वर्णन किया जाता है। यह विशिष्ट इकाइयों को अपने-अपने क्षेत्र में आर्थिक व्यवहार/समस्याओं के सम्बन्ध में निर्णय लेने में मदद करता है। इसकी सहायता से आर्थिक कल्याण की दशाओं को जाँचा जा सकता है। साथ ही इससे सरकार की आर्थिक नीतियों का वैयक्तिक इकाइयों पर होने वाले प्रभाव को देखा जा सकता है।

व्यापक अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, रोजगार के सिद्धान्त, आर्थिक विकास के सिद्धान्त, सामान्य कीमत स्तर, मुद्रा तथा वित्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेश विनियम आदि का अध्ययन किया जाता है। इन्हीं के आधार पर आर्थिक नीतियाँ प्रस्तावित होती हैं। इन्हीं के सहयोग से उपभोक्ता-वस्तुओं (Consumer Goods) तथा पूँजीगत-वस्तुओं (Capital Goods) के बीच साधनों का वितरण होता है।

1.5 भविष्य में अर्थशास्त्र (Economics in Future)

1.5.1 फेंकने की मनोवृत्तियुक्त समाज (Throw Away Society) :

अर्थशास्त्र के सम्प्रत्यय के परिवर्तित स्वरूप एवं मनुष्य की आर्थिक गतिविधियों को देखते हुए यह तो निश्चित ही है कि अर्थशास्त्र के भावी स्वरूप में परिवर्तन की गीत तीव्र होगी। Toffler ने 21 वीं सदी की कल्पना में तीव्र गीत से परिवर्तन का अत्यधिक महत्व दिया है। अपनी पुस्तक Future Shock esa Super-Industrial Society के साथ Throw Away Society को जोड़ते हैं। उनके अनुसार उपभोक्ता की प्रकृति में परिवर्तन होगा। वस्तुओं के प्रति अभिवृत्ति बदलेगी। लगाव नहीं रहेगा। पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहेजने एवं वस्तु के मितव्यय एवं विवेकशील प्रयोग द्वारा लम्बी अवधि तक काम में लेते रहने की मानसिकता नहीं रहेगी। वस्तु तात्कालिक प्रयोगार्थ उपलब्ध हो और फेंक दी जाये। कागज व प्लास्टिक द्वारा निर्मित तथा अस्थायी प्रकृति की वस्तुओं के प्रयोग में वृद्धि होगी। क्योंकि दुबारा प्रयोग में लेने या मरम्मत करवाने की लागत से कम मूल्य में नयी वस्तु उपलब्ध हो सकेगी। अतः फेंकने की मनोवृत्ति में अत्यधिक वृद्धि होगी।

1.5.2 वस्तुओं की नित्य परिवर्तनशील माँग (Ever Changing Demand of Commodities):

समाज में परिवर्तनशील मानसिकता के अनुसार नवीनतम वस्तुओं का प्रयोग दूर-दराज के गँवों तक प्रसारित होता जायेगा तथा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की माँग उत्पन्न होगी। लोग किस तरह की माँग करेंगे उसके बारे में कुछ भी कहना मुश्किल होगा। माँगों में तीव्र गति से अस्थायी परिवर्तन होने की संभावना बढ़ती जा रही है।

1.5.3 उत्पादन की नित नयी तकनीक :

उपभोक्ता की प्रकृति में आने वाले ऐसे परिवर्तनों की संभावना के साथ उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन आना भी स्वाभाविक है।

यह संभावना व्यक्त की गई है कि किसी भी वस्तु के उत्पादन की तकनीक वर्षा के अन्तराल के पश्चात बदलने के स्थान पर अब यह प्रत्येक उत्पादक खेप के साथ बदलती जायेगी। एक समय था जब एम्बेसेडर कार का एक मॉडल अनेक वर्षों तक चलता रहा। आज के समय में शीघ्र ही कार के मॉडल्स में परिवर्तन किये जाते हैं। पश्चिमी देश उस काल में प्रविष्ट हो चुके हैं जब कोई एक नई घड़ी/कार/कैमरे को देख कर बाजार जाता है तो उसे जात होता है कि वह मॉडल पुराना हो चुका है। अब उपलब्ध नहीं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यह स्थिति आयेगी। इससे क्रय की गई किसी भी वस्तु के टूटने-फूटने पर मरम्मत कराना संभव नहीं होगा। यदि संभव हुआ तो भी उसका व्यय अधिक होगा। उसी प्रकार की नयी वस्तु कम दर पर उपलब्ध हो सकेंगी। इस प्रकार यह अस्थायी अल्पकालीन उपयोगिता हेतु वस्तुओं के उत्पादन का काल होगा।

1.5.4 अदृश्य अर्थव्यवस्था में वृद्धि (Increase in Invisible Economy)

Third Wave में Toffler का यह भी मानना है कि आने वाले समय में 'अदृश्य-अर्थव्यवस्था' (Invisible Economy) में वृद्धि होगी। इस स्थिति का विश्लेषण करते हुए वह कहते हैं कि अर्थव्यवस्था की प्रथम लहर (First Wave) में कृषि प्रधान स्थिति थी। इस समय व्यक्ति स्वयं उत्पादन करता था स्वयं ही उसका उपभोग भी करता था। दूसरों को देने के लिए नगण्य सामग्री हुआ करती थी अतः वह स्वयं उत्पादक (Producer) एवं उपभोक्ता (Consumer) होता था। वह समय था जिसे उन्होंने अर्थव्यवस्था में Prosumer के अस्तित्व को स्वीकार किया। विकास की द्वितीय लहर (Second Wave) में औद्योगीकरण की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई। लोग स्वयं के उपयोग के स्थान पर बेचने हेतु उत्पादन करने लगे। जो वस्तु अथवा सेवा बाजार की गतिविधि में सम्मिलित होती है, वही उत्पादन में सम्मिलित की जाती थी। शेष अर्थव्यवस्था के क्षेत्र के बाहर थी। परिणाम स्वरूप कई ऐसी महत्वपूर्ण गतिविधियाँ जैसे-गृहिणी द्वारा घर में किया जाने बाते समस्त कार्य, सफाई, बच्चों का पालन-पोषण, सामुदायिक सेवाएं आदि अनार्थिक कार्यों के रूप में देखें जाने लगे। जबकि यही कार्य आर्थिक किया-कलापों के लिए महत्वपूर्ण वातावरण तैयार करते हैं। इनके अभाव में अर्थव्यवस्था का तन्त्र ही डगमगा सकता है।

भविष्य में जो शक्ति उत्पादन कार्य में लगे हैं वे भी कार्य समय के पश्चात् अधिक अतिरिक्त परिश्रम से बागवानी, सिलाई, सब्जी लगाना, खेती करना, छोटे-बड़े व्यापार करना, घर के बच्चों को पढ़ाना, राजनीतिक गतिविधियाँ करना, सामुदायिक सेवा कार्य, टिफिन बनाकर देना, कढ़ाई-बुनाई करना, कम्यूटराइजेशन करना जैसे कार्यों को अधिक करने लगेंगे जिससे उनकी आय

बढ़े इस प्रकार Prosumers वर्ग में वृद्धि होगी। अतः अर्थशास्त्रियों को अपना ध्यान पुनः ऐसे परिवर्तनों पर केन्द्रित करना होगा तथा यह भी अर्थशास्त्र में लाना होगा कि अर्थव्यवस्था में अदृश्य गतिविधियों एवं दृश्य गतिविधियों में क्या पारएवंरिक निर्भरता है?

1.5.5 Prosumer वर्ग में वृद्धि का महत्व (Importance of Increase in Prosumer Group) :

वर्तमान में प्रभावी उद्यमशीलता एवं अधिकतम लाभ हेतु दोनों पर ध्यान देना पड़ेगा जब तक Prosumer को महत्व नहीं दिया जाता आर्थिक विकास की गति को बढ़ाया नहीं जा सकता। जापान में विज्ञान एवं तकनीक को कुटीर उद्योग के रूप में अपना कर सम्पूर्ण विश्व के बाजार पर नियन्त्रण कर रखा है। चीन ने इसी प्रकार अदृश्य अर्थव्यवस्था (Invisible Economy) के अन्तर्गत Prosumers में वृद्धि से वस्तुओं की लागत में कमी आई है। इस प्रकार न्यूनतम लागत की वस्तुओं की पूर्ति में विश्वभर में अपना स्थान बनाया है। आने वाले समय में यह प्रवृत्ति और भी बढ़ेगी।

1.5.6 ई-अर्थव्यवस्था का उदय (Emergence of E-economy)

सूचना एवं संवहन तकनीक (ICT) के विकास ने समस्त विश्व को एक छोटे से बॉक्स में समेट लिया है। अतः सीमित बाजार के सम्प्रत्यय पुराने हो चले। अब तो ई-मार्केट, ई-बैंक, ई-सूचना तन्त्र के परिणामस्वरूप आर्थिक गतिविधियों में तीव्रता आयेगी। समय की बचत से उत्पादकों व विक्रेताओं को अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त होगा। अतः इलेक्ट्रॉनिक कुटीर का सपना आने वाले समय की वास्तविकता ही होगी।

1.5.7 अर्थव्यवस्था में नैतिकता (Morality in Economy)

जीवन में सतत परिवर्तन, जो कल्पनातीत हों तथा विज्ञान एवं तकनीकी में तीव्र विकास ने मानव जीवन को जटिल भी बना दिया है। बढ़ते तनाव एवं बढ़ती नशाखोरी, ड्रग्स एवं मानसिक रोगों के कारण उत्पादकता की लागत प्रभावित होती है। उत्पादक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों से तो प्रत्यक्ष रूप से हानि होती ही है किन्तु घर में कार्यरत स्वयं सहायता वर्ग (Self help group) यदि उपयुक्त है तो अर्थव्यवस्था संभल जाती है अन्यथा गुणक प्रभाव से अर्थव्यवस्था उथल-पुथल हो जाती है। इसी प्रकार सुसंस्कृत एवं शिक्षित श्रमिकों की आपूर्ति का प्रभाव भी अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक ही होता है। अतः अनेक पारिश्रमिक विशेषताएँ, अभिवृत्ति, मूल, कौशल एवं उत्प्रेरणा आदि उच्च उत्पादिता के लिए आवश्यक होंगे।

1.5.8 शब्दाबली का पुनर्परिभाषीकरण (Redefinition of Terminology)

आय (Income) कल्याण (Welfare), गरीबी (Poverty), बेरोजगारी (Unemployment) जैसे शब्दों के भावी सन्दर्भ में क्या सम्प्रत्यय होंगे? यदि कोई व्यक्ति आधे समय बाजार में काम करता है तो उसकी आय की गणना कैसे करेंगे? उसके रोजगार को पूर्ण रोजगार कहेंगे या अर्द्ध-रोजगार? यदि किसी समुदाय में Prosumers अधिक हो तो ऐसी समग्र एवं औसत आय के आकड़ों की सार्थकता क्या होगी? कल्याण की परिभाषा क्या होगी? जिन्हें कल्याण के लाभ प्राप्त हो रहे हैं उन्हें भी समुदाय के लिए काम करना चाहिए? क्या अपना वाहन स्वयं ठीक करने वाला, अपनी छत पर स्वयं केलू जमाने वाला, अपनी गायों को स्वयं ढूँने वाला

व्यक्ति के कार्यों को करने वाले व्यक्ति को उसी तरह बेरोजगार की श्रेणी में रखा जायेगा जैसे कि कोई अपने घर पर बैठा-बैठा टी.वी. देखता रहता हो व इधर-उधर घूम कर अपना दिन व्यतीत करता हो?

1.5.9 उपभोक्ता की सत्ता (Soverignty of Consumer)

उपभोक्ताओं के द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति तत्काल करने की मांग की जाती है। यात्रा एजेंट हो या वित्तीय सेवायें। पोस्टल सेवाएं हो या भोजन पार्लर। उपभोक्ता को गुणात्मकता व समय वस्तु एवं सेवा चाहिए। यह प्रवृत्ति बढ़कर उपभोक्ता की इच्छित डिजाइन की वस्तु उत्पादित की जानी पड़ेगी। उपभोक्ता अर्थशास्त्र के सही अर्थों में राजा बनेगा। एकाधिकारी एवं व्यापारी तथा उत्पादकों के निर्णय के स्थान पर उपभोक्ता बाजार को नियन्त्रित करेगा।

1.5.10 उत्पादन का प्रमुख साधन-शान (Knowledge-Major Means of Production)

परम्परागत उत्पादन के साधनों में भूमि, श्रम, कच्चा माल एवं पूँजी अब कम महत्वपूर्ण हो गये हैं। इनके स्थान पर ज्ञान (Knowledge) अब अधिक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। आने वाले समय में ज्ञान के हस्तान्तरित किये बिना धन कमाना असंभव है। धातु एवं कागजी मुद्रा का स्थान सम्पूर्ण रूप से इलेक्ट्रॉनिक सूचनाओं द्वारा ले लिया जायेगा। इसका प्रारम्भ तो अभी हो ही चुका है। अतः कम्यूटर का ज्ञान भी सभी के लिए आवश्यक होगा। अब उद्योगों में मजदूरी वित्तीय व्यावस्थापक या प्रबन्धक का महत्व कम हो जायेगा। इनके स्थान पर उन संज्ञानात्मकता वाला कार्मिक अधिक महत्वपूर्ण होगा जो कि ज्ञान को व्यवहार में ले सके। इसी ज्ञान के परिणाम स्वरूप नयी अवस्था में स्थानीय वातावरण में राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक का काम कर सकेगा। इस प्रकार Toffler के अनुसार अर्थव्यस्था में शारीरिक शक्ति (Muscles) से वित्तीय (Money) शक्ति व वित्तीय (Money) शक्ति से ज्ञान (Knowledge/Mind) शक्ति का महत्व बढ़ता जा रहा है। 'Power Shift' पुस्तक के अन्तर्गत इसकी चर्चा विस्तार से की गई है।

स्व-मूल्यांकन-3

1. अर्थशास्त्र को कितने भागों में विभाजित किया जाता है?
2. "उपभोग अर्थशास्त्र का आदि और अन्त है" इस कथन की व्याख्या कीजिये।
3. उत्पादन के प्रमुख साधन कौन से हैं?
4. विनिमय और सार्वजनिक वित्त के अन्तर्गत किन बिषयों का अध्ययन किया जाता है?
5. अर्थशास्त्र को वास्तविक एवं आदर्श विज्ञान क्यों कहा जाता है ?
6. अर्थशास्त्र का भावी स्वरूप क्या होगा

1.6 सार-संक्षेप (Summary)

अर्थशास्त्र के इतिहास के बीज भारत के अर्वाचीन साहित्य में उपलब्ध हैं। किन्तु एडम स्मिथ को इस विषय का जनक माना जाता है। तब से धीरे-धीरे इस विषय का विकास होता चला गया है। विकास के क्रम में अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान, भौतिक कल्याण का विज्ञान,

सीमित साधनों का विज्ञान विकास सम्बन्धी विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है। अर्थशास्त्र की विषय सामग्री में उपमोग उत्पादन विनियम, वितरण एवं सार्वजनिक वित्त भाग सम्मिलित होते हैं। प्रकृति से यह विज्ञान भी है एवं कला भी।

अर्थशास्त्र की संरचना में सूक्ष्म एवं वृहत्त, दोनों प्रकार के दृष्टिकोण समाविष्ट है। भविष्य में अर्थशास्त्र के स्वरूप में परिवर्तन होगा। क्योंकि Through Away Society विकसित हो रही है। इसलिए मॉग में सतत परिवर्तन हो रही है। उत्पादन की तकनीक में शोध परिवर्तन हो रहा है। इसकी गति और भी बढ़ेगी। Toffler के अनुसार अदृश्य अर्थव्यवस्था के अस्तित्व में वृद्धि होगी जिससे Prosumer बढ़ेंगे। इलेक्ट्रॉनिक्स आधारित अर्थव्यवस्था होगी। बढ़ती आर्थिक जटिलताओं के कारण नैतिक मूल्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

1.7 इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

निम्नलिखित प्रश्नों की पूर्ण व्याख्या कीजिये :

1. अर्थशास्त्र की प्रमुख परिभाषाओं की आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिये। सकारण बताइये कि इनमें आपको कौनसी परिभाषा अधिक मान्य है?
Give critical analysis of principal definitions of Economics.
Give reasons for most accepted definition by you.
2. आर्थिक विचारों के सम्बन्ध को एक चार्ट द्वारा समझाइये।
Draw a chart of relationship of various economic thoughts.
3. अर्थशास्त्र के क्षेत्र की पूर्ण व्याख्या कीजिये।
Explain the scope of economics.
4. अर्थशास्त्र के भावी परिप्रेक्ष्य पर एक निबन्ध लिखिए।
Write an essay on futuristic point of view of economics.

1.8 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Daughtrey, A.S. : **Methods of Basic Business and Economic Education**, Cincinnati:South-Western Publishing Co., 1974
2. गर्ग, ए.एस. तथा गर्ग एस.के. : अर्थशास्त्र की रूपरेखा-भाग-1, मैरठ, राजहंस प्रकाशन मन्दिर, 1985
3. Oliver, J.M. : **The Principles of Teaching Economics**. London : Heinemann Educational Books, 1973
4. Sachs, I. (Ed.) : **Main Trends in Economics**, London : George Allen & Unwin Ltd., 1973
5. सकसैना एवं सकसैना ; 1990, भारतीय आर्थिक विचार, अजमेर प्रिण्ट हाउस।
6. जैन, के.पी. ; 1976, अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, आगरा साहित्य भवन।
7. Toffler Alvin (1970), **Future Books**, N. Y. : Bantom Books.

8. Toffler Alvin (1981), **The Third Wave**, N. Y. : Bantom Books.
9. Toffler Alvin (), **Power Shift**, N. Y. : Bantom Books.
10. Khan, R.S., अर्थशास्त्र शिक्षण, कोटा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।

इकाई-2

अर्थशास्त्र शिक्षण के भविष्योमुखी उद्देश्य

(Objectives of Teaching Economics with Futuristic Vision)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- | | |
|-------|--|
| 2.1 | इकाई के उद्देश्य । |
| 2.2 | अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य। |
| 2.3 | लक्ष्य का अर्थ व महत्व। |
| 2.4 | अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य । |
| 2.4.1 | सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य |
| - | आर्थिक साक्षरता |
| - | आर्थिक नागरिकता का विकास |
| - | आर्थिक योग्यताओं का विकास |
| - | आर्थिक चेतना जागृत करना |
| - | आर्थिक दायित्व का एहसास करवाना |
| - | उपभोक्ता शिक्षा प्रदान करना |
| - | मूल आर्थिक कर्तव्यों की शिक्षा |
| 2.5 | उच्च माध्यमिक स्तर (+2 स्तर) एवं अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य |
| 2.6 | अर्थशास्त्र शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य |
| 2.7 | उद्देश्यों पर भविष्योमुखी चिन्तन |
| 2.8 | सार-संक्षेप |
| 2.9 | इकाई का मूल्यांकन |
| 2.10 | सन्दर्भ पुस्तकें |

2.1 इकाई के उद्देश्य (Objectivs of the Unit)

- इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् छात्राध्यापक अर्थशास्त्र विषय शिक्षण के लक्ष्य बता सकेंगे ।
- शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित करने का महत्व स्पष्ट कर सकेंगे ।
- सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे ।
- छात्र उच्च माध्यमिक स्तर के अर्थ एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य स्पष्ट कर सकेंगे ।
- छात्र उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र विषय के शिक्षण स्पष्ट कर सकेंगे ।
- छात्र अर्थशास्त्र शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों को समझ सकेंगे ।

- छात्र उद्देश्यों के अविष्योमुखी चिन्तन पर चर्चा कर सकेंगे ।

2.2 अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य (Aims of Economics Teaching)

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षण की आवश्यकता होती है । जीवन से संबन्धित समस्त आयाम ही इसके आधार हैं । यह अखण्ड है व इसका विभाजन संभव नहीं । किन्तु व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न आयामों से जुड़े भिन्न-भिन्न विचारों को हम उसकी प्रकृति के अनुरूप ही नामकरण कर देते हैं । इसी के परिणामस्वरूप राजनीतिक व्यवहार को राजनीतिशास्त्र व आर्थिक व्यवहार को अर्थशास्त्र जैसे नाम दे दिए गये हैं । वास्तव में ये मानव के ही मूल व्यवहार हैं । प्रकृति के अनुसार इसके पढ़ने-पढ़ाने का दृष्टिकोण ही भिन्न हो जाता है । अर्थशास्त्र का पढ़ाने का दृष्टिकोण वह नहीं होता जो समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र या भाषा पढ़ाने का होता है । यह दृष्टिकोण उस विषय के उद्देश्यों द्वारा निर्धारित होता है । अर्थशास्त्र को पढ़ाने का उद्देश्य क्या है? शिक्षक को पढ़ाते समय किस आदर्श एवं लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए?

किसी भाषा के लक्ष्य एवं उद्देश्य में क्या अन्तर होता है? यह एक विचारणीय प्रश्न है । सामान्य तौर से लक्ष्य या उद्देश्य को एक ही कोटि में रखा गया है जिसका अर्थ किसी भी क्रिया को क्यों किया जाता है, इस प्रश्न के उत्तर से संबन्धित है । इसलिए अधिकांश लेखकों ने लक्ष्य व उद्देश्य को परस्पर व समानार्थी शब्दों के रूप में प्रयुक्त किया है । किन्तु कुछ लेखकों ने लक्ष्य (Aims) व उद्देश्यों (Objectives) को भिन्न-भिन्न रूप से लिया है । इस पुस्तक में भी इसमें भिन्नता रखी गयी है ।

मेरी एलिस व जेन ने 1970 में अमेरिका के तीन विश्वविद्यालयों के छात्रों पर एक सर्वे किया । उनकी शोध के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य निम्नलिखित होने चाहिए -

- (1) व्यक्तिगत आय में वृद्धि
- (2) व्यवसायिक एवं सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति को ऊपर उठाना ।
- (3) दैनिक समस्याओं का समाधान करने की योग्यता बढ़ाना, जैसे-नियमों का ज्ञान, भुगतान के तरीके, स्वयं के धन एवं सम्पत्ति की रक्षा, अच्छी नागरिकता, प्रजातन्त्र में जिम्मेदारियाँ, पर्यावरण की रक्षा आदि का ज्ञान देना ।

जोड (C.E.M. Jode) ने शिक्षा के तीन लक्ष्य बताए हैं -

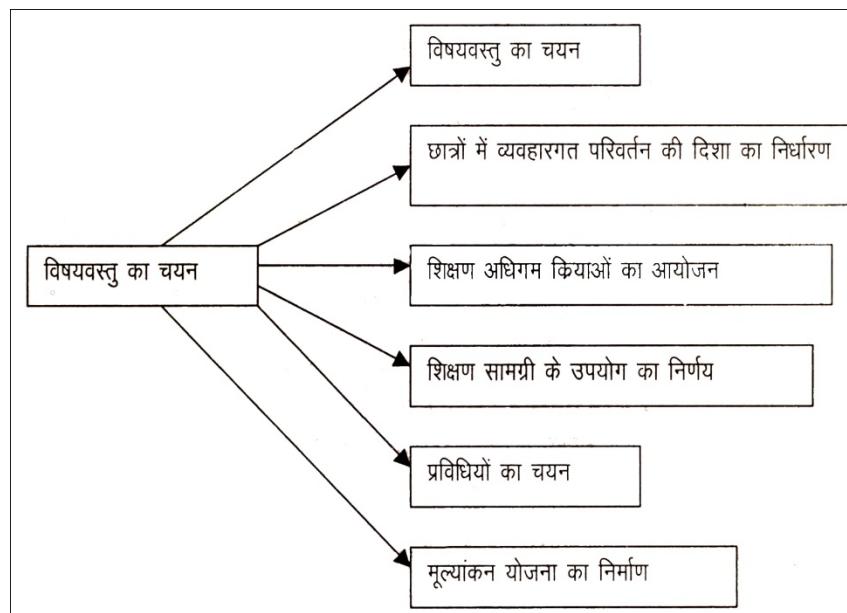
- (1) एक छात्र या छात्रा को जीविका करने के योग्य बनाना ।
 - (2) प्रजातन्त्र के नागरिक के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाने के लायक बनाना ।
 - (3) उसकी स्वभाव की छिपी हुए शक्तियों को विकसित करना जिससे कि वह अपने जीवन का आनन्द उठा सके ।
-

2.3 लक्ष्य का अर्थ एवं महत्व (Meaning & Importance of Aims)

किसी विषय को किसी स्तर विशेष पर क्यों पढ़ाया जाय? यह एक महत्वपूर्ण व आधारभूत प्रश्न है । क्योंकि इससे ही अनेक प्रश्न उभरते हैं, जो कि पूरी शिक्षा व्यवस्था का

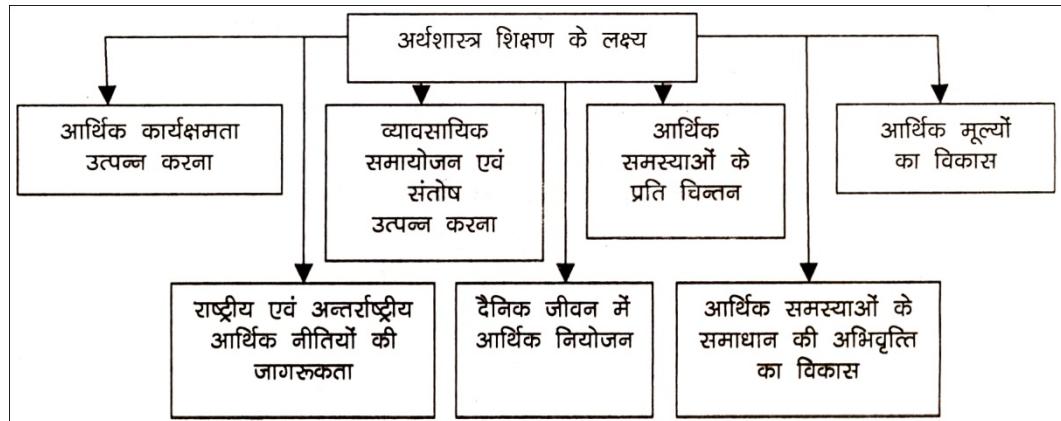
आधार बनते हैं। क्या पढ़ाया जाये? कैसे पढ़ाया जाये? शिक्षण प्रभावकारी है या नहीं ? मूल्यांकन कैसे किया जाये? आदि आदि । अतः लक्ष्यों का निर्धारण अत्यधिक आवश्यक किया है ।

वह व्यवहार परिवर्तन जो शिक्षक एक विषय विशेष की सहायता से छात्र में लाना चाहता है, वह उस विषय के लक्ष्य कहलाते हैं । इससे शिक्षण प्रक्रिया की दिशा निश्चित होती है । एक बार लक्ष्यों का निर्धारण हो जाने के बाद शिक्षा प्रक्रिया में निम्नांकित प्रकार से सहायता मिलती है-



किसी भी विषय के उद्देश्यों का निर्धारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है । अतः अर्थशास्त्र विषय के उद्देश्यों पर विचार करने से पूर्व हम शिक्षा के लक्ष्यों को देखें । एन.सी.ई.आर.टी. ने एक प्रलेख तैयार किया है - National Curriculum of Elementary and Secondary Education. इसके अन्तर्गत उन्होंने शिक्षा एवं अवसरों की समानता, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, संवैधानिक सुविधाएं, एक प्रजातान्त्रिक समाजवाद एवं धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना, राष्ट्रीय एकता पर्यावरण का रक्षण, प्राकृतिक साधनों का संरक्षण छोटे परिवार का आदर्श आदि विचारों को सम्मिलित किया है ।

इन विचारों के सन्दर्भ में ही अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना चाहिए । स्मिथ, मोफेट एवं मोफेट, माइकेलिस बाइनिंग एण्ड बाइनिंग प्रारम्भ से दो मुख्य लक्ष्यों को लेकर चले । एक अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक ज्ञानार्जन दूसरा अच्छे उपभोक्ता का विकास। वर्तमान में बढ़ती आर्थिक प्रतियोगितायें एवं उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति ने अर्थशास्त्र शिक्षण के उत्तरदायित्व को बढ़ा दिया है ।



उपर्युक्त चित्र में दिये गये अर्थशास्त्र विषय के लक्ष्यों के सन्दर्भ में ही के. रोबिन्सन ने तीन मानदण्ड निर्धारित किये हैं -

1. विषय के आधारभूत सम्प्रत्ययों के रूप में वातावरण के आर्थिक पहलू का ज्ञान एवं अवबोध विकसित करना चाहिए।
2. आर्थिक समस्याओं के बारे में स्पष्ट चिन्तन की योग्यता विकसित होनी चाहिए जिससे तथ्यों का विश्लेषण करके तर्कपूर्ण निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास हो सके।
3. आर्थिक साक्षरता का विकास हो जिससे विषय की शब्दावली, भाषा एवं प्रतीकों की सुतथ्यता तथा उपर्युक्त प्रयोग की क्षमता का विकास हो सके।

2.4 अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Economics Teachers)

किसी भी स्तर पर अर्थशास्त्र विषय का शिक्षण करने हेतु उक्त लिखित लक्ष्यों को दृष्टिगत रखना उपर्युक्त होगा।

नई शिक्षा नीति व दस जमा दो योजना के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर तक अर्थशास्त्र विषय को सामाजिक अध्ययन के अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकृत किया गया है। जमा दो स्तर पर इसे ऐच्छिक विषय के रूप में रखा गया है। अतः जब हम इसके उद्देश्यों पर विचार करते हैं तो इसके दो भिन्न रूप पाते हैं। जब हम इसे सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में पढ़ते हैं तो इसके उद्देश्य सामान्य होंगे जो कि सभी छात्रों में अपने दैनिक आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित बोध उत्पन्न कर सके। दूसरी ओर जब न्यायरहवीं एवं बारहवीं का छात्र इसे ऐच्छिक विषय के रूप में अध्ययन करना चाहता है तब यह आवश्यक है कि उसमें आर्थिक सिद्धान्तों की अपेक्षाकृत विस्तृत जानकारी हो सके। इसी आधार पर हम वर्तमान समय की आवश्यकतानुसार अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को दो मोटे भागों में विभाजित कर रहे हैं -

2.4.1 सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य -

भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति किसी से छुपी हुई नहीं है। यदि हम इसका विश्लेषण करे तो यह पाते हैं कि सामान्य जनता आर्थिक कुचक्र में फंसी हुई है। जीवन दर्शन का लक्ष्य आर्थिक साधन जुटाना मात्र रह गया है। उपभोक्ता पूर्णतया उपेक्षित है। सरकारी नीतियों व

आर्थिक क्रियाओं से बेखबर है। अर्थशास्त्र विषय का सैद्धान्तिक ज्ञान सभी को हो, यह कर्तई आवश्यक नहीं है। किन्तु यह अवश्य आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को उपभोक्ता शिक्षा या आर्थिक नागरिकता की शिक्षा दी जा सके। इस मंजिल पर पहुँचने के लिए हमें दसरी कक्षा तक के छात्रों के लिए अर्थशास्त्र शिक्षा के निम्न उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए -

(1) आर्थिक साक्षरता (Economic Literacy) - भारत जैसे स्वतंत्र राष्ट्र की सार्थकता तब तक नहीं है जब तक कि व्यक्ति अपनी अज्ञानता के कारण आर्थिक रूप से अस्थिर रहता है। अपने घर के सदस्यों की आवश्यकता को पूर्ण करने की योग्यता, विभिन्न प्रकार के आर्थिक संकटों से बचाव एवं बाहर से आवश्यक सहायता आसानी से प्राप्त करने का सामर्थ्य व्यक्ति में तभी आ पाता है जबकि वह आर्थिक दृष्टि से समझ रखता हो। अतः माध्यमिक स्तर तक हर छात्र को दैनिक जीवन से संबंधित आर्थिक साक्षरता दी जानी चाहिए।

(2) आर्थिक नागरिकता का विकास (Development of Economic Citizenship) - वर्तमान आर्थिक पद्धति ने नागरिक के हर पहलू का स्पर्श किया है। हर प्रातः किसी भी समाचार-पत्र को उठा कर देख लिया जाये-औद्योगिक प्रदूषण, मुद्रास्फीति, राष्ट्रीय कर्ज, बचत-पत्र, करों में वृद्धि, भुगतान संतुलन, कीमत वृद्धि, पर्यावरणीय असंतुलन, जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी की समस्या, तालाबंदी, हड्डियां आदि- आदि विषयों पर विभिन्न प्रकार के समाचार मिल ही जायेंगे। ये वे दैनिक समस्याएं हैं जो कि किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के सामने उपस्थित होती हैं। इनकी सामान्य जानकारी से ही छात्रों में आर्थिक नागरिकता का विकास संभव है।

(3) आर्थिक योग्यताओं का विकास (Development of Economic Competencies) - माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक छात्र में कुछ न कुछ आर्थिक योग्यताओं का विकास होना ही चाहिए जो कि उसके सामान्य जीवन को सहज बना सके। सामान्य जीवन के 'लिए (1) भोजन (Food) (2) वस्त्र (Clothing) (3) मकान (Shelter) (4) संचार सुविधा (Communication facilities) एवं (5) सुख-सुविधाएं (Coveniences) की आवश्यकता होती है। आर्थिक क्रियाओं के यही तो लक्ष्य है। शक्ति इन समस्त सुविधाओं को किस प्रकार प्राप्त करता है, इसी में उसकी आर्थिक योग्यता का उपयोग होता है। वैसे तो ये पाँचों मद्द शिक्षा एवं रोजगार से ही परिपूरित होते हैं जो कि सम्पूर्ण जीवन का लक्ष्य होता है, किन्तु इनको प्राप्त करने में कई आर्थिक क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं, जिनका ज्ञान माध्यमिक स्तर तक दिया जा सकता है, जैसे - भोजन, वस्त्र आदि के क्रय-विक्रय का विवेक जागृत करना, मकान बनाने व क्रय करने सम्बन्धी नियम व पूर्वावश्यकताएँ, बचत योजनाएँ, पोस्ट ऑफिस एवं बैंक संबंधी क्रियाएँ समय का सदृप्योग, अवकाशकालीन सृजनात्मक क्रियाएँ आदि का ज्ञान देना सामाजिक अध्ययन का ही एक भाग होना चाहिए।

(4) आर्थिक चेतना जाग्रत करना (Effects for Economic Awareness)- प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक रूप से सम्पन्न होने एवं अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की एक सामान्य धारणा का विकास किया जाना चाहिए यथा-कैसे वह अपने रोजगार को बढ़ा सकता है? अपने अर्जित रोजगार में वह कैसे उन्नति कर सकता है? यह अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र के स्तर को ऊँचा उठाने एवं सकल उत्पादन को बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

(5) आर्थिक दायित्व का एहसास करवाना (Realization of Economic Responsibilities)- वर्तमान समय में बालक की सबसे बड़ी आर्थिक जिम्मेदारी उपलब्ध

पर्यावरण का उपयोग एवं संरक्षण हो गया है। (James Hemming, 1953) बदलती हुई आवश्यकताओं एवं बढ़ते हुए उपभोक्तावाद में रोजगार का जो भी स्रोत चुना जाये तथा उपभोग का जो भी तरीका अपनाया जाये, उसमें मानवीय एवं प्राकृतिक दोनों ही प्रकार के साधनों का विवेकशील उपयोग व विनाश रहित विकास देश की सबसे बड़ी आर्थिक जिम्मेदारी है। सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में इस उद्देश्य की पूर्ति आवश्यक है। वर्तमान समय में NCTE एवं NCERT हमारे संविधान में दिये गये Article & 51m में दिये 10 मूल कर्तव्यों के परिशिष्ट के प्रति संवेदनशीलता लाने हेतु प्रयासरत हैं। अर्थशास्त्र के शिक्षा का भी कर्तव्य है कि अपनी विषय वस्तु शिक्षण के साथ जहाँ भी अवसर मिले, इन दायित्वों के प्रति छात्रों को जागरूक करें।

(6) उपभोक्ता शिक्षा प्रदान करना (To Provide Consumer Education) - विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विभिन्न शोधों के विकास के कारण उपभोक्ता समस्याओं पर ध्यान बढ़ता ही जा रहा है। सामाजिक अध्ययन अध्यापकों एवं विशेष रूप से अर्थशास्त्र ने कीमत प्रणाली के स्वचालित किया द्वारा उपभोक्ता कल्याण स्वरूप हो जाता है - इस 19वीं सदी के विश्वास को भूला दिया है। कई दृष्टिकोणों से यह समस्या सामने आई कि वस्तुओं की गुणात्मकता एवं उपभोक्ता की चयन शक्ति को कैसे बढ़ाया जाय? इस तकनीक ज्ञान के विकास के युग में प्रौढ़ एवं वृद्ध उपभोक्ताओं को निर्देशन प्रदान करने का कार्य बढ़ता जा रहा है। यह एक सार्वजनिक कार्य हो गया है जिसे कि सार्वजनिक शिक्षा के द्वारा हल किया जाना चाहिए।

उपभोक्ता शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Consumer Education)

हमारी शालाओं में उपभोक्ता शिक्षा प्रदान करने के लिये तीन लक्ष्य होने चाहिए-

- (अ) विभिन्न वस्तुओं के मध्य बुद्धिमत्तापूर्ण चयन एवं उसकी पूर्ण उपयोगिता प्राप्त करने के लिये उपभोक्ता की सहायता करना। यह उद्देश्य इस अनुभव पर आधारित है कि हमारे समाज व वर्तमान अर्थव्यवस्था में चयन करना अत्यधिक जटिल कार्य हो गया है। उत्पादों की संख्या एवं प्रकार बढ़ते जा रहे हैं। दूसरी ओर बचत एवं व्यय के मध्य एक बड़ा प्रश्न उपस्थित रहता है साथ ही यह अवस्था यहीं तक पहुँच गयी है कि भावी आय में से कुछ हिस्से के द्वारा वर्तमान में किसी वस्तु को बन्धक में रख लिया जाता है। उपभोक्ता शिक्षा में प्रथम तो उत्पादों का विस्तृत ज्ञान दिया जाये तथा दूसरा जो अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह कि विभेदकारिता का ध्यान कर के बुद्धिमत्तापूर्ण क्रय तथा पारिवारिक बजट का पूर्ण ज्ञान करवाया जाय जिससे कि शक्ति अपने व्यक्तिगत वित्तीय नियन्त्रण कर सके तथा उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सके।
- (ब) इस प्रकार का अवबोध विकसित करना कि प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में सामूहिक किया द्वारा जनहित का कार्य करने का उनका सामूहिक उत्तरदायित्व है। यह उद्देश्य विशेष रूप से युद्धकाल में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है जबकि सीमित साधनों से संयुक्त लाभ उठाया जाये तथा संसाधनों (प्राकृतिक तथा मानवीय) का संरक्षण किया जाये। हमारी आर्थिक व्यवस्था ऐसी है जिसमें उत्पादक वर्ग विकसित हो चुका है तथा साथ ही साथ इन्होंने राजनैतिक एवं आर्थिक शक्ति भी प्राप्त की है। यदि प्रजातंत्र को प्रभावकारी होना है तो ऐसी शक्तियों के विरुद्ध उपभोक्ताओं के पास कुछ मात्रा में सामूहिक आरक्षण (Solidarity) की शक्ति होनी चाहिए। उनका अपना बनाया संगठन होना चाहिये तथा स्वयं का चयन किया हुआ नेतृत्व होना चाहिये। उपभोक्ता किया का उद्देश्य ऐसा हो कि

राष्ट्र के उपभोक्ता संगठन का विकास स्पष्ट हो सके और नीतियों के सम्बन्ध में ऐसा सुझाव दे सके जो कि लोकतन्त्र में संतुलन लाने में सहायक हो । यह देखना व समझना बड़ा सरल है कि व्यापारिक शिक्षा से अमेरिका में उद्योगों की प्रगति हुई है । हमारी शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा कृषि क्षेत्र के सामूहिक प्रयत्नों में भी विकास हुआ है । इसलिए यह देखते हुए उपभोक्ता आन्दोलन आवश्यक हो जाता है ।

- (स) उपभोग के क्षेत्र में सरकार के बढ़ते कार्यों की आस्था करना-यह कार्य भी युद्धकाल में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है । जबकि कीमत एवं गुणात्मकता नियन्त्रण के लिये साधनों का वितरण किया जाता है और घरेलू उपभोग सैनिक आवश्यकताओं के सामने कम उपयोगी होता है । युद्ध के अलावा सार्वजनिक शिक्षा द्वारा यह जान दिया जाना चाहिये कि सरकार के द्वारा उपभोक्ताओं के लिये कौनसी सेवाएं सुरक्षित हैं एवं विद्यमान हैं । उपभोक्ता को यह जात होना चाहिये कि केन्द्रीय व्यापार आयोग (Central Trade Commission) क्या कार्य करता है, खाद्य विभाग क्या करता है? अन्य संघीय राजकीय तथा स्थानीय संस्थाओं द्वारा क्या किया जाता है? वास्तव में सरकार उपभोक्ताओं की सहायता के लिए किन-किन क्षेत्रों में कार्य करती है? गृह निर्माण, स्वास्थ्य की देखभाल, भार एवं मापन (Weights & Measures), बीमा, वस्तुओं का प्रमाणीकरण/उपभोक्ता पर करारोपण एवं तटकर के प्रभावों को प्रकट करना चाहिए एवं स्पष्ट किया जाना चाहिये कि राजकोषीय नीति के द्वारा राष्ट्रीय आय किस प्रकार बढ़ती है? या बढ़ायी जा सकती है?

- (7) मूल आर्थिक कर्तव्यों की शिक्षा (Education for Fundamental Economic Duties)- भारतीय संविधान में मूल अधिकारों एवं कर्तव्यों की चर्चा की गई है । जहाँ तक अधिकारों का प्रश्न है, उससे संबन्धित चेतना जाग्रत करने का कार्य कई अभिकरण वर्षों से कर रहे हैं । परिणामस्वरूप उपभोक्ता संरक्षण एवं श्रमिक व पिछडे वर्ग से संबन्धित कल्याणकारी कानून व नियम बना दिये गये हैं । किन्तु जन चेतना की आपाधापी में कर्तव्यों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका है । किसी भी देश में प्रजातन्त्र के सफल होने के लिये ये दोनों ही सन्तुलित अवस्था में व्याप्त होने चाहिये । कर्तव्यों की शिक्षा के अभाव में वर्तमान में हम असन्तुलित हो गये हैं । अतः अनुसूची 51-ए के अन्तर्गत उल्लेखित मूल कर्तव्यों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है । दिये गये 10 कर्तव्यों में से चार प्रत्यक्ष रूप से अर्थशास्त्र विषय से जुड़े हुए हैं -

- (अ) जंगल, झीलें, नदियाँ जंगली जीव आदि को सम्मिलित करते हुए प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं विकास करना एवं जीवित प्राणियों के प्रति सहानुभूति/दया भाव रखना ।
 (ब) सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा करना ।
 (स) वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्यों द्वारा समस्त क्षेत्रों में श्रेष्ठ योगदान देना जिससे राष्ट्र उच्चतम उपलब्धियों को प्राप्त कर सके ।
 (ट) हमारी संस्कृति की सुदृढ़ परम्पराओं को महत्व देना एवं संरक्षित रखना ।
 अर्थशास्त्र का शिक्षण करते हुए शिक्षा का यह दायित्व बनता है कि यथास्थान इन आर्थिक कर्तव्य बोध को छात्रों में न केवल जाग्रत करे वरन् अभ्यास भी करवाये ।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -1

1. अर्थशास्त्र शिक्षण के मुख्य लक्ष्य क्या हैं ?
2. अर्थशास्त्र में उद्देश्यों के निर्धारण का क्या महत्व है ?
3. आर्थिक सक्षरता से क्या तात्पर्य है ?
4. आर्थिक नागरिकता का विकास करने की क्या आवशकता है ?
5. आर्थिक चेतना से क्या तात्पर्य है ?
6. वर्तमान में आप कौन-कौन आर्थिक दायित्व का एहसास करवायेंगे ?
7. उपभोक्ता शिक्षा के क्या उद्देश्य होने चाहिए ?
8. भावी जन जीवन के लिए मूल आर्थिक कर्तव्यों की शिक्षा के लिए आप क्या करेंगे ?

2.5 उच्च माध्यमिक स्तर (+2स्तर) एवं अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य

1. ऐतिहासिक संदर्भ में भारत की मौजूदा आर्थिक संस्थाओं की समझ विद्यार्थियों में पैदा करना ।
2. हमारे देश की आर्थिक संरचना और इसमें हो रहे परिवर्तनों की समझ विद्यार्थियों में पैदा करना ।
3. विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र के प्रमुख नियमों और संप्रत्ययों की जानकारी प्रदान करना ।
4. विद्यार्थियों में राष्ट्रीय आय विश्लेषण और राष्ट्रीय आय की गणना के तरीकों की समझ पैदा करना ।
5. विद्यार्थियों को समंकों को एकत्रित करने, सारणीयन करने एवं निरूपण करने की क्षमता पैदा करना ।
6. (Primary and Secondary Information) का जान देना ।
7. विद्यार्थियों में आर्थिक पुनर्निर्माण कार्य के लिए किये गये प्रयत्नों को सराहने की भावना पैदा करना ।
8. आर्थिक विकास की प्रक्रिया में जो परेशानियाँ आती हैं उनका धैर्यपूर्वक सामना करने के लिये विद्यार्थियों को तैयार करना ।
9. विद्यार्थियों द्वारा समस्या समाधान उपागम को अपनाना ।
10. विद्यार्थियों में उद्यम, सहयोग और राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना ।

2.6 अर्थशास्त्र शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives of Economics Teaching)

उपरोक्त लिखित उद्देश्य अर्थशास्त्र विषय के शिक्षण के सामान्य उद्देश्य हैं जो कि माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर प्राप्त किये जाने हैं । इनकी पूर्ति निर्धारित स्तर पर चयनित विषय-वस्तु द्वारा की जाती है । सामान्यतया छात्र-शिक्षकों को यह आन्ति रहती है कि इकाई अथवा पाठ योजना के सामान्य उद्देश्य कौनसे होंगे? तथा विशिष्ट उद्देश्य कौनसे होंगे? इन दोनों के अन्तर को निम्न उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

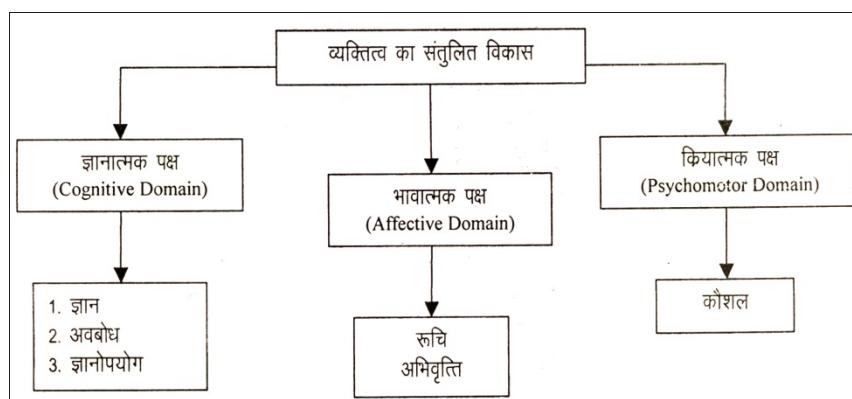
उदाहरण -

कक्षा 9वीं-10वीं स्तर का प्रथम उद्देश्य है विद्यार्थियों को समकालीन आर्थिक समस्याओं से अवगत करना और स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इन समस्याओं को हल करने के लिए किये गये प्रयत्नों को सराहने की भावना पैदा करना ।

यह अर्थशास्त्र शिक्षण का एक सामान्य उद्देश्य है । जब शिक्षक 9वीं-10वीं स्तर पर किसी भी आर्थिक समस्या से संबन्धित पाठ पढ़ा रहा है वही उस समस्या विशेष से संबन्धित ज्ञान छात्रों को प्रदान करना तथा उसके समाधान हेतु किये जाने वाले स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों हेतु सराहनीय भाव उत्पन्न करना ही विशिष्ट उद्देश्य हो जायेगा । जैसे-जनसंख्या समस्या, पर्यावरण समस्या, खाद्य समस्या आदि ।

अर्थशास्त्र के व्यवहारगत उद्देश्य -

शिक्षण उद्देश्यों के सम्बन्ध में अनेकों शिक्षाविदों के विचार उपलक्ष्य हैं । किन्तु ब्लूम ने अपनी पुस्तक (Taxonomy of Educational Objectives) में उद्देश्यों को एक निश्चित व्यवहारात्मक रूप में देने का श्रम किया है । संतुलित विकास के उद्देश्य से इस पुस्तक में हमारे सम्पूर्ण व्यवहार की तीन भागों में व्याख्या की गई है । -



ज्ञानात्मक पक्ष में मुख्यतया ज्ञान, अवबोध एवं ज्ञानोपयोग जैसे उद्देश्य, भावात्मक पक्ष में रुचियों एवं अभिवृत्तियों और क्रियात्मक पक्ष में कौशल से संबन्धित उद्देश्य सम्मिलित कर हम व्यक्तित्व का संतुलित विकास कर सकते हैं । प्रत्येक उद्देश्य में सम्मिलित होने वाले विशिष्टकरण अथवा व्यवहार परिणामों को निम्न चार्ट से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है ।

अर्थशास्त्र शिक्षण के व्यवहारगत उद्देश्य

आयाम	उद्देश्य	विशिष्टीकरण : व्यवहार परिवर्तन
1. संज्ञानात्मक आयाम (Cognitive Domain)	1. ज्ञान (Knowledge)	1.1 प्रत्यास्मरण (Recall)
	2. अवबोध (Understanding)	1.2 पुनर्पहचान (Recognition)
	3. ज्ञानोपयोग (Application)	1.3 आकड़ों का निरूपण (Representation of Data) की सूचनाएँ पढ़ना
2. अवबोध (Understanding)	2.1 विभेदीकरण (Discrimination)	2.2 वर्गीकरण (Classification)

		2.3 तुलना (Comparision)
		2.4 सम्बन्ध स्थापित करना (To establish Relationship)
		2.5 उदाहरण देना (To Exemplify)
		2.6 स्पष्टीकरण/व्याख्या (Clarification)
		2.7 संक्षेपण (To summarize)
		2.8 परिभाषित करना (To Define)
		2.9 अशुद्धियों को पहचानना (To find out mistakes)
		2.10 तर्क करना (Reasoning)
	2. क्रियात्मक पक्ष (Sychomotor Domain)	2.1.1 चित्रात्मक प्रदर्शन का निरूपण (Explanation of Diagrams)
3.	ज्ञानोपयोग (Application)	3.1 समस्या का विश्लेषण (Analysis of Problems)
		3.2 समस्या का समाधान हेतु सुझाव देना (To give suggestions to solve problems)
		3.3 सीखे हुए ज्ञान के आधार पर नवीन समस्या हेतु उपयुक्त तथ्यों समाधानों आदि का चयन
		3.4 निष्कर्ष निकालना (Draw Inferences)
		3.5 नवीन तथ्यों में संबन्ध स्थापित करना
		3.6 उपकल्पना निर्माण करना (To construct Hypothesis)
		3.7 उपकल्पना का सत्यापन करना (Verifies Hypothesis)
		3.8 अनुमान लगाना (To estimate)
		3.9 भविष्यवाणी करना (Prediction)
	4. कौशल (Skills)	3.10 तथ्यों को नयी तरह से संगठित करना
2.		3.11 तथ्यों की उपयुक्तता की जाँच करना
		3.12 मूल्यांकन करना (Evaluation)
	4. कौशल (Skills)	4.1 मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र, ग्राफ आदि बनाना
		4.2 तथ्यों के प्रस्तुतीकरण के एक रूप को दूसरे रूप में परिवर्तित करना
		4.3 प्रतिरूप बनान
3.	भावात्मक पक्ष (Affective Domain)	5.1 आर्थिक प्रकृति की सूचनाएँ पढ़ने के लिए पुस्तकें, पत्रिकाएं, अखबार आदि पढ़ना
		5.2 आर्थिक महत्व के स्थानों का भ्रमण
	5. रुचि (Interest)	

- | | |
|------------------------------------|---|
| 6. अभिवृत्ति
(Attitude) | 5.3 आर्थिक क्रियाओं में भाग लेना
5.4 आर्थिक महत्व की सूचनाएँ व सामग्री एकत्र करना ।
5.5 विषय से संबन्धित कार्य-कलापों में भाग लेना
5.6 आर्थिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करना
6.1 नये विचारों को स्वीकार करना
6.2 आर्थिक उत्तरदायित्व निभाना
6.3 दूसरों के विचारों का आदर करना
6.4 नियमों का आदर करना
6.5 काम निश्चित करने में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण
6.6 आर्थिक साधनों के महत्व को समझना
6.7 गलत आर्थिक आधारों के प्रति प्रतिकूल विचार
6.8 आर्थिक लक्ष्यों के प्राप्ति में सहयोग देना । |
|------------------------------------|---|

व्यवहारगत उद्देश्य लिखते समय ध्यान में रखने योग्य बिन्दु -

1. उद्देश्य लिखते समय ध्यान रहे कि शिक्षकों के कक्षाकक्ष व्यवहार को नहीं लिखना है । छात्रों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों की दृष्टि से लिखना है । जैसे-
 - ◆ शिक्षक छात्रों को जनसंख्या शिक्षा का अर्थ बतायेगा - (X)
 - ◆ छात्र जनसंख्या शिक्षा का अर्थ बता सकेंगे - ()
2. शिक्षण उद्देश्य अधिगम प्रक्रिया के रूप में न लिखकर उपलब्धि प्रक्रिया के परिणामस्वरूप प्राप्त उत्पाद की दृष्टि से लिखा जाना चाहिए । इसके लिए ज्ञान प्राप्त कराता है (Gains) ग्रहण करता है (Acquires) चिन्तन विकसित करता है (Develops) आदि शब्द अधिगम प्रक्रिया के द्योतक हैं । इन्हें उद्देश्यों में प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए । वरन् इनके स्थान पर इन प्रयासों से छात्रों में होने वाली उपलब्धि अर्थात् व्यवहार परिवर्तन को लिखे, जैसे -
 - ◆ छात्र जनसंख्या शिक्षा अर्थ ग्रहण करेगा/कर सकेगा - (X)
 - ◆ छात्र जनसंख्या शिक्षा का अर्थ स्पष्ट कर सकेगा - ()
3. उद्देश्य लेखन में विषय वस्तु एवं व्यवहार परिवर्तन दोनों का उल्लेख किया जाना चाहिए- दोनों में से किसी एक का उल्लेख मात्र अपर्याप्त होता है । जैसे -
 - ◆ जनसंख्या शिक्षा का अर्थ - (X)
या
 - ◆ छात्र प्रत्यास्मरण कर सकेंगे - (X)
 - ◆ छात्र जनसंख्या शिक्षा के अर्थ का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे - ()
4. एक से अधिक व्यवहारगत परिवर्तनों को एक साथ न लिखे जैसे -
 - ◆ छात्र जनसंख्या शिक्षा के अर्थ का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे एवं इसके विषय क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे ।
प्रत्यास्मरण एवं वर्णन दो भिन्न व्यवहार हैं, अतः इन दोनों के लिए भिन्न-भिन्न उद्देश्य लिखे जायेंगे ।

5. एक ही प्रकार के व्यवहार परिवर्तन के लिए भिन्न-भिन्न उद्देश्य न बनाएँ, जैसे -

- ◆ छात्र मुद्रा के अर्थ/परिभाषा का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे ।
- ◆ छात्र मुद्रा के प्रकारों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे ।
- ◆ छात्र मुद्रा के कार्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे ।

इसके स्थान पर इन्हें सम्मिलित रूप में लिखना भाषा की दृष्टि से उपयुक्त होता है, जैसे ?

- ◆ छात्र मुद्रा के अर्थ/परिभाषा, प्रकार एवं कार्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे या

- ◆ छात्र प्रकरण से संबन्धित निम्नलिखित बिन्दुओं का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे ।

- (अ) मुद्रा का अर्थ/परिभाषा
(ब) मुद्रा के प्रकार
(स) मुद्रा के कार्य

6. उद्देश्यों का लेखन करते हुए हम व्यवहार परिवर्तन की संभावना ही व्यक्त कर सकते हैं। व्यवहार में निश्चित रूप से यह परिवर्तन होगा एवं सभी छात्रों में होगा यह पहले से नहीं कहा जा सकता है। हाँ, शिक्षक अपना यथेष्ट प्रयास करता है, जिससे व्यवहार में अमुक परिवर्तन लाया जा सके, अतः भाषा में 'सकेगा' शब्द जोड़ना होगा, जैसे-

- ◆ छात्र मुद्रा के अर्थ का प्रत्यास्मरण करेंगे । (X)
- ◆ छात्र मुद्रा के अर्थ का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे । ()

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -2

1. अर्थशास्त्र शिक्षण के संजानात्मक पक्ष के प्रमुख व्यवहारों को लिखें हैं ।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण में भावात्मक विकास की लिए आप क्या करेंगे ?
3. अर्थशास्त्र शिक्षण का क्रियात्मक पक्ष क्या है ?

2.7 उद्देश्यों पर भविष्योन्मुखी चिन्तन (Futuristic Point of view on objectives)

गत कुछ वर्षों की आर्थिक गतिविधियों ने विश्व को एक ग्राम (Global Village) में परिवर्तित कर दिया है। एक स्थान पर घटित किसी भी घटना से सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हो जाता है। पिछले वर्षों में इस प्रभाव को विश्व स्तर पर प्रसारित होने में कुछ समय लग जाता था। वर्तमान में इसमें अल्प समय लगता है। किन्तु आने वाले समय में विश्व के एक कोने में होने वाली घटनाओं का प्रभाव तत्काल समस्त क्षेत्र में व्याप्त होगा। संचार माध्यम ने दृश्य एवं श्रव्य विद्युत तरंगों को सम्पूर्ण रूप से नियन्त्रण में कर लिया है। Toffler का कुटीर (Electronic Cottage) का समप्रत्यय साकार होता दिखाई दे रहा है।

उपभोक्ता प्रधान समाज के उदय से प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुन्ध दोहन होने लगा। विकास के नाम पर विनाश की ओर अग्रसित मानव समाज ने पारिस्थितिक तन्त्र को ही डगमगा दिया है। परिणामस्वरूप शुद्ध भूमि, जल एवं प्राणवायु जैसे मूल तत्वों की कमी से मानव जीवन

के अस्तित्व को ही खतरा हो गया है। ऐसी स्थिति में यदि विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों के संसाधनों का उपयोग कर अपने देशों को प्रदूषण से मुक्त रखना चाहें तो भी वे प्रभावित तो होंगे ही। क्योंकि विश्व एक गाँव के रूप में सिमट गया है। प्राकृतिक आपदा का प्रभाव एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचता ही है। मेनका गाँधी ने पर्यावरण मन्त्री होने के नाते कहा था कि अगला युद्ध पानी के लिए लड़ा जायेगा।

जनसंख्या वृद्धि में चाहे चीन एवं भारत जैसे देश ही अग्रणी हो किन्तु अन्य विकासशील एवं विकसित देशों में जनसंख्या के निरन्तर प्रवास से वहां के संसाधनों व रोजगार के अवसरों पर प्रभाव तो पड़ ही रहा है। मनुष्यों को जीवनयापन की अवसरहीनता ने पथभ्रष्ट किया है। समाज धीरे-धीरे अपने जीने के लिए अवैध तरीकों से भी अवसर उपलब्ध करवाने हेतु मूल्यों से गिरता चला जा रहा है। परिणामस्वरूप रिश्वतखोरी, चोर बाजारी, भाई-भतीजाबाद, धोखेबाजी जैसे प्रवृत्तियों का बोलबाला हो गया है तथा मूलों पर चलने वाला व्यक्ति अपने हाथ में से अवसरों को फिसलता हुआ पा रहा है। वह किंकर्तव्यविमूढ़ है, क्या करे क्या न करे? बात-बात में उन्हें समयातीत होने का खिताब दे कर मजाक भी बनाया जाता है।

उक्त समस्त स्थितियों को देखते हुए NCTE (Curriculum Framework, 2004 पृष्ठ 4-5) ने भविष्योमुखी उददेश्यों पर दृष्टिपात किया है :

- सुसंस्कृत मानव एवं सामाजिक दृष्टि से प्रभावी बनाने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक मूल्यों से शक्ति को युक्त करें जिससे जीवन को सही दिशा एवं सार्थकता मिले।
- पृथ्वी, जल, वायु अग्नि एवं आकाश (पंच तत्वों) के साथ सम्पूर्ण सामंजस्य बनाने हेतु शारीरिक एवं मानसिक रूप से व्यवस्थित रहने हेतु आवश्यक ज्ञान, अभिवृत्ति एवं आदतों का विकास करना।
- अधिगम समाज के निर्माण हेतु स्व-अधिगम के लिए योग्यताओं एवं विशेषताओं का विकास करना।
- जनसंख्या आधिक्य एवं वृहत् परिवार के विभिन्न परिणामों की समझ एवं जनसंख्या वृद्धि के नियन्त्रण को प्रोत्साहन देना।
- बुजुर्गों के प्रति उपयुक्त सम्मान एवं देखभाल की भावना का विकास।

उक्त समस्त बिन्दु 21वीं सदी में व्यक्ति एवं भारतीय समाज के सतत विकास के लिए आवश्यक हैं जिससे शान्ति पूर्ण समाज विकसित किया जा सके। शान्ति शिक्षा के लिए भारतीय चिन्तन को अर्थशास्त्र शिक्षण का आधार बनाना होगा।

शान्ति शिक्षा के लिए भारतीय चिन्तन (Indian Philosophy for Peace Education)

शिक्षा का प्रत्येक अंग किसी न किसी मूल्य को परिवर्तनशील करता है। अर्थशास्त्र द्वारा हम क्या उपलब्ध करना चाहते हैं, यह प्रश्न मूलतः आर्थिक मूल्य विषयक प्रश्न है। वे कौन से आदर्श हैं, जो वर्तमान समय में समाज की आर्थिक क्रियाओं से सबनिधित हैं। अर्थशास्त्र शिक्षण द्वारा उन्हीं मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए।

उपनिषदों ने दो प्रकार के मूल्यों की चर्चा की गई है- चिरन्तन मूल्य तथा परिवर्तनशील मूल्य। चिरन्तन मूल्य आनन्द की अनुभूति है। दूसरी ओर तात्कालिक मूल्य है जो देश काल

सापेक्ष होते हैं। जो चिरन्तन मूल्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं। वास्तव में चिरन्तन मूल्य साध्य है तथा तात्कालिक मूल्य साधन।

तैतिरीय उपनिषद् में आनन्द प्राप्ति के पाँचों सोपानों को देखें तो अन्नमय कोष एवं प्राणमय कोष अन्न प्राप्ति के उपाय तथा स्थृत जीवन के निर्माण के सोपान हैं। मनोमय एवं विज्ञानमय कोष मन एवं बुद्धि के प्रयोग द्वारा ज्ञान का संचयन एवं विवेकपूर्ण उपयोग से संबन्धित हैं। पंचम सोपान आनन्दमय कोष इन सभी से ऊपर हैं, जब जाता, ज्ञेय एवं ज्ञान में भ्रेद नहीं रह जाता।

इसमें अन्तिम सोपान तक पहुँचते-पहुँचते पूर्व सोपानों का परिहार नहीं होता, अपितु उनका विलीनीकरण हो जाता है। अतः तात्कालिक मूल्य का उपयोग चिरन्तन मूल्य की प्राप्ति के लिए किया जायेगा। तात्कालिक मूल्य साधन है तथा चिरन्तन मूल्य साध्य है। यदि तात्कालिक मूल्य ही साध्य हो जाये, तो उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जायेगा। अतः शिक्षा द्वारा इस सम्बन्ध में विवेक जाग्रत करना आवश्यक है।

अर्थशास्त्र शिक्षण के द्वारा विवेक जाग्रत करने का यह कम इस प्रकार सुदृढ़ किया जा सकता है -

प्रथम दो कोषों में भौतिक संम्पन्नता एवं स्वस्थ शरीर की बात कही गई है। अर्थशास्त्र के शिक्षण द्वारा किसी शक्ति को व्यवसायोंमुखी शिक्षा, आर्थिक क्रियाओं, सिद्धान्तों एवं कारकों की शिक्षा, कारण-प्रभाव संबंध, साधनों का उपयोग विशेष रूप से मानव संसाधन पर ध्यान आकर्षित किया जायेगा, जिससे छात्रों में गुणात्मक जीवन के लिए आकर्षण बढ़े। जीवन स्तर सुधारने का प्रयास करे किन्तु केवल साधन रूप में, साध्य रूप में नहीं। लोभ-मोह से परे श्रेष्ठ को पहचानने व प्राप्त करने का प्रयास करे। भोजन स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वाद के लिए नहीं। पुष्ट शरीर अच्छी तरह कार्य करने के लिए किसी को पीड़ा देने के लिए नहीं। श्रेयस एवं प्रेयस में भ्रेद करे। मनोमय कोष में दृश्य जगत का ज्ञान एक सच्चे नागरिक का जीवन बिताने के लिए शोषण के लिए नहीं। वर्तमान समय में इस ज्ञान पर ही दुनिया अटक गई है। आज अच्छी आर्थिक नागरिकता के गुणों का विकास परम आवश्यक हो गया है। रात-दिन के घोटाले व काण्ड इन मूल्यों के अभावों का ही परिणाम है। बुद्धिमय कोष द्वारा बुद्धिगम्य ज्ञान प्राप्त करने की बात कही गई है। बुद्धि का प्रयोग वास्तविक स्थिति जात करने के लिए हो, विशद या कुर्तक करने के लिये नहीं। विधिवत कर कैसे चुकाये, इसमें न्यायसंगत निवेश कर लाभ प्राप्त कर सकें, इसमें बुद्धि लगाएँ। सरकार को कैसे धोखा दे, कर न देना पड़े, इस कृत्य में नहीं।

अर्थशास्त्र में इस प्रकार के मूल्यों का शिक्षण कर वास्तविक आनन्दमय जीवन व्यतीत करने का तरीका सिखाया जा सकता है। इससे अच्छी आर्थिक नागरिकता के मूल्यों का आध्यात्मिकरण हो जाता है। समग्र जीवन विवेक से युक्त हो जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपनिषद् कालीन मूल्यों की सार्थकता आज भी है। यदि अर्थशास्त्र के शिक्षण में ध्यान दिया जाये तो यह शक्ति एवं समाज दोनों के भविष्य के लिये मंगलकारी सिद्ध होगी।

2.8 सार-संक्षेप (Summary)

वह व्यवहार परिवर्तन जो शिक्षक एक विषय विशेष की सहायता से छात्र में लाना चाहते हैं, वह उस विषय के लक्ष्य कहलाते हैं। लक्ष्य के आधार पर विषय-वस्तु प्रविधिओं, सहायक सामग्री एवं मूल्यांकन का निर्धारण किया जा सकता है।

उन माध्यमिक स्तर तक अर्थशास्त्र शिक्षण दो प्रकार से किया जाता है। सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में पढ़ाये जाने पर अर्थशास्त्र शिक्षण से आर्थिक साक्षरता, आर्थिक नागरिकता व योग्यता का विकास, आर्थिक चेतना जागत करना, आर्थिक दायित्व, का एवं सास उपभोक्ता शिक्षा प्रदान करना, मूल आर्थिक कर्तव्यों की शिक्षा आदि मुख्य उद्देश्य होने चाहिए। इन्हीं के साथ उच्च माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र विषय के विषय-वस्तु का सैद्धान्तिक ज्ञान महत्वपूर्ण हो जाता है। भविष्य की दृष्टि से अर्थशास्त्र विषय के माध्यम से भी आध्यात्मिकता का विकास, सुव्यवस्थित आदतों का विकास, स्व-अधिगम की योग्यता का विकास, जनसंख्या नियन्त्रण पर विशेष ध्यान, बुजुर्गों के प्रति विशेष सम्मान, पर्यावरण संरक्षण आदि महत्वपूर्ण लक्ष्य होंगे क्योंकि शान्ति-शिक्षा, विकसित करने का आवश्यकता है। भारतीय चिन्तन इसके लिए महत्वपूर्ण आधार है।

2.9 इकाई का मूल्यांकन प्रश्न (Evaluation of the Unit)

1. अर्थशास्त्र शिक्षण में उद्देश्य निर्धारित करने की क्या आवश्यकता है?
Why do we determine objectives in teaching of Economics ?
2. अर्थशास्त्र एवं ज्ञानोपयोग के परीक्षण के लिए 5-5 परीक्षण पद बनायें।
Construct 5-5 test items to test understanding and application.
3. अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों पर भावी दृष्टिकोण से चर्चा करें।
Discuss objectives of teaching objectives from future perspectives.

2.10 सन्दर्भ साहित्य (Reference Books)

1. Daughtrey, A.S. **Methods of Basic Business and Economic Education**, Cincinnati : South-Western Publishing Co., 1965.
2. **Guidelines and Syllabus for Secondary stage (Class ix-x), NCERT, New Delhi, 1988.**
3. Lee, N. **Teaching Economics**. London : Heinemann Educational Books, 1975.
4. **National Curriculum for Primary and Secondary Education - A Framework, Revised Vision**, NCERT, New Delhi-1988.
5. **Report of the Seminar on Teaching of Economics** R.B.S. College of Education, Agra, 1972-73.
6. Robinson K. and Wilwon, R. **Extending Economics Within the Curriculum**, London, Routledge Kegan Pane, 1977.

7. **The Curriculum for the Ten Year School A Frame Work**, NCERT
New Delhi, 1975
8. Curriculum Framework for Teacher Education-NCERT, New Delhi-
2004
9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा-205, NCERT, New Delhi-2004

इकाई-3

अर्थशास्त्र में पाठ्यक्रम

(Syllabus in Economics)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- 3.1 इकाई के उद्देश्य
- 3.2 पाठ्यक्रम का अर्थ
- 3.3 माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का स्थान
- 3.4 अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में तर्क
- 3.5 अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के विपक्ष में तर्क
 - 3.5.1 आत्मपूर्णता से सम्बन्धित उद्देश्य
 - 3.5.2 मानवीय सम्बन्धों से सम्बन्धित उद्देश्य
 - 3.5.3 आर्थिक कार्यक्षमता संबंधी उद्देश्य
 - 3.5.4 नागरिक उत्तरदायित्व से सम्बन्धित उद्देश्य
- 3.6 अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के विपक्ष में तर्क
- 3.7 निष्कर्ष
- 3.8 शिक्षण में अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध
- 3.8.1 सह-सम्बन्ध की महत्ता
- 3.8.2 सह-सम्बन्ध के प्रकार
- 3.9 अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह- सम्बन्ध
- 3.9.1 अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र
- 3.9.2 अर्थशास्त्र और इतिहास
- 3.9.3 अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान
- 3.9.4 अर्थशास्त्र और भूगोल
- 3.9.5 अर्थशास्त्र और वाणिज्य शास्त्र
- 3.9.6 अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान
- 3.9.7 अर्थशास्त्र और गणित एवं सांख्यिकी
- 3.10 पाठ्यक्रम के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत उपागम
 - 3.10.1 एकीकृत पाठ्यक्रम
 - 3.10.2 विशिष्टीकृत पाठ्यक्रम
- 3.11 सार-संक्षेप
- 3.12 मूल्यांकन
- 3.13 सन्दर्भ साहित्य

3.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे कि -

- पाठ्यक्रम के सही अर्थ को समझ सकें ।
 - माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र के स्थान का विवरण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में दें सकें ।
 - अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष एवं विपक्ष में दी जाने वाली दलीलों के बारे में विचार करके इस बारे में अपना दृष्टिकोण बना सकें ।
 - उन उपायों के विषय में विचार कर सकेंगे जिससे अर्थशास्त्र को विद्यालयी पाठ्यक्रम में उचित स्थान मिल सके ।
 - अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सम्बन्ध स्पष्ट कर सकेंगे ।
 - अर्थशास्त्र के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत पाठ्यक्रम को समझा सकेंगे ।
-

3.2 पाठ्यक्रम का अर्थ (Meaning of Curriculum)

माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का क्या स्थान है? इस बात को समझने के पहले यह जानना आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का अर्थ क्या होता है?

संकुचित अर्थों में पाठ्यक्रम शिक्षण एवं निर्देशन का एक प्रोग्राम होता है। पाठ्यक्रम की प्राचीन परिभाषाओं में इसे एक पाठ्य विषय, कोर्स या समय तालिका ही माना जाता था। लेकिन आज इसके अन्तर्गत वह सभी सीखने के अनुभव (Learning Experience) सम्मिलित किये जाते हैं, जो कि विद्यालय द्वारा नियोजित और निर्देशित किये जाते हैं। यह सीखने की एक योजना है। इसे विद्यालय का जीवन और कार्यक्रम कहा जा सकता है। N.C.E.R.T. documents, "The Curriculum for the Ten Year Scheme" में पाठ्यक्रम को इस प्रकार परिभाषित किया है:

पाठ्यक्रम विद्यालय द्वारा बच्चों को प्रदान किये जाने वाले सोच-समझ कर नियोजित किये हुए सीखने के समस्त अनुभवों का योग होता है।

इस प्रकार से पाठ्यक्रम में निम्नलिखित पहलू होते हैं

1. स्तर विशेष अथवा कक्षा विशेष के संदर्भ में शिक्षा के सामान्य उद्देश्य ।
 2. विषयानुसार शैक्षणिक उद्देश्य और विषयवस्तु (Content)
 3. पाठ्य विषय (Course of studies) और समय विभाजन।
 4. अधिगम अध्यापन अनुभव (Teaching-Learning Experience)
 5. सहायक सामग्रियाँ। (Teaching Aids)
 6. अधिगम परिणामों (Learning outcomes) और विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों का पश्चपोषण (Feedback)
-

3.3 माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का स्थान (Place of Economics in Secondary School Curriculum):

माध्यमिक विद्यालय के माध्यमिक और सीनियर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के जो उद्देश्य परिभाषित किये जाते हैं, उनकी प्राप्ति के लिये सीखने के अनुभवों के सम्पादन की योजना बनाई जाती है। सीखने के अनुभव विषयों के अध्यापन के अनुभव विषयों के अध्यापन के साथ-साथ अन्य गतिविधियों से भी प्राप्त होते हैं। अतः यह समस्या सामने आती है कि निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये कौन से विषय पढ़ाये जाने चाहिये एवं पाठ्यक्रमीय और सह-पाठ्यक्रमीय गतिविधियाँ क्या हो? जान का भण्डार बढ़ता जा रहा है और विद्यार्थी के पास समय सीमित है, इसलिये यह समस्या और भी गम्भीर होती जा रही है।

अर्थशास्त्र एक महत्वपूर्ण विषय है, यह हमारे जीवन के प्रत्येक अंग से सम्बन्धित है, शिक्षा के बहुत से उद्देश्यों की इसके अध्ययन से प्राप्ति होती है। इन विशेषताओं के फलस्वरूप इसे माध्यमिक विद्यालय स्तर पर उचित स्थान मिलना चाहिये।

सेकण्डरी एजूकेशन कमीशन 1952-53 की सिफारिशों के आधार पर ग्यारह साल उच्चतर माध्यमिक स्तर की योजना में अर्थशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा। चाहे इन राज्यों की शिक्षा व्यवस्था में हाई-स्कूल और इंटरमिडिएट सर्टिफिकेट दिये जाते रहे हों अथवा हायर सेकण्डरी सर्टिफिकेट। इसके अतिरिक्त विज्ञान टेक्निकल, कृषि एवं गृहविज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिए सामाजिक अध्ययन विषय का पढ़ना अनिवार्य माना गया। सामाजिक अध्ययन विषय के अन्तर्गत इतिहास, भूगोल और नागरिकशास्त्र के साथ अर्थशास्त्र से सम्बन्धित बहुत से पाठ शामिल किये गये।

एजूकेशन कमीशन 1964-66 की संस्तुतियों और राष्ट्रीय-शिक्षा नीति- 1968 के आधार पर 1975 से देश में 10+2+3 प्रणाली को अपनाया गया और इसको अधिकतर राज्यों ने अपना लिया। इस प्रणाली में निम्न माध्यमिक स्तर पर नहीं और दसवीं कक्षाएं जो कि दस वर्षीय सामान्य शिक्षा को पूर्ण करने वाली हैं, अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान के एक हिस्से के रूप में सम्मिलित किया गया और उच्चतर माध्यमिक अथवा +2 स्तर (ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाएं) पर सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में एक वैकल्पिक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया। 1977 में दस-वर्षीय स्कूल के पाठ्यक्रम का सिहांवलोकन (Review) करने के लिये ईश्वर भाई पटेल की अध्यक्षता में एक कमेटी बैठाई गई जिसने यह विचार दिया कि सामाजिक विषय क्षेत्र में बड़ा बोझ है और इसमें केवल इतिहास, नागरिकशास्त्र और भूगोल विषय, (जिनसे कि सामान्य शिक्षा के उद्देश्य परे हो जाते हैं) ही पढ़ाये जाने चाहियें। अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम से हटा दिया गया। हाँ, इसे एक ऐसे वैकल्पिक (Qualifying) विषय के रूप में ले लिया गया जिसके अंक डिविजन में नहीं जोड़े जाते थे। वैकल्पिक (Qualifying) विषयों में अन्य विषय आर्ट्स, होम साइंस, कृषि, कॉमर्स, सामाजिक पुनर्निर्माण आदि थे। चूंकि इन वैकल्पिक (Qualifying) विषयों के अंक परीक्षा परिणाम में जोड़े जाने का प्रावधान नहीं है, इसलिये अर्थशास्त्र विषय का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम हो गयी।

सत्र 1978-79 से इस संस्तुति को सेण्ट्रल बोर्ड ऑफ एजूकेशन, नई दिल्ली ने भी मान लिया।

1963 में N.C.E.R.T ने स्कूल स्तर पर चल रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन करने के लिये एक वर्किंग ग्रुप बनाया और दिसम्बर 1965 में एक अभिलेख "National Curriculum for Primary and Secondary Education-A Framework." तैयार किया

। नई शिक्षा नीति-1988 की प्रमुख बातों को ध्यान में रखते हुए इसे 1988 में संशोधित किया गया। इसके साथ एक और अभिलेख Guideline and Syllabi for Secondary Stage (Class ix-x)- प्रकाशित हुआ। इन सभी अभिलेखों में अर्थशास्त्र की महत्ता को समझते हुए इसे सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के एक अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। फलस्वरूप सेण्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजूकेशन, नई दिल्ली ने सत्र 1989-90 से पुनः अर्थशास्त्र को माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 व 10) के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया है। 1985 में प्रकाशित अभिलेख में माध्यमिक स्तर पर एक कोर्स 'समकालीन भारत' शुरू करने की बात कही गई थी, इसमें भी अर्थशास्त्र से संबंधित बहुत से प्रसंगों को शामिल किया गया था।

उपर्युक्त विवरण से यह बात स्पष्ट होती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर तो अर्थशास्त्र को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है लेकिन इसे माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करने में विवाद रहा है। इस विवाद को समझने के लिये यह आवश्यक है कि उन दलीलों को देखा जाये जो इस विषय को सामाजिक विज्ञान के अंग के रूप में सम्मिलित किये जाने के पक्ष या विपक्ष में दी जाती हैं। इन बातों को विवरण इकाई के अगले भाग में दिया जा रहा है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -1

निम्नलिखित प्रश्नों के संछिप्त उत्तर दीजिये

1. पाठ्यक्रम के सही अर्थ की विवेचना कीजिये।
2. पाठ्यक्रम के मुख्य पहलुओं को लिखिये।
3. उच्चतर माध्यमिक और माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र किन रूपों में पढ़ाया जाता है ?

3.4 अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित लिये जाने के पक्ष में तर्क (Arguments in favour of the Inclusion of Economics in Secondary School Curriculum)

आप अर्थशास्त्र अध्ययन के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक लाभों के बारे में जानते हैं जो कि अर्थशास्त्र विषय की महत्ता को दर्शाते हैं। यहां पर हम उन दलीलों को प्रस्तुत कर रहे हैं जो कि विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों आदि ने दी हैं और जो इस बात को स्पष्ट करती हैं कि आज के समाज और परिस्थितियों में अर्थशास्त्र को माध्यमिक स्तर पर अवश्य पढ़ाया जाना चाहिये।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में केन्द्रिक पाठ्यक्रम (Core Curriculum) के रूप में दस मूल्यों और विषयों पर बल दिया गया हैं, इनमें से समता, पर्यावरण का अनुरंगक्षण, सामाजिक बाधाओं का निवारण छोटे परिवार की मान्यता का निर्वाह और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास ऐसे मूल्य और विषय हैं जिन्हें आसानी से अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु से एकीकृत (Integrate) किया जा सकता है।

- N.C.E.R.T द्वारा प्रकाशित (Curriculum Framework for Teacher Education (2004-ए पृष्ठ 3-5) में दिये गये शाला शिक्षण के लिए निर्धारित उन्नीस उद्देश्यों में से नौ उद्देश्य (4,9,10,11,12,13,14,17 एवं 19) अर्थशास्त्र से संबन्धित हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा-2005 (N.C.E.R.T. -पृष्ठ 57-59, 61,78 तथा 102) पर अर्थशास्त्र विषय के सन्दर्भ देते हुए पाठ्यचर्या के नियोजन में प्रारंभ से ही इसे सम्मिलित करने की सिफारिश की गई है।
- सहायक अध्यापक संघ इंग्लैण्ड (Assistant Masters Association, England) का मत है कि अर्थशास्त्र की बहुत सी आकर्षक विशेषताएं हैं। यह एक जीवित (Alive) विषय है जो कि वर्तमान एवं भविष्य की समस्याओं से संबन्धित है। इसका सबन्ध लोगों से है और यह उनके व्यवहार के एक पहलू का अध्ययन करता है। इसलिये माध्यमिक विद्यालय स्तर पर यह एक बहुत उचित अध्ययन है।
- जॉन व्हाइट (John White) ने अपनी पुस्तक Towards a Compulsory Curriculum में यह विचार व्यक्त किया कि पाठ्यक्रम में उन अनिवार्य विषयों के अध्ययन को सम्मिलित करना चाहिये जो कि बच्चे के हित में हो। उसका योजना में सबसे पहले प्रथम श्रेणी (Category-1) की क्रियाओं में वार्तालाप सम्बन्धी (Communication) कौशल, गणित, प्राकृतिक विज्ञान और सौन्दर्यात्मक गतिविधियाँ और दूसरी श्रेणी की क्रियाओं में विदेशी भाषाएं, पाक शास्त्र (Cooking) पर्वतारोहण (Mountain Climbing) और अर्थशास्त्र का अध्ययन सम्मिलित किया गया है। इतिहास, साहित्य दर्शन और नीति के अध्ययन को उसने बच्चों में जीने के विभिन्न संभावित तरीकों की समझ पैदा करने के लिये आवश्यक बताया। इन विषयों के अतिरिक्त उसने अनिवार्य पाठ्यक्रम में उस समझ को पैदा करने पर जोर दिया जो कि बच्चे में प्राप्त ज्ञान के प्रयोग की क्षमता का विकास कर सके। इस व्यवहारिक समझ (Practical understanding) के लिये सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं और सामाजिक एवं आर्थिक मामलों से सबन्धित प्राकृतिक और भौगोलिक बातों का ज्ञान प्रदान करना चाहिये। बच्चों को उद्योग, आन्तरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, कर प्रणाली एवं आय वितरण आदि की भी जानकारी दी जानी चाहिये।
- जॉन व्हाइट की अनिवार्य पाठ्यक्रम योजना में अर्थशास्त्र एवं उससे संबन्धित विषय वस्तु को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, यह बात बिल्कुल स्पष्ट है।
- टौल्स्टाय (Tolstoy) ने बच्चे के लिए 'विद्यालय से बाहर की दुनिया' (World outside School) ए. एन. व्हाइट ने "ध्यान देने योग्य वर्तमान" (Insistent present) और जॉन ड्यूई (John Dewey) ने बहुतसी बातों के अध्यापन के स्थान पर वस्तुओं के अर्थ (Teach not so much things as meaning of things) पर जोर देने के विचार को प्रस्तुत किया। इन सभी प्रवृत्तियों को पाठ्यक्रम निर्माण में ध्यान में रखा जाता है। अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें यह प्रवृत्तियाँ काफी हद तक पायी जाती हैं।

कीन्स (Keynes) ने अर्थशास्त्र को चिन्तन की एक विधि (Technique of thinking) माना। जो कि विद्यार्थियों को सही निष्कर्ष निकालने में मदद करेगी। इसी प्रकार से मार्शल का विचार है कि -

Economics is not a body of concrete truth, but an engine for discovery of concrete truth. इस प्रकार के विचारों का एक पहलू यह निकलता है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थी को संसार से सामजंस्य करने (To cope with the world) में सहायता प्राप्त होगी और वह एक सफल जीवन व्यतीत कर सकेगा।

3.5 प्रजातन्त्र में अर्थशास्त्र शिक्षण की आवश्यकता

एक प्रजातान्त्रिक देश में सामान्य शिक्षा के आम तौर से चार प्रमुख उद्देश्य माने गये हैं:-

3.5.1. आत्मानुभूति से सम्बन्धित (Self Realization) उद्देश्य

जिसमें कि बातचीत (Speech), पढ़ना, लिखना, अंक ज्ञान, स्वास्थ्य संबंधी आदतें, सार्वजनिक मनोरंजन, बौद्धिक रुचियां, सौंदर्यात्मक रुचियां, चरित्र आदि सम्मिलित होते हैं।

3.5.2. मानवीय संबंधों (Human Relationship) से संबन्धित उद्देश्य

मानवता का आदर, दोस्ती, सहकारिता, घर की सराहना (Appreciation of Home), घर को सवारंना (Home Making), घर में जनतंत्रीय भावना आदि वह मूल्य और आदतें हैं जो कि सामान्य शिक्षा द्वारा पैदा किये जाते हैं।

3.5.3. आर्थिक कार्यक्षमता (Economic Efficiency) सम्बन्धी उद्देश्य :-

- कार्य
- व्यवसायिक सूचना
- व्यवसाय का चयन
- व्यवसायिक कार्यक्षमता
- व्यवसायिक सामजंस्य
- शक्तिगत अर्थशास्त्र
- उपभोक्ता निर्णय (Consumer Judgment)
- क्रय में कार्यक्षमता (Efficiency in Buying)
- उपभोक्ता संरक्षण

3.5.4. नागरिक उत्तरदायित्व (Civic Responsibility) से संबन्धित उद्देश्य:

- सामाजिक न्याय
- सामाजिक समझाबूझ
- आलोचनात्मक निर्णय
- सहनशीलता
- राष्ट्रीय सम्पत्ति का संरक्षण
- विश्व नागरिकता
- कानून पालन
- आर्थिक साक्षरता

- राजनैतिक नागरिकता
- प्रजातंत्र में आस्था

ऊपर शिक्षा के जिन उद्देश्यों का विवरण दिया गया है, उनमें से सभी उद्देश्यों की प्राप्ति में अर्थशास्त्र किसी न किसी रूप में अपना योगदान देता है। विशेषतया आर्थिक कार्यक्षमता और नागरिक उत्तरदायित्व के उद्देश्यों की प्राप्ति में अर्थशास्त्र की विशेष भूमिका नजर आती है।

यह कहा जाता है कि माध्यमिक शाला स्तर पर अर्थशास्त्र को नहीं पढ़ाया जाना चाहिये क्योंकि इसकी विषय सामग्री बहुत कठिन है और इस स्तर पर विद्यार्थियों की मानसिक और बौद्धिक योग्यता और परिपक्वता इतनी नहीं होती कि वह इस विषय को समझ सके। इस प्रकार से सोचना गलत और निराधार है।

ब्रूनर (Bruner) ने अपनी पुस्तक "The Process of Education" में लिखा है कि किसी भी विषय के मूलभूत सम्प्रत्ययों को किसी भी आयु के बच्चों को पढ़ाया जा सकता है। उसका कहना है - 'We begin with the hypothesis that any subject can be taught effectively in some intellectually, honest from at any stage of development.' इसके अतिरिक्त ऐसे प्रयोग किये गये हैं, जिनसे यह प्रतीत होता है कि महत्वपूर्ण आर्थिक तथ्यों, सम्प्रत्ययों और कुशलताओं को विभिन्न आयु एवं योग्यताओं के बच्चों को पढ़ाया जा सकता है। सैनेश (Senesh) की पुस्तक 'Our Working World' में छोटे बच्चों को अर्थशास्त्र से संबंधित तथ्यों को समझाने के बहुत से रुचिकर तरीकों को बताया गया है और इन तरीकों को सफलतापूर्वक प्रयोग भी किया जा रहा है, इनका विचार है कि : - Children on every grade level, with proper motivation, can become excited about the abstract ideas underlying their experience, and that these Ideas can be presented in such a way as to reflect the basic structure of the body of Economics' आर्थिक संघ लन्दन (Economics Association, London), की रिपोर्ट 'The contribution of Economics to General Education' में कहा गया है कि पाठ्यक्रम के सामाजिक एवं राजनैतिक, भाषा सम्बन्धी, गणित सम्बन्धी, वैज्ञानिक, नैतिक सभी पहलुओं में अर्थशास्त्र का योगदान बराबर का तो नहीं है लेकिन यह मानना तर्कसंगत है कि अर्थशास्त्र का योगदान अत्यधिक और महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र शिक्षण से विद्यार्थियों में बहुत सी ऐसी कुशलतायें एवं अभिरुचियां भी पैदा की जा सकेंगी जो कि सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये आवश्यक हैं।

सामान्य शिक्षा में अर्थशास्त्र विषय की भूमिका को स्पष्ट करते हुए रिपोर्ट में निष्कर्ष के रूप में यह विचार व्यक्त किया है

'.....the importance of extending the contribution of Economics to the General Curriculum of the schools can no longer be ignored. If education is to fully prepare school leavers for their future roles in society, provision must be made in the curriculum for all pupils to have the opportunity to develop a basic level of competence in Economics and to acquire at least the socially necessary standard of economic literacy.'

डनिंग (Dunning) का मत है कि अर्थशास्त्र शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान समकालीन विषयों (Contemporary issues) पर आर्थिक निर्णय देना है। (Fostering economic judgement) इसके अतिरिक्त इसके द्वारा आर्थिक सम्प्रत्ययों के चुनाव और इनके प्रयोग की क्षमता भी पैदा होती है। यद्यपि ऐसा करना इस स्तर के विद्यार्थियों की बौद्धिक शक्ति (Intellectual capacity) को देखते हुए कम संभव है, फिर भी इस प्रकार की जितनी क्षमता भी अर्थशास्त्र द्वारा पैदा की जाती है, वह न होने से तो बेहतर है।

3.6 अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के विपक्ष में तर्क (Arguments against the inclusion of Economics in Secondary School Curriculum)

बहुत से विशेषज्ञ अर्थशास्त्र को विशेषतया माध्यमिक विद्यालयों के स्तर पर पढ़ाये जाने के विपक्ष में हैं। उनका मत है कि अर्थशास्त्र अध्यापक द्वारा जिन उद्देश्यों की प्राप्ति होती है, उनकी प्राप्ति तो दूसरे विषयों से हो जाती है, इसलिए विद्यालयी शिक्षा में अर्थशास्त्र शिक्षण की उतनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है, जैसा कि समझा जाता है।

- अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के विपक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं :- - हिस्ट (Hirst) के विचार में अगर मानवीय विज्ञानों को सामान्य शिक्षा के एक हिस्से के रूप में मान लिया जाये और चूंकि अर्थशास्त्र एक मानवीय विज्ञान है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि अर्थशास्त्र शिक्षण न्यायोचित है क्योंकि यह विभिन्न मानवीय विज्ञानों में से एक विषय है जो कि पाठ्यक्रम में सम्मिलित हो सकते हैं। अर्थशास्त्र के अपने विशेष सम्प्रत्यय हैं और उनकी अपनी तार्किक संरचना है लेकिन इसकी पद्धति (Methodology) अनूठी नहीं है बल्कि दूसरे मानवीय विज्ञानों की तरह ही है। अर्थशास्त्र जो सामान्य योग्यताएं विकसित करता है, वह तो समाजशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे विषय भी विकसित कर सकते हैं।
- यह कहा जाता है कि अर्थशास्त्र का अध्ययन बच्चों को एक अच्छा और आदर्श नागरिक बनायेगा। इस प्रकार का कथन उपयुक्त नहीं लगता है। अर्थशास्त्र विद्यार्थियों के व्यवहार को इच्छित दिशा में बदल देगा और इस प्रकार से आदर्श नागरिक की विशेषताओं को पैदा करने में मदद देगा, इस प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति दूसरे सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन से भी हो सकती है।
- अर्थशास्त्र का अध्ययन करने से विद्यार्थी अधिक कार्यक्षमता वाले उत्पादक बन जाते हैं और एक अच्छे उपभोक्ता साबित होते हैं। इस प्रकार की दलील का कोई औचित्य नहीं है। क्या अर्थशास्त्र पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों की उत्पादकता अधिक होती है? फिर अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हुए कुछ अमिरूचियों विकसित होंगी, दूसरे विद्यार्थियों से वह अधिक कार्यक्षम्य है, इस प्रकार की उपकल्पनाओं को कैसे सत्यापित किया जाय।
- अर्थशास्त्र एक ऐसा गतिशील सामाजिक विज्ञान है जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसा कहना मूल्य रहित (Value free) नहीं है। किसी भी विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाते समय उसकी विशेषताओं एवं महत्त्व को अलग से

देखने का कोई फायदा नहीं। इस प्रकार का अभ्यास तो दूसरे विषयों की तुलना में किया जाना चाहिये इसके अतिरिक्त समाज की बढ़ती हुई विषमताओं एवं समस्याओं को देखते हुए सब्जी उगाने से लेकर कराटे (Karate) तक की शिक्षा महत्वपूर्ण है, अर्थशास्त्र ही क्यों?

- यह कहना कि अर्थशास्त्र अध्ययन से बहुत-सा ऐसा ज्ञान मिलेगा जिनसे कि विद्यार्थी अखबार, रेडियो और टेलीविजन पर आर्थिक जन-जीवन से सम्बन्धित खबरों को सही तरह से समझ सकेंगे। यह माना जा सकता है कि अर्थशास्त्र का ज्ञान कुछ सीमा तक इस उद्देश्य की प्राप्ति करने में सहायक है। खबरों और सामाजिक गतिविधियों का एक थोड़ा सा हिस्सा ही आर्थिक पक्षों से संबन्धित होता है, फिर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये राजनीति शास्त्र एवं समाज शास्त्र जैसे विषय भी काफी महत्वपूर्ण हैं।
- अर्थशास्त्र के द्वारा बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है क्योंकि इसके द्वारा बच्चों में आर्थिक मामलों में तर्क करने की क्षमता का विकास होता है और उनमें एक तर्कशील दृष्टिकोण (Rational Outlook) पैदा होता है। यह कैसे कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र इस उद्देश्य की पूर्ति ऐसे ढंग से करता है जो कि दूसरे विषयों द्वारा संभव नहीं है। दर्शन, विज्ञान एवं गणित में बौद्धिक प्रशिक्षण की संभावना और भी अधिक है।
- लार्ड राबिन्स (Lord Robbins) के अनुसार अर्थशास्त्र विद्यालयी बच्चों के लिये एक बहुत कठिन विषय है। आर्थिक समस्यायें पैचीदा हैं उन्हें समझने के लिए आर्थिक सिद्धान्तों और अर्थशास्त्र में प्रयोग किये जाने वाली विश्लेषणात्मक विधियों का ज्ञान आवश्यक हो जाता है जिससे कि विकल्पों का मूल्यांकन तर्क के आधार पर किया जा सके। विद्यालयी स्तर पर बच्चों में इस प्रकार की चिन्तन योग्यता नहीं होती है और वे वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करने और तार्किक निर्णय लेने में बहुत अच्छे नहीं होते हैं।
- इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र अमूर्त बातों (Abstractions) से संबन्धित है और इसकी विषय वस्तु में हमेशा ही तार्किक चिन्तन नहीं पाया जाता है। आर्थिक वस्तुस्थिति को समझना विद्यार्थियों के लिये मुश्किल हो जाता है।
- अर्थशास्त्र की विषय वस्तु से संबन्धित बहुत से विषय विवादास्पद (Controversial) हैं और इनका सम्बन्ध व्यक्ति के राजनैतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों से भी होता है। विभिन्न मूल्यों के अनुसार विषय वस्तु का निरूपण किया जा सकता है। अर्थशास्त्र के अध्यापक का अपना सोचने का अंदाज होता है। विद्यार्थी की जो क्षमताएं इस स्तर पर होती हैं, उनके अनुसार विद्यार्थी को यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि सही उपागम (Approach) क्या है, उसके मस्तिष्क में एक संभ्रम (Confusion) पैदा हो जाता है।
- अर्थशास्त्र को माध्यमिक स्तर पर एकीकृत (Integrated) या अन्तरवैषयिक (Interdisciplinary) सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने में बहुत सी समस्यायें सामने आती हैं। अर्थशास्त्र कौन पढ़ायेगा? अर्थशास्त्र के अध्यापक के अलावा दूसरे अध्यापक इस विषय के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। दल शिक्षण (Team Teaching) की योजना में सभी अध्यापकों में आपस में समझ होना आवश्यक है, जो कि व्यवहार में कठिन समस्या है। एकीकृत सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिये अध्यापक

प्रशिक्षण में एक विशेष पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता होगी । फिर सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र के किन सम्प्रत्ययों को रखा जाये? कितनी इच्छित पाठ्यवस्तु को पाठ्यक्रम में रखा जा सकेगा क्योंकि सभी विषय के विशेषज्ञ अपनी पाठ्य-वस्तु को अधिक से अधिक सम्मिलित करना चाहेंगे ।

- ब्राइन होले (Brain Holley) का विचार है कि अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में पढ़ाना उचित नहीं है । उनके शब्दों में -
- 'Hankering after full fledged economics courses in the lower part of secondary education seems to me to be doing a dis-service both to economics and to education.'
- स्पेइट (Speight) का कहना है कि आज के जमाने में हम सभी अर्थशास्त्री हैं: कोई भी पढ़ा लिखा आदमी जो कि एक अच्छा अखबार ध्यानपूर्वक पढ़ता है, इसी माध्यम द्वारा अच्छी खासी आर्थिक समझ पैदा कर लेता है । फिर अर्थशास्त्र को पाठ्यक्रम में क्यों सम्मिलित किया जाय? अवसर लागत के विष्टिकोण से दूसरे विषय को पाठ्यक्रम से हटाना होगा ।
- Review Committee on the Curriculum for the Ten Year School जो कि 1977 में ईश्वर भाई पटेल की अध्यक्षता में बैठाई गयी थी की रिपोर्ट में अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम से हटा देने की सिफारिश की । इस रिपोर्ट के अनुसार

'We are of the view that one area in which the present scheme is overloaded is in 'Social Studies' or 'Social Sciences'....We have, therefore, recommended definitely that a course in History, Civics and Geography should be included in the scheme as, we believe, that a such course will, with other areas of study be sufficient to provide a broad based general education.'

3.7 निष्कर्ष (Conclusion)

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र को माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का मामला विवादास्पद है । एक विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिये या नहीं यह साबित हो ही नहीं सकता क्योंकि न यह पता लगाया जा सकता है कि विभिन्न विषयों के द्वारा कितने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकी है और न ही यह कि विभिन्न लक्ष्यों एवं उद्देश्यों में एक दूसरे की तुलना में किन को प्राथमिकता देनी है । मेरे विचार में, अर्थशास्त्र के माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष एवं विपक्ष में जो दलीलें दी गयी हैं, उनका तुलनात्मक अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट है कि विपक्ष में जो दलीलें पेश की गई हैं, वह बहुत ठोस नहीं हैं । अर्थशास्त्र को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना ही चाहिये । इसकी महत्ता और योगदान को देखते हुए ही इसे दुबारा पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया

गया है जबकि कुछ वर्ष पूर्व इसे हटा दिया गया था। आवश्यकता इस बात की है कि अर्थशास्त्र शिक्षण का पाठ्यक्रम बहुत समझाकूदा कर बनाया जाये, इससे संबन्धित विभिन्न पहलू स्पष्ट रूप में हो जिससे कि शिक्षा-शास्त्री संतुष्ट हो सकें और यह विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप बन सके।

3.8 शिक्षण में अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध (Correlation of Economics with other Subjects in Teaching)

3.8.1 सह-सम्बन्ध की महत्ता (Importance of Correlation)

शिक्षा एक सफल जीवन बिताने के लिए बड़ी सहायक सिद्ध होती है। विद्यालयों में जो विषय पढ़ाये जाते हैं, वह जीवन के किसी न किसी अंग से संबन्धित होते हैं। ये विषय वास्तव में मनुष्य के उन अनुभवों का परिणाम है जो कि उसने मानवीय जीवन प्रारंभ होने से अब तक प्राप्त किये हैं। मानवीय क्रियाओं में जो अनुभव प्राप्त किये जाते हैं वह एक-दूसरे से सह-संबन्धित होते हैं। जिस विशेष क्रिया का अध्ययन किया जाता है, उससे संबन्धित विषयों के जान से लाभान्वित हुए बिना सही ढंग से पूर्ण अध्ययन सम्भव नहीं है। इसलिये शिक्षा प्रक्रिया में सह-सम्बन्ध की बड़ी महत्ता है। सह-सम्बन्ध विधि में शिक्षक अपने विषय के शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिये अन्य विषयों की विषय वस्तु का प्रसंगानुकूल उपयोग करता है। इस प्रकार की प्रक्रिया अपनाने से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं -

1. सह-सम्बन्ध ज्ञान की प्राप्ति में सहायता करता है और इस प्रकार का प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी होता है। किसी विषय में नया ज्ञान देते समय विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से लाभान्वित होना चाहिये और नये ज्ञान को पूर्व ज्ञान से चाहे वह इसी विषय से सम्बन्धित हो अथवा किसी दूसरे विषय से, सह-सम्बन्धित किया जाना चाहिये।
2. एक विषय का शिक्षण करते समय आवश्यकता के अनुसार सह-सम्बन्ध विधि का प्रयोग करने से अधिगम के अन्तरण में सहायता मिलती है एवं विभिन्न विषयों में ज्ञान की समग्रता का पता चलता है।
3. विद्यालयी पाठ्यक्रम में अनेक विषय सम्मिलित हैं जिससे विद्यार्थियों पर बड़ा बोझ है। सह-सम्बन्ध के द्वारा विषय वस्तु समझने में आसानी होती है और पाठ्यक्रम बहुत बोझ वाली नहीं मालूम देता।
4. सह-सम्बन्ध के द्वारा शिक्षा को व्यवहारिक बनाने में सहायता मिलती है। अर्थशास्त्र को यदि दूसरे विषयों एवं परिस्थितियों से सम्बन्धित करके न पढ़ाया जायेगा तो इसके शिक्षण से व्यवहारिक लाभ न प्राप्त हो सकेंगे। शिक्षा जीवन है इसलिये शिक्षा में जीवन की वास्तविक परिस्थितियों एवं अनुभवों पर जोर दिया जाना चाहिये और शिक्षा को उन से सह-सम्बन्धित किया जाना चाहिये। इसलिये माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रारम्भ आर्थिक क्रिया-कलापों के अध्ययन द्वारा किये जाने पर जोर दिया गया है।
5. सह-समय विधि को अपनाने से विद्यार्थियों में रुचि भी पैदा होती है। विद्यार्थियों को विभिन्न चीजों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है। अर्थशास्त्र के अध्ययन

- से उसे जब जीवन के दूसरे पहलुओं के बारे में भी ज्ञान प्राप्त होता है, तो वह अधिक रूचि लेता है।
6. अर्थशास्त्र को इतिहास, राजनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र जैसे विषयों से सह-सम्बन्धित कर के विद्यार्थियों में सामाजिक गुणों को विकसित किया जा सकता है जो कि विशेषतया एक प्रजातांत्रिक समाज के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक गुण हैं- सहयोग, प्रेम, सहानुभूति, सच्चाई, ईमानदारी, नेतृत्व, सहनशीलता आदि। इस प्रकार से सह-सम्बन्ध द्वारा विद्यार्थियों में विस्तृत सामाजिक चिन्तन का विकास होता है।
 7. चूंकि सह-सम्बन्ध विधि में विद्यार्थियों के अनुभवों, एक विषय के ही पूर्व ज्ञान अथवा दूसरे विषयों में अर्जित ज्ञान से लाभान्वित हुआ जाता है, इसलिये विषय वस्तु को समझाने में शिक्षक को कम समय लगता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -2

निम्नलिखित प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दीजिये

1. अर्थशास्त्र को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में क्यों सम्मिलित किया जाना चाहिए ?
2. सह सम्बन्ध के लाभों का विवरण दीजिये।

3.8.2 सह-सम्बन्ध के प्रकार (Types of Correlation) :

सह-सम्बन्ध मुख्यतया तीन प्रकार से स्थापित किया जा सकता है -

1. शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध (Vertical Correlation)

एक विषय के बहुत से पहलू होते हैं। पाठ्यक्रम बनाने में इन पहलुओं को इस प्रकार से क्रमबद्ध किया जाता है कि विद्यार्थी को विषय का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ज्ञान हो जाये। अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु इसके पांच विशेष भागों-उपभोग, उत्पत्ति, विनियम, वितरण एवं राजस्व पर आधारित है। चूंकि यह पाँचों भाग आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित हैं, इसलिये इनमें सह-सम्बन्ध पाया जाता है।

अर्थशास्त्र के किसी भी पहलू के अध्ययन करने में इन भागों के सह-सम्बन्ध को समझना आवश्यक होता है। इस प्रकार का सह-सम्बन्ध स्थापित करना ही शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध कहलाता है अर्थात् एक विषय के विभिन्न पहलुओं एवं भागों में सह-सम्बन्ध स्थापित करना। इसी प्रकार से किसी प्रकरण को पढ़ाते समय पूर्व ज्ञान का प्रयोग शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध का एक रूप है।

2. क्षैतिज सह-सम्बन्ध (Horizontal Correlation):

ऊपर बताया जा चुका है कि मानवीय अनुभवों पर आधारित विभिन्न विषयों में सह-सम्बन्ध स्थापित करके ही सही एवं समग्र ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। एक विषय को पढ़ाते समय अक्सर दूसरे विषय की विषय वस्तु का हवाला देने की आवश्यकता पड़ जाती है जैसे भारतीय अर्थव्यवस्था के बहुत से पहलुओं के अध्ययन में भूगोल की विषय वस्तु की। इस तरह एक विषय को दूसरे विषयों से संबन्धित करने को क्षैतिज सह-सम्बन्ध कहा जाता है। इस प्रकार का सह-सम्बन्ध आकस्मिक हो सकता है अथवा नियोजित।

माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम निर्माण में अक्सर क्षेत्रीज सह-सम्बन्ध को ध्यान में रखा जाता है। N.C.E.R.T. के प्रलेख 'The Curriculum for the Ten Year School-A Framework' में कहा गया है कि प्रथम से दसवीं कक्षा तक सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम में इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र के विषय होने चाहिये। इनका शिक्षण ऐसे संश्लिष्ट रूप में करने की आवश्यकता होगी कि विद्यार्थी अलग-अलग विषयों की सम्पूर्णता को नष्ट किये बिना ही तथ्यों और समस्याओं के प्रति ठीक-ठाक समझ का विकास कर सकें।

समाजिक विज्ञान के इन विषयों को जो विषयवस्तु अध्ययन के लिये चुनी जायेगी उन्हें पृथक (Isolated) दिमाग न समझ कर अन्तसंबन्धित (Interrelated) समझना चाहिये।

3. जीवन से सह-सम्बन्ध (Correlation with life)

अर्थशास्त्र मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित विषय है। मानवीय जीवन के हर अंग का एक आर्थिक पहलू होता है। अर्थशास्त्र को जीवन से सह-संबन्धित करने का अर्थ यह है कि अर्थशास्त्र से संबन्धित सम्प्रत्ययों, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि को स्पष्ट करते समय उनका सम्बन्ध वास्तविक जीवन से स्थापित किया जाये। इससे विद्यार्थी को इनकी सही जानकारी प्राप्त हो जायेगी और वह इस जान का प्रयोग व्यवहारिक जीवन में पेश आने वाली घटनाओं एवं समस्याओं में कर सकेंगे। विद्यालय में सहकारी भण्डार, केटिन, संचायिका स्कीम आदि चलाकर विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थाओं की जानकारी दी जा सकती है। इसी प्रकार से फार्म, फैक्ट्री बैंक आदि के भ्रमण और सर्वेक्षण द्वारा वे अर्थशास्त्र से संबन्धित विभिन्न सिद्धान्तों प्रक्रियाओं आदि का ठोस एवं स्थायी जान प्राप्त करते हैं।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -3

निम्नलिखित प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दीजिये

1. सह सम्बन्ध कितने प्रकार का होता है?
2. अर्थशास्त्र को जीवन से सह संबन्धित करके पढ़ाने की क्या महत्ता है।

3.9 अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध (Correlation of Economics with other Subjects)

मानवीय व्यवहार एवं क्रियाओं से संबन्धित विभिन्न विषय विकसित हुए हैं। हर विषय की प्रकृति एवं क्षेत्र निश्चित किये गये हैं। अर्थशास्त्र की सीमायें भी स्पष्ट हैं और इसकी अलग एक व्यवहारिक स्थिति है। इसका अर्थ यह नहीं है कि अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता। अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं के आर्थिक पहलू से है। मानवीय क्रियाओं का यह आर्थिक पहलू अन्य पहलुओं को प्रभावित करता है और उनके द्वारा स्वयं भी प्रभावित होता है। मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करने में लगभग सभी विषयों लाभान्वित हुआ जाता है। अर्थशास्त्र हर विषय से सम्बन्धित उन बातों को महत्ता देता है और अपनाता है जो कि मनुष्य की आर्थिक समस्याओं को हल करने से सम्बन्धित होती है।

कुछ ऐसे विषयों से अर्थशास्त्र को सह-संबन्धित करने की आवश्यकता होती है जो कि तार्किक चिन्तन में सहायक हैं जैसे गणित, सांख्यिकी। कुछ ऐसे विषय हैं जो कि आर्थिक

समस्याओं का विश्लेषण एक-दूसरे अंदाज में करते हैं जैसे समाजशास्त्र, भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र, वाणिज्य जैसे विषय अपने विषय वस्तु की प्रकृति के कारण अर्थशास्त्र से निकटतम रूप से सम्बन्धित हैं। नीचे अर्थशास्त्र के इसी प्रकार के विषयों से सह-सम्बन्ध की विवेचना की जा रही है।

3.9.1 अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र (Economics and Sociology) :

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। बहुत से विशेषज्ञ अर्थशास्त्र को अलग से एक विषय न मानकर इसे समाज शास्त्र का एक भाग मानते हैं। परन्तु समाज शास्त्र मानवीय जीवन के आर्थिक पहलू का अध्ययन केवल सामान्य रूप में करता है, जबकि अर्थशास्त्र में इस पहलू का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है और इसलिये अर्थशास्त्र की अपनी महत्ता है।

समाजशास्त्र में मनुष्य के व्यवहार का, समाज के सदस्य होने के नाते, अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार से यह सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म विधि आदि के अध्ययन से सम्बन्धित है और यह समाज की संरचना और प्रक्रियाओं का स्पष्टीकरण करता है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र सहित दूसरे सामाजिक शास्त्रों से संबन्धित सामान्य तथ्यों एवं नियमों की जानकारी देता है, इस प्रकार की जानकारी अर्थशास्त्रियों के लिये बड़ी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि मानवीय व्यवहार के आर्थिक पहलुओं पर राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक और वैधानिक सभी कारकों का प्रभाव पड़ता है। किसी देश की आर्थिक नीति को बनाने एवं समझाने के लिये उस देश की सामाजिक दशाओं रीति-रिवाज और परम्पराओं का समझाना अति आवश्यक होता है। जाति व्यवस्था, संयुक्त-परिवार प्रथा, धर्म-जनसंख्या का दबाव जैसी सामाजिक घटनाओं का हमारे देश के आर्थिक विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप हमारे विकास की गति धीमी रही है। अर्थशास्त्र के अध्ययन में आर्थिक क्रियाओं के विकास, व्यवसाय, आर्थिक संगठन के प्रकार, उपभोग, श्रम, जीवन-स्तर, पूँजी, धन का वितरण, आर्थिक विकास, आर्थिक आयोजन, जनसंख्या कुछ ऐसे विशिष्ट प्रकरण हैं जिनके समझाने में समाज शास्त्र से बहुत सहायता मिलती है।

समाज शास्त्र के अध्ययन में भी अर्थशास्त्र का जान होना अति आवश्यक है क्योंकि आजकल मनुष्य की सभी सामाजिक क्रियाओं पर आर्थिक क्रियाओं का प्रभाव पड़ता है।

3.9.2. अर्थशास्त्र और इतिहास (Economics & History) :

इतिहास द्वारा मनुष्य के संघर्ष विभिन्न क्षेत्रों-सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक में हुई उन्नति का विवरण प्राप्त होता है। इतिहास में भूतकालीन आर्थिक प्रयत्नों एवं क्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है। बहुत से अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र के अध्ययन में ऐतिहासिक विषय वस्तु के प्रयोग करने पर बल देते हैं, इसका उदाहरण चिन्तन का ऐतिहासिक स्कूल (Historical School of Thought) है। अर्थशास्त्र के दो प्रमुख पहलू आर्थिक इतिहास एवं आर्थिक विचारों का इतिहास, अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का स्पष्टीकरण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से करते हैं। आर्थिक इतिहास द्वारा विभिन्न आर्थिक घटनाओं के कारण एवं परिणामों की जानकारी मिलती है और आर्थिक नियमों के निर्माण एवं विवेचन में सहायता मिलती है। भूतकालीन घटनाओं की जानकारी द्वारा वर्तमान आर्थिक पहलुओं के अध्ययन एवं नीतियों के

निर्धारण में आसानी हो जाती है। और कभी-कभी भविष्य में होने वाली प्रवृत्तियों का भी अन्दाज लगाया जा सकता है।

इसी प्रकार आर्थिक विचारों के इतिहास द्वारा पता चलता है कि समाज में हो रहे परिवर्तनों और विकास के साथ-साथ किस प्रकार आर्थिक चिन्तन, सम्प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों का पुनरावलोकन किया गया और इसमें परिवर्तन लाये गये।

इतिहास के अध्ययन में भी अर्थशास्त्र का अध्ययन बड़ी महत्ता रखता है अगर इतिहास के पन्ने उलटे जायें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि विभिन्न कालों में हुए सामाजिक परिवर्तन अधिकतर आर्थिक कारकों के कारण हुए हैं।

3.9.3. अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान (Economics and Political Science) :

अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में एक गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। आरम्भ में इन दोनों का एक साथ ही अध्ययन किया जाता था यहां तक कि कुछ विशेषज्ञ अर्थशास्त्र को राजनैतिक अर्थव्यवस्था (Political Economy) भी कहते थे। राजनीति विज्ञान मनुष्य और राज्य के सम्बन्ध का अध्ययन और अर्थशास्त्र मानवीय व्यववहार के आर्थिक पहलू का अध्ययन करता है। मानवीय - व्यववहार के आर्थिक पहलू पर देश की सरकार एवं देश की राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। अगर राज्य न्यायपूर्ण कल्याणकारी होने के साथ-साथ देश में शान्ति सुव्यवस्था, सुरक्षा का वातावरण स्थापित करने में सफल है तो देश के नागरिक मेहनत एवं लगन के साथ काम करेंगे पैदावार बढ़ेगी और देश समृद्धि एवं विकास की ओर बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त राज्य की नीतियों का देश के उत्पादन, विनियम वितरण तथा उपभोग पर भी प्रभाव पड़ता है। राजनीति विज्ञान के अनेक वाद-पूँजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद, अर्थशास्त्र अध्ययन में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन वादों पर आधारित विभिन्न आर्थिक अवस्थाओं का जन्म हुआ है।

इसी प्रकार से अर्थशास्त्र भी राजनीति विज्ञान को प्रमाणित करता है। किसी देश की आर्थिक स्थिति काफी हद तक वहां की शासन व्यवस्था और आर्थिक नीतियों को प्रमाणित करती हैं। कर प्रणाली, व्यय का ढंग, विदेशी व्यापार सम्बन्धी नीतियां एवं करार, नियोजित अर्थव्यवस्था का अपनाना आदि देश की आर्थिक स्थिति के अनुसार ही निर्धारित होते हैं। इसके अतिरिक्त अक्सर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संघर्षों के पीछे आर्थिक उद्देश्य ही होते हैं।

3.9.4. अर्थशास्त्र और भूगोल (Economics and Geography)

भूगोल मनुष्य और उसके प्राकृतिक वातावरण का अध्ययन करता है। प्राकृतिक वातावरण एवं परिस्थितियों में प्राकृतिक दशायें, जलवायु खनिज एवं वन सम्पत्ति आदि सम्मिलित की जाती हैं।

अर्थशास्त्र में भूमि उत्पत्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। भूमि का अभिप्राय उन सब पदार्थों एवं शक्तियों से होता है जो धनोत्पादन में सहायक होते हैं और वे प्रकृति की मनुष्य को निःशुल्क देन हैं जैसे जमीन, जलवायु प्रकाशताप पर्वत, वर्षा आदि। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि ये दोनों विषय सह-संबन्धित हैं।

भूगोल का एक महत्वपूर्ण भाग आर्थिक भूगोल है। बहुत सीमा तक एक देश की आर्थिक परिस्थितियाँ वहां की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करती हैं। आर्थिक भूगोल अर्थशास्त्र का ही एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्राकृतिक साधनों का उचित प्रयोग करने से ही किसी देश का आर्थिक विकास हो सकता है। कृषि, मिट्टी, वर्षा, जलवायु नदियां आदि से प्रभावित होती हैं और उद्योगों का विकास प्राकृतिक साधनों के सही प्रयोग पर निर्भर करता है।

अर्थशास्त्र शिक्षण में विशेषतया भारतीय अर्थव्यवस्था के विषय में जानकारी देने में भूगोल बहुत सहायक सिद्ध होता है।

3.9.5. अर्थशास्त्र और वाणिज्य शास्त्र (Economics and Commerce).

वाणिज्य शास्त्र में कारोबार, उद्योग, व्यापार एवं इनके संगठन और इन क्रियाओं से सम्बन्धित शक्तियों एवं संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार से अर्थशास्त्र से संबन्धित बहुत से विषय वाणिज्य शास्त्र के कुछ विभाग जैसे लेखा प्रणाली अर्थशास्त्र अध्ययन में बड़ी सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त मुद्रा, साख एवं साखपत्र, बैंक, व्यापार-आन्तरिक एवं विदेशी, व्यवसाय संगठन के रूप, राष्ट्रीय लेखा प्रणाली, उद्योग आदि अर्थशास्त्र के ऐसे प्रकरण हैं जिनमें वाणिज्य शास्त्र के साथ सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक हो जाता है।

3.9.6. अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान (Economics and Psychology) :

मनोविज्ञान में मनुष्य के मन एवं मस्तिष्क से संबन्धित सभी क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जैसे इच्छा, आवश्यकता, सुख-दुख, त्याग, संतोष। इन मनोवेगों से प्रेरित कार्यों का अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जाता है। अर्थशास्त्र के बहुत से सिद्धान्त एवं नियम मनोविज्ञान पर आधारित हैं जैसे तुष्टिगुण-हरासनियम, सम-सीमान्त तुष्टिगुण नियम, मांग व पूर्ति के नियम आदि। आर्थिक समस्याओं को हल करने में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। श्रम की कार्य क्षमता बहुत कुछ मनोवैज्ञानिक बातों पर निर्भर करती है। इसीलिये कुछ अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र को मनोवैज्ञानिक विज्ञान और मानवीय सुख-दुख का गणितात्मक अध्ययन बताया है।

अर्थशास्त्रियों द्वारा मनोविज्ञान भी प्रभावित होता है। मनुष्य के मानसिक विचार बहुत कुछ आर्थिक दशाओं एवं परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। मानसिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए आर्थिक परिस्थितियों का समझना आवश्यक होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान एक दूसरे से सह-सम्बन्धित हैं।

3.9.7. अर्थशास्त्र और गणित एवं सांख्यिकी (Economics and mathematics & Statistics)

गणित एवं सांख्यिकी द्वारा आर्थिक अनुमानों में शुद्धता लाने का प्रयास किया जाता है। इसके प्रयोग से अर्थशास्त्र एक विज्ञान माना जाता है। कूनो जेवन्स, एजवर्थ, पेटेटों जैसे अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक नियमों के प्रतिपादन एवं आर्थिक समस्याओं को हल करने में गणित का काफी उपयोग किया है। गणितीय अर्थशास्त्र (Mathematical Economics) और अर्थनीति (Economics) अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण विषय है।

बी.ए. के अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम में 'अर्थशास्त्रियों के लिए गणित एवं अर्थशास्त्र में सांख्यिकी जैसे पर्चों को सम्मिलित किया गया है। सांख्यिकी वह विज्ञान है जो संख्यात्मक तथ्यों के संकलन, वर्गीकरण और सारणीयन के आधार पर घटनाओं की व्याख्या वर्णन तथा तुलना करता है। अर्थशास्त्र में अक्सर समस्याओं का विश्लेषण इसी प्रक्रिया को अपना कर किया जाता

है। इसीलिए सांख्यिकी को +2 स्तर पर अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में रखा गया है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न -4

निम्नलिखित प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दीजिये।

1. अर्थशास्त्र का किन विषयों से सम्बन्ध हो सकता है?
2. आप अर्थशास्त्र का राजनीति विज्ञान, भूगोल एवं सांख्यिकी से किस प्रकार सह सम्बन्ध स्थापित करेंगे? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये हैं।

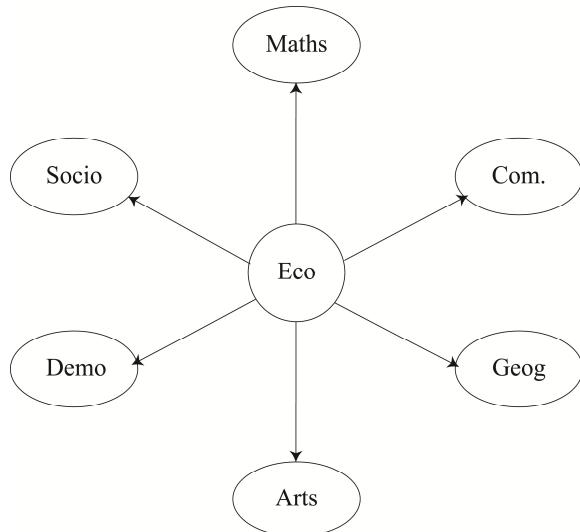
3.10 पाठ्यक्रम के एकीकृत एवं विशिष्टीकृत उपागम (Integrated and Specialised Curriculum)

ऊपर लिखे विवरण के अनुसार अर्थशास्त्र विषय का अन्य कई विषयों के साथ सह-सम्बन्ध होता है। अतः इसे दो प्रकार से पढ़ाया जा सकता है। एक तो अन्य विषयों के साथ एकीकृत करके, दूसरा एक अलग विषय के रूप में। दोनों का अलग-अलग वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है:-

3.10.1 एकीकृत पाठ्यक्रम

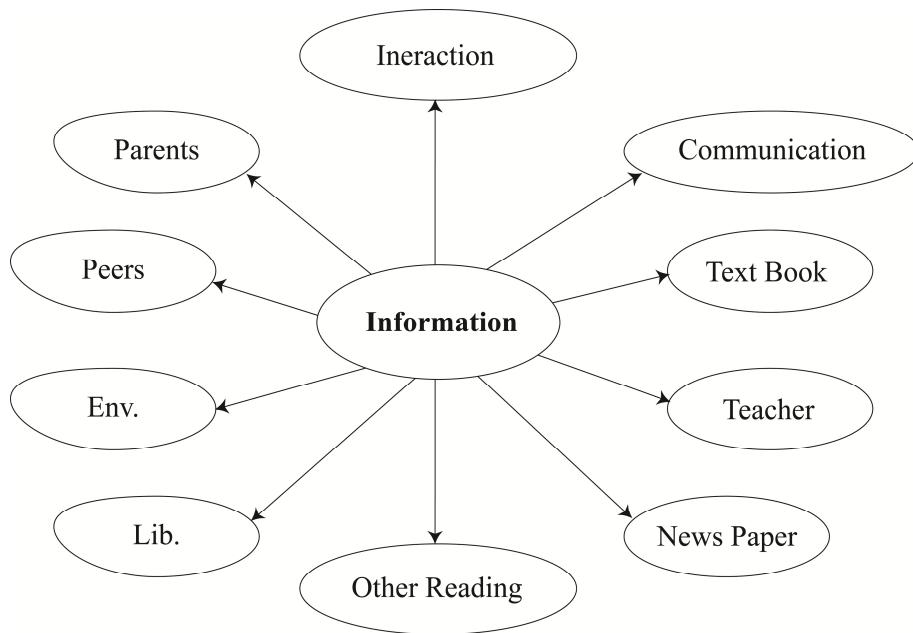
जब दो या दो से अधिक विषय क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है तब एकीकृत पाठ्यक्रम की संरचना होती है। जैसे - गणित/अंग्रेजी एवं जनसंख्या शिक्षा। इसमें विभिन्न विषय क्षेत्रों के विचारा/ज्ञान/प्रकरणों के संश्लेषण से विषय-वस्तु एकाकार हो जाती है। ज्ञान की समग्रता की दृष्टि से यह आवश्यक भी है। जेसा कि Bredekamp (1987, P3)' ने कहा भी है कि "Children's learning does not occur in narrowly defined subject area". एकीकृत पाठ्यक्रम अधिगम को विभिन्न क्षेत्रों में समयों की समझ का विकसित करता है।

पाठ्यक्रम का एकीकृत स्वरूप विषयों के सह-सम्बन्ध से भिन्न होता है। सह-सम्बन्ध में एक विषय को ज्ञान का दूसरे विषय का ज्ञान में सहयोग है। जैसे भूगोल के ज्ञान का भारतीय अर्थव्यवस्था को समझने में सहयोग।



Integrating Curricula :

Marion Brady-Howard Brady-Our students are faced with a bunch of information. The quality of information grows geometrically.



If you throw enough mud on the wall, some of it is bound to stick.

किन्तु यह सत्य है कि जितना समय व धन सीखने-सिखाने पर खर्च किया जाता है उसकी तुलना में अधिकांश विस्मृत हो जाता है। अतः मस्तिक में अधिकाधिक सूचनाएँ संग्रहित करना शिक्षा नहीं होती।

Education is "able to make more sense of self, of others, of the world, of experience, of life.

Making more sense of life means making more sense of immediate experience, more sense of the real world, right here, right now.

उदाहरण स्वरूप एक क्रिया है - क्रय करना। मान लो -

तृतीय विश्व में बनाए गये फर्नीचर्स का क्रय करने का उद्देश्य रख जाये। तो साथ हमें बताना होगा कि वहाँ ईंधन (Fossil Fuels) का प्रयोग अधिक किया जाता है। जिससे तापमान में वृद्धि होती है। इसका प्रभाव जलवायु पर पड़ता है। प्राकृतिक आपदाओं की संभावना बढ़ती है। परिणामस्वरूप मानव जीवन को खतरा बढ़ता जाता है।

उक्त समस्त को समग्र रूप से बताने से भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, मौसम विज्ञान, अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि समाहित हो जाते हैं। अतः विषयों को सीमा में बिना बॉर्डे हम अधिक अच्छा संज्ञान विकसित कर पाते हैं।

The boundaries between school subjects are barriers to understanding.

अतः ज्ञान की समग्रता को ध्यान में रखते हुए एकीकृत पाठ्यक्रम बेहतर होता है।

इस प्रक्रिया से छात्र

- संबन्धित सूचनाओं को पहचानते हैं।
(Identify relevant information)
- सम्बन्धित महत्व की गहराई को स्थापित कर पाते हैं।
(Establish relative levels of significance)
- तथ्यों को विशेष सन्दर्भ में रख पाते हैं।
(Place date in context)
- विभिन्न टुकड़ों में प्राप्त सूचनाओं में सम्बन्ध स्थापित कर पाते हैं।
(Find relationship between various pieces of information)
- सार्थकता को जटिल वास्तविकताओं को एक-दूसरे से जोड़ते हैं।
(Tie every thing together to make sense of complex reality).

3.10.2 विशिष्टीकृत पाठ्यक्रम

अर्थशास्त्र के विशिष्टीकृत पाठ्यक्रम से हम सब परिचित हैं। जैसे बैंक, राजकोषीय नीति, मौद्रिक प्रणाली, सूक्ष्म अर्थशास्त्र, कृषि अर्थशास्त्र, श्रम अर्थशास्त्र, आद्योगिक अर्थशास्त्र, आदि विशिष्ट रूप से अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए ही बनाये जाते हैं। ये एक विषय के अंश पर गहन ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रस्तावित होते हैं।

3.11 सार-संक्षेप (Summary)

पाठ्यक्रम विद्यालय द्वारा बच्चों को प्रदान किये जाने वाले सोच-समझ कर नियोजित किये गये सीखने के समस्त अनुभवों का योग होता है। माध्यमिक विद्यालय स्तर तक इसे सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में पढ़ाया जाता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर यह ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

अर्थशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के पक्ष एवं विपक्ष में काफी तर्क दिये जाते रहे हैं। किन्तु निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र विषय को पढ़ाने की आवश्यकता है तथा किसी भी स्तर पर अर्थशास्त्र का ज्ञान दिया जा सकता है। इसे एकीकृत एवं विशिष्टीकृत रूप से पढ़ाया जा सकता है।

अर्थशास्त्र का भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, गणित, वाणिज्य एवं कला से गहरा सम्बन्ध होता है।

3.12 इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

1. पाठ्यक्रम किसे कहते हैं, विद्यालयी पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र के स्थान की विवेचना कीजिये।

What is Curriculum ? Explain the place of Economics in School Curriculum.

2. अर्थशास्त्र को विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में क्या तर्क दिये जाते हैं?

What arguments are being given in favour to include economics in school syllabus.

3. "अर्थशास्त्र एक अनूठा विषय नहीं है।" ऐसा क्यों कहा जाता है?

"Economics is not a unique subject." Why it is said so ?

4. "माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र विद्यार्थियों के लिये एक कठिन विषय है।" इस कथन का स्पष्ट कीजिये।

"Economics is a difficult subject." Explain this statement.

5. अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध स्थापित करने के महत्व को समझाइये।

Explain the importance of correlation of economics with other subject.

6. सह-सम्बन्ध के भेदों को सोदाहरण समझाइये।

Exemplify the types of corelationship ?

7. आप अर्थशास्त्र का सह-सम्बन्ध अन्य विषयों से कैसे स्थापित करेंगे।

Would you establish the relationship of economics with other subjects?

3.13 सन्दर्भ साहित्य (Reference Books)

1. Assistant Masters Association, **The Teaching of Secondary School Economics**, London : Cambridge University Press, 1974.
2. Daughtrey, A.S. : Methods of Basic Business and Economics Education. Cincinnate : South-Western Publishing Co. 1965.
3. Lee, N. : Teaching Economics, London : Heinemann Educational Books, 1965.
4. Guidelines and Syllabi for Secondary stage (Class ix-x) N.C.E.R.T, New Delhi 1988.
5. National Curriculum for Primary and Secondary Education : A Framework, Revised Version, N.C.E.R.T, New Delhi 1988.
6. National Policy on Education-1986 Ministry of Human Resource Development, New Delhi, 1986

7. Oliver, J.M., The Principles of Teaching Economics, London : Heinemann Educational Books, 1973
8. Report of an adhoc committee of the Economics, Association : "The Contribution of Economics to General Education, London, 1977.
9. Report of the Review Committee on the curriculum for the Ten Year School, Ministry of Education & Social Welfare, New Delhi, 1977
10. Robinson, K and Wilson, R. Extending Economics within the curriculum, London : Routledques Kegan Paul, 1977
11. Whitehead, D. J. (Ed.) Curriculum Development in Economics, London : Heinemann Educational Books, 1974.
12. Lee, N. Teaching Economics, London : Heinemann Educational Books, 1975.
13. सिंह, रामपाल, अर्थशास्त्र का शिक्षण, अजमेर. शब्द संचार, 1969
14. त्यागी, गुरुशरण दास, अर्थशास्त्र शिक्षण, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, 1973
15. Whitehead, D, (Ed.) Curriculum Development in Economics London :Heinemann educational Books, 1974.
16. Daughtrey, A.S. : Methods of Basic Business and Economics Education. Cincinnate : South-Western Publishing Co. 1965
17. Guidelines and Syllabi for Secondary stage (Class ix=x) N.C.E.R.T. New Delhi, 1988
18. Lee, N. Teaching Economics, London : Heinemann educational Books, 1975.
19. National Curriculum for Primary and Secondary Education : A Framework, Revised Version, N.C.E.R.T. New Delhi, 1988
20. Report of the Seminar on Teaching of Economics, R.B.S. College of Educationa, Agra, 1972-73.
21. Robinson, K. and Wilson, R. Extending Economics Within the Curriculum, London, Routledge Kegan Pane, 1977.
22. The Curriculum for the Ten Year School A Frame Work, N.C.E.R.T. New Delhi, 1975.

इकाई-4

अर्थशास्त्र में सम्प्रत्यय मानचित्र

(Concept Map in Economics)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

-
- 4.1 इकाई के उद्देश्य
 - 4.2 सम्प्रत्यय का अर्थ
 - 4.3 सम्प्रत्यय मानचित्र
 - 4.4 सम्प्रत्यय मानचित्र सिखाने के सोपान
 - 4.4.1 सम्प्रत्यय मानचित्रण की पूर्व तैयारी
 - 4.4.2 सम्प्रत्यय मानचित्रण की व्याहूँ रचना
 - 4.4.3 सम्प्रत्यय मानचित्रण का उदाहरण
 - 4.5 कक्षा-कक्ष शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण के लाभ
 - 4.6 सम्प्रत्यय मानचित्रण का ज्ञानोपयोग
 - 4.7 सार-संक्षेप
 - 4.8 मूल्यांकन प्रश्न
 - 4.9 सन्दर्भ पुस्तकें
-

4.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस इकाई के अध्ययन से आप निम्न बिन्दु समझ सकेंगे :-

- 1. सम्प्रत्यय मानचित्र का अर्थ
 - 2. सम्प्रत्यय मानचित्रण के सोपान
 - 3. सम्प्रत्यय मानचित्रण के कक्षा-कक्ष शिक्षण में लाभ
 - 4. सम्प्रत्यय मानचित्रण के उपयोग
-

4.2 सम्प्रत्यय का अर्थ (Meaning of Concept)

एडविन टॉपलर ने अपनी पुस्तकों में विभिन्न स्थानों पर 'सीखा कैसे जाये' (How to Learn) पर विचार इंगित करते हुए इसे शिक्षा व्यवस्था के मूल उद्देश्य के रूप में स्थापित किया। इसके पूर्व एवं बाद में भी विभिन्न समितियों, शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने इसी बिन्दु पर बल दिया। अतः छात्र कैसे सीखे तथा छात्र के सीखने के लिए अध्यापक शिक्षण सामग्री कैसे तैयार करें जिससे सार्थक अधिगम (Meaningful Learning) हो सके? इसके लिए सम्प्रत्यय मानचित्र महत्त्वपूर्ण शैक्षिक उपकरण है।

सम्प्रत्यय किसी वस्तु या घटना में निरंतरता एवं परस्पर सम्बन्ध के रूप में समझा जा सकता है। 'भारत का मानचित्र' उसके विषय, रंग, आकार, विभिन्न भागों व आपस में सम्बन्ध पड़ौसी देश, व सीमाओं के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। एक मेज या कुर्सी को उसके आकार-प्रकार, (ऊँचाई, लम्बाई-चौड़ाई, बनावट व उपयोग के सम्बन्ध में समझा जा सकता है। इन

संबन्धो व सातत्व के अभाव में मानचित्र अथवा मेज-कुर्सी का सम्प्रत्यय स्पष्ट नहीं हो सकता। नाम (मेज/कुर्सी/मानचित्र) तो उसका लेबल मात्र होता है। सम्प्रत्यय नहीं।

4.3 सम्प्रत्यय मानचित्र (Concept Map)

विभिन्न सम्प्रत्ययों के मध्य सार्थक सम्बन्ध की तार्किक रूप में अभिव्यक्ति ही सम्प्रत्यय मानचित्र होता है।

उदाहरण के लिए - 'मिट्टी उपजाऊ हैं' में 'मिट्टी' एवं 'उपजाऊ' दो भिन्न तल हैं। इनके मध्य सबक को स्पष्ट करते हुए सम्प्रत्यय मानचित्र बनाने के लिए सम्बन्धात्मक क्रमबद्धता देनी होंगी।

यह एक तकनीक है जो सम्प्रत्यय एवं उसके तार्किक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करती है।

4.4 सम्प्रत्यय मानचित्र सीखने के सोपान (Steps of Concept Mapping)

सम्प्रत्यय मानचित्र सीखने के लिए सम्प्रत्यय की प्रकाशित एवं भूमिका की जानकारी होना आवश्यक है।

4.4.1 सम्प्रत्यय मानचित्रण की पूर्व तैयारी (Preparation of Concept Mapping)

यह सम्प्रत्यय मानचित्रण का पूर्वाभ्यास है जिससे छात्रों की तथ्यों को पहचानने की मानसिक तत्परता विकसित हो।

1. श्यामपट्ट पर वस्तु एवं घटनाओं को सम्मिलित करते हुए पेन, कपड़े, पुस्तक, खिलौने, टी.वी. वस्तुएं तथा देखना, धोना लिखना, पढ़ना, खेलना आदि घटनाक्रम या क्रिया है।
2. छात्रों को किसी वस्तु का नाम देकर उसके बारे में क्या समझते हैं? पूछें। शायद वे अलग-अलग अर्थ लेते हों या अलग-अलग तरह से अभिव्यक्ति करते हों। ये विभिन्न अर्थ ही सम्प्रत्यय बनाते हैं।
3. क्रम संख्या 2 की तरह अब क्रियाओं व घटनाओं के बारे में पूछें।
4. अब सम्प्रत्ययों एवं घटनाओं को जोड़ने वाले शब्दों (कड़ियों) के बारे में सूची बनानी है- और, मैं, उपयोग होता है, हो सकता है, बताता है, जैसे शब्दों को संग्रहित करायें।
5. सम्प्रत्यय को संज्ञा के रूप में न लेकर सातत्य एवं घटनाक्रम के रूप में समझाने का अभ्यास चाहिए।
6. छोटे-छोटे वाक्यों की संरचना के द्वारा दो सम्प्रत्ययों को जोड़ने का प्रयास करें।
7. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक में से एक पृष्ठ/पेरेग्राफ का अध्ययन करवाकर उसमें से मूल सम्प्रत्यय को चिन्हित करें। उनकी संख्या एक से अधिक हो सकती है।

4.4.2 सम्प्रत्यय मानचित्रण की रचना (Strategies for Concept Mapping)

1. सार्थक पेरेग्राफ का अध्ययन
2. महत्वपूर्ण सम्प्रत्ययों की सूची निर्माण
3. इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण/केन्द्रीभूत सम्प्रत्यय की पहचान।
4. सर्वाधिक महत्वपूर्ण से कम महत्वपूर्ण के कम में सम्प्रत्ययों को पुनः क्रमबद्ध करना।
5. यह क्रमबद्धता अलग-अलग हो सकती है।

6. विभिन्न सम्प्रत्ययों/घटनाओं को जोड़ने के लिए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए मानचित्र निर्माण करना ।
7. प्रारम्भ में उन शब्दों से छोटे-छोटे मानचित्र बनाये जायें ।
8. फिर परस्पर सम्बन्धों को देखते हुए छोटे मानचित्रों को जोड़ने का प्रयास करें ।
9. समझ के आधार पर फिर एकीकृत/समग्र मानचित्र का निर्माण करें ।
10. बनाये गये सम्प्रत्यय मानचित्र में सम्भावित परिवर्तन पर विचार-विमर्श करें ।
11. निर्मित मानचित्र का स्तरानुसार मूल्यांकन करें ।
12. अभ्यास के लिए अन्य सम्प्रत्यय चिन्हित कर मानचित्रण करवाये ।

स्व-मूल्यांकन -1

निम्नलिखित प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दीजिये ।

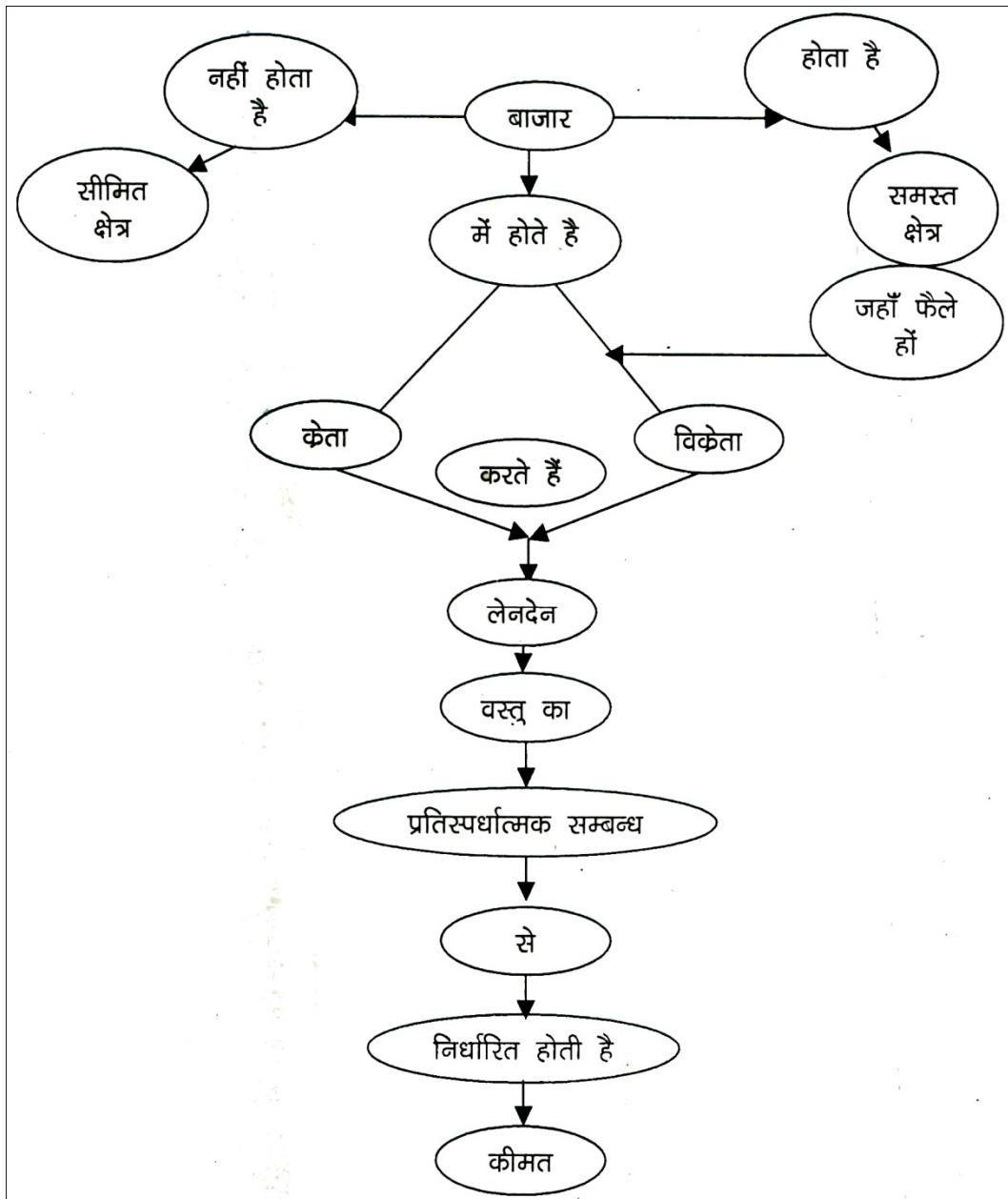
1. सम्प्रत्यय किसे कहते हैं
2. सम्प्रत्यय मानचित्र किसे कहते हैं
3. सम्प्रत्यय मानचित्र बनाने के पूर्व अभ्यास में आप अपनी कक्षा में क्या करेंगे ?
4. सम्प्रत्यय मानचित्र बनाने के क्या चरण हैं?

4.4.3 सम्प्रत्यय मानचित्रण का उदाहरण (Example for Concept Mapping)

1. सार्थक पेरेग्राफ का अध्ययन :-
2. महत्वपूर्ण सम्प्रत्ययों की सूची निर्माण -
बाजार, स्थान विशेष, समस्त क्षेत्र, क्रेता, विक्रेता, प्रतिस्पर्धात्मक सम्पर्क, वस्तु लेन-देन, कीमत ।
3. सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्प्रत्य- बाजार ।
4. महत्व के अनुसार सम्प्रत्ययों की क्रमबद्धता :-
बाजार - विक्रेता - क्रेता - वस्तु - प्रतिस्पर्धात्मक - कीमत समस्त क्षेत्र - स्थान विशेष
5. विभिन्न सम्प्रत्ययों को जोड़ने के लिए शब्द -
'मैं', 'का', किसी, से, उस, तथा, 'फैले हुए', 'और' आदि ।

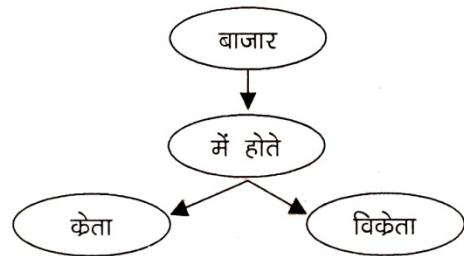
6. मानचित्र का निर्माण

(अ)

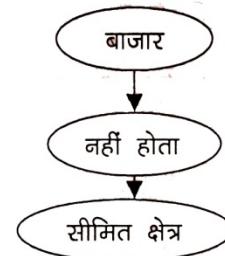
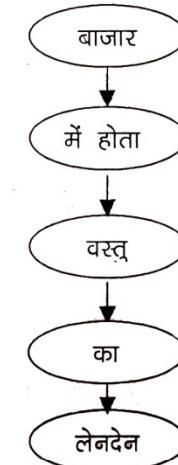


(ब) छोटे-छोटे मानचित्रों का निर्माण :-

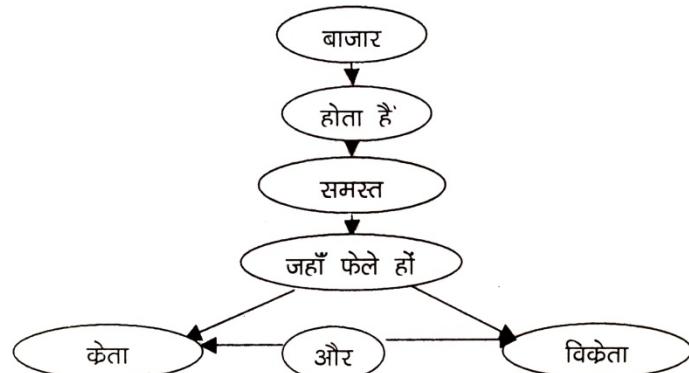
1.



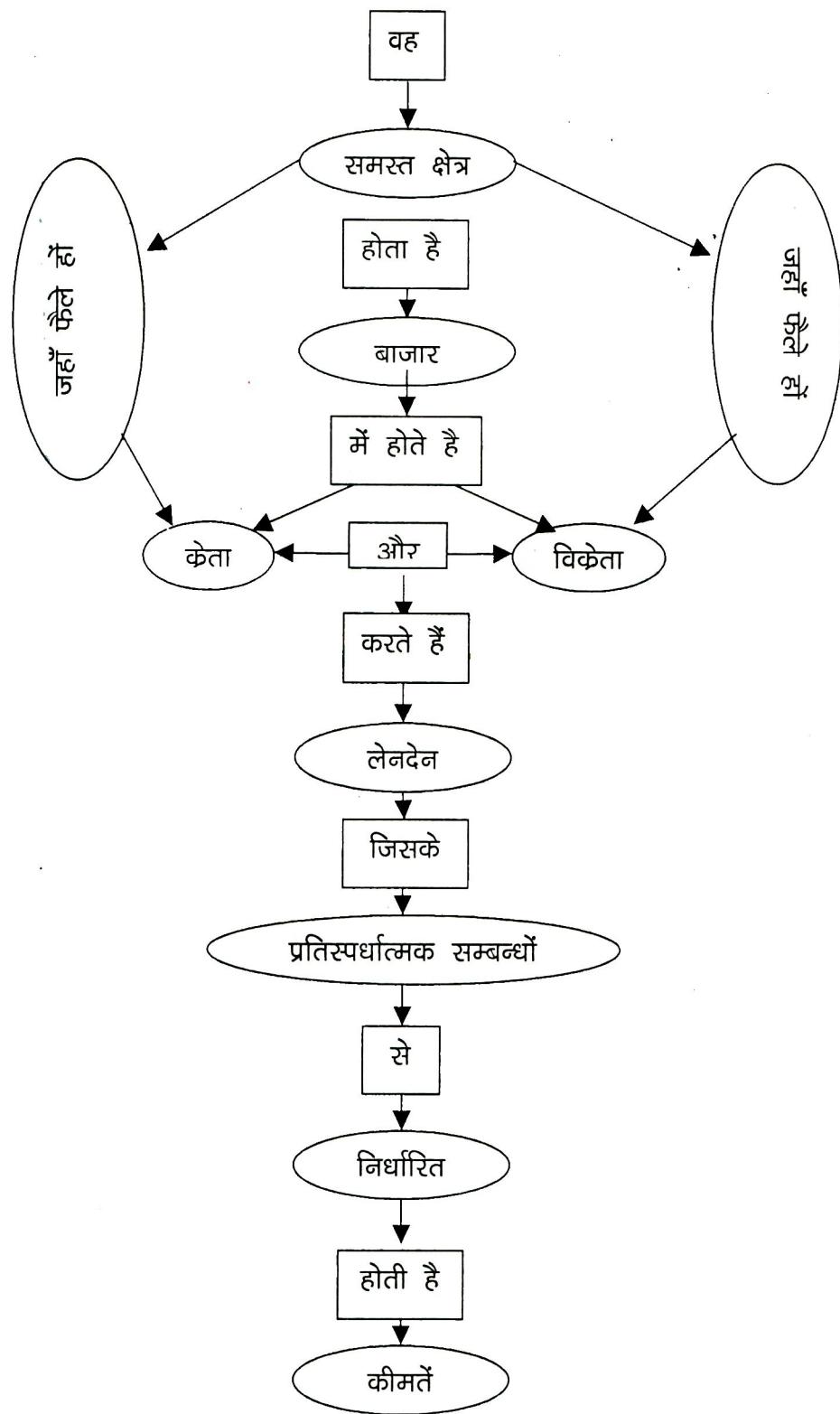
2.



4.



(स) एकीकृत मानचित्र का निर्माण :-



उक्त निर्मित एकीकृत / समग्र मानचित्र को छात्र समूह विचार विमर्श कर अन्य वैकल्पिक मानचित्र/मानचित्रों का निर्माण सकते हैं। उक्त समस्त क्रिया को 2-4 छात्रों के समूह में करवाना उपयोगी होता है।

4.5 कक्षा-कक्ष शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्रण के लाभ (Advantage of Concept Mapping in Classroom Teaching)

1. सम्प्रत्यय मानचित्र बनाने से छात्र के अपने विवेक व भौतिकतापूर्ण सम्बन्ध व नये अर्थ भी सम्मुख आ जाते हैं जो सामान्य रूप से ध्यान में न हों। अतः यह सृजनात्मकता को पोषित करता है।
 2. विभिन्न सम्प्रत्यय मानचित्र व उनके संबन्धों में सातत्य समझते हुए छात्र को महत्व की अनुभूति होती है जिससे उसकी समझ में गहराई आती है।
 3. सम्प्रत्यय मानचित्र बनाने में छात्र को अपने ज्ञान को अभिव्यक्त करते हुए चित्रण करना होता है। जिसमें शिक्षक एवं छात्र में विचार-विमर्श भी होता है। इस क्रिया में जहाँ तार्किक संबंध नहीं हो पाता उसका कारण तथा भ्रामक धारणाएं सामने आ जाती हैं तथा उनमें संशोधन हो जाता है।
 4. सम्प्रत्यय मानचित्र 2-3 छात्रों के समूह विचार-विमर्श द्वारा निर्मित किये जाते हैं। इससे कक्षा में जीवन्त वातावरण निर्मित होता है।
 5. इसमें बालक ने जो पूर्व में समझ रखा है उसका भरपूर उपयोग होता है तथा उसके आधार पर ही नये सम्प्रत्ययों का विकास होता है।
 6. किसी भी सम्प्रत्यय के अर्थ का संयोजन एवं आन्त धारणाओं को दूर करने के लिए शिक्षण में सम्प्रत्यय मानचित्र का उपयोग कर सकते हैं।
 7. सम्प्रत्यय मानचित्र से पाठ्यक्रम में विषय-वस्तु के नियोजन एवं संगठन के लिए सूचनाओं एवं उदाहरणों का चयन उपयुक्त रूप से हो पाता है।
 8. सम्प्रत्यय मानचित्र का उपयोग अवबोध एवं ज्ञानोपयोग के मूल्यांकन के रूप में सहजता से किया जा सकता है।
-

4.6 सम्प्रत्यय मानचित्र का ज्ञानोपयोग (Application of Concept Mapping)

(1) सार्थक अधिगम

छात्र क्या जानते हैं, सीखने में यह अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। जो कुछ छात्र अभी तक जानता है उसी से नये ज्ञान को सम्बन्धित करने से अधिगम सार्थक एवं प्रभावी होता है। यही सम्प्रत्यय निर्मित करने का प्रारम्भिक बिन्दु होता है। आसुबेल ने अपनी पुस्तक Educational Psychology : A Cognitive View (1978) में इस पर अत्यधिक बल दिया है। सम्प्रत्यय मानचित्रण से छात्र जो कुछ जानता है उसकी अभिव्यक्ति कर पाता है। इसमें शिक्षक को प्रारम्भ में छात्र को सहयोग करना होगा जिससे :-

- छात्र मुख्य सम्प्रत्ययों का सही रूप से चयन कर सके।

- सबनिधित सम्प्रत्ययों में संजानात्मक संरचना का प्रयास कर सके ।
 - विभिन्न सम्प्रत्ययों में क्रमबद्ध एवं अच्छे सम्बन्धों को स्थापित कर सके ।
- (2) सम्प्रत्यय मानचित्र छात्र के सीखने का क्रम होता है
- विभिन्न सम्प्रत्ययों को क्रमबद्ध रूप से जोड़कर जो मानचित्र बनता है उसकी क्रमबद्धता इस तरह की होती है कि छात्र उसी से सम्प्रत्यय को समझ कर प्रयोग कर सकता है । तार्किक चिन्तन व ज्ञान के उपयोग के लिए सही क्रमबद्धता आवश्यक होती है।
- (5) समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में लिखित रचनाओं का अध्ययन
- सम्प्रत्यय मानचित्रण से विभिन्न प्रकार के समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में पढ़े जाने वाले लेखों को संक्षिप्त में नोट कर के समझ सकते हैं तथा स्वयं के पास रेकॉर्ड कर भावी प्रयोग के लिए रख सकते हैं । शिक्षा में विभिन्न अवसरों पर अपनी अभिव्यक्ति (मौखिक/लिखित) को प्रभावी बनाने के लिए नवीनतम् सूचनाओं/सम्प्रत्यय को आत्मसात करते रहने के लिए यह उपयोगी है । अर्थात् इससे आजीवन सीखना संभव है ।
- (6) प्रपत्र लेखन (Writing Paper)
- छात्रों को विषय-वस्तु के प्रभावी संगठन एवं मौलिकता पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए सम्प्रत्यय मानचित्रण सहयोगी होता है । पहले जिस विषय पर प्रपत्र लिखना है उसके लिए नियोजन करना होता है । सम्मिलित किये जाने वाले छोटे-छोटे सम्प्रत्ययों व घटनाओं की सूची बना कर एक क्रमबद्धता देते हुए सम्प्रत्यय मानचित्र बना लिया जाये । इसके पश्चात् प्रपत्र का लेखन करने से लेख सहज एवं प्रभावी बन सकेगा ।

4.7 सार-संक्षेप (Summary)

सम्प्रत्यय किसी वस्तु या घटना में निरन्तरता एवं परस्पर समझा के रूप में समझा जाता है । कोई भी नाम वस्तु लेबल मात्र होता है - सम्प्रत्यय नहीं । विभिन्न सम्प्रत्ययों के मध्य सार्थक सम्बन्ध की तार्किक रूप में अभिव्यक्ति ही सम्प्रत्यय मानचित्र होता है ।

सम्प्रत्यय मानचित्रण करने के पूर्व उसकी तैयारी करनी पड़ती है । किसी भी विषय-वस्तु में निहित सम्प्रत्ययों की सूची बना ली जाये । फिर उसे तार्किक कम से अव्यवस्थित कर दिया जाये । फिर उसमें सम्बन्धों को लिखते हुए प्रवाह चार्ट (Flow Chart) के रूप में विकसित कर ले । इस प्रक्रिया में सम्पूर्ण प्रत्यय स्पष्ट हो जाता है । इस अध्याय में इसका उदाहरण भी दिया गया है ।

इसके प्रयोग से छात्रों के ज्ञान में स्थायित्व व गहराई आती है । अधिगम में सार्थकता आती है । विभिन्न प्रकार की स्थितियों-पाठ का सार समझाने, क्षेत्रीय अध्ययन का सार ग्रहण करने, पत्र-पत्रिकाओं के लेखों को समझाने, स्वयं लिखने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है ।

4.8 इकाई का मूल्यांकन प्रश्न (Evaluation of the Unit)

1. सम्प्रत्यय मानचित्र क्या होता है? आप अर्थशास्त्र में इसका उपयोग क्यों करना चाहेंगे?
What is Concept Map ? Why would you like to use in Economics Teaching ?

2. अर्थशास्त्र के किसी एक प्रकरण से समस्त सोपानों का प्रयोग करते हुए सम्प्रत्यय मानचित्र बनाएं।

Draw a Concept Map. Using all steps from any one topic to Economics.

4.9 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Novak, J. D. & Gowin, D.B.(1994) : "Learning how to Learn" N.Y., Cambridge University Press.
2. Asubel, D.P.(1963), "The Psychology of Meaningful Verbal Learning." N.Y., Grune & Stratation.
3. Asubel, D.P., Navak & Hanesian (1978), Educational Psychology : A Cognitive View, 2nd ed. N.Y. : Holt Rinhart & Winton.
4. Bloom, Benjamin S.(1965), Taxanomy of Educational Objectives : The Classification of Educational Goods, Handbook : Cognitive Comain, N.Y. Mckay.

इकाई-5

अर्थशास्त्र विषय की शिक्षण पद्धतियों एवं उपागम (Approaches and Teaching Methods of Economic Subject)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

5.1	इकाई के उद्देश्य
5.2	शिक्षण विधि चयन को प्रभावित करने वाले कारक
5.3	अर्थशास्त्र शिक्षण ही विधियों एवं उपागम
5.3.1	व्याख्यान विधि
5.3.2	पाठ्य-पुस्तक विधि
5.3.3	योजना विधि
5.3.4	समस्या समाधान विधि
5.3.5	विचार-विमर्श विधि
5.3.6	निरीक्षित अध्ययन विधि
5.4	अर्थशास्त्र शिक्षण में विशिष्ट कौशल
5.4.1	परस्पर समूहिक संवाद संबंधी कौशल
5.4.2	सम-सामयिक क्रियाओं के आयोजन संबंधी कौशल
5.4.3	सम-सामयिक घटनाओं/समाचारों का उपयोग करने का कौशल
5.4.4	महत्वपूर्ण आर्थिक स्थितियों के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरूकता संबंधी कौशल
5.4.5	आर्थिक जीवन से सम्बन्धित मूल्यों के विकास संबंधी कौशल
5.5	सार-संक्षेप
5.6	इकाई का मूल्यांकन
5.7	सन्दर्भ पुस्तकें

5.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र शिक्षण विधि के चयन के कारकों को समझ सकेंगे।
- अर्थशास्त्र शिक्षण की विभिन्न परम्परागत एवं आधुनिक विधि के पदों को समझ कर उपयोग कर सकेंगे।

शिक्षण विधि शिक्षक द्वारा किया जाने वाला वह व्यवहार है जो किसी विषय को सिखाने के लिए कक्षा में किया जाता है। यह शिक्षक की योग्यता एवं विषय की प्रकृति को देखते हुए परिवर्तित होता रहता है। इस समय का विवरण आगे प्रस्तुत है।

5.2 शिक्षण विधि चयन को प्रभावित करने वाले कारक (Variables/Factors affecting the selection of teaching methods)

शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को सीखने में मदद की जाती है। सीखने की प्रक्रिया को निर्देशित करने के लिए शिक्षक द्वारा अपनायी गयी कार्यप्रणाली को शिक्षण विधि कहा जाता है। इस प्रकार से विधि वह प्रक्रिया है जो सीखने के आयोजन, निर्देशन एवं मूल्यांकन से संबन्धित होती है। लेकिन कोई ऐसी एक विधि नहीं है, जिससे कि विद्यार्थियों को बहुत अधिक सिखाया जा सके बल्कि बहुत से उपागम (Approaches/Strategies) विधियाँ और प्रविधियाँ (Techniques) हैं जिनके द्वारा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाया जाता है। उपागम एक सामान्य योजना होती है, जिसके विभिन्न स्थितियों में अपनाने के लिए विभिन्न विधियों की आवश्यकता होती है, विधियों के लिये विभिन्न प्रविधियों की।

Wesley ने विधि के सात प्रमुख तत्व बताये हैं जिसमें कि शिक्षण प्रक्रिया के सभी पहलू सम्मिलित होते हैं। ये तत्व हैं :

1. बातचीत करना
2. चित्र
3. प्रदर्शन
4. संकेत
5. लेखन
6. पाठन
7. निर्देशन

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है, यह उद्देश्य तभी प्राप्त हो सकता है जबकि शिक्षण प्रभावशाली हो। यह बात हमेशा विवादास्पद रही है कि अच्छे शिक्षण के लिये विषय-वस्तु की पूर्ण जानकारी (Mastry) होना अधिक महत्वपूर्ण है अथवा प्रभावशाली विधियाँ अपनाना।

विषय-वस्तु का समुचित ज्ञान तो आधार है ही, अगर ठीक प्रकार से इसको प्रस्तुत न किया गया तो निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव नहीं। एक अच्छे शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों और उनके प्रयोग से संबन्धित सभी पहलुओं की जानकारी रखना आवश्यक है। रियाज शाकिर खान के शोध अध्ययन "Students' Perception of Teachers" में बारहवीं कक्षा के अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की वृष्टि में एक सफल अध्यापक की बतायी गयी 16 विशेषताओं में प्रथम तीन वरीयतायें इस प्रकार हैं-

1. उचित रणनीति (Strategis) द्वारा पाठ को रुचिकर तथा प्रभावशाली बनाता है: प्रभावशाली ढंग से बात करता है, अच्छी भाषा बोलता है, सरल भाषा में बातों को

समझाता है, सन्देहों को दूर करता है, विद्यार्थियों के सहयोग को बढ़ावा देता है, कक्षा में विचार-विमर्श करने का अवसर देता है और विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करता है।

2. विषय के अनुसार उपयुक्त विधियों और प्रविधियों को प्रयोग करता है और पढ़ाने की कला अच्छी प्रकार जानता है।

3. पढ़ाये जाने वाले विषय की विषय-वस्तु का जान रखता है। विषय को भलीभांति जानता है, पाठ्यक्रम में निर्धारित विषय सामग्री से उच्च स्तर का जान रखता है, पढ़ाये जाने वाले विषय से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी रखता है। विद्यार्थियों द्वारा पूछे गये विषय से सम्बन्धित कठिन प्रश्नों का उत्तर देता है।

उपर्युक्त विवरण से शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षण विधियों की भूमिका एवं महत्व स्पष्ट है। इसलिये शिक्षक को सोच-समझाकर स्थितियों के सन्दर्भ में शिक्षण विधियों का चयन करना चाहिये, इसके लिये निम्नलिखित प्रमुख कारकों का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

5.2.1 सबसे पहली बात है शिक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखना। प्रमुख शिक्षण उद्देश्य जानार्जन, अवबोधन, प्रयोग, कौशल, अभिरुचि एवं अभिवृद्धि से संबन्धित होते हैं। जो विधियाँ जानार्जन उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाती हैं, आवश्यक नहीं कि दूसरे उद्देश्य भी इन्हीं विधियों से प्राप्त हो जाएं। कुछ विधियाँ विचारों के स्पष्टीकरण के लिये उपयुक्त हैं, दूसरी नये जान को प्रस्तुत करने के लिए, विद्यार्थियों को किसी कार्य का तरीका बताने के लिये, उनको प्रेरित करने के लिये, उनमें रुचि एवं अभिवृत्ति उत्पन्न करने के लिये प्रयोग की जाती हैं।

5.2.2 शिक्षण विधि का चयन करने में विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिये। विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर विद्यार्थी की आयु एवं सामाजिक, बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक परिपक्वता भिन्न होती है और साथ में उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि भी। प्रभावशाली शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को अपने विद्यार्थियों से अनुकूलित करते हैं। वे ऐसी विधियों को प्रयोग में लाते हैं जो कि विद्यार्थी में रुचि पैदा करती है और ये न बहुत कठिन और न ही आसान होती है। हर विद्यार्थी की अपनी योग्यता, क्षमता, रुचि एवं सीखने की विधि होती है, इसलिये न केवल विद्यार्थियों की सामान्य प्रकृति वरन् एक समूह एवं उससे प्रत्येक विद्यार्थी की विशेषताओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

5.2.3 शिक्षक विभिन्न कक्षाओं एवं एक ही कक्षा के विभिन्न वर्गों को पढ़ाता है। प्रत्येक समूह की अपनी विशेषताएँ होती हैं। एक शिक्षण विधि एक समूह के लिये अच्छी, दूसरे के लिये अप्रभावी सिद्ध हो सकती है। इसलिये शिक्षण विधि के चयन में समूह विशेष को ध्यान में रखना चाहिये।

5.2.4 यह भी देखना होगा कि विद्यालय एवं समाज का परिवेश (Environment) कैसा है और एक विधि के प्रयोग करने में आवश्यक सामग्री एवं साधन उपलब्ध हैं या नहीं। शिक्षक को विद्यालय और विद्यालय के आसपास के प्राकृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व

सांस्कृतिक परिवेश को समझना होगा और देखना होगा कि इनमें से किन तत्वों को विषय-वस्तु से सह-संबन्धित किया जा सकता है।

- 5.2.5 शिक्षण विधि का चयन करते समय यह जानना भी आवश्यक होता है कि विद्यार्थी कैसे सीखते हैं? विद्यार्थियों की सीखने की इच्छा, विधि, योग्यता आदि में अन्तर पाया जाता है। इन में से कुछ अन्तर तो अन्तरंग (Innate) होते हैं, लेकिन बहुत कुछ ये सीखने के कौशल पर निर्भर करते हैं। इसलिये शिक्षक को विद्यार्थी को यह बताना चाहिये कि वह विषय का मनन किस प्रकार करे और सीखने के लिये किस प्रकार निजी विधि का विकास करे तथा अपने एकत्र किये या खोजे हुए जान को किस प्रकार समजित करे। शिक्षक को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि बालक काम करके और स्वयं खोज करके बेहतर ढंग से सीखता है, न कि तथ्यात्मक जान को निष्क्रिय रूप से प्राप्त करके। इसी खोज की ओर प्रवृत्त करने वाली क्रियालक और सञ्जनात्मक प्रक्रिया से ही बच्चे में रुचि उत्पन्न होती है, उसे आनन्द मिलता है और उसका ध्यान तुरन्त आकर्षित होता है। सीखने की स्थितियों की योजना बनाते समय शिक्षक को सीखने के कुछ सिद्धान्तों को तय करना चाहिये। May V. Seegoe ने अपने लेख 'Principles of Learning and Teaching Applied to Economics' में निम्नलिखित सीखने के सिद्धान्तों को ध्यान में रखने पर बल दिया है-

1. सीखने की इच्छा
2. प्रेरणा
3. क्रिया एवं समस्या समाधान
4. सीखने का वातावरण-समस्या समाधान से सम्बन्धित सामग्रियाँ और साधन उपलब्ध होने चाहिये।
5. भावनात्मक सहयोग (Emotional Support) शिक्षक विद्यार्थी को सीखते समय भावनात्मक एवं बौद्धिक आधार प्रदान करे
6. विद्यार्थी ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचे जो कि उसे संतुष्ट कर सके।

- 5.2.6 विषय-वस्तु और इसकी संरचना के अनुसार ही शिक्षण विधियों का चयन करना चाहिये। अर्थशास्त्र में वर्णनात्मक अथवा विश्लेषणात्मक पहलू हैं, अर्थशास्त्र की शाखाओं (व्यष्टि एवं समष्टि अर्थशास्त्र) से संबन्धित विभिन्न पहलुओं के शिक्षण में विभिन्न विधियों को अपनाना होगा। इसके अतिरिक्त माध्यमिक स्तर एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य और उन्हीं के अनुसार विषय-वस्तु भी भिन्न है। इनके सन्दर्भ में ही विधियाँ तय होनी चाहिये।

- 5.2.7 अन्त में स्वयं शिक्षक, उसका व्यक्तित्व, बौद्धिक क्षमता, ज्ञान, उसके विशेष कौशल एवं सीमाएं भी विधियों के चयन को प्रभावित करती हैं। कोई भी दो शिक्षक एक तरह के नहीं होते हैं। जो विधि एक शिक्षक के लिए उपयुक्त हो सकती है, दूसरे के लिये वही अनुपयुक्त। शिक्षक की अपनी शिक्षण शैली (Teaching Style) होती है। अच्छा हो, यदि इसमें लचक और अनुकूलन हो, जिससे कि स्थितियों के अनुसार उचित विधियों का प्रयोग शिक्षक कर सके।

एक कुशल शिक्षक को ऊपर वर्णित सभी कारकों को शिक्षण विधियों के चयन में ध्यान रखना चाहिये। इस प्रकार ही वह शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है। यद्यपि व्यवहार में, उसे इस सम्बन्ध में बहुत से निर्णय कक्षा में ही स्थितियों के अनुसार लेने होते हैं, इन बातों के बारे में सोचकर, एक योजना बनाने से वह व्यवस्थित रूप से शिक्षण कार्य कर सकेगा और नई उत्पन्न स्थितियों में भी सही निर्णय ले सकेगा।

स्व-मूल्यांकन -1

1. शिक्षण विधि से आप क्या समझते हैं?
2. शिक्षण विधि एवं शिक्षण उद्देश्यों के अन्तसम्बन्ध कि व्याख्या कीजिये
3. शिक्षण विधि कि चयन करने में विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं विशेषताओं का ध्यान में रखना क्यों आवश्यक हैं ?

5.3 अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियाँ एवं उपागम (Methods and Approaches of Teaching Economics)

अर्थशास्त्र के शिक्षण में बहुत सी विधियों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ तो परम्परागत विधियों (Traditional Methods) होती हैं जो कि शिक्षक केन्द्रित होती है। शिक्षक पाठ्य-सामग्री इस तरीके से प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थी को जानकारी प्राप्त कर इसे याद करने में उसकी मदद। फिर नोट्स बनाने में सरलता हो जिससे कि वह पाठ्य-वस्तु को बाद में सीख ले। शिक्षक ही तय करता है कि कौनसा ज्ञान, दर्शन या सिद्धान्त उसे प्रस्तुत करना है। व्याख्यान विधि पाठ्य-पुस्तक विधि प्रमुख परम्परागत विधियाँ हैं।

दूसरे प्रकार की विधियाँ आधुनिक अथवा अनौपचारिक शिक्षण विधियाँ (Informal Methods) हैं, जो कि बाल-केन्द्रित हैं न कि शिक्षक अथवा पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित। विद्यार्थी पढ़ता है, विचार-विमर्श करता है, सुनता है, विश्लेषण करता है, लिखता है और चिन्तन करता है, शिक्षक विद्यार्थी की योग्यताओं और प्रयत्नों के अनुसार उसका निर्देशन करता रहता है। आधुनिक शिक्षण विधियों में प्रमुख हैं : योजना, समस्या, विचार-विमर्श, आगमन व निगमन, समाजीकृत अध्ययन एवं निरीक्षित अध्ययन विधि। अर्थशास्त्र शिक्षक को आधुनिक अथवा अनौपचारिक शिक्षण विधियों को ही अधिकतर प्रयोग करना चाहिये। इन विधियों में इस बात पर जोर दिया जाता है कि सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी सक्रिय भाग ले और स्वयं सीख व खोज सके। सीखने के मनोवैज्ञानिक आधारों को ध्यान में रखकर ही शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र विषय में क्या जानना है" (Knowing what) के बजाय "कैसे जानना है" (Knowing how) अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। जमलदमें के शब्दों में अर्थशास्त्र एक विधि है न कि एक सिद्धान्त (Doctrine) एवं मस्तिक का तन्त्र (Apparatus) है, एक चिन्तन की प्रविधि है। इसलिये परम्परागत विधियाँ अर्थशास्त्र शिक्षण में काफी नहीं हैं। फिर अर्थशास्त्र के बदलते हुए उद्देश्यों के सन्दर्भ में बहुत सी ऐसी कुशलताओं पर बल दिया जाता है जो कि अनौपचारिक विधियों द्वारा ही पैदा की जा सकती है, जैसे विभिन्न पुस्तकों, तालिकाओं, रेखांचित्रों, सर्वेक्षणों आदि से ज्ञान प्राप्त करना।

उपर्युक्त विवरण से यह न समझ लेना चाहिये कि परम्परागत विधियों की कोई महत्ता रह ही नहीं गयी है, उनकी महत्ता के बारे में दृष्टिकोण अवश्य बदल गया है। तथ्यों का ज्ञान तो अब भी महत्वपूर्ण है, बिना इसके न तो मूलभूत संप्रत्ययों एवं प्रविधियों की कुशलता (Mastery) प्राप्त हो सकती है और न ही बौद्धिक कौशल का विकास हो सकता है। हाँ, तथ्यों को कण्ठस्थ करने (Memorization) को अच्छा नहीं माना जाता है।

नीचे अर्थशास्त्र शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण विधियों का विवरण दिया जा रहा है :-

5.3.1 व्याख्यान विधि (Lecture Methods)

व्याख्यान विधि में एक शिक्षक बात करता है और विद्यार्थी सुनते हैं। इस प्रकार से इस विधि में अध्यापक सक्रिय और विद्यार्थी निष्क्रिय रहते हैं। व्याख्यान विधि को बहुत से शिक्षाशास्त्री कथन विधि (Telling Methods) के नाम से भी पुकारते हैं। लेकिन व्याख्यान और कथन में अन्तर पाया जाता है। व्याख्यान विधि में एक प्रमुख विचार का, जो कि एक प्रश्न अथवा समस्या के रूप में लिया गया है, का स्पष्टीकरण या व्याख्या की जाती है। कथन के द्वारा साधारण तथ्यों और घटनाओं के बारे में सूचना प्रदान की जाती है। इस प्रकार से कथन व्याख्यान का एक भाग हो सकता है।

व्याख्यान के प्रकार

व्याख्यान विधि अधिकतर उच्च कक्षाओं में शिक्षण के लिये प्रयोग की जाती है। विद्यालयों के लिये इसे अच्छा नहीं समझा जाता है, विशेषकर जब से बाल केन्द्रित क्रियाओं की महत्ता बढ़ गयी हैं। शिक्षण एक पेचीदा प्रक्रिया है, इसको सफल एवं प्रभावशील बनाने के लिए सभी प्रकार की विधियों का प्रयोग करना होगा। हर विधि के अपने गुण एवं अवगुण हैं। इसके अतिरिक्त व्याख्यान के कुछ ऐसे प्रकार (Kinds) एवं विचरण हैं (Varaitions) हैं जिनसे कि इस विधि को रूचिपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है व विद्यार्थी भी सक्रिय हो सकते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

(1) विचार विमर्श (Lecture Discussion) व्याख्यान विधि का एक प्रमुख विचरण है जिसे कि विद्यालय स्तर पर प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षक कुछ समय के लिये विषय से सम्बन्धित एक मुख्य पहलू पर बोलता है। फिर कुछ मिनटों के लिये विद्यार्थियों को वाद-विवाद का अवसर देता है जिसमें कि अधिकतर विद्यार्थी ही बोलते हैं, शिक्षक केवल विद्यार्थियों की कही हुई बातों को सम्बन्धित करता है या संक्षिप्त स्पष्टीकरण करता है। इस प्रकार के वाद-विवाद का अवसर देने से व्याख्यान का तारतम्य नहीं टूटता है (अगर ठीक ढंग से इसे नियोजित किया गया हो) और साथ में विद्यार्थियों को प्रस्तुत की जा रही पाठ्य-वस्तु के बारे में सोचने एवं पाठ विकास में सम्मिलित होकर सक्रिय रहने का अवसर मिलता है। शिक्षक को इस विधि में कालांश के दौरान कम से कम दो बाद-विवाद का अवसर देना चाहिये।

(2) व्याख्यान विधि का एक रूप प्रश्न - व्याख्यान (Question Lecture) हो सकता है, जिसमें कि शिक्षक कालांश का अधिकतर भाग व्याख्यान में उपयोग करता है जो कि विद्यार्थियों के प्रश्नों के प्रत्युत्तर में होता है। शिक्षक प्रत्येक प्रश्न का उत्तर संक्षेप में व्याख्यान के रूप में देता है। प्रश्न-व्याख्या-वाद-विवाद का विवरण न होकर व्याख्यान

का विवरण है, क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों से अधिक अन्तःक्रिया न करके उनके प्रश्नों के द्वारा व्याख्यान के कुछ बिन्दुओं का फिर से एवंष्टीकरण करता है। इसमें विद्यार्थियों का पाठ विकास में सहयोग (Invosvucorrespong) भी होता है क्योंकि उनमें प्रश्नों के उत्तर शिक्षक द्वारा दिये जाते हैं।

- (3) एक तरीका यह भी हो सकता है कि अध्यापक बीच-बीच में विद्यार्थियों से विशिष्ट प्रश्न पूछ लेता है या तैयार सामग्री को पढ़ने के लिये कहता है: इस विधि को व्याख्यान-पठन (Lecture Recitation) विधि कहा जाता है। यह विधि प्रश्न व्याख्यान विधि से उलटी है क्योंकि इसमें शिक्षक प्रश्न पूछता है और विद्यार्थी जो जानते हैं या तैयार करते हैं, उसके बारे में बता देते हैं।

व्याख्यान का नियोजन एवं व्याख्यान देना :

व्याख्यान देने के पहले इसकी एक स्पष्ट रूपरेखा बना लेनी चाहिये। रूपरेखा बनाने में कक्षा स्थितियों विषय-वस्तु और विद्यार्थियों की योग्यता को ध्यान में रखना चाहिए। व्याख्यान तैयार करने में इसका उद्देश्य और क्षेत्र तय कर लेना चाहिए व पाठ्य-वस्तु का तार्किक विकास सोपानों के अनुसार करना चाहिये। सब कुछ न सम्मिलित करके मुख्य बिन्दुओं पर जोर देना चाहिये। व्याख्यान नियोजन में यह भी देखना चाहिये कि जहां सम्भव हो प्रश्न पूछे जा सकें, प्रत्यक्ष उदाहरण दिये जा सकें, शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जा सकें, इन्हीं प्रविधियों को अपना कर व्याख्यान को रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है व विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। व्याख्यान का एक संक्षिप्त विवरण भी तैयार करना चाहिये जिसे कि अन्त में प्रस्तुत करना चाहिये।

व्याख्यान देते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये :

- व्याख्यान देने के लिये तैयार किये नोट्स में अपने संदर्भ के लिये विभिन्न संकेत दीजिये कि कहां कैसे क्या करना है? इससे एक ओर तो आपकी कक्षा में कार्य प्रणाली ठीक ढंग से चलती रहेगी और आप विभिन्न पहलुओं के बारे में स्पष्ट होंगे व आत्म विश्वास से व्याख्यान दे सकेंगे।
- व्याख्यान में भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिये।
- आपकी आवाज संतुलित होनी चाहिये, स्थितियों के अनुसार इसमें जोर होना चाहिये।
- जहां सम्भव हो व्याख्यान के साथ अन्य विधियों का प्रयोग करें, प्रश्न पूछें, श्यामपट्ट एवं अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग करें।
- व्याख्यान को इस प्रकार से प्रस्तुत करें कि विद्यार्थी सोचने, खोज करने आदि के लिये प्रेरित हो सकें।
- किसी भी समय चर्चाधीन विषय से दूर न हटे।
- अगर आपको ऐसा लगता है कि कोई भ्रम अथवा नीरसता का वातावरण पैदा हो रहा है, तो उचित ढंग से इसे दूर कीजिये।
- पुनरावृति का प्रावधान भी रखिये।
- व्याख्यान के प्रारम्भ में विद्यार्थियों को स्पष्ट कीजिये कि आप क्या बताने जा रहे हैं और अन्त में यह कि आपने क्या बताया है?

व्याख्यान विधि का प्रयोग कब किया जाये?

व्याख्यान विधि का प्रयोग निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जा सकता है।

- ◆ एक सामान्य दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए ।
- ◆ विद्यार्थियों को प्रेरित एवं उनमें रुचि उत्पन्न करने के लिये ।
- ◆ नयी पाठ्यक्रम अथवा इकाई को प्रस्तावित करने के लिये ।
- ◆ संक्षेपण के लिये ।
- ◆ कम समय में अधिक बातों को बताने के लिये ।
- ◆ जटिल पाठ्यक्रम, सम्प्रत्ययों, प्रवृत्तियों गलियों एवं प्रक्रियाओं के स्पष्टीकरण के लिये ।
- ◆ ऐसी जानकारी देना जो कि विद्यार्थी स्वयं प्राप्त नहीं कर पाते हैं ।
- ◆ कार्य निर्धारण (Assignments) के बारे में बताने के लिये ।

व्याख्यान विधि के गुण :

- बोले हुए शब्दों की अपनी महत्ता है। शिक्षक अपने बोलने के तरीके व हावभाव से ही जानने वाली बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है, जिससे विद्यार्थी इसे भलीभांति समझ सकते हैं।
- व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षक कम समय में ज्यादा पाठ्यवस्तु प्रस्तुत कर सकता है।
- इस विधि के द्वारा पाठ्यवस्तु को एक संगठित एवं तार्किक दृष्टि से प्रस्तुत किया जा सकता है।
- इस विधि में शिक्षक को यह मालूम होता रहता है कि विद्यार्थी कितना समझ सके हैं। व्याख्यान के ऐसे अंशों को जो कि विद्यार्थी नहीं समझ पाये हैं, उन्हें दोहराया जा सकता है या दूसरे ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।
- व्याख्यान विधि विद्यार्थियों को सुनने का अनुभव प्रदान करती है जिससे कि उनमें दूसरे के दृष्टिकोणों एवं विचारों को सुनने एवं समझाने की अभिवृत्ति पैदा होगी।
- चूंकि इस विधि में शिक्षकों को काफी तैयारी करनी पड़ती है, इस कारण प्रस्तुत की गयी पाठ्यवस्तु एक अच्छे स्तर की होती है।
- ज्ञानात्मक पहलुओं के शिक्षण के लिये यह एक अच्छी विधि है।

व्याख्यान विधि के दोष :

- व्याख्यान विधि शिक्षक केन्द्रित विधि हैं। इसमें विद्यार्थी की निष्क्रिय भूमिका रहती है।
- इस विधि में एक स्तर पर जाकर कक्षा में नीरसता का वातावरण पैदा हो जाता है।
- यह केवल सुनने से सम्बन्धित होती है जिससे कि अधिगम और ग्राह्यता सीमित होता है।
- व्याख्यान विधि छोटी कक्षाओं और कमजोर विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त नहीं है।
- व्याख्यान विधि के अधिक उपयोग से शिक्षक व्याख्यान की तैयारी के लिये बहुत सी पुस्तकों एवं सामग्री का अध्ययन नहीं कर पाता है जिससे कि व्याख्यान प्रभावशाली नहीं बन पाता है।
- शिक्षक को अगर दिन में कई कक्षाओं में इस विधि का प्रयोग करना हो तो उस पर बहुत बोझ पड़ता है और उसकी कार्य क्षमता प्रभावित होती है।

स्व-मूल्यांकन-2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. व्याख्यान विधि विचार-विमर्श के लिये किस प्रकार से प्रयोग में लाई जाती है?
2. व्याख्यान विधि का प्रयोग किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जा सकता है?
3. व्याख्यान विधि की क्या कमियाँ हैं?

5.3.2 पाठ्य-पुस्तक विधि (Text Book Method) :

पाठ्य-पुस्तक विधि शिक्षण की एक पुरानी विधि है। इस विधि में पाठ्य-पुस्तक के द्वारा, जिसमें कि पाठ्य विषय के प्रकरणों का विश्लेषण होता है, विद्यार्थी को ठोस ज्ञान देने का प्रयास किया जाता है। इस विधि में पाठ्य-पुस्तक ही समस्त क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु होती है। पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग विभिन्न तरीकों से दूसरी शिक्षण विधियों में भी किया जाता है। वेस्टे के मतानुसार, जो भी हो, व्यवहारिक दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम शिक्षण विधि वह प्रक्रिया है जिससे कि पाठ्य-पुस्तक पर अधिकार प्राप्त करना तात्कालिक उद्देश्य होता है।

शिक्षक को पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पहलुओं और विशेषताओं-विषय सूची, मानचित्रों व तालिकाओं की सूची, विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण, अभ्यास के लिए दिये गये प्रश्न व क्रियाओं, परिशिष्ट, अनुक्रमणिका आदि की स्पष्ट व्याख्या करनी चाहिये जिससे कि विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तक अध्ययन करने के सही तरीके को जान जायें। इस प्रकार से ही यह विधि प्रभावशाली हो सकेगी।

शिक्षा के बदलते हुए उद्देश्यों की वजह से पाठ्य-वस्तु विधि की महत्ता में कमी तो जरूर आ गयी है, फिर भी आज इसे काफी प्रयोग में लाया जाता है।

पाठ्य-पुस्तक शिक्षण के स्तर (Levels of Text Book Teaching)

- पाठ्य-पुस्तक विधि को प्रयोग में लाने की बहुत सी प्रणालियाँ हैं, उसमें प्रमुख का विवरण नीचे दिया जा रहा है
- पहली प्रणाली अत्यंत पुरानी है। इसमें विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तक में दी गयी विषय सामग्री को कण्ठस्थ करते हैं। इस प्रणाली का चलन अब अधिक नहीं रह गया है।
- पाठ्य-पुस्तक विधि का दूसरा स्तर वह है जिसमें कि शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तक कुछ पृष्ठ पढ़ने के लिये देता है, और फिर उनसे इन पृष्ठों से सम्बन्धित विषय-वस्तु के बारे में प्रश्न करता है और पता लगाता है कि विद्यार्थियों ने कितनी जानकारी प्राप्त की है। प्राप्त जानकारी को विद्यार्थी अपने शब्दों में भी बता सकते हैं।
- पाठ्य-पुस्तक के कुछ पृष्ठों को पढ़कर विद्यार्थियों द्वारा उसकी रूपरेखा बनाना या सारांश लिखना पाठ्य-पुस्तक विधि का तीसरा स्तर हो सकता है। इस प्रणाली द्वारा विद्यार्थी आलोचनात्मक ढंग से पढ़ने का प्रयास करते हैं। क्योंकि उन्हें तैयार की गयी रूपरेखा को कक्षा के सामने प्रस्तुत करना होता है और वाद-विवाद के आधार पर इसे अन्तिम रूप दिया जाता है।
- पाठ्य-पुस्तक विधि चौथे स्तर को खुली पाठ्य-पुस्तक विधि भी कहा जा सकता है इसमें शिक्षक विद्यार्थियों को बताता है कि कैसे पढ़ा जाये, विश्लेषण किया जाये, रूपरेखा

तैयार की जाये और संक्षिप्तीकरण किया जाये। इस प्रकार से इसमें निर्देशित अधिगम पर बल दिया जाता है।

पाठ्य-पुस्तक विधि का सबसे अच्छा स्तर वह होता है जिसमें पाठ्य-पुस्तक के साथ-साथ अन्य पुस्तकों एवं साधनों द्वारा विषय-वस्तु को एक नया रूप दिया जाता है। इस प्रकार से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार से संगठित विषय सामग्री को पढ़ते हैं, विचार करते हैं और उसे अपने ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रयोग :

अर्थशास्त्र शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक विधि का प्रयोग दो ढंगों से किया जा सकता है- एकांकी पाठ्य-पुस्तक प्रयोग एवं बहु-पाठ्य-पुस्तक प्रयोग। माध्यमिक स्तर पर एक पाठ्य-पुस्तक काफी होगी परन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अच्छा हो, यदि विद्यार्थी एक से अधिक पुस्तकों का अध्ययन करें। पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन के लिये महत्वपूर्ण है।

पाठ्य-पुस्तक विधि के गुण :

1. पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत की जाती है।
2. पाठ्य-पुस्तके विद्यार्थियों की योग्यताओं, क्षमताओं आदि को ध्यान में रखकर ही लिखी जाती है।
3. पाठ्य-पुस्तक विधि द्वारा विद्यार्थियों में अध्ययन कौशल (Study Skill) का विकास होता है।
4. इस विधि में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के समय की बचत होती है।
5. किसी प्रकरण में क्या और कितनी गहराई से पढ़ना है, इसका जान पाठ्य-पुस्तक द्वारा हो जाता है।
6. पाठ्य-पुस्तक के आधार पर कार्य निर्धारण करने में आसानी होती है।

पाठ्य-पुस्तक विधि के दोष :

1. एक पाठ्य-पुस्तक में विषय के सभी प्रकरणों का विश्लेषण एक प्रमाण (Standard) का नहीं होता है। कुछ प्रकरण अच्छे प्रस्तुत होते हैं और कुछ कम अच्छे।
2. पाठ्य-पुस्तक विधि अपनाने में विद्यार्थियों में रटने की आदत पड़ने की संभावना होती है।
3. इस विधि का प्रयोग कक्षा के वातावरण को अरुचिकर एवं नीरस बनाता है।
4. इस विधि में विद्यार्थी चूंकि पाठ्य-पुस्तक पर ही निर्भर रहते हैं, इसलिये वे अपना दृष्टिकोण विकसित नहीं कर पाते।
5. अच्छी पाठ्य-पुस्तक का चयन करना एक कठिन कार्य है।
6. इस विधि में शिक्षक अधिक सक्रिय नहीं रहता है।
7. शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही अक्सर यह समझ लेते हैं कि पाठ्य-पुस्तक में दी गई जानकारी पर्याप्त है। इसलिये इस विधि में गहन अध्ययन की कम संभावना रह जाती है।

पाठ्य-पुस्तक विधि का सही प्रकार से प्रयोग करने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षक देखे कि किस प्रकार से उपयुक्त दोषों को किया जा सकता है।

स्व-मूल्यांकन-3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पाठ्य-पुस्तक विधि को प्रयोग में लाने की प्रमुख प्रणालियों का विवरण दीजिये ।
2. पाठ्य-पुस्तक विधि के प्रमुख गुणों की विवेचना कीजिये ।

5.3.3 योजना विधि (Project Method)

ऊपर शिक्षण की जिन दो विधियों के बारे में विवरण दिया गया है, वह शिक्षण की परम्परागत विधियाँ हैं। इनमें शिक्षक की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है। परम्परागत विधियों में भरपूर अध्ययन, अध्ययन की आदत, विषय की जानकारी आदि पर जोर दिया जाता है। आधुनिक विधियाँ बालकेन्द्रित और क्रिया प्रधान होती हैं। इन विधियों में रूचि, उद्देश्य, स्वाभाविक परिस्थितियों में शिक्षा, मनोवैज्ञानिक ढंग से सीखना जैसी बातें महत्वपूर्ण होती हैं। योजना और समस्या समाधान जैसी आधुनिक विधियों में विद्यार्थी की रूचियों आवश्यकताओं और इच्छाओं पर अधिक बल दिया जाता है। इन विधियों के द्वारा विद्यार्थी वास्तविक समस्याओं को हल करके और वास्तविक जीवन जैसे वातावरण में रहकर प्राप्त करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में योजना विधि के जन्मदाता डियूवी (Dewey) के अनुयायी किलपैट्रिक (Kilpatrick) है, जिन्होंने (1918 में) योजना को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

‘योजना यह सहदय उद्देश्यपूर्ण कार्य होता है जो पूर्ण संलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाये।

बाद में किलपैट्रिक ने इस परिभाषा को स्पष्ट करते हुए बताया कि-

‘योजना सौदेश्य अनुभव की कोई इकाई, सौदेश्य क्रिया का कोई उदाहरण है जहाँ पर आधिपत्य रखने वाला प्रयोजन एक अन्तर्निहित प्रकृति के रूप में (1) कार्य के उद्देश्य को निर्धारित करता है (2) उसकी क्रिया का निर्देशन करता है तथा (3) उसको आन्तरिक प्रेरणा प्रदान करता है।

किलपैट्रिक ने अपने विचारों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जैसा कि उपर्युक्त परिभाषाओं से पता चलता है। योजना एक नया विचार था इसलिये बहुत से संभम पैदा हुए। Bining एवं Bining ने सामाजिक विज्ञानों के लिये योजना के निम्न अर्थ को अधिक उपयुक्त बताया।

“वास्तविक जीवन जैसी परिस्थिति में पूर्ण किया जाने वाला छात्र आयोजित सोदेश्य कार्य।”

सलामत उल्लाह के अनुसार :

“योजना विधि को केवल एक शिक्षण विधि ही नहीं समझना चाहिये। यह इससे कहीं बढ़कर है। यह एक व्यवस्था है, एक जीवन दर्शन-जीवन का दृष्टिकोण और सीखने सिखाने का दृष्टिकोण है। (इसमें) शिक्षा ऐसी क्रियाओं के द्वारा दी जाती है जो बच्चों के लिये न केवल रुचिपूर्ण हों बल्कि सौदेश्यपूर्ण हों जिन्हें वह अपना कार्य समझें और स्वयं अपनी खुशी से प्राप्त करने की कोशिश करें।

इस प्रकार से योजना में प्रयोजनशीलता, यथार्थता, उपयोगिता, स्वतंत्रता आदि जैसी विशेषतायें पायी जाती हैं। योजना के पद (Steps in Project)

योजना विधि में सामान्यतया चार पद निहित रहते हैं :

1. उद्देश्य निर्धारण (Purposing)

योजना विधि में शिक्षक की भूमिका एक निर्देशक की होती है। वह इस प्रकार की परिस्थितियों उत्पन्न करता है और विद्यार्थियों को इस प्रकार से प्रेरित करता है कि विद्यार्थी किसी समस्या को चुन लेते हैं। शिक्षक योजना के सभी पहलुओं, गुण व दोषों आदि को स्पष्ट करता है जिससे कि विद्यार्थी उसी योजना को चुने जिसकी कि सामाजिक एवं शैक्षिक उपयोगिता हो, इसी आधार पर विद्यार्थी योजना के उद्देश्य निर्धारित करता है।

2. आयोजन (Planning)

उद्देश्य निर्धारित करने के पश्चात् शिक्षक योजना को पूरा करने के लिये विद्यार्थियों से कार्य की रूपरेखा बनवाता है। कार्य को कई भागों में विभाजित किया जाता है, जो इस आयोजन में पूरा किया जा सके। विद्यार्थियों को अवसर देना चाहिए कि वह अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार किसी उत्तरदायित्व को ग्रहण करें।

3. क्रियान्वयन (Executing)

इस स्तर पर विद्यार्थी कार्यक्रम के अनुसार कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं। शिक्षक को कार्य के दौरान विद्यार्थियों के कार्य का अवलोकन एवं मूल्यांकन करते रहना चाहिये। साथ ही विद्यार्थियों के समक्ष जो समस्याएं आयें, उन्हें दूर करने में सहायता करते रहना चाहिये।

4. मूल्यांकन (Judging)

योजना के पूर्ण होने पर शिक्षक और विद्यार्थी पूरी प्रक्रिया का मूल्यांकन करें। इस बात का प्रयत्न करना चाहिये कि विद्यार्थी अपने कार्य का स्व-मूल्यांकन करें एवं देखें कि जिन उद्देश्यों को वे लेकर चले, उनकी प्राप्ति कहां तक हो सकी है। उनके कार्य में कौनसी समस्याएं आयी और भविष्य में इन अनुभवों का कैसे लाभ उठाया जा सकता है।

अर्थशास्त्र में योजना विधि का प्रयोग

अर्थशास्त्र शिक्षण में निम्नलिखित प्रकार की योजनाओं का चयन किया जा सकता है:

पोस्टर और चार्ट बनाना मानचित्र बनाना, स्टेप बुक बैतंच ठववाढ़ तैयार करना, नोटबुक बनाना, प्रातः-कालीन प्रार्थना सभा के लिये प्रोग्राम बनाना (वर्तमान आर्थिक समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिये), अर्थशास्त्र-कक्ष की देखरेख, अर्थशास्त्र क्लब, सहकारी स्टोर चलाना संचयिका स्कीम चलाना, ऐंजिल के नियम की सत्यता देखना, कीमतों में उतार चढ़ाव का विभिन्न वर्गों पर प्रभाव को देखना, सर्वेक्षण करना-जनसंख्या के पहलुओं को जानने के लिये, बेरोजगारी की दशा जानने के लिये। एक बड़े पैमाने और एक छोटे पैमाने के उद्योग, एक बड़े और एक छोटे कार्य एवं थोक और एक फुटकर बाजार के विभिन्न पहलुओं की तुलना करना, पोस्ट ऑफिस एवं बैंकों की कार्य प्रणाली देखना आदि।

अर्थशास्त्र की एक योजना की रूपरेखा (Outline of a Project in Economics)

योजना का नाम : आर्थिक तथ्यों एवं आकड़ों का संकलन करना।

कक्षा : 11

योजना की महत्ता एवं आवश्यकता

भारतीय अर्थव्यवस्था में बराबर परिवर्तन हो रहे हैं। इसलिये इसके विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने में यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों को आर्थिक समस्याओं और प्रवृत्तियों के बारे में नवीनतम ज्ञान प्रदान किया जाये। पाठ्य-पुस्तकों से नवीनतम ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है, इन्हें विभिन्न अखबारों पत्रिकाओं आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

योजना के उद्देश्य

विद्यार्थी :

1. आर्थिक तथ्यों को वर्गीकृत करता है, उनकी तुलना करता है एवं उनमें सम्बन्ध स्थापित करता है।
2. महत्वपूर्ण बातों का पता लगाता है।
3. आर्थिक तथ्यों की व्याख्या करता है।
4. समझता है कि समस्या क्या है? इसके वैकल्पिक हल क्या हैं?
5. निष्कर्ष निकालता है एवं सामान्यीकरण करता है।
6. दिये हुए आकड़ों से तालिका, रेखाचित्र एवं ग्राफ बनाता है।
7. खाली समय में आर्थिक समस्याओं के बारे में विभिन्न स्त्रोतों से सामग्री प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।
8. समस्या से संबन्धित राय कायम करने में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाता है।
9. सामाजिक क्रियाओं में भाग लेता है, श्रम विभाजन के सिद्धान्त पर काम करता है और अपना उत्तरदायित्व निभाता है।

योजना से संबन्धित क्रियाएँ :

1. नोटबुक बनाना : इस नोटबुक में भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं के बारे में एकत्रित किये गये आकड़ों और प्रवृत्तियों को नोट करेंगे। नोटबुक में सुविधा के लिये भारतीय अर्थव्यवस्था के निम्नलिखित पहलुओं के अलग-अलग भाग होंगे।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना	2. कृषि	3. उद्योग
4. व्यापार एवं यातायात	5. मुद्रा एवं बैंकिंग	6. राजस्व
2. स्क्रेप बुक : स्क्रेप बुक में भी ऊपर दिये गये पहलुओं पर आधारित भाग होंगे और इनमें अखबारों एवं पत्रिकाओं की कटिंग को चिपकाया जायेगा।
3. चार्ट बनाना प्राप्त आकड़ों के आधार पर तालिकायें, रेखाचित्र और ग्राफ बनाये जायेंगे।
4. बुलेटिन बोर्ड विद्यार्थी एकत्रित किये गये तथ्यों एवं आकड़ों को बुलेटिन बोर्ड पर दिखा सकते हैं।
5. भित्ति पत्रिका : भित्ति पत्रिका में किसी एक समकालीन आर्थिक तथ्य के विभिन्न पहलुओं अथवा अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर लेख लिखे जा सकते हैं।
6. वाद-विवाद किसी समकालीन आर्थिक तथ्य पर वाद-विवाद या सिम्पोजियम कराया जा सकता है। एकत्रित किये हुए तथ्य अथवा आकड़े वाद-विवाद में प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

इसी प्रकार से दूसरी क्रियाएँ भी सौची जा सकती हैं, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिये कि इन क्रियाओं में विद्यार्थियों के समूह बनाये जायें। इन समूहों के बनाने में विद्यार्थियों की रुचियाँ एवं योग्यताओं को ध्यान में रखना चाहिये। इन क्रियाओं में प्रत्येक के लिये एक-एक

योजना भी हो सकती है। एक विद्यार्थी कई समूहों में कार्य कर सकता है। शिक्षक को इन क्रियाओं में विद्यार्थियों का निर्देशन करते रहने की आवश्यकता है।

ऊपर एक योजना का नमूना दिया गया है। इसी प्रकार से अन्य योजनाओं की रूपरेखा तैयार करनी चाहिये। इकाई-10 में कक्षा 9 व 10 के लिये जिस प्रयोगात्मक कार्य का विवरण दिया गया है, उनकी रूपरेखा में इन बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

1. योजना की आवश्यकता
2. उद्देश्य
3. कार्य प्रणाली 1. न्यादर्श (Sample), 2. उपकरण (Tool)
4. तथ्यो/आंकड़ो का संकलन
5. तथ्यो/आंकड़ो का सारणीयन एवं विश्लेषण
6. निष्कर्ष

योजना विधि के गुण (Merit of Project Method)

1. योजना विधि में विद्यार्थी स्वाभाविक एवं वास्तविक परिस्थितियों में रह कर ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है जिससे कि विद्यालय का कार्य उसके लिये सोदृश्यपूर्ण हो जाता है।
2. इस विधि द्वारा शिक्षण प्रभावपूर्ण हो जाता है। विद्यार्थी अपने शक्तिगत क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह विधि सीखने के नियमों - तत्परता, अभ्यास, प्रभाव पर आधारित है।
3. इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान एवं कौशल अधिक स्थायी होता है।
4. इस विधि द्वारा विद्यार्थियों में चिन्तन, तर्क और निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है।
5. यह विधि प्रजातांत्रिक भावना को विकसित करती है। क्योंकि इसमें विद्यार्थी को योजना बनाने का अवसर दिया जाता है और वह शैक्षिक क्रियाओं को शिक्षक और दूसरे विद्यार्थियों के सहयोग से पूरा करते हैं।
6. इस विधि में कार्य को विभिन्न समूहों में बांट दिया जाता है। चूंकि विद्यार्थी स्वयं कार्य की रूपरेखा बनाते हैं और उसका क्रियान्वयन करते हैं। इसलिये उनमें पहल करने, नेतृत्व करने, मिलजुल कर कार्य करने, उत्तरदायित्व निभाने, व्यवस्था करने आदि गुणों का विकास होता है।
7. इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थी श्रम की महत्ता समझते हैं और कठिन परिश्रम करने के लिये प्रेरित होते हैं।

योजना विधि प्रयोग में कठिनाइयाँ :

1. इस विधि द्वारा विषय का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त नहीं होता है और विषय-वस्तु की क्रमबद्धता का भी अभाव रहता है।
2. इस विधि के प्रयोग के लिये पुस्तकालय व अन्य शैक्षिक उपकरणों की आवश्यकता होती है, विद्यालय में अक्सर इस सुविधाओं का अभाव सा रहता है।
3. यह विधि शिक्षक पर काम का इतना बोझ और उस पर इतना उत्तरदायित्व डाल देती है कि उसके लिये इतना करना मुश्किल हो जाता है।
4. योजना विधि पर आधारित पुस्तके एवं साहित्य उपलब्ध नहीं हैं, बिना इस प्रकार के साधनों के प्रत्येक अध्यापक इस विधि का प्रयोग करने में असमर्थ रहता है।

5. इस विधि में समय बहुत चाहिए जिसका कि समय तालिका में प्रावधान करना बहुत कठिन होता है।
6. इस विधि में विद्यार्थियों पर बड़ा उत्तरदायित्व आ जाता है जबकि वे इतने परिपक्व नहीं होते हैं।

स्व-मूल्यांकन-3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

1. योजना विधि की एक उचित परिभाषा दीजिये।
2. योजना विधि के प्रमुख पद कौनसे हैं।
3. योजना विधि के प्रयोग में क्या कठिनाइयाँ सामने आती हैं।

5.3.4 समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)

मनुष्य का जीवन समस्याओं से भरा है। इन समस्याओं का समाधान करना मानवीय अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिये शिक्षा में ऐसे प्रशिक्षण पर बल देना चाहिये जो कि विद्यार्थियों की समस्या समाधान की क्षमता का विकास कर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये समस्या का समाधान का एक शिक्षण विधि के रूप में बड़ा योगदान हो सकता है। बढ़ते हुए सामाजिक कुसमायोजन, आर्थिक विकास, वैज्ञानिक पद्धति, सामाजिक उपयोगिता एवं सामाजिक कार्यक्रमता जैसे पहलुओं की बढ़ती हुई महत्ता, समस्या समाधान विधि के अर्थशास्त्र में प्रयोग किये जाने को तर्क संगत बताते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम सामग्री एवं सीखने के अनुभवों के चयन एवं संगठन के लिये समस्या समाधान विधि के प्रयोग किये जाने में जॉन ड्यूबी के विचार-विमर्श चिन्तन (Reflective Thinking) का बड़ा योगदान है। उसके अनुसार, जो बात हल्की और सामान्य होने पर भी मस्तिक को इस प्रकार बेचैन करे और चुनौती दे कि विश्वास भी अनिश्चित बन जाये, उसमें वास्तविक समस्या होती है। समस्या समाधान में विमर्शी चिन्तन रहता है, इस बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि, समस्या विचार जईवनहीजद्व के उद्देश्य (Aims) को निर्धारित करती है और उद्देश्य चिन्तन की प्रक्रिया को नियन्त्रित करता है। वेस्टे का विचार है कि समस्या शब्द प्रायः एक चुनौती को निर्दिष्ट करता है, जिससे निबटने के लिये अध्ययन एवं अनुसंधान की आवश्यकता होती है। समस्या समाधान की शिक्षण विधि के रूप में अनेक विद्वानों ने परिभाषाएं दी हैं। जेम्स के अनुसार, समस्या समाधान एक ऐसी शिक्षण पद्धति है, जिसके द्वारा शिक्षक और विद्यार्थी किसी महत्वपूर्ण समस्या को हल करने अथवा उसको स्पष्ट करने के लिये सोच-समझ कर पूर्ण लगन के साथ प्रयत्न करते हैं। सलामत उल्लाह का मत है कि 'इस पद्धति में बजाय इसके कि शिक्षक स्वयं बच्चों को जान दे, वह विषय को समस्या के रूप में प्रस्तुत करता है, बालक इसे हल करने का प्रयत्न करते हैं, शिक्षक आवश्यकता पड़ने पर उनका निर्देशन करता है और उनकी सहायता करता है।'

इस प्रकार से समस्या समाधान वह प्रक्रिया है जिसे कि जॉन ड्यूबी ने सम्पूर्ण विचार (Complete Thought) कह कर पुकारा है। संक्षेप में, हमें विदित होना चाहिये कि समस्या क्या है? इसका हल तलाशना चाहिये और देखना चाहिये कि यह हल कहां तक ठीक है।

समस्या समाधान/विमर्शी चिन्तन के दो प्रमुख रूप होते हैं

1. आगमन :

इस प्रकार के चिन्तन में हम विशिष्ट से सामान्य की ओर जाते हैं। कीन्स के अनुसार आगमन नीति में हम अनेक विशिष्ट दृष्टान्तों के आधार पर एक सामान्य नियम प्रतिपादित करते हैं। इस विधि में विषय से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं का अवलोकन किया जाता है, इन घटनाओं में जो बातें समान पायी जाती हैं, उनके अनुसार सामान्यीकरण किया जाता है और सामान्य सत्य अथवा सिद्धान्त को जानने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार के चिन्तन में प्रमुख सोपान समस्या की पहचान, समंकों (Data) की खोज, एकत्र किये गये समंकों में से महत्वपूर्ण तथ्यों को छांटना और सामान्यीकरण करना।

2. निगमन :

चिन्तन के दूसरे रूप में हम सामान्य से विशिष्ट की ओर चलते हैं। इसमें सामान्य सत्य अथवा सिद्धान्त के आधार पर विशिष्ट की जाँच की जाती है कि वह सत्य है या असत्य। इस प्रकार के चिन्तन में चार सोपान होते हैं समस्या को पहचानना, समस्या समाधान के लिये अनविक्षात्मक (Tentative) उपकल्पनाओं को तलाशना, इनमें से एक ऐसी उपकल्पना का निर्माण करना जिससे कि लगता हो कि समस्या का समाधान हो जायेगा, और इसकी जाँच करना।

समस्या समाधान की दोनों विधियाँ अंतरसंबंधित हैं और इन दोनों का उपयोग करना चाहिये अर्थात् दोनों के समन्वित रूप को ग्रहण किया जाना चाहिये। जॉन ड्यूबी का विचार है कि सामान्य जीवन स्थितियों में चिन्तन आगमन रूप से प्रारम्भ हो सकता है, परन्तु यह हमें शीघ्र ही एक उपकल्पना की ओर ले आता है।

समस्या समाधान विधि के सोपान (Steps of Problem Solving Method)

समस्या समाधान विधि का प्रयोग, जब पाठ्यक्रम सामग्री एवं सीखने के अनुभवों के चयन और संगठन के लिये किया जाता है, तो वास्तव में जॉन ड्यूबी के विचार-विमर्श चिन्तन का प्रयोग समूह समस्याओं और समूह स्थितियों में किया जा रहा होता है। यह विचार उसने अपनी पुस्तक How We Think में प्रस्तुत किये हैं। चिन्तन प्रक्रिया में उसने पाँच सोपान बताये हैं, जो कि समस्या-समाधान विधि के सोपान हैं:

1. संभ्रम अथवा परेशानी पैदा होना अर्थात् समस्या को महसूस करना।
2. समस्या के बारे में सोचना, उसकी सरल एवं स्पष्ट विवेचना करना, उसके कारणों को ढूँढना।
3. समस्या समाधान के लिये संभावित हलों अथवा उपकल्पनाओं (Hypotheses) को एक-एक करके जाँचना।
4. तर्क द्वारा अर्थात् लक्ष्यों (Goals), मूल्यों (Values) और सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, सबसे अच्छा हल कौनसा है, इसका पता लगाना।
5. इस स्वीकार्य उपकल्पना का सत्यापन करना।

अर्थशास्त्र शिक्षण में समस्या-समाधान विधि का प्रयोग एवं उसका उदाहरण (Use of Problem Solving Method in Teaching of Economics and Its Example)

आर्थिक चिन्तन कोई नयी और विशेष चिन्तन प्रक्रिया नहीं हैं। अर्थशास्त्र के लिये जो चिन्तन उचित है, वहीं चिन्तन जीवन की दूसरी समस्याओं को हल करने के लिये उचित होता है।

इस प्रकार आर्थिक तर्क में प्रयुक्त चिन्तन विधि अर्थशास्त्र के लिये ही सीमित (Exclusive) नहीं है ।

अर्थशास्त्र में समस्या समाधान विधि की काफी महत्ता है क्योंकि इसका प्रयोग लगभग सभी आर्थिक समस्याओं के अध्ययन में किया जा सकता है । इस विधि के प्रयोग से उन स्थितियों को प्रस्तुत किया जाता है जो कि भविष्य में विद्यार्थियों के सामने आयेगी और जिसमें वे अपने अर्थशास्त्र के ज्ञान का प्रयोग करेंगे । इसके अतिरिक्त इस प्रकार से अध्ययन करने से वे आर्थिक सामाजिकरणों के ठोस आधार को आसानी से समझ सकेंगे व निर्णय लेने की प्रक्रिया के विषय में उनकी अन्तर्दृष्टि (Insight) पैदा हो सकेगी ।

अर्थशास्त्र की विषयवस्तु में दो प्रकार की समस्यायें सम्मिलित हैं । एक तो वह जिनका हल समाज ने तलाश कर लिया है और दूसरी वह समस्यायें जो हल नहीं हुई हैं । वह समस्यायें जो हल की जा चुकी हैं, उनके बारे में विद्यार्थी अपने निष्कर्षों की जाँच करता है । ऐसी समस्यायें जिनका हल प्राप्त नहीं हैं, विद्यार्थी इनके लिये संभावित हल तलाशने का प्रयत्न करता है । इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि समस्या समाधान का उद्देश्य समाज के लिये हल प्रदान करना नहीं होता है, बल्कि इसके द्वारा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास करना होता है ।

अर्थशास्त्र से सबनिधित किन समस्याओं के शिक्षण में इस विधि का प्रयोग किया जायेगा, यह तय करने के लिये निम्न बातों को ध्यान में रखना होगा

1. क्या इस समस्या का अध्ययन निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है?
2. क्या यह विद्यार्थियों और समाज के जीवन से सम्बद्ध है?
3. क्या यह विद्यार्थियों की योग्यता एवं परिपक्वता को देखते हुए उचित है?
4. क्या यह व्यवहार्य है? क्या आवश्यक सामग्री एवं साधन उपलब्ध हैं?
5. क्या इसे उपलब्ध समय में पूरा किया जा सकता है?
6. क्या समस्या शैक्षिक अनुभवों की क्रमबद्धता बनाये रखने में समर्थ है?

उदाहरण :

अर्थशास्त्र शिक्षण में समस्या समाधान विधि का प्रयोग करने में उन सभी सोपानों को अपनाना होगा जिनका विवरण ऊपर दिया जा चुका है ।

यदि हमें कक्षा 11 में "भारत में जनसंख्यातिरेक समस्या" समस्या-समाधान विधि द्वारा पढ़ाना है तो सबसे पहले हमें शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करने होंगे । ये उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं, विद्यार्थी :

1. भारतीय जनसंख्या से संबन्धित तथ्यों, घटनाओं और धारणाओं का पुनर्स्मरण करता है और उनकी व्याख्या करता है ।
2. जनसंख्यातिरेक की समस्या का विश्लेषण करता है ।
3. जनसंख्यातिरेक की समस्या के हल के लिये वैकल्पिक हलों को प्रस्तुत करता है ।
4. जनसंख्या की समस्या के सबसे उत्तम हल की खोज करता है ।
5. परिणाम और निष्कर्ष निकालता है ।
6. जनसंख्या से सम्बन्धित समंकों के आधार पर चार्ट, तालिका रेखाचित्र, मानचित्र आदि बनाता है ।

7. अर्थशास्त्र विषय और लोगों के सामाजिक जीवन से संबन्धित समस्याओं में रुचि लेता है।
8. जनसंख्यातिरेक समस्या के प्रति वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रखता है।
9. मानवीय योग्यता और उसके राष्ट्रीय विकास में योगदान की महत्ता को महसूस करता है।
10. सहकारी कार्यों में अपना उत्तरदायित्व समझता है।

शिक्षक उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही हर सोपान पर विद्यार्थी की सहायता करेगा :

1. समस्या का प्रस्तुतीकरण :

शिक्षक भारत की जनसंख्यातिरेक समस्या को जो कि हमारे देश की एक ज्वलंत समस्या है, प्रस्तावित करता है। विद्यार्थी समस्या के प्रति सचेत हैं, इसलिये शिक्षक उसके अनुभवों से लाभान्वित होता है। विद्यार्थियों में समस्या के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिये शिक्षक वाद-विवाद का आयोजन करता है जिससे कि विद्यार्थी समस्या की गम्भीरता को समझ सके। शिक्षक जनसंख्यातिरेक समस्या के परिणामों जैसे गरीबी, खाद्य समस्या, औद्योगिक पिछ़ापन, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि को उजागर करता है। वास्तविक समस्या यह है कि जनसंख्या, जो कि किसी देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण एवं सक्रिय कारक है, भारत के विकास में सबसे बड़ी बाधा बन गई है।

2. तथ्यों का संग्रह, संगठन और विश्लेषण

भारत में जनसंख्यातिरेक समस्या का विश्लेषण करने के लिये शिक्षक विद्यार्थियों के चार समूह, समस्या के निम्नलिखित चार पहलुओं का अध्ययन करने के लिये बनाता है :

1. समस्या की प्रकृति और विस्तार
2. समस्या के कारण
3. समस्या के हल
4. समस्या से संबन्धित लक्ष्य, मूल्य एवं सीमायें

शिक्षक विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का हवाला देता है, जिनका कि इस संदर्भ में अध्ययन करना है। विभिन्न समूह समस्या को उजागर करने के लिये चार्ट, रेखांचित्र आदि बनाते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ये समूह एक-दूसरे की सहायता करते हैं। किसी जनसंख्या विशेषज्ञ का इस विषय पर व्याख्यान कराया जा सकता है।

शिक्षक समय-समय पर इन समूहों के कार्य का मूल्यांकन करता है और आवश्यक निर्देश देता है। विभिन्न समूह अपनी रिपोर्ट तैयार करेंगे। उनकी रिपोर्ट की रूपरेखा कुछ इस प्रकार होगी

जनसंख्यातिरेक के प्रमुख कारण निम्न स्तर, सामाजिक एवं धार्मिक विश्वास, बाल-विवाह, जलवायु संयुक्त परिहार प्रथा, स्त्रियों की हीन दशा, आयु संरचना, नगरीकरण का अभाव आदि।

संभावित हल आर्थिक विकास, शिक्षा का प्रसार, नगरीकरण, औद्योगीकरण, विवाह योग्य आयु का बढ़ाना, गर्भपात, परिवार नियोजन आदि।

संबन्धित लक्ष्य, मूल्य एवं सीमायें साधनों की कमी, समय, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य आदि।

3. विभिन्न हलों का मूल्यांकन :

विभिन्न समूहों द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट कक्षा में प्रस्तुत की जाती है। विभिन्न हलों को सबंधित लक्ष्यों एवं मूल्यों के परिप्रेक्ष में परखा जायेगा। आर्थिक विकास, शिक्षा प्रसार, औद्योगीकरण नगरीकरण आदि जैसे हलों के लिये एक लम्बे समय और अधिक साधनों कि आवश्यकता होगी, जो कि हमारे पास नहीं है। गर्भपात और विवाह योग्य आयु को बढ़ाने जैसे हलों को कार्यविन्त करने में पहले सामाजिक और धार्मिक विश्वास बाधा बन रहे थे।

4. निष्कर्ष निकालना :

वर्तमान परिस्थितियों में जनसंख्यातिरेक समस्या का सबसे उत्तम हल परिकर नियोजन है। इस निष्कर्ष की जाँच इस बात से की जा सकती है कि सरकार ने परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बहुत प्राथमिकता दी है।

उपर्युक्त प्रक्रिया के पूर्ण होने पर शिक्षक विषय से सम्बन्धित गृह कार्य देता है।

समस्या समाधान विधि के गुण (Advantage of Problem Solving Method)

1. यह एक व्यवहारिक एवं प्रकार्यात्मक विधि है क्योंकि यह समस्या के समाधान के लिये मानसिक प्रशिक्षण देती है जो कि बाद में विद्यार्थियों को अपने जीवन की समस्याओं से जूँझने में सहायता करेगी।
2. इस विधि में विद्यार्थी की रुचि बनी रहती है और वह कार्य करने के लिये प्रेरित होता है। क्योंकि उसके सामने स्पष्ट उद्देश्य समस्या का समाधान करना रहता है।
3. इस विधि में एक तार्किक और मनोवैज्ञानिक ढंग अपनाया जाता है।
4. इस विधि के द्वारा विद्यार्थी तथ्यों का संग्रह करना एवं उनका अव्यवस्थित करना सीखते हैं।
5. समस्या समाधान विधि विद्यार्थी में सोचने, मूल्यांकन करने, तुलना व चयन करने की क्षमता का विकास करती है जिससे कि उसमें वैज्ञानिक इष्टिकोण उत्पन्न होता है।
6. इसके द्वारा विद्यार्थियों में काम करने की आदत पड़ती है एवं अध्ययन कौशल विकसित होता है।
7. इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थी को पाठ्य-पुस्तक के अलावा दूसरी अध्ययन सामग्री एवं सामुदायिक साधनों के उपयोग का अवसर मिलता है।
8. इस विधि का प्रयोग विभिन्न कक्षाओं में और विभिन्न योग्यता वाले विद्यार्थियों के लिये किया जा सकता है।
9. इस विधि में विद्यार्थी मिलजुल कर कार्य करते हैं और शिक्षक मार्ग दर्शन करता रहता है। इस प्रकार से शिक्षक और विद्यार्थी में अच्छे सम्बन्ध स्थापित होते हैं और विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का विकास भी होता है।

समस्या समाधान विधि के दोष (Disadvantage/Limitations of Problem Solving Method)

1. समस्या समाधान विधि में समय बहुत लगता है।
2. इस विधि के प्रयोग के लिये बहुत सी पुस्तकों, पत्रिकाओं व अन्य सामग्री की आवश्यकता होते हैं, जो कि हर विद्यालय में उपलब्ध नहीं होती है।

3. इस विधि की बार-बार प्रयोग से नीरसता पैदा होती है।
4. इस विधि से विषय की पूर्ण और अव्यवस्थित जानकारी नहीं हो पाती है।
5. इस विधि में अक्सर विद्यार्थी पुस्तकों का ठीक ढंग से अध्ययन नहीं करते हैं, केवल उन्हीं बातों की ओर ध्यान देते हैं जिनकी समस्या समाधान के लिये आवश्यकता है।
6. इस विधि में अगर नियोजित ढंग से कार्य न किया गया तो कार्य में संलग्नता तो अवश्य होगी लेकिन परिणाम कोई विशेष नहीं निकलते।
7. छोटी-छोटी समस्याओं को हल कर लेने से विद्यार्थियों में यह विचार पैदा हो सकता है कि वे अब सभी प्रकार की समस्याओं को हल कर सकते हैं। इस प्रकार का दृष्टिकोण उचित नहीं है।

स्व-मूल्यांकन-4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये

1. विमर्शी चिन्तन को परिभाषित कीजिये।
2. आगमन एवं निगमन प्रविधियों की कार्यप्रणाली को स्पष्ट कीजिये।
3. समस्या समाधान विधि के प्रमुख सोपान कौन-कौन से हैं?

5.3.5 विचार-विमर्श विधि (Discussion Method) :

शिक्षा के क्षेत्र में अब यह बात सर्वमान्य है कि कक्षा में चल रही गतिविधियों को कक्षा के बाहर की दुनिया की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। समूह में रहना जीवन का एक तथ्य है और हमारे अस्तित्व का एक वास्तविक पहलू। हम किसी न किसी रूप में दूसरों के साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक क्रियाओं में हिस्सा लेते हैं। हमारी जैसी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में शक्ति का सामूहिक कार्यों में भाग लेना एवं अपनी राय देना और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक होता है।

समूह के भाग लेने की क्षमतायें एवं कुशलतायें आन्तरिक (Innate) ही नहीं होती हैं, इन्हें सीखा जा सकता है। इसलिये शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य सामाजिक कुशलताओं से संबन्धित ज्ञान व अनुभव प्रदान करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये शिक्षण की ऐसी विधियों पर जोर देना चाहिये जो कि सामूहिक प्रक्रियाओं को प्रत्साहित करती हो जैसे कि समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि, (Socialized Recitation Method) विचार-विमर्श विधि (Discussion Medhod) आदि। इन विधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों में अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने एवं सामूहिक कार्यों में अपने उत्तरदायित्व को समझने की कुशलताओं का विकास होता है। समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि को परिभाषित करते हुए बाईंनिंग एवं बाइनिंग ने यह विचार व्यक्त किया कि कक्षा का कोई भी सत्र जिसमें सामूहिक चेतना और समूह के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना परिलक्षित हो, समाजीकृत अभिव्यक्ति कहलायेगी। इस प्रकार से यह एक विधि न होकर एक आदर्श है, एक उपागम (Approach) है जिसमें विचार-विमर्श, समस्या समाधान जैसी विधियों और इनसे संबन्धित प्रविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

विचार-विमर्श एक प्रकार से बातचीत होती है। एक प्रभावशाली विचार-विमर्श में एक कक्षा के सभी लोगों को हिस्सा लेना चाहिये यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक विद्यार्थी बोले ही। एक प्रकार से शान्तिपूर्वक बैठना, सुनना और चल रही बातचीत के बारे में विचार करना भी हिस्सा लेना होता है। लेकिन अच्छा यही माना जाता है कि अधिक से अधिक विद्यार्थी विचार-विमर्श में हिस्सा लें। विचार-विमर्श में एक ही व्याकित को अधिपत्य नहीं जमा लेना चाहिये। विचार-विमर्श व्याख्यान एवं भाषण से भिन्न होता है। इस प्रकार से विचार-विमर्श में विद्यार्थियों की एक विषय, प्रश्न अथवा समस्या के बारे में टीका टिपणियों होती है और साथ में शिक्षक द्वारा छानबीन एवं स्पष्टीकरण होते हैं जिससे पूरा समूह चिन्तन के विकास में सम्मिलित होता है। चूंकि इस विधि में विद्यार्थी एवं शिक्षक में अंतर्क्रिया (Interaction) होती है, इसलिये इसकी प्रभावशीलता विद्यार्थी-शिक्षक के संबंधों कि गुणात्मकता पर निर्भर करती है। A.H. Huge ने विचार-विमर्श सम्प्रत्यय की व्याख्या करते हुए कहा कि यह कम बनावटी होता है, अधिक सद्भावी और अनौपचारिक होता है, एक सहयोगिक कार्य है, जिसमें प्रत्येक किसी समस्या को समझने का प्रयत्न करता रहता है और सत्य को खोजना चाहता है। इसको 'व्यवस्थित बातचीत' के रूप में भी बताया गया है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि कक्षा में विचार-विमर्श विधि के प्रयोग करने में निम्नलिखित बातें/क्रियाएं उभर कर आनी चाहिये :

1. विचारों, सम्प्रत्ययों एवं विषयों के बारे में छानबीन
2. सभी विद्यार्थियों में अन्तर्क्रिया
3. विभिन्न हिस्सा लेने वालों को नेतृत्व का अवसर प्राप्त होना।
4. सभी विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न करना दूसरों के विचारों को अपनाना, दूसरे के विचारों से असहमति प्रकट करना आदि।
5. निर्णय लेने में विद्यार्थियों का सहयोग।
6. उपकल्पना बनाना एवं समस्या समाधान।

इस प्रकार से विचार-विमर्श द्वारा ज्ञान का सशजनात्मक परिपृच्छा (Creative Inquiry) एवं सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के सक्रिय सहयोग द्वारा प्राप्त किया जाता है। Callahan J.F. एवं Bark L.H. ने अपनी पुस्तक (Teaching in the Middle and Secondary School) में कक्षा समूह विचार-विमर्श के दो प्रमुख उपागम बताए हैं

1. प्रस्तुतीकरण संबन्धित प्रविधियाँ (Presentation Type Techniques)

इस प्रकार की प्रमुख प्रविधियाँ हैं गोलमेज (Round Table) जिसमें कि पाँच या कम विद्यार्थी एक मेज के चारों ओर बैठकर आपस में या कक्षा में बातचीत करते हैं, पैनल (Panel) जिसमें कि चार से छः तक हिस्सा लेने वाले और एक अध्यक्ष होता है एक विषय के बारे में आपस में बातचीत करते हैं और कक्षा से भी विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। वाद-विवाद (Debate) एक औपचारिक उपागम जिसमें दो दल के हिस्सा लेने वाले अपने विचारों को प्रतियोगी के रूप में रखते हैं। एक पक्ष दूसरे पक्ष से बाजी मार ले जाने का प्रयत्न करते हैं और परिसंवाद (Symposium) जिसमें कि हिस्सा लेने वाले एक समस्या के बारे में अपने-अपने विचार एवं वृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और बाद में कक्षा के दूसरे विद्यार्थी उनसे प्रश्न पूछते हैं।

यह सभी प्रविधियाँ सापेक्ष रूप में औपचारिक नियोजित एवं कम समय में पूरी की जाने वाली हैं। इनमें पहले से क्रान्ति तैयारी करने पड़ती है और कक्षा को भी एक विशेष प्रकार से व्यवस्थित किया जाता है। इन प्रविधियों में से कुछ का विवरण छठी इकाई में दिया गया है।

2. कक्षा विचार-विमर्श (Class Discussion)

यह वह समूह है जिसमें अधिक विद्यार्थी हिस्सा लेते हैं और यह विभिन्न उद्देश्यों और विशेषकर समूह प्रक्रिया के विश्लेषण से संबन्धित, लम्बे समय में पूरा किया जा सकने वाला कार्य है। कक्षा विचार विमर्श विधि का प्रयोग समस्या समाधान, अभिवृत्तियों के परिवर्तन, मूल्यों के स्पष्टीकरण एवं दूसरों के दृष्टिकोणों को समझने के लिये किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों का अधिक योगदान होता है। इसलिये उनमें स्व-सीखने की क्षमता का विकास होता है, आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता पैदा होती है। विचारविमर्श विधि के प्रयोग की प्रक्रिया में निम्नलिखित सोपान हो सकते हैं। जिनके बारे में शिक्षक एवं विद्यार्थियों को काफी सोचने एवं योजना बनाने की आवश्यकता होती है।

1. विचार-विमर्श के लिये तैयारी :

विचार-विमर्श के लिये एक उचित विषय को चुना जाना चाहिये, यह ऐसा विषय/समस्या हो जिसका स्पष्टीकरण/हल विचार-विमर्श द्वारा किया जा सके। विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री-पुस्तकों, अखबारों, पत्रिकाओं आदि का संदर्भ देना चाहिये एवं बताना चाहिये कि इनका कैसे अध्ययन किया जाय और क्या अध्ययन किया जाये। इन्हें यह भी बताना चाहिये कि विचार-विमर्श के लिए उनके पास एक रूपरेखा/रिपोर्ट व्यवस्थित रूप में हो, जिससे कि वे ठीक ढंग से बातों को प्रस्तुत कर सकें।

2. विचार-विमर्श का संचालन :

विचार-विमर्श शुरू होने से पहले विद्यार्थियों को इसके उद्देश्य एवं इस प्रक्रिया से संबन्धित नियमों को बता देना चाहिये। विद्यार्थियों को स्पष्ट और आसान भाषा में बोलने, अच्छा व्यवहार करने, विभिन्न सामग्री द्वारा अपना विचार प्रस्तुत करने के बारे में निर्देश दिये जाने चाहिये। इसी प्रकार से प्रश्न पूछने अथवा टिप्पणी करने के बारे में उन्हें जानकारी दी जानी चाहिये।

विचार-विमर्श को एक घटना, अच्छे प्रश्नों, भूमिका निर्वाह या अन्य किसी रूचिपूर्ण क्रिया से प्रारम्भ कराना चाहिये। विचार-विमर्श प्रारम्भ होने के बाद इसे व्यवस्थित रूप से चलते रहने की ओर ध्यान देना चाहिये। यह देखना चाहिये कि प्रक्रिया सही रास्ते पर चल रही है, इसके लिये शिक्षक को समस्या को फिर से बताते रहना, संक्षिप्तीकरण करते रहना एवं विचार-विमर्श को निर्देशित करते रहना होगा और असंबन्धित एवं गैर महत्वपूर्ण बातों एवं व्यवहार को नियन्त्रित करते रहना चाहिये। ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिये जो कि विचारोत्तेजक हों और उनके द्वारा विभिन्न प्रकार के मत प्रस्तुत होने की संभावना हो। विचार-विमर्श में अधिक से अधिक विद्यार्थियों को भाग लेने के लिये प्रेरित करने की कोशिश करनी चाहिये और कमजोर एवं शर्मीले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिये। विचार-विमर्श में उच्च स्तर के चिन्तन को विकसित करने पर बल देना चाहिये, विद्यार्थियों से प्रश्न पूछकर पता लगाना चाहिये कि वे क्यों एक प्रकार का मत या विश्वास रखते हैं और उन्हें अपने विचारों का स्व-मूल्यांकन करने के लिये निर्देशित

करना चाहिये। अगर विचार-विमर्श में गलत विचार अथवा तथ्य सामने आते हैं तो अध्यापक को सही बात बताना चाहिये

विचार-विमर्श की समाप्ति के करीब शिक्षक को यह देखना चाहिये कि विद्यार्थी एक निष्कर्ष पर पहुंच सके हैं जो कि उनका अपना विकसित किया हुआ है। शिक्षक स्वयं भी पूरी प्रक्रिया का संक्षिप्तीकरण कर सकता है।

3. विचार-विमर्श का मूल्यांकन :

विचार-विमर्श के बाद शिक्षक और विद्यार्थियों को सोचना चाहिये कि इसके द्वारा कहां तक निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हुई है, क्या समस्यायें सामने आयी हैं और उन्हें भविष्य में कैसे दूर किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात देखने की यह है कि कहां तक अधिक से अधिक विद्यार्थियों ने विचार-विमर्श में भाग लिया है।

विचार-विमर्श में शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher in Discussion)

विचार-विमर्श विधि में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, इस प्रक्रिया के संचालन का वह नेता होता है। उसे प्रत्येक चरण पर सक्रिय रहकर विद्यार्थियों को निर्देशित करना होगा। विचार-विमर्श की दोनों प्रविधियाँ प्रस्तुतीकरण संबन्धित और कक्षा विचार-विमर्श का प्रयोग अर्थशास्त्र शिक्षण में किया जा सकता है। विशेषकर भारतीय अर्थशास्त्र से संबन्धित प्रकरणों में इनका प्रयोग महत्वपूर्ण और लाभदायक है। इसीलिये जहां भी सम्भव हो सके, औपचारिक या अनौपचारिक रूप में इस विधि का प्रयोग अर्थशास्त्र शिक्षक को करना चाहिये, ऐसा करने में उसे निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना होगा।

1. विद्यार्थियों की योग्यताओं एवं क्षमताओं को देखते हुए उन्हें विचार-विमर्श के लिये प्रेरित करना और कार्य योजना बनाना।
2. पूरी प्रक्रिया में सतर्क रहना एवं अपनी भूमिका को निर्धारित करते रहना कभी सक्रिय कभी निष्क्रिय।
3. शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं-नेता, निर्देशक, सहायक को आवश्यकतानुसार अपनाना।
4. देखना कि आवश्यक सामग्री और साधन उपलब्ध हैं?
5. विद्यार्थियों को पूरे साल ऐसे अवसर प्रदान करने की कोशिश करना जिससे कि वे विचार विमर्श एवं सामूहिक क्रियाओं में भाग ले सकें।
6. एक साल में किये गये विचार विमर्श एवं अन्य सामूहिक कार्यों और उनमें हर विद्यार्थी के योगदान के मूल्यांकन से संबन्धित रिकार्ड रखना।
7. विद्यार्थियों को भी इस प्रकार के अनुभवों का रिकार्ड रखने के लिये प्रोत्साहित करना।
8. इन क्रियाओं में सुधार एवं उन्नति के लिए बाबर विचार करते रहना।

विचार-विमर्श विधि के गुण (Advantage of Discussion Method)

1. विचार-विमर्श द्वारा विद्यार्थी पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित बातों को जो उन्होंने पढ़ी हैं या व्याख्यान द्वारा प्राप्त की हैं, समन्वित करने में सहायता मिलती है। इससे सभी विद्यार्थियों को सोचने एवं सामूहिक विचार-विमर्श में भाग लेने की प्रेरणा मिलती है।
2. इस विधि द्वारा विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया समझाने में अर्थात् चिन्तन करने की क्षमता विकसित करने में सहायता मिलती है।

3. विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का पता भी कुछ हद तक इस विधि द्वारा हो सकता है जिससे शिक्षक विद्यार्थी को सही ढंग से सोचने में मदद कर सकते हैं। विद्यार्थी को स्वयं अपनी अभिवृत्तियों एवं मूल्यों के बारे में सोचने का अवसर प्राप्त होता है क्योंकि वह दूसरों के उपागमों से भी अवगत होता है।
4. यह विधि विशेषकर विद्यार्थियों को कक्षा क्रियाओं में हिस्सा लेने के लिये प्रेरित करती है।
5. इस विधि द्वारा शिक्षक-विद्यार्थी और विद्यार्थियों में आपसी सम्बन्ध भी बेहतर हो जाते हैं क्योंकि विभिन्न स्तरों पर वे एक-दूसरे से विभिन्न पहलुओं के बारे में बातचीत करते हैं, एक-दूसरे की सहायता करते हैं।
6. विचार-विमर्श द्वारा विद्यार्थियों में नेतृत्व, विनम्रता, आत्मविश्वास, दूसरों के विचारों का आदर करना जैसे गुणों का विकास होता है। इसके अतिरिक्त उनमें आयोजन करने और व्यवस्थित रूप से कार्य करने की क्षमता भी उत्पन्न है।

विचार-विमर्श विधि के दोष/कमियाँ (Disadvantages/Limitations of Discussion Method)

1. अगर विचार विमर्श विधि ठीक प्रकार से आयोजित नहीं की गई, तो कक्षा मुख्य विषय से हट सकती है और अनावश्यक एवं निरर्थक बातों पर समय नष्ट होने से इस प्रक्रिया का उद्देश्य ही पीछे रह जाता है।
2. विचार-विमर्श के दौरान विद्यार्थी आवेश में भी आ सकते हैं और वे शिक्षक या दूसरे विद्यार्थियों से नाराज भी हो सकते हैं।
3. इस विधि में अक्सर कुछ विद्यार्थी ही बढ़-चढ़कर क्रियाशील रहते हैं जिससे कि इस प्रकार की क्रियाओं का उद्देश्य ही समाज हो जाता है।
4. इस विधि के प्रयोग में बहुत समय की आवश्यकता होती है जिससे कि विषय से संबंधित सभी बातों को सम्मिलित करना मुश्किल हो जाता है।
5. कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने कितना-कितना सीखा है, इस बात का मूल्यांकन करना बहुत कठिन कार्य है।

स्व-मूल्यांकन-5

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

1. कक्षा विचार-विमर्श की योजना तैयार करने में किन बातों की और ध्यान दिया जाता है?
2. विचार-विमर्श विधि का प्रयोग आप अपने शिक्षण में किस प्रकार से करेंगे ?

5.3.6 निरीक्षित अध्ययन विधि (Supervised Study Method)

आजकल शिक्षण विधियों में ऐसी विधियों पर जोर दिया जाता है जो कि विद्यार्थी को स्वयं सीखने के लिये प्रेरित करती हो। निरीक्षित अध्ययन विधि ऐसी ही विधि है जिसमें कि शिक्षक एक समूह या एक कक्षा के विद्यार्थियों का जब वे कार्य कर रहे होते हैं, निरीक्षण करता है। कार्य करने समय विद्यार्थियों को जो समस्यायें आती हैं, उनको दूर करने के लिये वे शिक्षक

की सहायता चाहते हैं। शिक्षक कक्षा में उपस्थित रहता है, विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन करते रहता है और आवश्यकतानुसार उनकी मदद करता है।

एक ओर विचार विमर्श विधि तो निरीक्षित अध्ययन विधि के अन्तर्गत सम्मिलित की जा सकती हैं और दूसरी ओर निरीक्षित अध्ययन विधि स्वयं अन्य विधियों की एक प्रविधि के रूप में बड़ी सहायक सिद्ध होती है।

बाइनिंग एवं बाइनिंग ने निरीक्षित अध्ययन योजनाओं को दो भागों में विभाजित किया है, पहली वह जिसमें उन विद्यार्थियों का निरीक्षण करना होता है, जिन्हें कि अपने कार्य में कुछ समस्यायें हैं दोनों प्रकार से सम्बन्धित कुछ मुख्य योजनाओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. सम्मेलन योजना :

कमजोर विद्यार्थियों की सहायता करने के लिये शिक्षक ऐच्छिक रूप से या कभी-कभी प्रधानाचार्य के आदेश पर औपचारिक रूप से विद्यालय के समय के बाद रुक जाता है।

2. विशिष्ट शिक्षक योजना :

इसमें विद्यालय में अलग से एक विशिष्ट शिक्षक नियुक्त किया जाता है जिसका कार्य ही कमजोर विद्यार्थियों को शक्तिगत रूप से या छोटे समूहों में सीखाना करना अथवा उनके कार्य का निरीक्षण एवं निर्देशन करता है।

3. कालांश विभाजन योजना :

इस योजना में या तो दो शिक्षक होते हैं, पहला कक्षा में एक समूह को पढ़ाता है, दूसरा शिक्षक दूसरे समूह के विद्यार्थियों के अध्ययन का निरीक्षण करता है या फिर इन दोनों प्रक्रियाओं को एक ही शिक्षक आधे-आधे कालांश में पूरा करता है या एक शिक्षक शिक्षण के कार्य को कम समय देकर, अधिक समय निरीक्षित अध्ययन में लगाता है।

4. द्विकाल योजना :

द्विकाल योजना में एक विषय के दो कालांशों का प्रावधान होता है, पहले में शिक्षण कार्य और दूसरे में निरीक्षित अध्ययन।

5. सामयिक योजना :

इसमें निरीक्षित अध्ययन रोज न होकर हर दूसरे दिन, हफ्ते में एक बार हो सकता है।

निरीक्षित अध्ययन विधि एक प्रभावशाली विधि है, इसका उपयोग शिक्षक औपचारिक अथवा अनौपचारिक ढंग से करते रहते हैं। अर्थशास्त्र शिक्षण में इसकी बड़ी महत्ता है। माध्यमिक स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था से संबन्धित समंकों के आधार पर रेखाचित्रीय प्रदर्शन, सांख्यिकीय एवं राष्ट्रीय लेखा प्रणाली से संबन्धित प्रश्नों को हल करने में इस विधि का प्रयोग अर्थशास्त्र शिक्षक समय तालिका एवं अन्य बातों को ध्यान में रखकर आसानी से कर सकता है।

निरीक्षित अध्ययन विधि गुण (Advantages of Supervised Study Method) :

1. इस विधि द्वारा विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखा जाता है और इसके द्वारा सभी प्रकार के विद्यार्थियों को लाभ पहुंचता है।
2. निरीक्षित अध्ययन विधि में विद्यार्थी को अपनी स्वाभाविक गीत से आगे बढ़ने का अक्सर प्राप्त होता है क्योंकि कठिनाई के हर स्तर पर शिक्षक उसकी मदद करता है।
3. इस विधि के द्वारा शिक्षक-विद्यार्थी के सम्बन्ध अच्छे बनते हैं।

4. अर्थशास्त्र में बहुत सी ऐसी कुशलतायें हैं जैसे मानचित्रों, रेखाचित्रों एवं ग्राफों को बनाना एवं समझाना जिन्हें कि इस विधि द्वारा अधिक प्रभावशाली ढंग से सीखा जा सकता है।
5. इस विधि में विद्यार्थी सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रहते हैं।
6. इस विधि द्वारा शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थी स्वयं के प्रयास से जानार्जन करने का अवसर प्राप्त होता है।

निरीक्षित अध्ययन विधि के दोष (Disadvantages of Supervised Study Method) :

1. इस विधि में कमज़ोर विद्यार्थियों की ओर अधिक ध्यान जाता है और अच्छे विद्यार्थियों को अधिक लाभ नहीं पहुंच पाता है।
2. व्यवहार में, समय तालिका और विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं को देखते हुए इस विधि की बहुत सी योजनाओं को कार्यान्वित नहीं किया जा सकता है।
3. इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थी शिक्षक पर ज्यादा ही निर्भर होने लगते हैं।
4. इस विधि के द्वारा शिक्षक के कुछ उद्देश्यों की ही पूर्ति होती है। समाजीकरण जैसे उद्देश्यों की प्राप्ति तो न के बराबर होती है।

निरीक्षित अध्ययन विधि में उपर्युक्त कमियाँ अवश्य हैं, लेकिन अगर ठीक प्रकार से इस विधि का प्रयोग किया जाये तो यह विधि प्रभावशाली बन सकती है। इसको समस्या समाधान एवं विचार-विमर्श विधि के साथ प्रयोग करके अच्छे परिणाम निकाले जा सकते हैं। जैसे कक्षा के विद्यार्थी एक समस्या को महसूस करते हैं, उसके बारे में सोचते हैं, निरीक्षित अध्ययन द्वारा इस समस्या का समाधान तलाश करते हैं एवं इस आधार पर विचार-विमर्श करते हैं।

स्व-मूल्यांकन-6

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये :

1. निरीक्षित अध्ययन की दो प्रमुख योजनायें क्या हैं?
2. निरीक्षित अध्ययन विधि को अर्थशास्त्र शिक्षण में कहा तक प्रयोग में लाया जा सकता हैं
3. निरीक्षित अध्ययन विधि के दोषों का विवरण दीजिये।

5.4 अर्थशास्त्र शिक्षण में विशिष्ट कौशल (Specific Skills in Teaching Economics)

5.4.1 परस्पर सामूहिक संवाद संबंधी कौशल (Skill is Social Interaction)

अर्थशास्त्र ऐसा विषय है जिसके प्रति क्षण घटनाएं, समाचार, योजनाएं आदि जुड़ती रहती हैं। आर्थिक जीवन सतत परिवर्तनशील है। प्रत्येक समय सृजित संस्थितियों पर विचार-मंथन, विश्लेषण, संश्लेषण की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में विषय के व्यावहारिक ज्ञान का विकास नहीं हो सकता। अतः अर्थशास्त्र के शिक्षक के लिए निम्न गतिविधियाँ आवश्यक हैं:-

- सामूहिक अन्तःक्रिया के अवसर प्रदान करना।
- प्रश्न पूछ कर विचार-विमर्श के अवसर प्रदान करना।
- परस्पर संवाद के वातावरण प्रदान करना।
- मौन एवं अशाब्दिक अभिव्यक्ति का प्रयोग करना।

5.4.2 सामूहिक क्रियाओं के आयोजन संबंधी कौशल (Skills of Organizing group activity)

अर्थशास्त्र के शिक्षक की कुशलता इसमें है कि वे अधिकाधिक सामूहिक क्रियाओं का आयोजन कर सके। आर्थिक गतिविधि के आयोजन में शाला में सहकारी भण्डार का संचालन, अल्प बचत योजना का संगठन, पर्यावरण संरक्षण, जनसंख्या क्लब का गठन, आर्थिक गतिविधियों के सामाजिक सर्वे, नवीन आर्थिक नीतियों एवं योजनाओं से संबन्धित जन-चेतना कार्यक्रमों का आयोजन भली प्रकार कर सके। इसके लिए आवश्यक है कि अर्थशास्त्र का शिक्षक:-

- दिशा/लक्ष्यों के सम्बन्ध में स्पष्ट रहे।
- छात्रों को उपयुक्त रूप से निर्देशित करे।
- सौजन्यपूर्ण व्यवहार हो।
- सामूहिक क्रियाओं का अच्छी प्रकार नियोजन कर सके।
- सामूहिक क्रियाओं का छात्रों की योग्यता एवं सामर्थ्य अनुसार आवंटित कर सके।
- समूह में सौहार्दपूर्ण वातावरण बना सके।

5.4.3 सम-सामाजिक घटनाओं/समाचारों का उपयोग करने का कौशल (Skills of use of Concurrent Events/News)

जैसा कि सर्वविदित है कि अर्थशास्त्र विषय से संबन्धित घटनाक्रम राज्य, देश एवं विश्व में सतत चलता है। स्थानीय व प्रादेशिक आर्थिक जीवन पर विश्व बाजार का प्रभाव पड़ता है। अतः अब यह अत्यधिक आवश्यक हो गया है कि अपने विषय एवं प्रकरण से संबन्धित घटनाओं व समाचारों से प्रतिदिन परिचित होते रहें व कक्षा-कक्ष शिक्षण व सहगामी प्रवृत्तियों में उसका अधिकाधिक उपयोग कर सकें। इसके लिए आवश्यक है कि अर्थशास्त्र विषय का शिक्षण :-

- उपयोगी समकालीन घटनाओं की पहचान/चयन कर सके।
- घटनाओं का विश्लेषण कर सके।
- घटनाओं के कारण प्रभाव सम्बन्ध पर विचार कर सकें।
- घटनाओं/समस्याओं के समाधान के समाधान प्राप्त कर सके।
- प्रकरण को संबन्धित कर सके।

5.4.4 महत्वपूर्ण आर्थिक स्थितियों के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरूकता संबंधी कौशल (Skills of Awareness about Sensitizing Crucial Economic Issues)

अर्थशास्त्र के शिक्षक में यह योग्यता होनी चाहिए कि चाहे स्थानीय मामला हो या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का, यदि वह समान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है तो अपने छात्रों में ऐसी संवेदनशीलता उत्पन्न कर सके वे जागरूक हो कर सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करें। वर्तमान में ऊर्जा संकट, पर्यावरणीय प्रदूषण, वन-संरक्षण, भू-संरक्षण, वायु-प्रदूषण, जल सीमित संसाधन, आदि कई ऐसे मामले हैं जिन पर हर छात्र व हर व्यक्ति को न केवल संवेदनशील होना है वरन् अपनी सकारात्मक भूमिका भी विकसित करनी है। इसके लिए अर्थशास्त्र के शिक्षक को :-

- विषय से संबन्धित महत्वपूर्ण विषयों को पहचाने।
- छात्रों को दूसरों के विचार सुनने के अवसर प्रदान करे।
- प्रसन्नता से दूसरों को अभिव्यक्ति दें।
- परस्पर द्वंदों को उभरने न दे।
- सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ाए।
- सहयोगी वातावरण उत्पन्न करें।

छात्रों को समाज के प्रति जिम्मेदारी की अनुभूति करवा सके। छात्र स्वयं की भूमिका निश्चित कर सके।

5.3 सार-संक्षेप (Summary)

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है। शिक्षण विधि का चयन करते समय शिक्षण उद्देश्यों, विद्यार्थियों की योग्यताओं, समूह का स्तर, विद्यालय एवं समाज का वातावरण, छात्रों की अधिगम शैली, रुचि, विषय-वस्तु की प्रकृति एवं शिक्षक की अपनी योग्यता का ध्यान रखना होता है।

अन्य विषयों की भाँति अर्थशास्त्र शिक्षण की भी कई विधियाँ हैं। परम्परागत विधियों में शिक्षक केन्द्रित विधियाँ होती हैं- जैसे - व्याख्यान विधि, पाठ्य-पुस्तक विधि आदि। आधुनिक विधियों में वे विधियाँ सम्मिलित हैं, जो बाल केन्द्रित होती हैं। उनमें योजना विधि, समस्या समाधान विधि, विचार-विमर्श विधि, आगमन-निगमन विधि, सामाजीकृत अध्ययन विधि, निरीक्षित अध्ययन विधि आदि सम्मिलित होती हैं।

अर्थशास्त्र के शिक्षण में विशिष्ट रूप से आवश्यक कौशल - परस्पर सामूहिक संवाद, सामूहिक क्रियाओं का आयोजन, सम-सामाजिक आर्थिक घटनाओं का उपयोग, महत्वपूर्ण आर्थिक विषयों के प्रति संवेदनशीलता एवं आर्थिक जीवन से संबन्धित मूल्यों के पोषण की आवश्यकता है।

5.5 इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

1. शिक्षण विधि का चयन करने में किन बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है?
What are the points to be kept in mind in selection of teaching methodology ?
2. अर्थशास्त्र शिक्षण में किस प्रकार की योजना ली जा सकती है? इनमें से किसी एक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये।
What type of project can be selected in teaching economics ? Give an outline of a project.
3. पाठ्य-पुस्तक विधि के दोषों की व्याख्या कीजिये।
Explain the disadvantages of text-book method.
4. अर्थशास्त्र का कोई एक प्रकरण चुनिये और बताइये कि समस्या समाधान विधि द्वारा आप इसे कैसे पढ़ायेंगे?
Select a topic of Economics and explain how you would teach it with the help of problem method.
5. कक्षा विचार-विमर्श विधि के प्रयोग की प्रक्रिया में अपनाए जाने वाले विभिन्न सोपानों की स्पष्ट व्याख्या कीजिये।
Explain the steps of use of class-room discussion method.
6. अर्थशास्त्र शिक्षण में निरीक्षित अध्ययन विधि की क्या महत्ता है?
What is the importance of supervised study method in economics teaching.

7. अर्थशास्त्र विषय से संबन्धित विशेष कौशलों के बारे में आप क्या जानते हैं?
What do you know about the specific skills related to Economics ?
-

5.4 संदर्भ पुस्तक (Reference Books)

1. Bining, A.H. Bining, D.H. Teaching the Social Studies in Secondary Schools, New York : Mc-Graw Book Co., 1952.
2. Boraing N.L., Teaching in Secondary School, New Delhi : Amerind Publishing Co. Pvt. Ltd. 1070.
3. Callahan J.F. and Clark, L.H. Teaching in the Middle and Secondary Schools-Planning for Competence, New York : Macmillain Publishing Co. Inc. 1982.
4. Clark, L.H. and Starr, L.S. Secondary School Teaching Methods, London : Macmillan, 1967.
5. Daughtrey, A.S. Methods of Basic Business and Economic Education, Cincinnati : South-Western Publishing Co. 1965.
6. जैन अमीरचन्द्र :सामाजिक शिक्षण, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1973
7. Lee, N. (Ed.), Teaching Economics London : Heinemann Educational books, 1975.
8. Lowman, J., Mastering the Techniques of Teaching, New Delhi : Prentice hall of India Private Ltd. 1987.
9. National curriculum for Primary and Secondary Education - A Framework Revised Version, NCERT, New Delhi, 1988
10. पुरोहित, जगदीश नारायण, शिक्षण के लिए आयोजन, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमिक, 1972
11. एहेला सत्यपाल एवं खान, रियाज शाकिर, सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण, कोटा, कोटा खुला विश्वविद्यालय, छम् 5
12. Wesley, E.B. Teaching Social Studies in High School, Boston : D.C. Health & Co. 1950.

इकाई-6

संचार माध्यम एवं अर्थशास्त्र शिक्षण

(Media & Economics Teaching)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- 6.1 इकाई शिक्षण के उद्देश्य
- 6.2 संचार माध्यम का अर्थ
- 6.3 संचार माध्यम का वर्गीकरण
 - 6.3.1 परम्परागत संचार माध्यम
 - 6.3.2 आधुनिक संचार माध्यम
- 6.4 संचार माध्यमों का विकास
- 6.5 संचार माध्यम के कार्य
 - 6.5.1 सूचना संग्रह एवं प्रसार
 - 6.5.2 सूचना विश्लेषण
 - 6.5.3 सामाजिक ज्ञान एवं मूल्यों का प्रेषण
 - 6.5.4 मनोरंजन
 - 6.5.5 सशजनात्मकता का विकास
- 6.6 संचार माध्यम एवं अर्थशास्त्र शिक्षण
 - 6.6.1 आर्थिक गतिविधिओं का ज्ञान
 - 6.6.2 नवीनतम उत्पादों एवं सेवाओं का ज्ञान
 - 6.6.3 टेली मार्केटिंग
 - 6.6.4 आर्थिक विचार-मंच
- 6.7 अर्थशास्त्र शिक्षण में मिडिया का प्रयोग
 - 6.7.1 समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ
 - 6.7.2 टेप रिकार्डर, बीसीडी., डी.बी.डी. प्लेयर
 - 6.7.3 रेडियो
 - 6.7.4 चलचित्र
 - 6.7.5 दूरदर्शन
 - 6.7.6 कम्प्यूटर
 - 6.7.7 उपग्रह अनुदेशन
- 6.8 सार-संक्षेप
- 6.9 सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन
- 6.10 सन्दर्भ पुस्तकें

6.1 इकाई शिक्षण के उद्देश्य (Objective of the Unit)

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्र संचार माध्यम का अर्थ समझ सकेंगे।

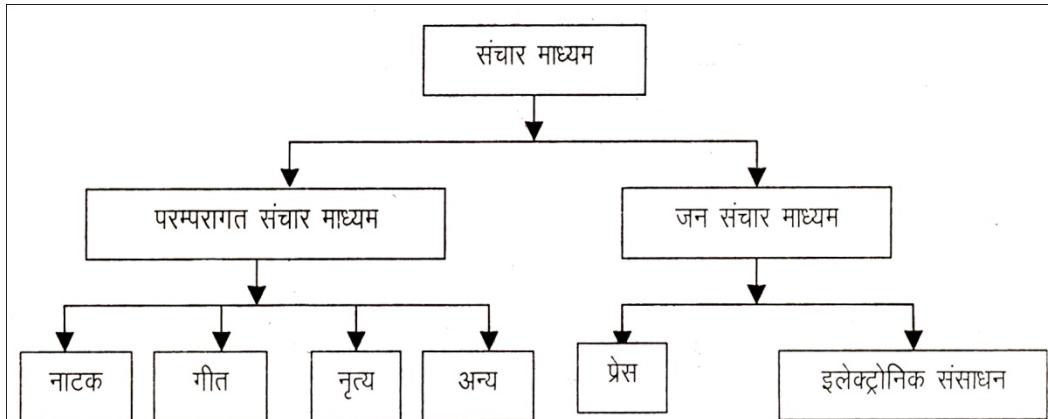
- छात्र विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों का वर्णन कर सकेंगे ।
- छात्र संचार माध्यमों का इतिहास बता सकेंगे ।
- छात्र संचार माध्यम के कार्यों को स्पष्ट करा सकेंगे ।
- छात्र अर्थशास्त्र शिक्षण में संचार माध्यम के योगदान को स्पष्ट कर सकेंगे ।
- छात्र अर्थशास्त्र शिक्षण में विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों का उपयोग कर सकेंगे ।

6.2 संचार माध्यम का अर्थ (Meaning of Media)

संचार माध्यम शब्द अंग्रेजी के मीडिया (Media) शब्द से बना है । इस शब्द का अर्थ है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला । पहला बिन्दु जो संदेश देना चाहता है-संप्रेषक । दूसरा बिन्दु जो संदेश ग्रहण करना चाहता है-ग्रहणकर्ता । शिक्षण प्रक्रिया में ये दो बिन्दु शिक्षक स्व शिक्षार्थी होते हैं । इन दोनों के मध्य जिस साधन से सम्पर्क स्थापित किया जाता है वह शिक्षण कार्य में मिडिया कहा जाता है । स्रोत एवं श्रोता के मध्य मध्यस्थक का कार्य करने वाले को संचार माध्यम कहा जाता है ।

6.3 संचार माध्यम का वर्गीकरण (Classification of Media)

संचार माध्यम को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है । परम्परागत संचार माध्यम एवं जनसंचार माध्यम अथवा आधुनिक संचार माध्यम परम्परागत संचार माध्यम में नाटक, गीत, नृत्य, लोक कला शैलियाँ सम्मिलित हैं जबकि आधुनिक संचार माध्यम में प्रेस एवं इलेक्ट्रोनिक साधन सम्मिलित किये जाते हैं । विज्ञान एवं तकनीक के विकास एवं प्रसार से परम्परागत शैलियों के उपयोग में कमी अवश्य आई है तथापि दोनों प्रकार के माध्यम अभी भी उपयोगी हैं ।



6.3.1 परम्परागत संचार माध्यम (Traditional Media)

ये वे संचार माध्यम हैं जो व्यक्तियों का परम्परागत उत्तराधिकार में प्राप्त होते हैं । समाज में दिये जाने वाले संदेशों को वे लोक कला के विभिन्न लोकप्रिय माध्यमों से प्रसारित करते रहते हैं । राजस्थान के वीर व देशभक्त श्री कल्लाजी, रामदेवजी, तेजाजी, गोगाजी आदि का जान पीढ़ी दर पीढ़ी लोक गीतों, नृत्यों व नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित होता रहा है । समाज में व्याप्त ये समस्त गतिविधियाँ मात्र मनोरंजन के लिए नहीं हैं वरन् इनकी

सहायता से देश भवित, समाज सेवा एवं जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। इनकी विशेषता यह होती है कि ऐतिहासिक सत्य के माध्यम से नवीन विचारों को भी समाहित करते रहते हैं। परिणामस्वरूप सांस्कृतिक हस्तान्तरण/संरक्षण के साथ ज्ञान का प्रसार किया जाता है। परम्परागत संचार माध्यम उत्सवजन्य होने के कारण लोगों की भावना से शीघ्र ही जुड़ते हैं। शिक्षा की जो प्रक्रिया भावनात्मक होती है वह केवल बुद्धिलब्धि (IQ) को ही प्रभावित नहीं करती वरन् संवेग बुद्धि (EQ) एवं आध्यात्मिक बुद्धि (SQ) को भी प्रभावित करती है। भारतीय संस्कृति से जुड़ी भवई व गैर जैसे नृथ, भजन व लोकगीत क्या रामलीला एवं रासलीला जैसे नाटक प्रत्येक पीढ़ी को संदेश देते रहे हैं। यद्यपि शहर में अब इसका प्रभाव कम दृष्टिगोचर होता है किन्तु ग्रामीण समुदाय में अभी भी ये समस्त गतिविधियाँ जन-जीवन से जुड़ी हुई हैं। जिनमें प्राचीन कला, संगीत, ग्रामीण नाटक एवं कठपुतली, हरिकथा, कहानी, उत्सव-त्यौहार, ग्रामीण सभा एवं मेला, ग्रामीण कला एवं व्यवसाय, परम्परागत डिजाइनें आदि सम्मिलित हैं।

6.3.2 आधुनिक संचार माध्यम (Modern Media)

इस वर्ग में वे संचार माध्यम सम्मिलित किये जाते हैं जो वर्तमान औद्योगिक एवं तकनीकी समाज की देन है। इस विद्या में किसी भी सन्देश को प्रसारित करने के लिए आमने-सामने (Face-to-Face) सम्पर्क करने की आवश्यकता नहीं होती। एक सिरे से असंख्य लोगों को सूचनाएं पहुँचाना संभव हो पाता है। इसलिए आधुनिक संचार माध्यम को जन-संचार माध्यम (Public Media) भी कहा जाता है। इसमें समाचार पत्र, समाचार एजेन्सी, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा इत्यादि प्रमुख हैं।

इन माध्यमों से व्यापक स्तर पर सन्देश/ज्ञान निर्माण एवं प्रेषण होता है। परिणामस्वरूप एक स्थान विशेष से एक ही समय में असंख्य लोगों को संदेश/ज्ञान का प्रसारण हो जाता है। अमेरिका के ट्रेड सेण्टर की दुर्घटना, कच्छ-भुज का भूकम्प, नासा की गतिविधि, कुम्भ का मेला, आर्थिक गतिविधि जैसे-शेयर बाजार के उत्तर-चढ़ाव, स्वर्ण मूल्य में परिवर्तन, नवीन उद्योगों की स्थापना, नई औद्योगिक एवं तकनीकी शोध, उपभोक्ता शिक्षा, बैंक की कार्य-पद्धति जैसी नवीनतम जानकारियाँ पूरे विश्व में एक साथ हो जाती हैं। संचार माध्यमों से विषम आकार-प्रकार के एक बड़े जन-समूह में सूचनाएं संचारित करने में सक्षम हो पाते हैं।

6.4 संचार माध्यमों का विकास (Development of Media)

मानव सभ्यता के विकास में कोई भी स्थायित्व नहीं है। परिवर्तन अवश्यम्भावी है। पूर्व में भी होता रहा है, आज भी हो रहा है। निश्चित ही संचार माध्यमों का स्वरूप कल एवं आज भिन्न हैं व आने वाले समय में और भी भिन्न होगा।

सामान्य रूप से संचार माध्यमों का प्रारम्भ चैतन्य मनुष्य के जन्म के साथ ही हो गया। प्राचीन भारत में मौखिक संचार था अतः संचार का माध्यम व्यक्तिपरक था। साधु सन्त, चारण, भाट, व्यास, अध्यापक, राजा की घोषणाएं, राजाज्ञा, दूत, सन्देशवाहक आदि हुआ करते थे। वैदिक काल में सभाएं एवं धार्मिक सम्मेलन हुआ करते थे। बौद्ध धर्म में विचार-विमर्श विद्या प्रचलित थी। इसा पूर्व हर्ष के काल तक विशाल धर्म सम्मेलनों का आयोजन किया जाता था। शास्त्रार्थों की परम्परा के द्वारा निरन्तर ज्ञान का प्रवाह मनीषियों से जनता तक पहुँचता था। तीर्थयात्रा, पर्व, मेले आदि का प्रयोजन भी संचार ही था।

लगभग 2500 ई. पूर्व ही लिपि का विकास हो चुका था। लिखित संचार का विकास इसी के साथ प्रारम्भ हो गया। सिन्धु घाटी की सभ्यता में इसके प्रमाण उपलब्ध हैं। वैदिक साहित्य 1500 ई. पूर्व के लगभग मानी जाती है। हजारों वर्षों के अनुभवों को इसमें संजोया गया। उत्तर वैदिक साहित्य का विकास इसा पूर्व 5वीं सदी में हुआ। कम शब्दों में अधिकतम सन्देश इस साहित्य की विशेषता रही। पाणिनी का व्याकरण व अनेक सूत्रों की रचना हुई। पुराण एवं स्मृतियाँ बाद का लेखन हैं। इस प्रकार लिपि के विकास के साथ पत्रों, तामपत्रों, पत्थरों, वृक्षों के माध्यम से संचार का प्रारम्भ हुआ।

प्राचीन भारत में मूर्ति का प्रयोग संवेदना, शिक्षा तथा प्रभाविता के लिए किया जाता था। इसी प्रकार कला की अन्य विधाएं नृत्य, संगीत एवं अन्य परम्पराएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होती हुई वर्तमान में पहुँच सकी हैं। पूजा, कथा, पाठ, दन्त कथाएं सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम रही हैं। देवताओं के विभिन्न स्वरूप प्रतीकात्मकता लिए हुए हैं। मन्दिरों व उपासना स्थलों पर पूजा के साथ जीवन व्यवहारों की शिक्षा का आदान-प्रदान होता रहा है। धार्मिक कहानियों के आधार पर लीलाएं की जाती रही। कठपुतलियों का प्रयोग भी नाटक विद्या के रूप में किया जाता रहा। इस प्रकार परम्परागत संचार के माध्यम अत्यधिक सशक्त रहे।

विज्ञान एवं तकनीक के विकास ने इन सभी संचार माध्यमों को यान्त्रिक आधार प्रदान किया। मशीन युग ने प्रेस, फिल्म, रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, मोबाइल फोन व उपग्रह दिये जिन्हें वर्तमान में जन-संचार के माध्यम के रूप में क्रियाशील/गतिशील किया जाता है।

ई.868 में चीन में प्रेस का प्रादुर्भाव हुआ। विद्युतीय संचार माध्यम इसके पश्चात् विकसित हुए। 1860-70 में फिल्म का माध्यम के रूप में प्रयोग प्रारम्भ हुआ। 1875 में टेलीफोन, 1890 में वायरलेस टेलीग्राफी, 1912 में रेडियो, 1947 में ट्रांजिस्टर का प्रादुर्भाव हुआ। 1926 में दूरदर्शन का जन्म हुआ। 1957 में विश्व का पहला उपग्रह छोड़ा गया। भारत ने सर्वप्रथम 1975 में आर्यभट्ट नामक उपग्रह छोड़ा। प्रसारण के क्षेत्र एवं विषयों में इन समस्त विकासों के साथ वृद्धि होती ही गई। वर्तमान में Knowledge Society के विकास के लिए भारत ने EDUSAT उपग्रह अन्तरिक्ष में स्थापित किया है जिसका उद्देश्य विशेष रूप से शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना है।

स्व-मूल्यांकन-1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. संचार-माध्यम से आप क्या समझते हैं?
2. संचार-माध्यम कितने प्रकार के होते हैं?
3. परम्परागत संचार-माध्यम से आप क्या समझते हैं?
4. आधुनिक संचार-माध्यम में कौन-कौन से उपकरण सम्मिलित किये जाते हैं?

6.5 संचार माध्यम के कार्य (Functions of Media)

हेराल्ड लासवेल ने जन-संचार माध्यम के कार्यों को निम्न प्रकार से समूहकृत किया है:-

- 6.5.1 सूचना संग्रह एवं प्रसार (Collection & Dissemination of Informations)

समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि देश-विदेश की सूचनाओं को संग्रहीत एवं सम्प्रेषित करते हैं। समाचार का सम्प्रेषण एवं प्रसार उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है। इससे समस्त समाज सूचनाओं से परिचित होता है तथा आवश्यकता होने पर उसका प्रयोग भी कर पाता है। समाज में उच्च पदों पर आसीन लोगों के लिए तो ये देवी स्वरूप साबित होते हैं। राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री जैसे पदों पर विराजमान व्यक्ति जन-मानस की भावनाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ देखकर अपनी कार्य-प्रणाली को प्रभावी बना पाते हैं। अर्थशास्त्र शिक्षण में नवीनतम् सूचनाओं व स्रोतों का ज्ञान इन संसाधनों से प्राप्त हो जाता है।

6.5.2 सूचना विश्लेषण (Analysis of Information)

समय-समय पर रेडियो, दूरदर्शन एवं समाचार पत्रों में सूचनाओं के विश्लेषणात्मक पक्ष, पक्ष-विपक्ष के तर्क भी प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रत्येक घटना एवं आदेश पर सम्पादकीय एवं विश्लेषणात्मक लेख-वार्ता, वृत्त-चित्र प्रसारित करते रहते हैं। विश्लेषण का मुख्य कार्य लोगों को प्रभावित कर निर्माण करना होता है।

संचार माध्यमों पर उन्हीं सूचनाओं का विश्लेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया जाता है जो कि लोगों के ज्ञान वृद्धि के लिए आवश्यक होता है। इस कार्यक्रम में अनेक विद्वानों एवं चिन्तकों को अपने मौलिक विचार समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के अवसर भी प्राप्त होते हैं। इससे जन मानस में स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास भी होता है। सूचकांक, आर्थिक उतार-चढ़ाव, वार्षिक राष्ट्रीय बजट आदि पर विश्लेषणात्मक सत्र अर्थशास्त्र के शिक्षक के लिए अत्यधिक उपयोगी होते हैं।

6.5.3 सामाजिक ज्ञान एवं मूल्यों का प्रेषण (Communication of Social Knowledge and Values)

संचार माध्यमों की समस्त गतिविधियाँ लोगों के ज्ञान में वृद्धि करती हैं। रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य संचार-माध्यमों के द्वारा न केवल सूचनाओं एवं घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है वरन् लोगों के सम्मुख सामाजिक जन-जीवन से जुड़ी अनेक समस्याएं, समाधान के उपाय, घटना-वृत्त व उसके परिणाम, नीतियाँ, कारण प्रभाव सम्बन्ध आदि का ज्ञान भी होता है। लोगों का दृष्टिकोण व्यापक होता है। अभिवृत्ति के निर्माण से व्यक्तित्व का विकास होता रहता है। सामाजिक मूल्यों का ज्ञान होता है। यद्यपि समाज में नकारात्मक गतिविधियों का विस्तार भी इस माध्यम से हो रहा है किन्तु यह संचार-माध्यम का उद्देश्य नहीं है।

6.5.4 मनोरंजन (Entertainment)

समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन, इत्यादि के माध्यम से रोचक कविताएं, गीत, कहानियाँ, नाटक, व्यंग्य, हास्य आदि का प्रदर्शन किया जाता है। जिससे लोगों का मनोरंजन होता है। दिन भर की व्यस्तता, समस्याएं एवं कार्य-भार के तनाव से मुक्त हो स्वस्थ जीवन के लिए मनोरंजन के क्षणों का अपना महत्व है। वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता अत्यधिक बढ़ रही है। विभिन्न चैनलों भक्ति, साधना, ध्यान, दर्शन, धर्म, योग, स्वास्थ्य, व्यंग्य एवं विशेष रूप से हास्य के कार्यक्रमों में वृद्धि की जा रही है।

6.5.5 सृजनात्मकता का विकास (Development of Creativity)

संचार माध्यमों से विभिन्न प्रकार की कलाओं के प्रदर्शन द्वारा जन-मानस प्रेरित होता है। अधिक से अधिक मौलिकता एवं नवीनता का समावेश कर कार्यक्रमों का संयोजन से

सृजनात्मकता के विकास का कार्य भली-भांति सम्पन्न किया जा रहा है। संचार माध्यमों से सृजनात्मकता संजोने के अधिक से अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।

6.6 संचार माध्यम एवं अर्थशास्त्र शिक्षण (Media and Economics Teaching)

6.6.1 आर्थिक गतिविधियों का ज्ञान (Knowledge of Economic Activities)

उक्त समस्त कार्यों के अतिरिक्त विशेष रूप से अर्थशास्त्र शिक्षण में भी संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। समाचार-पत्रों में दैनिक बाजार भाव-खुदरा एवं थोक, वस्तुओं की आपूर्ति, मांग, उत्पादन की मात्रा, आयात-निर्यात सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है। रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, मोबाइल के सहयोग से तो दिन में हर समय नवीनतम सूचनाएं उपलब्ध होती हैं।

6.6.2 नवीनतम उत्पादों एवं सेवाओं का ज्ञान (Knowledge of Latest Products and Services)

समाचार-पत्रों, रेडियो दूरदर्शन, इंटरनेट एवं मोबाइल फोन पर विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं का अत्यधिक आकर्षक विधियों से विज्ञापन किया जाता है। इससे नवीन सेवाओं एवं उत्पादों उपभोक्ता के लिए उसकी उपयोगिता से परिचित होते हैं। आवश्यकता पूर्ति में चयन की प्रक्रिया में यह ज्ञान अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है।

6.6.3 टेली मार्केटिंग (Tele Marketing)

संचार माध्यमों ने बाजार को भौगोलिक सीमाओं से परे कर दिया है। क्रेता एवं विक्रेता पृथ्वी पर कहीं भी हो सकते हैं। एक वस्तु किसी भी स्थान से दुनिया के प्रत्येक कोने में खरीदी व बेची जा सकती है। अतः अब टेली मार्केटिंग के विकास के साथ विनियम की विषय-वस्तु पुस्तकों के अध्ययन से बाहर होती जा रही है। इसे संचार माध्यमों से अधिक प्रभावी तरीके से समझा जा सकता है।

6.6.4 आर्थिक विचार-मंच (Analytical Programme on Economic Activity)

समाचार-पत्रों पत्रिकाओं रेडियों एवं दूरदर्शन पर विभिन्न आर्थिक गतिविधियों-पंचवर्षीय योजनाएँ, वार्षिक राष्ट्रीय/प्रादेशिक बजट, रेल बजट, मुद्रा-स्फीति, महंगाई, ऊर्जा संसाधन, पर्यावरण, जनसंख्या आदि पर वैचारिक सत्र प्रकाशित/प्रसारित होते हैं। अर्थशास्त्र शिक्षण में इस समस्त ज्ञान का प्रयोग शिक्षक यथा आवश्यकता कर सकता है।

स्व-मूल्यांकन-2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. संचार-माध्यम के क्या-क्या कार्य होते हैं?
2. संचार माध्यम से "आर्थिक-विश्लेषण" सम्बन्धी कार्यों का उपयोग आप कैसे कर सकते हैं?
3. अर्थशास्त्र शिक्षण में विशेष रूप से संचार-माध्यम किस प्रकार से उपयोगी होते हैं?

6.7 अर्थशास्त्र शिक्षण में मीडिया का प्रयोग (Use of Media in Economics Teaching)

6.7.1 समाचार-पत्र, पत्रिकाएं (News Paper, Magazines)

समाचार-पत्र/पत्रिकाएं वर्तमान में समय से सर्वाधिक सस्ता एवं सुलभ साधन हैं। भारत के गाँवों के कोने-कोने तक पहुंच जाता है। अन्य संचार-साधनों की तुलना में अर्थशास्त्र शिक्षक के लिए नवीनतम जानकारी आसानी से उपलब्ध होती है। इसके अतिरिक्त कक्षा में भी इसका प्रयोग (सौदाहरण) निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

कक्षा	:	4-8
विषय	:	गुणात्मक जीवन : शिक्षा के प्रति जागरूकता
सामग्री	:	गुणात्मक जीवन हेतु शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने हेतु सम्बन्धित समाचारों की कतरनें
उद्देश्य	:	स्वयं के व्यक्तित्व में अच्छे गुणों के विकास हेतु प्रेरित करना। <ul style="list-style-type: none">• अध्ययन आदतों में सकारात्मक परिवर्तन लाना।• शिक्षा के महत्व को समझते हुए अपने अड़ोस-पड़ोस के सभी छात्रों को शाला में जाने हेतु प्रेरित करना।• उपभोक्तावादी प्रवृत्ति आत्मकेन्द्रित है जो हमें हमारी संस्कृति से परे ले जाती है। इस भाव की समझ विकसित करना।

क्रियान्वयन : (ग्राम्य वातावरण की शाला हेतु

छात्राध्यापक प्रारम्भ से "ग्रामीण.....परिवर्तन किया है।" (संलग्न प्रति में संख्या) तक का समाचार का वाचन कक्षा में करें। दो-तीन छात्रों से भी इसका वाचन करवाये। वाचन के समय सभी छात्रों को एकाग्र होकर सुनने का निर्देश दें।

प्रश्न	:	शहरी क्षेत्र में कितने वर्ष के बच्चे शाला में जाने लगते हैं?
उत्तर	:	तीन वर्ष से ऊपर।
प्रश्न	:	गाँवों में कितने वर्ष के बच्चे शाला में जाते हैं?
उत्तर	:	छः-सात वर्ष के।
प्रश्न	:	इस उम्र तक शहर का बच्चा कितने वर्ष की पढ़ाई पूरी कर लेता है?
उत्तर	:	तीन-चार वर्ष की।

छात्राध्यापक कथन :

जब शहर का बालक कम से कम तीन वर्ष की पढ़ाई पूरी कर लेता है तब ग्रामीण छात्र कलम पकड़ना सीखना प्रारम्भ कर रहा होता है। इस प्रकार शहरी बालक आगे निकल जाता है और ग्रामीण बालक पिछड़ जाता है।

प्रश्न	:	बताओं बच्चों हमें शहरी बच्चों के साथ आगे बढ़ने के लिए क्या करना चाहिए?
उत्तर	:	हमें भी स्कूल जल्दी जाना शुरू कर देना चाहिए।
प्रश्न	:	गाँव में तीन-चार वर्ष से ऊपर वाले बच्चे यदि शाला नहीं जा रहे हों-तो आप क्या करेंगे?

उत्तर : हम उनको शाला जाने के लिए समझायेंगे ।

छात्राध्यापक कथन :

हाँ, आप उन्हें समझाएं कि पढ़ने से हमारा ज्ञान बढ़ता है, हमें नई-नई बाते जानने को मिलती हैं, हमारी भाषा सुधरती है, हम हिसाब कर सकते हैं, हमें कोई धोखा नहीं दे सकेगा । हम बड़े हो कर अच्छी नौकरी कर सकेंगे, जिससे हमारी आय अच्छी होगी । हम आराम से जीवन गुजार सकेंगे । जैसे अन्य पढ़े-लिखे लोग रहते हैं-वैसे हम भी अच्छी तरह रह सकेंगे ।

छात्राध्यापक समाचार संख्या-2 पढ़ कर सुनायेगा । दो-तीन छात्र भी ऊँची आवाज में एक के बाद एक इसको पढ़ेंगे । तत्पश्चात् शिक्षक छात्रों को मौन रह कर 5 मिनट इस समाचार को समझने का प्रयास करने को कहेंगे ।

छात्राध्यापक निम्न प्रश्न पूछेगा.

प्रश्न : केन्द्रीय श्रम मन्त्रालय द्वारा उदयपुर जिले में कितने बाल श्रमिक शिक्षा केन्द्रों को स्थापित करने की स्वीकृति दी गई है?

उत्तर : 40 केन्द्रों की ।

प्रश्न : इसके लिए केन्द्र सरकार ने कितनी राशि जारी की है?

उत्तर : 15 लाख रुपये से अधिक की ।

प्रश्न : इस योजना में उदयपुर जिले के कितने बाल श्रमिक लाभान्वित होंगे?

उत्तर : 2000

प्रश्न : इस योजना में इन बालकों को क्या सुविधा दी जा रही है?

उत्तर : शिक्षण एवं पुनर्वास की सुविधा ।

प्रश्न : यह सुविधा किस तरह के बालकों को दी जा रही है?

उत्तर : बाल श्रमिकों को ।

प्रश्न : बाल श्रमिक से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : बालक जो कमाने के लिए श्रम करते हैं ।

प्रश्न : वे कमाने क्यों जाते हैं?

उत्तर : गरीबी के कारण ।

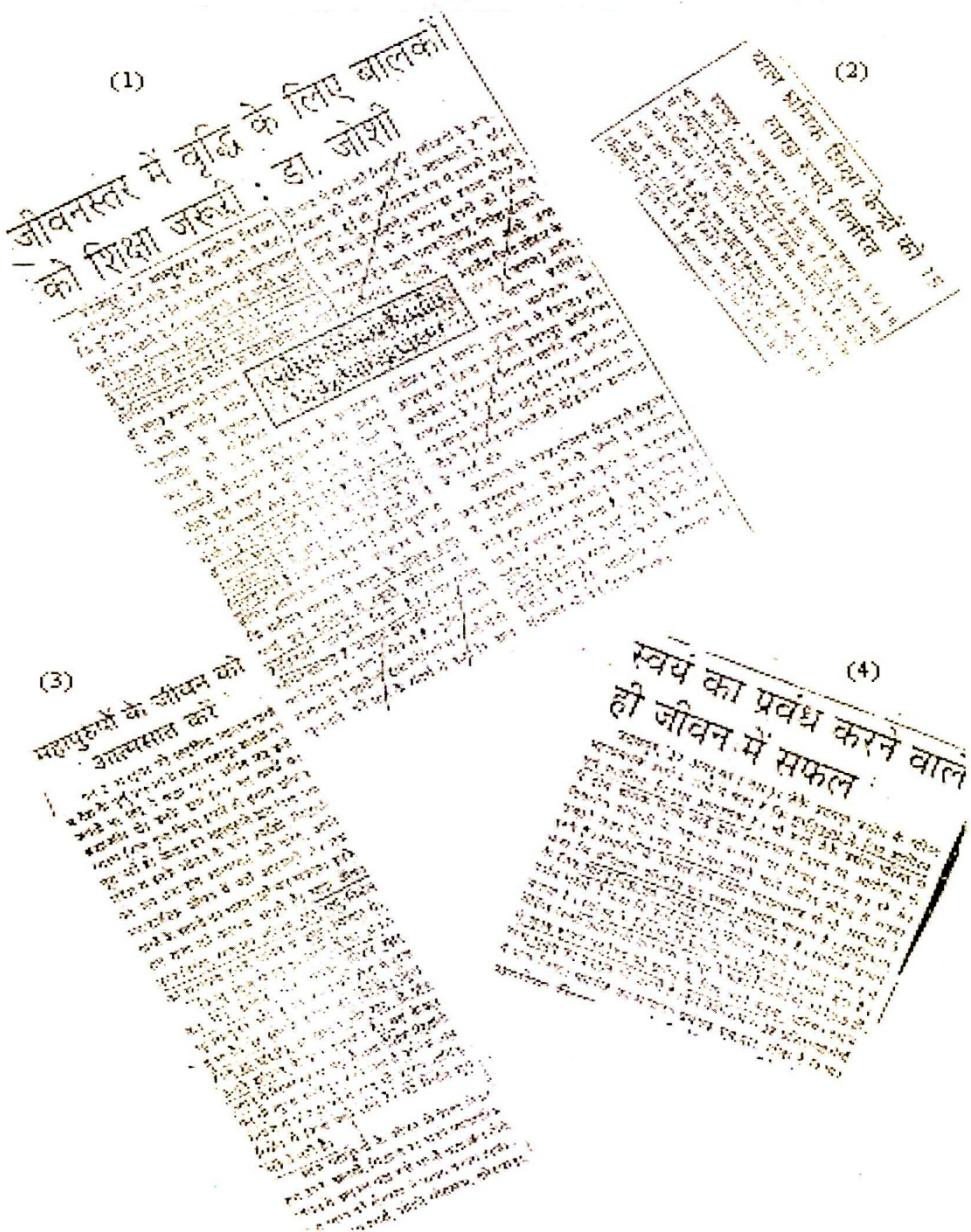
छात्र अध्यापक कथन :

जो बालक गरीबी के कारण पढ़ नहीं सकते हैं उनके लिए सरकार निःशुल्क रहने, खाने व पढ़ने की व्यवस्था करती है । जिससे बहुत गरीब बालक भी आगे बढ़ सकें, अपना विकास कर सकें । पढ़े-लिख कर ये बालक अधिक कमा सकेंगे व परिवार को लाभ दे सकेंगे । उनका जीवन स्तर ऊँचा हो सकेगा । आपके आस-पास रहने वाले परिवारों में से यदि कोई बालक गरीबी के कारण पढ़ाई न करता हो तो उन्हें यह जानकारी देंगे तथा वह भी पढ़े इस बात के लिए प्रेरित करें । इस समाचार की सूचना अपने माता-पिता को भी देंगे । जिससे वे भी अन्य लोगों को बता सकें । शिक्षक दूसरे दिन छात्रों से बात-चीत कर आश्वस्त होने का प्रयास करें कि उन्होंने अपने घर/पास-पड़ौस में संबन्धित चर्चा की है । समुदाय की प्रतिक्रिया क्या रही यह जानने का भी प्रयास करें ।

नोट : इसी प्रकार समाचार पटल पर दिये गये कमांक 3 एवं 4 समाचारों का उपयोग किया जायेगा । छात्राध्यापक तीसरे समाचार का उपयोग करके गुणात्मक शिक्षा, जीवन में मूल्यों को अपनाने का महत्व, महान शक्तियों का अनुकरण आदि के लिए करेगा । इसके साथ वह महान

शक्तियों में से किसी के प्रेरक प्रसंग भी सुना सकता है जिससे इसे और सशक्त बनाया जा सके। समाचार संख्या-4 अत्यधिक गहराई लिए हुए हैं। स्वविकास के लिए स्व-प्रबन्ध एवं समय-प्रबन्ध के सम्प्रत्यय को स्पष्ट कर स्वनुशासन एवं समय के सदुपयोग के लिए प्रेरित करेगा। इससे समाज में उसका स्तर ऊँचा उठेगा। इसके साथ भी छात्राध्यापक अन्य प्रेरक प्रसंगों का प्रयोग कर प्रभावोत्पादक शैक्षिक वातावरण निर्मित कर सकेगा।

गुणात्मक जीवन: शिक्षा के प्रति जागरूकता



6.7.2 टेप-रिकॉर्डर, वी.सी.डी. डी.वी.डी. प्लेयर (Tape Recorder, V.C.D., D.V.D. Player)

कक्षा शिक्षण में जितनी भी श्रव्य सामग्री प्रस्तुत की जाती है उनमें सर्व प्रथम स्थान उसकी उपयोगिता के कारण टेप रिकॉर्डर को दिया जाता है। टेप रिकॉर्डर ऐसा यन्त्र है जिसमें बिजली की सहायता से ध्वनि को टेप पर संग्रहित कर लिया जाता है। यह फोनोग्राम की भाँति चालित होता है। रेडियो में तो कार्यक्रम के अनुसार हमें समय बदलना पड़ता है अतः रेडियो साधन न बनकर महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लेता है और सम्पूर्ण बालक तथा कक्षा सभी कुछ उसके समय के अनुसार अपने लिये व्यावस्थित करने को विवश होते हैं। किन्तु टेप रिकॉर्डर तो कक्षा शिक्षण में एक साधन मात्र रहता है और महत्व कक्षा एवं बालक का है। उसके साथ समय की कोई अङ्गचन नहीं। वह सभी सीमाओं का निराकरण कर हर समय, प्रत्येक स्थिति में, प्रत्येक कक्षा में आसानी से प्रयुक्त किया जा सकता है। इसी प्रकार दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों के लिए वी.सी.डी. एवं डी.वी.डी. प्लेयर उपयोग में लाये जा सकते हैं। विज्ञान की नवीन उपलब्धियों में विडियो कैसेट एवं विडियो सीडी, डीवीडी का अपना महत्व है। इसके माध्यम से दूरदर्शन, फिल्म एवं एज्युकेट के कार्यक्रमों को रिकॉर्ड किया जा सकता है। अच्छे शैक्षिक कार्यक्रमों की कैसेट्स, सीडी, डीवीडी बनाई जा सकती हैं। इनका आवश्यकतानुसार विभिन्न कक्षाओं में एक से अधिक बार भी उपयोग किया जा सकता है। नवीन प्रयोगों, उपचारात्मक शिक्षणों आदि के लिए यह संचार माध्यम अत्यधिक उपयोगी प्रमाणित होता है। इसे कक्षा में प्रयुक्त किया जा सकता है। शाला के बड़े कार्यक्रमों में प्रयुक्त किया जा सकता है। साथ ही छात्र अपने घर पर भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। अर्थशास्त्र विषय से संबन्धित वक्तव्यों, भाषणों, कविताओं, गीतों, अभिनयों, एकांकियों, नाटकों के ग्रामोफोन रिकॉर्ड स्थायी होते हैं किन्तु इसमें टेप किये गये रिकॉर्ड अस्थायी होते हैं। इच्छित समय के भीतर इच्छित रिकॉर्ड सुगमता से संभव है। विद्युत आपूर्ति के अभाव में सेल (Battery) द्वारा भी इसका प्रयोग सम्भव है।

6.7.3 रेडियो (Radio)

कुछ अक्षमताओं के होते हुए भी रेडियो शिक्षण का एक शक्तिशाली साधन है। पश्चिम की प्रायः सभी शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा के सभी स्तरों पर नियमित रूप से रेडियो का उपयोग किया जाता है। भारत में ऐसे स्कूलों की संख्या बहुत कम है जिनमें रेडियो का उपयोग कक्षा में किया जाता हो। फिर भी आकाशवाणी के प्रायः सभी केन्द्रों से स्कूलों के लिये नियमित कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। देश की तृतीय पंचवर्षीय योजना में दृश्य-श्रव्य सामग्री के विकास की योजनाओं में एक प्रस्ताव यह भी था कि देश के प्रत्येक हाई स्कूल व हायर सैकंडरी स्कूलों में रेडियो सेट लगाये जायें। सामान्यतः रेडियो पाठ दो प्रकार के होते हैं -

(अ) ज्ञानवर्धक पाठ -

इनमें उन प्रसारणों को सम्मिलित किया जाता है जिनका पाठ्यचर्चा से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता, तथापि इन प्रकरणों की पूर्व पीठिका के रूप में उनसे पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है। कश्मीर की यात्रा से संबन्धित किसी वार्ता को कश्मीर के विषय में भूगोल का पाठ नहीं माना जा सकता, तथापि ऐसी वार्ता भूगोल के पाठ की उपयोगी भूमिका हो सकती है।

(ब) प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ

संसार के प्रायः प्रत्येक प्रसारण केन्द्र से ऐसे कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, जिनका स्कूलों की पाठ्यचर्चा से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। ये कार्यक्रम अत्यन्त उपयोगी होते हैं क्योंकि उनके लिये

अध्ययन और तैयारी में पर्याप्त समय दिया जाता है। कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापकों को अध्ययन और तैयारी के लिए उतना समय नहीं मिल पाता।

(स) अर्थशास्त्र शिक्षण में रेडियो का योग -

1. रेडियो अर्थशास्त्र विषय से संबन्धित ऐसे उत्कृष्ट कार्यक्रम सुलभ होते हैं जो सामान्यतः नहीं सुने जाते। उन कार्यक्रमों का उपयोग कक्षा में प्रत्यक्ष अथवा रेकॉर्ड करके किया जा सकता है।
2. जो नवीनतम् सूचनायें व समाचार रेडियो से मिलते हैं उन्हें सुनकर कक्षा में सम्बन्धित प्रकरण के साथ जोड़ा जा सकता है।
3. अध्यापकों की सहायता के लिये रेडियों विविध विषय के विशेषज्ञों को कक्षा में प्रस्तुत करता है।
4. अर्थशास्त्र विषय के प्रत्यक्ष पाठ का उपयोग कक्षा में प्रयुक्त किया जा सकता है।
5. अर्थशास्त्र विषय से संबन्धित नये शब्दों, आधुनिक वाक्यांशों, नवीन सम्प्रत्यय आदि को सीखने में रेडियो कार्यक्रम अध्यापकों व विद्यार्थियों दोनों की सहायता करते हैं।

6.7.4 चलचित्र (Film)

भारत के प्रगतिशील शिक्षाविद् और शिक्षक शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर फिल्मों के महत्व को बहुत समय से स्वीकार करते आये हैं। कोई औद्योगिक प्रक्रिया हो, प्राकृतिक तत्व हो या कोई महत्वपूर्ण घटना, उसे जानने की आदर्श पद्धति है उसे देखना। जानार्जन में हमें अप्रत्यक्ष प्रेक्षण का सहारा लेना पड़ता है। फिल्म इसके लिये सर्वोत्तम साधन है।

शिक्षा में चलचित्रों का योगदान

(अ) गतिशीलता -जीवन वस्तुतः गतिशीलता में ही है और जीवन से संबन्धित किसी भी पदार्थ के प्रस्तुतीकरण में गतिशीलता का योग उसे कहीं अधिक यथार्थ बना देता है। यदि भूगोल की यथार्थताओं का बोध कराना हो और, विषयगत पदार्थों की यथार्थ अभिधारणा बच्चों को करानी हो तो गतिशीलता का तत्व अति आवश्यक है। मानसून, धाराएं, ज्वार-भाटा, हिमनद, ज्वालामुखी, दिन व रात्रि जैसे प्रकरणों के अध्ययन अध्यापन में फिल्म अत्युत्तम साधन है।

(आ) अदृश्य पदार्थों का प्रत्यक्षीकरण -इतिहास में अतीत की घटनावली एवं अन्य जो वस्तुतः हम प्रत्यक्ष उदाहरण पानीपत का युद्ध, मोहनजोदड़ो का जीवन आदि नहीं देख सकते हैं। ऐसे अदृश्य विषय-वस्तु सम्बन्धित फिल्म देखकर जान को रुचि पूर्ण एवं स्थायी बनाया जा सकता है।

(इ) आर्थिक प्रक्रियाओं के सम्प्रत्यय - सम्प्रत्यय रेखाचित्रों की शृंखला की सहायता से ऐसी फिल्में बनायी जा सकती हैं जो उन प्रक्रियाओं को भी दिखा सकें जो अन्यथा नहीं देखी जा सकती। जैसे - आय प्रवाह क्रियाविधि की प्रक्रिया आदि।

(ई) प्रक्रिया का आद्यन्त अवलोकन - जानार्जन की अनेक अवस्थाओं में विशेष कर शिल्प एवं तकनीक के प्रशिक्षण में तकनीकों व प्रक्रियाओं का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है। खेती के किसी औजार का प्रयोग कैसे किया जाये। फल संरक्षण कैसे किया जाता है। रेशम उद्योग, बाजार, शेयर बाजार आदि कैसे काम करता है? इन प्रक्रियाओं का प्रदर्शन करने वाली फिल्म बनायी जाये तो हम उनका उपयोग सुविधापूर्वक कर सकते हैं।

(उ) फिल्में चरित्र का निर्माण करती हैं - फिल्म का प्रयोग केवल जान की अभिवृद्धि ही नहीं कभी-कभी अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिये भी किया जा सकता है। खानों तथा खेती के कुछ

पहलुओं से संबन्धित फ़िल्में खानों व खेतों में काम करने वालों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर सकती है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का चित्रण करने वाली फ़िल्म संभावतः उस क्षेत्र के दूदशाग्रस्त लोगों के प्रति संवेदना उत्पन्न करती है।

स्व-मूल्यांकन-3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अर्थशास्त्र शिक्षण समाचार-पत्रों का प्रयोग आप कैसे करेंगे?
2. टेप रिकॉर्डर / वीसीडी / डीवीडी / को दूरदर्शन / रेडियो के कार्यक्रमों के सहयोग उपकरण के रूप में कैसे प्रयोग करेंगे?
3. रेडियो का शिक्षण में क्या महत्व हैं?
4. चलचित्र का शिक्षण में कैसे उपयोग करेंगे?

6.7.3 दूरदर्शन (Television)

अमेरिका में टेलीविजन शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारत में इसका प्रारम्भ 1955 में हुआ। टेलीविजन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वह जीवन्त होता है। बच्चे उसे बड़ी रुचि से देखते हैं। वे जानते हैं कि जो कुछ वे देख रहे हैं वह सब सचमुच उसी क्षण घटित हो रहा है। टेलीविजन योग्यतम शिक्षकों को देश की सम्पूर्ण शिक्षा संस्थाओं तक पहुँचा देता है तथा इस प्रकार शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाता है।

टेलीविजन का एक लाभ यह है कि इसमें मानचित्र, भौगोलिक, मॉडल, फोटोचित्र फिल्में, श्यामपट्ट, फ्लेनल बोर्ड आदि विविध प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ताकि शिक्षण में सहायता मिले।

समान्य रूप से टेलीविजन की सबसे प्रमुख असुविधा यह है कि इसके माध्यम से पढ़ाने वाले अध्यापक का छात्रों के साथ सम्बन्ध स्थापित नहीं होता। अतः यह एक पक्षीय संवाद मात्र रह जाता है। बच्चे अध्यापक से प्रश्न नहीं पूछ सकते फिर भी वर्तमान में किया जा रहा प्रयोग अत्यधिक लाभप्रद है। दो तरफा जुड़ाव से तत्काल प्रश्न-उत्तर दूरदर्शन पर संभव हुए हैं। एज्युसेट (EDUSAT) के जुड़ाव ने विषय-विशेषज्ञों के द्वारा शिक्षण को न केवल कक्षाओं तक पहुँचाया है वरन् प्रश्न-उत्तर की सुविधा भी उपलब्ध करवायी है। राजस्थान प्रदेश में भी यह प्रयास जारी है।

दूरदर्शन प्रयोग के सोपान

1. स्वयं की तैयारी -

- ◆ दूरदर्शन पर दिखाने हेतु विषय सामग्री चयन।
- ◆ चयनित विषय सामग्री का स्तर।
- ◆ चयनित सामग्री का पूर्व दर्शन।
- ◆ इसके प्रयोग की योजना निर्माण।
- ◆ गाइड/निर्देशिका हो तो उसका प्रयोग।
- ◆ विषय-सामग्री की पूर्ण जाँच।

2. कक्षा-कक्ष की तैयारी -

- ◆ विषय-वस्तु का शीर्षक श्यामपट्ट पर लिखे।

- ◆ उपकरणों को व्यवस्थित रूप से जमा लें ।
 - ◆ बैठक व्यवस्था की जाँच करें ।
3. छात्रों की तैयारी -
- ◆ विषय-वस्तु को देखने के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण करें ।
 - ◆ कक्षा को अभिप्रेरित करें ।
 - ◆ नवीन शब्दों के पूर्व अध्ययन के निर्देश दें ।
 - ◆ ध्यान दिये जाने वाले मुख्य बिन्दुओं पर विचार-विमर्श करें ।
 - ◆ छात्रों के प्रश्नों की सूची बनाएँ ।
4. प्रस्तुतीकरण -
- ◆ कक्षा में सभी छात्र बैठे ।
 - ◆ शिक्षक अपना स्थान ले ।
 - ◆ मूँछी कैमेरा सेट करें ।
 - ◆ ध्वनि स्तर जाँचे ।
 - ◆ प्रदर्शन करें ।
5. अनुवर्तन-
- ◆ विचार-विमर्श ।
 - ◆ परीक्षण ।
 - ◆ मूल्यांकन ।

6.7.6 कम्प्यूटर (Computer)

कम्प्यूटर के द्वारा शिक्षा प्रदान करना शैक्षिक प्रौद्योगिकी की महान उपलब्धि है । समाचार, सूचनाएं, पुस्तकें, विषय-सामग्री समस्त क्षेत्रों से सम्बन्धित नवीनतम ज्ञान इस यंत्र पर रहता है । छात्र अपने समझने की योग्यता व गति के अनुरूप इससे ज्ञान प्राप्त करता जाता है ।

कम्प्यूटर पर इंटरनेट की सहायता से छात्र की पहुँच में व्यापकता आई है । साथ ही वेबसाईट के ऊपर दिये गये समस्त ज्ञान वह अपने पास पाता है । परिणामस्वरूप कक्षा से भी अधिक नवीनतम ज्ञान इसके पास होता है । अर्थशास्त्र शिक्षण में नवीनतम तथ्यों का महत्व होता है । अतः इस विषय के लिए यह यन्त्र अत्यधिक उपयोगी है । यदि शिक्षक इसे अपने सहयोगी उपक्रम के रूप में प्रयुक्त करे तो शिक्षण अत्यधिक उपयोगी हो सकता है ।

6.7.7 उपग्रह अनुदेशन (Satellite Instruction)

भारतवर्ष में उपग्रह द्वारा शिक्षा प्रदान करने का सर्वप्रथम प्रयोग 1975 में किया गया । प्रारम्भ में सीमित क्षेत्र में ही इसका प्रयोग किया जाता रहा । वर्तमान में EDUSAT केवल शिक्षा के संचार माध्यम के रूप में अन्तरिक्ष में स्थापित किया गया है । इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण भारत के छोटे से छोटे गाँव तक साक्षरता, विभिन्न संकायों की कक्षाएं, विभिन्न स्तरों का शिक्षण, व्यवसायिक व तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा जैसी समस्त गतिविधियों का प्रसारण किया जा रहा है । मानव संसाधन विकास मन्त्रालय एवं इसरो (ISRO) के संयुक्त प्रयासों से दो तरफा श्रव्य एवं दृश्य कार्यक्रम संचालित हैं । इसमें छात्र सम्मुख कक्षा की भाँति प्रश्नोत्तर कर सकते हैं । इसके कार्यक्रमों की जानकारी पूर्व में दे दी जाती है जिससे विषय अध्यापक इसका भरपूर लाभ

प्राप्त कर सके। राजस्थान के समस्त डाइट (DIET) सीटीई (CTE) एवं आई.ए.एस.ई. (IASE) में इसके यन्त्र लगा दिये गये हैं। कक्षाओं में प्रयोग शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायेगा।

6.8 सार-संक्षेप (Summary)

संप्रेषक एवं ग्रहणकर्ता के मध्य सम्पर्क स्थापित करने वाले साधन को संचार माध्यम कहा जाता है। इन्हें परम्परागत एवं आधुनिक संसाधनों में वर्गीकृत किया जाता है। परम्परागत साधनों में लोकगीत, नाटक, नृत्य, कथाएं, पर्व, त्यौहार आदि सम्मिलित होते हैं जिनका प्रयोग भारत के गाँवों में आज भी किया जाता है। जन संचार माध्यम में प्रेस एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधन सम्मिलित हैं जो 21 वीं सदी के विकास की गति को तीव्र करने में सहायक हैं।

परम्परागत साधनों का प्रयोग केवल सूचनाओं का प्रसारण ही नहीं करता वरन् लोगों को आवानाओं एवं मूल्यों से जोड़ता है। जबकि नवीन स्रोतों का सूचना प्रसारण पर अधिक जोर रहता है। सूचना संग्रह, विश्लेषण, प्रसार, मूल्यों का प्रेषण, मनोरंजन, सृजनात्मकता आदि कार्य संचार माध्यमों से किये जा सकते हैं।

अर्थशास्त्र शिक्षण में संचार माध्यमों से आर्थिक गतिविधियों, नवीनतम उत्पादों एवं सेवाओं, टेली मार्केटिंग आदि के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें समाचार-पत्र, टेपरिकॉर्डर, रेडियो, चलचित्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, वीडियो कैसेट, उपग्रह अनुदेशन आदि के प्रयोग की पूर्व तैयारी, वास्तविक उपयोग व अनुवर्ती विचार-विमर्श से पूर्ण उपयोग कर सकते हैं।

6.9 सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

1. संचार माध्यम क्या है? इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।
What is Media ? Explain its different types.
 2. अर्थशास्त्र शिक्षण में संचार माध्यम के उपयोग को स्पष्ट करें।
Explain the use of Media in Economics Teaching.
 3. दूरदर्शन का शिक्षण में कैसे प्रयोग करेंगे?
How could you use TV in Teaching ?
-

6.10 सन्दर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. SHARMA R.A. (1986) Educational Technology, Loyal Book Depot, Meerut
2. शर्मा एवं पारीक (2005) शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षाकक्ष प्रबन्धन, जयपुर शिक्षा प्रकाशन।
3. नागर दिव्यप्रभा (1999), अर्थशास्त्र शिक्षण, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन।
4. शर्मा, ए.आर. एवं शर्मा सुधा (1998), शैक्षिक प्रौद्योगिकी के मूल आधार आगरा, साहित्य प्रकाशन।
5. सिंह ओम प्रकाश (1993), संचार माध्यमों का प्रभाव, नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी।

इकाई-7

नियोजन-सत्रीय, इकाई एवं दैनिक पाठ योजना (Planning-Sessional, Unit and Daily Lesson Plan)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

-
- | | |
|-------|---------------------------------|
| 7.1 | इकाई के उद्देश्य |
| 7.2 | नियोजन का अर्थ |
| 7.3 | शिक्षण योजना का महत्व |
| 7.4 | नियोजन के प्रकार |
| 7.4.1 | सत्रीय कार्य योजना |
| 7.4.2 | अर्थशास्त्र में इकाई योजना |
| 7.4.3 | अर्थशास्त्र में दैनिक पाठ योजना |
| 7.5 | सार-संक्षेप |
| 7.6 | सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन |
| 7.7 | सन्दर्भ साहित्य |
-

7.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- शिक्षण के लिये पाठ योजना के महत्व को समझ सकेंगे।
 - अर्थशास्त्र शिक्षण की वार्षिक/सत्रीय योजना बना सकेंगे।
 - अर्थशास्त्र के प्रकरणों पर इकाई योजना एवं दैनिक पाठ योजना बना सकेंगे।
-

7.2 नियोजन का अर्थ (Meaning of Planning)

किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए योजना की आवश्यकता पड़ती है। योजना का अर्थ है किसी कार्य को प्रभावशाली ढंग से सम्पादित करने के लिए उस पर गहराई से पूर्व चिन्तन करना। इस चिन्तन में क्या करना है? क्यों करना है? कैसे करना है? कब करना है? जो कुछ किया वह कैसा रहा? आदि प्रश्न समाविष्ट रहते हैं। शिक्षण जैसी महत्वपूर्ण किया को करने के पूर्व भी यह सब सोचना ही होगा। योजनाबद्ध शिक्षण करना ही एक अच्छे शिक्षक का कर्तव्य है। यह सत्य है कि योजना के अभाव में वह अच्छी तरह से शिक्षण कर भी नहीं पायेगा।

एक कुर्तर्क है कि एक दिन में 5 से 7 कालांश लेने वाले शिक्षक के लिए शिक्षण आयोजन करना असम्भव कार्य है, लेकिन यह अनुचित है। प्रारम्भ में लिखित विस्तृत योजनाओं की आवश्यकता होती हैं, बाद में संक्षिप्त योजनाओं से कार्य चल जाता है। अध्यापन व्यवसाय में आने के पश्चात् भी शिक्षक को अपनी डायरी में लघु प्रारूप लिखना ही होता है। यदि शिक्षक को

वास्तव में कक्षा में जाकर शिक्षण करने की इच्छा है तो अनचाहे भी मौखिक या काल्पनिक पाठ योजना अवश्य निर्मित करता है।

7.3 शिक्षण योजना का महत्व (Importance of Lesson Planning)

योजना का अर्थ है किसी कार्य के प्रभावशाली ढंग से किये जाने के लिये उसके विभिन्न पहलुओं पर पूर्व चिन्तन करना। हम जो भी कार्य करते हैं उससे संबन्धित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये एक योजना बनाते हैं और उसे कार्यान्वित करते हैं। आयोजन आज के वैज्ञानिक युग की आवश्यकता है।

हम जो भी कार्य करते हैं, उसके बारे में लिखित अथवा काल्पनिक रूप में एक योजना बना लेते हैं कि क्या, कब और कैसे करना है। शिक्षण प्रक्रिया में भी आयोजन बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक को जो कुछ पढ़ना होता है, उसके बारे में वह पूर्व चिन्तन अवश्य करता है अर्थात् वह सोचता है कि विषय-वस्तु को ठीक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में क्या कठिनाइयाँ सामने आयेंगी और वह किस प्रकार इन कठिनाइयों का निवारण कर सकेगा। शिक्षक के मस्तिष्क में विषय-वस्तु के शिक्षण की एक रूपरेखा अवश्य होती है। इस प्रकार का चिन्तन ही पाठ योजना का आधार है सेवारत शिक्षकों को भी इसकी महत्ता समझना चाहिये और पाठ योजना बनानी चाहिये भले ही यह संक्षिप्त रूप में हो।

पाठ योजना में उन शिक्षण अधिगम स्थितियों का विवरण होता है जिसके द्वारा विषय वस्तु से संबन्धित उद्देश्यों (विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन) की प्राप्ति संभव होती है। ऐसा भी हो सकता है कि इस पूर्व चिन्तन पर आधारित पाठ योजना से भिन्न परिस्थितियों कक्षा में उत्पन्न हो जाये, शिक्षक को इस अवस्था में आवश्यकतानुसार निर्धारित कार्यप्रणाली में परिवर्तन कर देना चाहिये और वह ऐसा करता भी है। इस प्रकार के अनुभवों से शिक्षक को अविष्य में अच्छी और प्रकार्यात्मक (Functional) योजना बनाने में सहायता मिलती है।

शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में बहुत सी बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है, ये बातें निम्न प्रकार हैं -

1. विषय-वस्तु का ज्ञान।
2. विद्यार्थियों के ज्ञान की जानकारी।
3. विद्यार्थियों के मनोविज्ञान की समझ।
4. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, क्षमताओं, अभिरुचियों एवं अभिवृत्तियों का ज्ञान।
5. शिक्षा के उद्देश्यों एवं इनमें हो रहे परिवर्तनों का ज्ञान।
6. विषय शिक्षण के उद्देश्यों की जानकारी।
7. शिक्षण विधियों और प्रविधियों का ज्ञान।
8. विद्यालय एवं समुदाय में उपलब्ध शैक्षिक सामग्रियों की जानकारी।
9. मूल्यांकन की प्रविधियों की जानकारी।

पाठ योजना एक अच्छी निदेशात्मक रीति (Instructional Device) है जिससे शिक्षक को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं -

1. पाठ योजना शिक्षक के शिक्षण कार्य को नियोजित, क्रमबद्ध और संगठित बनाती है।

2. पाठ योजना उद्देश्यों पर आधारित होती है इसलिये व्यवहार के तीनों पक्षों - ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक, को आवश्यकतानुसार महत्ता मिलती है।
 3. इसके द्वारा शिक्षक की विषय-वस्तु की अच्छी तैयारी हो जाती है।
 4. इसके द्वारा शिक्षक अच्छी शिक्षण विधियों और प्रविधियों का प्रयोग करने के लिये प्रेरित होता है।
 5. इसके द्वारा शिक्षक को अपने शिक्षण की सफलता अथवा असफलता का आभास होता रहता है जिससे शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों को लाभ पहुंचता है।
 6. पाठ योजना द्वारा शिक्षक अपने समय एवं क्षमताओं का सदुपयोग करता है।
 7. पाठ योजना द्वारा शिक्षक को शिक्षण की पूर्ण प्रक्रिया ध्यान में रहती है, इसलिये उसमें आत्म-विश्वास बना रहता है।
 8. शिक्षक के व्यवस्थित ढंग से कार्य करने का विद्यार्थियों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।
 9. पाठ योजना विषय के विभिन्न प्रकरणों में सम्बन्ध पैदा करती है जिससे शैक्षिक प्रक्रिया में निरन्तरता बनी रहती है। इसके अतिरिक्त पाठ योजना विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान और नवीन ज्ञान में भी सम्बन्ध स्थापित कराने में सहायक होती है।
- किसी भी विषय के प्रभावी शिक्षण के लिए सर्व प्रथम सत्रीय योजना बनायी जायेगी। तत्पश्चात् इकाई योजना और दैनिक पाठ योजना। इन योजनाओं के विभिन्न पहलुओं और अर्थशास्त्र शिक्षण में इनके प्रयोग के बारे में विवेचन इस इकाई के अगले भागों में दिया जा रहा है।

स्व-मूल्यांकन-1

1. पाठ योजना का निर्माण करने में किन बातों की जानकारी आवश्यक होती है?

7.4 नियोजन के प्रकार (Types of Planning)

अर्थशास्त्र शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की कार्य-योजनाओं के निर्माण की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होती है।

7.4.1 सत्रीय कार्य योजना (Sessional Plan)

सम्पूर्ण सत्र के लिये प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विषय के लिए एक सत्रीय योजना बनायी जाती है। इसमें निम्नांकित विशेषताएं होनी चाहिए -

1. व्यवहारिकता
2. लचीलापन
3. व्यापकता
4. विविध गतिविधियों युक्त
5. उपलब्ध साधनों के अनुरूप
6. शिक्षक की योग्यता के अनुकूल
7. व्यक्तिगत विभिन्नताओं की पोषक
8. छात्रों के स्तर के अनुसार

सत्रीय योजना की रूपरेखा (Outline of the Sessional Plan)

सत्रीय योजना विभागीय पंचांग तथा सम्पूर्ण गतिविधियों को ध्यान में रखकर बनेगी ।		
सम्पूर्ण सत्र	:	1 जुलाई से 15 मई तक
उपसत्र	:	तीन
प्रथम सत्र	:	1 जुलाई से 31 अक्टूबर
द्वितीय सत्र	:	1 नबम्बर से 28 फरवरी
तृतीय सत्र	:	1 मार्च से 16 मई
कार्य दिवस	:	कुल 248 कार्यदिवस
		सत्र के मध्य में परीक्षाओं के लिए 30 दिवस
		अन्य गतिविधियों के लिए 19 दिवस
		शेष शिक्षण हेतु 200 दिवस

उक्त तीन सत्रों के अनुसार सत्रीय योजना का प्रारूप निम्न प्रकार बनाया जा सकता है:-

सत्रीय योजना निर्माण :

1. अर्थशास्त्र विषय शिक्षण के लिए समय सारणी में एक सप्ताह में कितने कालांश दिये जाते हैं?
2. प्रत्येक सप्ताह में दिये गये कालांशों के आधार पर प्रत्येक माह में कितने शिक्षण दिवस प्राप्त होंगे? इसका आकलन पंचांग देख कर किया जायेगा ।
3. प्रत्येक उप सत्र में अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए उपलब्ध कालांश जोड़ लिए जायें ।
4. सम्पूर्ण सत्र में उपलब्ध कुल कालांश जात कर लिए जायें ।
5. यही यह प्रारूप यह मान कर बनाया गया है कि किसी एक कक्षा में सत्र भर में प्राप्त शिक्षण दिवसों (200) में अर्थशास्त्र विषय शिक्षण का अवसर प्राप्त हो जायेगा । तब एक शिक्षक निम्न प्रकार से योजना बना सकेगा

प्राप्त शिक्षण कालांश	:	200
शिक्षण हेतु इकाईयाँ	:	21
औसत रूप से प्रत्येक इकाई हेतु उपलब्ध कालांश	:	9-10
6.		अब शिक्षक को यह देखना होगा कि प्रत्येक इकाई में से सरल/कठिन, आकार, उपलब्ध कठिन संप्रत्यय/सिद्धान्त/मॉडल आदि कितने हैं उसके आधार पर किसी में कुछ कम व किसी में कुछ अधिक कालांश का सन्तुलन कर पाठ्यक्रम पूर्ण करने की दृष्टि से कालांशों का वितरण करना चाहिए ।
7.		प्रत्येक इकाई बार आवश्यक कालांश शिक्षण, निदान, उपचारात्मक शिक्षण व इकाई परीक्षण हेतु वितरित किया जाता है । जैसे प्रथम इकाई 10 कालांश (6,1,2 एवं 1) में समाप्त करने की योजना दिखाई गई है ।
8.		अन्त में आकस्मिक रूप से घोषित अवकाशों एवं स्वयं के अवकाशग्रस्त होने की संभावना पर विचार कर योजना से 8-10 दिन की बचत करनी चाहिए । इस प्रकार से निर्मित सत्रीय योजना से अर्थशास्त्र विषय को किसी सत्र में अवस्थित रूप से पढ़ाया जाना सम्भव होगा ।

सत्रीय/वार्षिक योजना - 2007-08

शिक्षण योजना	उपसत्र																			कुल कालांश		
	I-जुलाई-अक्टूबर						II-नवम्बर-फरवरी						III-मार्च-मई									
	इकाइयाँ																					
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	
शिक्षण का.	6	7	6	6	6	6	6	6	7	6	6	6	7	6	7	6	6	6	6	6	130	
निदान का.	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	21	
उ.शि. का.	2	2	1	1	1	1	2	1	1	2	1	1	1	2	2	1	1	1	2	1	28	
5 परख का.	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	21	
कुल	10	11	8	8	7	10	10	6	9	11	10	8	8	11	10	11	9	7	10	10	6	200
आवश्यक कालांश																						

संकेत नोट - का. - कार्य

उ.शि. - उपचारत्मक शिक्षण

इ.प. - इकाई परख

7.4.2 अर्थशास्त्र में इकाई योजना (Unit Planning in Economics)

वर्तमान समय में किसी विषय का पाठ्यक्रम इकाई शृंखला के रूप में संगठित करने का प्रयत्न किया जाता है। इकाई ज्ञान के एक पहलू का समग्र रूप होता है और इसके विभिन्न भाग (प्रकरण) परस्पर सम्बन्धित होते हैं। इकाई का सम्प्रत्यय मनोविज्ञान की विचारधारा गेस्टाल्टवाद पर आधारित है। जब इकाई को निर्देशात्मक योजना का आधार बनाया जाता है तो इसे इकाई योजना कहा जाता है। इकाई विचार इस बात पर बल देता है कि विषय-वस्तु समग्र रूप से प्रस्तुत करने से ही स्पष्टतया समझी जा सकती है। शिक्षण इकाई विचार के विकास और इसके बढ़ते हुए प्रयोग में बाल केन्द्रित शिक्षा, हरबार्ट के अमरीकी समर्थकों, किलपैट्रिक (Kilpatrick) की योजना पद्धति और मारीसन (Morrison) की शिक्षण की चक्रीय योजना (Cycle Plan of Teaching) आदि प्रवृत्तियों का बड़ा योगदान रहा है।

शिक्षण इकाई एक महत्वपूर्ण विषय अथवा केन्द्रीय विचार पर आधारित होती है। यह असंबंधित प्रकरणों अथवा पाठों का संग्रह न होकर, पाठों का एक समन्वित रूप है। एक शिक्षण इकाई में कई पाठ (2-10) होते हैं और हर पाठ इकाई का एक भाग होता है। विषय-वस्तु के विभिन्न भागों से संबन्धित उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं, शिक्षण-अधिगम स्थितियाँ संगठित की जाती हैं एवं मूल्यांकन के द्वारा यह पता लगाया जाता है कि इन स्थितियों के द्वारा विषय-वस्तु से संबन्धित उद्देश्य कहा तक प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार से इकाई योजना में विषय-वस्तु शिक्षण उद्देश्य, शिक्षण-अधिगम स्थितियों एवं मूल्यांकन आदि की स्पष्ट रूपरेखा होती है।

इकाई योजना का नमूना :

विषय : अर्थशास्त्र

कक्षा : 11

इकाई का नाम : विकास योजनाएं-उद्देश्य और विकास की व्यूह रचना।

इकाई के शिक्षण उद्देश्य (Instructional Objectives of the Units) :

1. ज्ञान (Knowledge)

विद्यार्थी :

 - (अ) निम्नलिखित तथ्यों/प्रकरणों प्रवृत्तियों आदि का प्रत्यास्मरण और पुनर्पहिचान कर सकेगा-
 - आर्थिक नियोजन का अर्थ एवं उद्देश्य
 - विकास की व्यूह रचना
 - आयोजन की प्रमुख उपलब्धियाँ
 - (ब) आयोजन से संबन्धित निम्नलिखित सम्प्रत्ययों एवं धारणाओं का प्रत्यास्मरण कर सकेगा- आर्थिक नियोजन, आर्थिक विकास, व्यूह रचना, मिश्रित अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, समाजवादी ढंग का समाज, सामाजिक न्याय, आर्थिक स्थिरता, हीनार्थ प्रबन्धन, मुद्रास्फीति सम्पूर्ण योजना, उत्पादकता, हरित क्रान्ति, योजना अवकाश ।
2. अवबोध (Understanding)

विद्यार्थी :

 - (अ) विभेदीकरण कर सकेंगे-
 - पूँजीवादी और समाजवादी अर्थव्यवस्था में
 - सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में
 - वस्तुजन्य और गैर-वस्तुजन्य क्षेत्र
 - (ब) विकास योजनाओं से संबन्धित विभिन्न पहलुओं की व्याख्या कर सकेंगे ।
3. ज्ञानोपयोग (Application)

विद्यार्थी :

 - (अ) आयोजन की सीमित सफलता के कारणों को समझा सकेंगे ।
 - (ब) आयोजन की सफलता के लिये विभिन्न सुझाव दे सकेंगे ।
 - (स) नियोजन और आर्थिक विकास में संबंध स्थापित कर सकेंगे ।
4. कौशल (Skill) :

विद्यार्थी :

 - (अ) पंचवर्षीय योजनाओं और उनकी उपलब्धियों से संबन्धित तथ्यों के आधार पर चार्ट, तालिका, रेखांचित्र एवं ग्राफ बना सकेंगे ।
 - (ब) भारत के मानचित्र में आर्थिक महत्व के स्थानों को अंकित कर सकेंगे ।
5. अभिरुचि

विद्यार्थी :

 - (अ) भारतीय अर्थव्यवस्था से संबन्धित साहित्य का अध्ययन करेंगे ।
 - (ब) जब भी संभव होता है, आर्थिक महत्व के स्थानों का भ्रमण करेंगे ।
6. अभिवृत्ति (Attitude)

विद्यार्थी :

 1. समस्याओं के बारे में राय निश्चित करने में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपना सकेंगे ।
 2. सहकारी कार्यों में उत्तरदायित्व निभा सकेंगे ।
 3. बिना संकोच के विभिन्न सामाजिक स्तर के लोगों से मिलना चाहेंगे ।
 4. मानव शक्ति की महत्ता को समझा कर इनका आदर करेंगे ।

5. आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये मेहनत से कार्य करेंगे ।
6. गलत सामाजिक एवं आर्थिक आधारों के प्रति प्रतिकूल विचार विकसित करेंगे ।

क्र.	प्रकरण	पाठों की संख्या	विषय-वस्तु का क्षेत्र	सहायक सामग्री
1	आर्थिक नियोजन - अर्थ एवं उद्देश्य	1	आर्थिक नियोजन का अर्थ, विकास योजनाओं का युग, पंच वर्षीय योजनाओं के उद्देश्य	योजनाओं की समयावधि पर आधारित चार्ट
2	योजनाओं में व्यव	1	योजनाओं के अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र में व्यय और इसका क्षेत्रवार वितरण	सार्वजनिक क्षेत्र में व्यय और इसके क्षेत्रवार वितरण को दर्शाता हुआ रेखाचित्र
3	योजनाओं के वित्त स्रोत	1	योजनाओं के लिये वित्तीय साधन-घरेलू बजट से प्राप्त साधन, विदेशी सहायता, हीनार्थ प्रबंधन	योजनाओं के वित्तीय साधनों पर आधारित चार्ट
4	विकास की व्यूह रचना	1	विकास की व्यूह रचना का अर्थ, अंग, औद्योगीकरण, भारी वस्तु उद्योगों का विकास के अंग	-
5	व्यूह रचना से संबन्धित	1	व्यूह रचना से संबन्धित समस्याएँ-उपभोक्ता वस्तुएं, बचत, निर्यात ।	-
6	आयोजन की उपलब्धियां	3	आयोजन की प्रमुख उपलब्धियां-उत्पादन तथा राष्ट्रीय आय, रोजगार, आर्थिक समानता, आर्थिक स्थिरता आयोजन की सीमित सफलता के कारण और इसकी सफलता के लिये सुझाव	योजनाओं द्वारा राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय, कृषि उत्पादन, रोजगार आदि में हुई वृद्धि को दर्शाते चार्ट, उर्वरक कारखाने, बहु उद्देश्यीय धारी योजनाओं, लोहे व इस्पात प्लाणटों को दर्शाने वाले मानचित्र

7.4.3 अर्थशास्त्र में दैनिक पाठ योजना (Daily Lesson Planning in Economics)

पाठ योजना का एक दूसरा रूप दैनिक पाठ योजना है। दैनिक पाठ को विधिवत् बनाने के लिये हरबार्ट द्वारा दी गयी सामान्य विधि बहुत महत्वपूर्ण है। अधिकतर पाठ योजनायें हरबार्ट की सामान्य विधि के चार सोपानों-स्पष्टता (Clearness) (Association), व्यवस्था (System) और विधि (Method) के आधार पर तैयार की जाती हैं। बाद में हरबार्ट के जिलर जैसे शिष्यों ने स्पष्टता सोपान को प्रस्तावना (Introduction) और 'प्रस्तुतीकरण (Presentation) दो भागों में विभाजित किया एवं साहचर्य, व्यवस्था और विधि के लिये 'तुलना' सामान्यीकरण (Generalization) और 'प्रयोग' सम्प्रत्ययों का इस्तेमाल किया। इस प्रकार से पाठ योजना के पाँच प्रमुख सोपान हैं - प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, तुलना, सामान्यीकरण एवं प्रयोग। प्रत्येक प्रकार के पाठ-ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक को इन्हीं पाँच सोपानों के अनुसार पढ़ाया जाता रहा है हालांकि इस प्रक्रिया की काफी आलोचना भी की जाती रही है।

इकाई विकास योजनाएं - उद्देश्य और विकास की व्याख्या

कक्षा ॥

पाठ संख्या-।

प्रकरण : आर्थिक आयोजन का अर्थ एवं उद्देश्य

विषयवस्तु शिक्षण बिन्दु
आर्थिक नियोजन का
अर्थ : आर्थिक नियोजन
से तात्पर्य स्पष्टतया
निर्धारित लक्ष्यों से है
जिनके आधार पर
सामाजिक विकास के
लिये नीतियां बनाई
जाती हैं।

व्यवहारगत उद्देश्य
विद्यार्थी आर्थिक नियोजन
एवं आर्थिक विकास
संप्रत्ययों का प्रत्यास्मरण
कर सकेगा। - विद्यार्थी
नियोजन की प्रक्रिया का
विश्लेषण कर सकेंगे। -
विद्यार्थी नियोजन और
विकास का सम्बन्ध
स्थापित कर सकेंगे।

शिक्षक विद्यार्थी क्रियायें मूल्यांकन
विद्यार्थी नियोजन की
दैनिक जीवन में
आवश्यकता और देश के
विकास के लिये महत्ता
को समझते हैं। पाठ
को प्रस्तावित करने के
लिये शिक्षक विद्यार्थी
के इन अनुभवों/समझ
पर आधारित
निम्नलिखित प्रश्न
पूछेगा -

नियोजन में तीन प्रमुख बातें सम्मिलित होती हैं -
 1. लक्ष्यों का निर्धारण एवं उनकी प्राथमिकताएँ तय करना । 2. उपलब्ध साधनों का श्रेष्ठतम उपयोग । 3. सामाजिक कल्याण को अधिकतम बनाना ।

1. अपनी कक्षा की समय तालिका को बताइये । यह क्यों बनायी गई है?
2. आपकी घर में शाम की क्या दिनचर्या है?
3. इस प्रकार से तालिका तय करने से क्या लाभ है?
4. भारत की प्रमुख आर्थिक समस्याएँ क्या हैं?

5. इन आर्थिक समस्याओं के निवारण के लिये क्या प्रयत्न किये जाने चाहिए? और क्यों? सम्बन्धित विचार-विमर्श के आधार पर शिक्षक आर्थिक नियोजन की सामान्य

- | | |
|---|--|
| परिभाषा विकसित करेगा और श्याम पट्ट पर एक उपयुक्त परिभाषा देगा । शिक्षक दी गयी परिभाषा के विश्लेषण द्वारा नियोजन की प्रमुख बातों को समझायेगा । | 1. आर्थिक नियोजन की उपयुक्त परिभाषा दीजिये । |
| | 2. नियोजन की प्रमुख बातें बताइये । |

भारत में विकास योजनाओं के गुण :

1934 एम. विश्वेश्वरैया
 की पुस्तक 'प्लाण्ड
 इकॉनामी फॉर इण्डिया
 में योजना की प्रथम
 रूपरेखा । 1938 नेहरू
 की अध्यक्षता में-
 'नेशनल प्लानिंग कमेटी
 की नियुक्ति । "1943
 बम्बई योजना
 एम.एन.राय की
 जनयोजना
 मन्नानारायण की गँधी
 योजना । उपर्युक्त
 योजनाओं को
 व्यवहारिक रूप नहीं
 दिया जा सका ।

1950 मार्च में योजना विद्यार्थी भारत में
 आयोग की नियुक्ति । योजनाओं की समयावधि
 का प्रत्यास्मरण करेंगे ।

- विद्यार्थी भारत में
 नियोजन की ऐतिहासिक
 पृष्ठभूमि जानते हैं ।

शिक्षक विद्यार्थियों को
 भारत में आर्थिक
 नियोजन के इतिहास के
 बारे में बताता है।

- विश्वेश्वरैया
 द्वारा लिखित
 पुस्तक का
 नाम बताइये
 ।

शिक्षक विद्यार्थियों से
 स्वतंत्रता प्राप्ति के
 समय की परिस्थितियों
 के बारे में पूछेगा और
 इस आधार पर नियोजन
 की आवश्यकता को
 दर्शायेगा ।

1951 अप्रैल से प्रथम योजना - योजनाओं की समयावधि विद्यार्थी योजना अवकाश के सम्प्रत्यय का, प्रत्यास्मरण करेंगे । शिक्षक विभिन्न योजनाओं की समायावधि बतायेगा है और विद्यार्थियों से 1962, 1965, 1977, 1980 वर्षा में हुई घटनाओं के बारे में पूछकर 1966 में चौथी योजना के प्रारम्भ न होने, 1978 में छठी योजना के प्रारम्भ होने और 1980 में स्थापित होने और इसी वर्ष में छठी योजना पुनः प्रारम्भ होने के बारे में बतायेगा है ।

- पहली, चौथी और सातवीं पंचवर्षीय योजनाएं कब प्रारम्भ हुई थी? - 1966-69 में वार्षिक योजनाएं क्यों बनाई गई थी?

1 1951-56 2.1956-61
3.1961-66 - विद्यार्थी 1968 में योजना प्रारम्भ न होने, 1978 में छठी योजना के शुरू होने और 1980 में स्थगित होने और इसी वर्ष छठी योजना के पुनः प्रारम्भ होने के कारणों का समझेंगे हैं ।

- योजनाओं की समयावधि को दर्शाने - वाला एक चार्ट बनाइये । (विद्यार्थियों के एक गुप्त को यह कार्य दिया जायेगा)

पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य 1 उत्पादन की मात्रा में वृद्धि । 2. रोजगार के अवसरों में वृद्धि । 3. सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिये आर्थिक समानता की उपलब्धि । 4. आर्थिक स्थिरता । 5. आत्म-निर्भरता प्राप्त करना ।	- विद्यार्थी पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेंगे विद्यार्थी सामाजिक न्याय आर्थिक स्थिरता और आत्म-निर्भरता सम्प्रत्ययों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे ।	विद्यार्थी देश की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के बारे में जानते हैं । शिक्षक विद्यार्थियों की इन समस्याओं में वरीयताओं और पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य निर्धारित करने में सहायता करता है और नियोजन के पाँच प्रमुख उद्देश्य बताता है ।	- पंचवर्षीय योजनाओं के प्रमुख बताइये ।
---	--	---	--

इसी प्रकार के सात अन्य पाठ योजनाएँ बनाई जायेंगी ।

दैनिक पाठ योजना वास्तव में एक दिन की पाठ योजना तो होती है लेकिन यह इकाई योजना का एक भाग होती है जैसा कि इकाई योजना के दिये हुए नमूने से स्पष्ट है । अच्छा हो, यदि इकाई में दी हुई विधि के अनुसार दैनिक पाठ योजना बनायी जाये ।

नीचे एक और दैनिक पाठ योजना का नमूना प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि हरबाट के सोपानों पर आधारित है और काफी प्रचलित है -

दैनिक पाठ योजना का एक नमूना

विषय :	अर्थशास्त्र	कक्षा :	12
प्रकरण :	माँग का नियम-माँग अनुसूची एवं माँग बढ़	समय चक्र :	पंचम
		अवधि :	40 मिनट
		दिनांक :	

विशिष्ट उद्देश्य :

विद्यार्थी :

- माँग के नियम को परिभाषित कर सकेंगे ।
- माँग अनुसूची तैयार कर सकेंगे ।
- दी हुई माँग अनुसूची के आधार पर माँग वक्र खींच सकेंगे ।

सहायक सामग्री :

- माँग अनुसूची एवं माँग चक्र से संबंधित एक चार्ट ।

पूर्व ज्ञान :

विद्यार्थी माँग के अर्थ एवं इसके निर्धारक तत्वों के बारे में पढ़ चुके हैं । यह सारणी एवं रेखाचित्र बनाना भी जानते हैं ।

प्रस्तावना :

प्रश्न :

1. माँग किसे कहते हैं?
2. प्रभावपूर्ण इच्छा में किन बातों का होना आवश्यक है?
3. वस्तु की कीमत बढ़ने से उसकी माँग पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. वस्तु की कीमत घटने से उसकी माँग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उद्देश्य कथन :

ऊँची कीमत पर कम माँग और कम कीमत पर अधिक माँग की इसी प्रवश्लिति को अर्थशास्त्र में माँग के नियम से जानते हैं, आज हम इसी नियम के बारे में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

विषय-वस्तु

शिक्षण प्रणाली

माँग के नियम की परिभाषा :

मार्शल के शब्दों में, 'जितनी अधिक मात्रा में अध्यापक कथन

माल बेचा जाता है, उतना ही उसकी कीमत (अध्यापक इस परिभाषा को लपेट फलक पर लिख कम होना आवश्यक है ताकि बेची जाने कर ले जा सकता है और विद्यार्थियों को इसे उतारने वाली मात्रा के लिये क्रेता उपलब्ध हो सके, के लिये कह सकता है।)

अथवा अन्य शब्दों में कीमत घटने से माँग बढ़ जाती है और कीमत बढ़ने पर माँग घट जाती है।"

माँग की अनुसूची :

माँग की अनुसूची एक सारणी के रूप में प्र. सारणी किसे कहते हैं?

प्रस्तुत विवरण है जो कि यह बताती है कि प्र. सरल सारणी में कितनी विशेषताओं की जानकारी भिन्न-भिन्न कीमतों पर वस्तु की माँग होती है?

कितनी होगी?

प्र. मांग की नियम की उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर एक उदाहरण सरल सारणी के रूप में दीजिये।

अध्यापक विद्यार्थियों की माँग के नियम के उदाहरण देने में सहायता करेगा और उसे श्याम पट्ट पर लिखेगा है। फिर दूसरे उदाहरण के लिये चार्ट का उपयोग भी कर सकेगा।

उदाहरण के लिये :

केले की कीमत
(दर्जन में)

2

3

4

5

केले की मात्रा
(रूपये में)

5

4

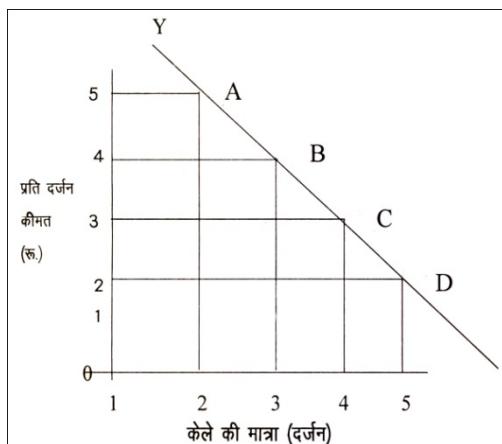
3

2

माँग वक्र :

माँग वक्र कीमत और माँग के उस सम्बन्ध को प्रदर्शित करता हैं जो कि माँग अनुसूची द्वारा स्थापित किया जाता है।

अध्यापक माँ अनुसूची के आधार पर श्याम पट्ट पर माँग वक्र बनायेगा। इस प्रक्रिया में वह विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त करेगा फिर वह चार्ट पर बने रेखाचित्र को भी दिखायेगा। अध्यापक विद्यार्थियों से माँग के नियम से सम्बन्धित माँग अनुसूची एवं इस पर आधारित मांग वक्र को कक्षा में बनाने को कहेगा और वह उसके कार्य का निरीक्षण करते हुए आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करेगा।



पुनरावृत्ति प्रश्न :

1. मांग के नियम से आप क्या समझते हैं?
2. मांग अनुसूची क्या होती है?
3. मांग वक्र द्वारा क्या दर्शाया जाता है?

श्याम पट्ट सारांश :

विषय वस्तु कॉलम में दिये गये बिन्दुओं को पाठ विकास के साथ-साथ श्याम, पट्ट पर लिखा जायेगा।

गृह कार्य :

1. एक विद्यार्थी ने मांग के नियम का एक गलत उदाहरण दिया, जो कि नीचे दिया जा रहा है।

चीनी की कीमत
(रूपये प्रति)

5
6
7
8

चीनी की मांग
(रूपये प्रति)

3
6
4
5

उपर्युक्त उदाहरण को सही रूप में प्रस्तुत कीजिये और इस आधार पर मांग वक्र बनाइये ।

7.5 सार-संक्षेप (Summary)

योजना का अर्थ होता है किसी कार्य को व्यवस्थित रूप से करके उसके प्रभाव को अधिकतम करने के लिए गहराई से पूर्व चिन्तन करना । शिक्षण योजना शिक्षण को प्रभावकारी बनाने के लिए की जाती है । किस प्रकरण से हम छात्रों में किस प्रकार का व्यवहारगत परिवर्तन ला सकते हैं । इस पर विचार कर शिक्षण गृह रचना तैयार करते हैं । इससे समय का सदृपयोग तो होता ही है साथ ही शिक्षण सार्थक बनता है । छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है । छात्रों को प्रेरणा प्राप्त होती है ।

सर्वप्रथम अर्थशास्त्र में पूर्ण सत्र के लिए एक योजना बनायी जाती है । इसे सत्रीय योजना कहा जाता है । विषय का पाठ्यक्रम समय पर समाप्त हो । समस्त प्रकरणों को व्यवस्थित रूप से पूरा किया जा सके यही इसका उद्देश्य होता है ।

इसके पश्चात् सत्रीय योजना में प्रत्येक इकाई के लिए आवंटित कालांशों को ध्यान में रखते हुए इकाई योजना बनाई जाती है । सम्पूर्ण इकाई में समग्र रूप से प्राप्त उद्देश्यों को निर्धारित कर प्रत्येक अंश के उद्देश्यों की प्राप्ति की योजना बनाई जाती है । ताकि प्रत्येक इकाई को व्यावस्थित पढ़ाया जा सके ।

तृतीय चरण में इकाई योजना से प्रकरणों की संख्या का निर्धारण कर दैनिक पाठ योजना बनाई जाती है ।

शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रारम्भ में इसे विस्तार से बनाने का अभ्यास करवाया जाता है । क्षेत्रीय अभ्यास शिक्षण में यह मात्र एक पृष्ठ में लिखवाया जाता है । जिससे सेवारत होने पर अपनी शिक्षक डायरी में एक पंक्ति में इसकी आयोजना की जा सके ।

7.6 (Evaluation of the Unit)

- पाठ योजना से क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

What are the advantages of Lesson Planning ?

- निम्नलिखित प्रकरणों पर पाठ योजना बनाइये -

Prepare daily Lesson Planning on following topic.

- निर्धनता, असमानता और असुरक्षा
Poverty, Inequality & Insecurity.
- माध्य (Median)
- पूर्णतया अपूर्ण बाजारों में कीमत व उत्पादन की प्रवृत्तियों ।

Trend in price & Production in Incomplete Market.

7.7 संदर्भ साहित्य (Reference Books)

- पुरोहित, जगदीशनारायण शिक्षण के लिये आयोजन, जयपुर. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अमादमी, 1972.

2. रुहेला, सत्यपाल एवं खान, रियाज, शाकिर, सामाजिक विडगनों का शिक्षण, कोटा खुला विश्वविद्यालय,
3. नागर, दिव्यप्रभा (1999) अर्थशास्त्र शिक्षण, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन।
4. खान, आर.एस., अर्थशास्त्र शिक्षण, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान।

इकाई-8

अर्थशास्त्र शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन

(Measurement and Evaluation in Economics Teaching)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- 8.1 इकाई शिक्षण के उद्देश्य
- 8.2 मूल्यांकन की परिभाषा
- 8.3 मूल्यांकन की विशेषताएं
- 8.4 मूल्यांकन के उद्देश्य
- 8.5 मूल्यांकन की प्रविधियाँ
- 8.6 मूल्यांकन प्रविधियों का वर्गीकरण
- 8.7 मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान
- 8.7.1 शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषीकरण
- 8.7.2 शिक्षण क्रियाओं/अनुभवों का आयोजन
- 8.7.3 मूल्यांकन की प्रतिविधियों का चयन
- 8.8 अधिगम का मापन
 - 8.8.1 पूर्वानुमान
 - 8.8.2 निदान
 - 8.8.3 शोध
- 8.9 अच्छी मापन प्रविधियों की विशेषताएं
- 8.9.1 वस्तुनिष्ठता
- 8.9.2 विश्वसनीयता
- 8.9.3 वैधता
- 8.9.4 व्यावहारिकता
- 8.9.5 विभेदीकरण
- 8.9.6 व्यापकता
- 8.10 वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रकार
 - 8.10.1 सत्यासत्य रूप प्रश्न
 - 8.10.2 बहुविकल्प रूप
 - 8.10.3 मिलान रूप
 - 8.10.4 वर्गीकरण रूप
 - 8.10.5 सरल प्रत्यास्मरण रूप
 - 8.10.6 रिक्त स्थानों की पूर्ति
 - 8.10.7 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के गुण

8.10.8	वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के दोष
8.11	निबंधात्मक प्रश्न
8.11.1	निबंधात्मक प्रश्नों के लाभ
8.11.2	निबंधात्मक प्रश्नों के दोष
8.11.3	सुधार हेतु सुझाव
8.12.	मूल्यांकन एवं मापन में अन्तर
8.13.	इकाई जाँच पत्र निर्माण
8.13.1	इकाई परीक्षण का अभिकल्प निर्माण
8.13.2	रूप रेखा निर्माण
8.13.3	इकाई परीक्षण निर्माण
8.13.4	कुंजी तथा अंक प्रदान योजना निर्माण
8.13.5	प्रश्नवार विश्लेषण
8.14.	निदानात्मक से उपचारात्मक शिक्षण
8.14.1	कठिनाइयों का निदान
8.14.2	अर्थशास्त्र में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ
8.14.3	उपचारात्मक शिक्षण
8.14.4	उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ
8.15.	सार-संक्षेप
8.16.	सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन
8.17.	सन्दर्भ पुस्तकें

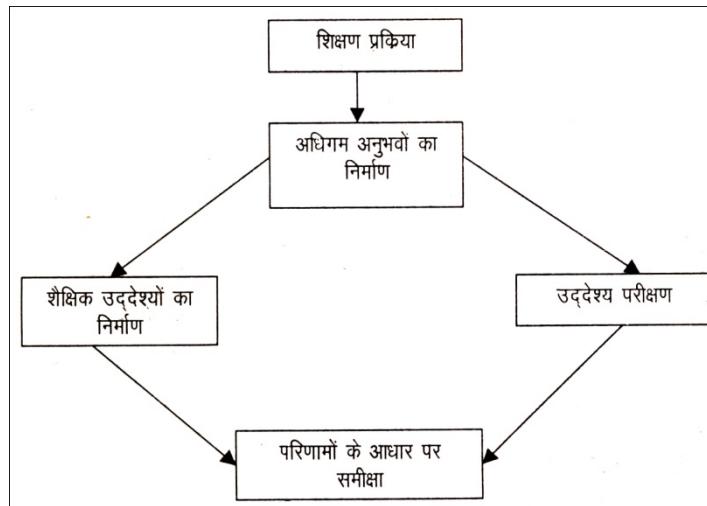
8.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप -

- मूल्यांकन के अर्थ एवं प्रयोजन को समझ सकेंगे ।
- अर्थशास्त्र में प्रयोग की जाने वाली मूल्यांकन की प्रमुख प्रविधियों को समझ सकेंगे और आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग अर्थशास्त्र शिक्षण में कर सकेंगे ।
- इकाई परीक्षण के निर्माण करने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे एवं पाठ्यक्रम की विभिन्न इकाइयों को पढ़ाने के पश्चात प्रत्येक इकाई के मूल्यांकन के लिये इकाई परीक्षण का निर्माण कर सकेंगे ।

8.2 मूल्यांकन की परिभाषा (Definition of Evaluation)

मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है । शिक्षा के क्षेत्र में इसका सर्वप्रमुख कार्य शिक्षा को उद्देश्य केन्द्रित बनाना है ।



शिक्षण प्रक्रिया में अधिगम अनुभवों का निर्माण करने के पूर्व शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित कर लिये जायेंगे। शिक्षण के पश्चात् इनका परीक्षण होगा। समीक्षा के आधार पर पुनरावलोकन किया जायेगा। इस प्रकार मूल्यांकन एक उद्देश्य आधारित प्रक्रिया है। वेस्ले (Wesley) के अनुसार "मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है।" (Evaluation is a Comprehensive Process) मूल्यांकन की परिभाषा करते हुए कोठारी कमीशन ने कहा है, "अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ संबंध रहता है। (It is now agreed that evaluation is a continuous process, forms an integrated part of the total system of educational objectives).

जेरोलिमेक (Jarolimek) का कहना है कि 'मूल्यांकन वह पद्धति/पद्धतियाँ हैं जिसके द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों, दृष्टियों, तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा को निर्धारित किया जाता है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के सन्दर्भ में अनुदेशन की उपलब्धि को तोला जाता है।' (Evaluation of learning may properly be thought of as the method/methods used to determine the extent to which previously established goals, objectives and purposes that have been achieved. It is the process of comparing the outcomes of instructions with the anticipated or stated objectives).

8.3 मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Evaluation)

1. मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
2. यह शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है।
3. शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
4. मूल्यांकन शैक्षिक उपलब्धि का मापन है।
5. मूल्यांकन शैक्षिक उपलब्धि का सुधार भी करता है।

7. इससे शिक्षण प्रक्रिया की भी जाँच की जाती है।
8. यह एक व्यापक प्रक्रिया है।

8.4 मूल्यांकन के उद्देश्य (Purpose of Evaluation)

1. छात्र के व्यवहार सम्बंधी परिवर्तनों की जाँच करना।
2. शिक्षण गृह रचना की प्रभाविता को जाँचना।
3. छात्रों के समूहों का निर्माण करना।
4. उपचारात्मक अनुदेशन करना।
5. छात्रों की कमज़ोरियों को ज्ञात करना।
6. छात्रों की योग्यताओं का परीक्षण करना।

8.5 मूल्यांकन की प्रविधियाँ (Techniques of Evaluation)

मूल्यांकन में अनेक प्रकार की प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है-

उद्देश्य मूल्यांकन प्रविधि

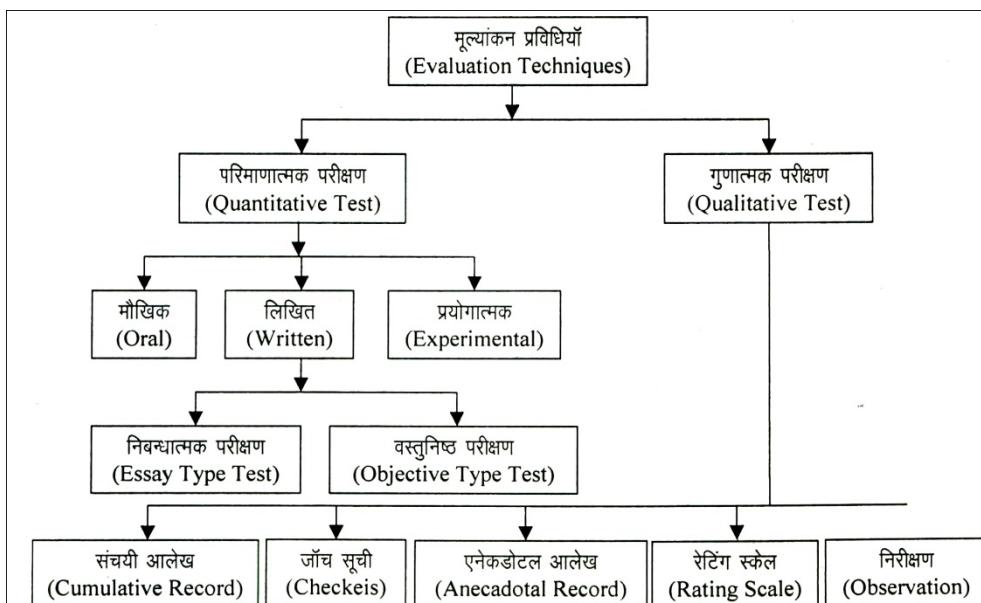
ज्ञानात्मक मौखिक, लिखित (निबंधात्मक/वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ प्रयोगात्मक परीक्षाएँ, निरीक्षण आदि।

भावात्मक अभिवृति सूची, अभिवृति सूची, रेटिंग स्केल, मूल्य परीक्षण आदि। आंशिक रूप से निबन्धात्मक परीक्षाएँ। निरीक्षण प्रविधि।

क्रियात्मक प्रयोगात्मक परीक्षा।

8.6 मूल्यांकन प्रविधियों का वर्गीकरण (Classification of Evaluation Techniques)

विद्यालयों में प्रयुक्त की जाने वाली प्रतिवधियों निम्न प्रकार हैं।



- (1) मौखिक - इसमें मौखिक परीक्षा, वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक आदि प्रयोग किये जाते हैं।
- (2) लिखित - इसमें लिखकर उत्तर प्राप्त किये जाते हैं। इसमें निबंधात्मक प्रश्न भी हो सकते हैं तथा वस्तुनिष्ठ भी।
- (3) प्रयोगात्मक - इसमें छात्र को निर्धारित कार्य पूरा करना होता है।
- (4) संचयी आलेख - विद्यालयों में प्रत्येक छात्र के लिए एक संचयी आलेख रखा जाता है। इसमें बालक की शैक्षिक प्रगति, उपस्थिति, योग्यता तथा अन्य क्रियाओं में भाग लेने आदि का आलेख प्रस्तुत किया जाता है। छात्र की प्रगति की गति एवं दिशा जानने के लिए यह महत्वपूर्ण आलेख होता है।
- (5) एनेकडोटल आलेख - इसमें बालकों के व्यवहार से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं तथा कार्यों का वर्णन किया जाता है। छात्रों की रुचियों तथा रुझानों का भी लेखा किया जाता है। इसे निर्देशन हेतु काम में लिया जाता है।
- (6) निरीक्षण - छोटे बच्चों की कोई परीक्षा नहीं ली जा सकती है अतः उनके मूल्यांकन के लिए यह प्रविधि काम में ली जाती है। बालकों के व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है।
- (7) जाँच सूची - जाँच सूची का प्रयोग अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा भावात्मक पक्ष के लिए किया जाता है। इसमें कुछ कथन दिए जाते हैं। उन कथनों के सम्बन्ध में छात्रों को हाँ अथवा नहीं में उत्तर अंकित करना होता है। ये कथन किसी उद्देश्य का मापन करते हैं।
- (8) रेटिंग स्केल - इसका प्रयोग उच्च कक्षा के छात्रों के लिए किया जाता है। इसमें कुछ कथन दिये जाते हैं तथा विकल्प चयन हेतु तीन, पाँच, सात बिन्दु दिये जाते हैं। छात्र को कथन को पढ़ कर उसका क्रम निर्धारण करना होता है।

8.7 मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान (Steps of Evaluation Process)

मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण पक्ष हैं - उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन के उपकरण। इन्हीं तीनों के आधार पर तीन सोपान निर्धारित किये गये हैं-

8.7.1 शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषिकरण

शिक्षक शिक्षण हेतु नियोजन करता है। उसमें सर्वप्रथम वह उद्देश्य निर्धारित करता है। ज्ञान, बोध, प्रयोग, कौशल आदि उद्देश्यों के आधार पर बालकों में होने वाले विभिन्न व्यवहारगत परिवर्तन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। परिभाषिकरण करने पर बालक के व्यवहार में होने वाले विशिष्ट परिवर्तन की जानकारी होगी। इन्हीं का मूल्यांकन किया जायेगा।

8.7.2 शिक्षण क्रियाओं/अनुभवों का आयोजन

निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से अधिगम अनुभवों का आयोजन किया जाता है। शिक्षक इनके माध्यम से ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करता है कि छात्र में वांछनीय परिवर्तन आ सके। अधिगम सम्बन्धी परिस्थितियाँ वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर आयोजित की जाती है। शिक्षक द्वारा अनुभवों का सृजन एवं प्रभावी सम्प्रेषण जितना उपयुक्त होगा। उपलब्धि उतनी ही अच्छी होगी।

8.7.3 मूल्यांकन की प्रविधियों का चयन

शिक्षक उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण अनुभवों की प्रभाविता को जाँचने हेतु उपरोक्त वर्णित प्रविधियों में से सर्वाधिक उपयुक्त एक या एक से अधिक प्रविधियों का चयन करता है।

8.8 अधिगम का मापन (Measurement of Learning)

अधिगम प्रणाली में मापन का विशेष महत्व है। अधिगम प्रणाली में मूल्यांकन की उपादेयता केवल अनुदेशन तथा शिक्षण में सुधार तथा विकास में अधिक होती है। जबकि मापन की प्रशासनिक उपयोगिता अधिक होती है। मूल्यांकन की अपेक्षा मापन अधिक शुद्ध तथा विशिष्ट होता है। इसलिए मापन प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।

मापन का अर्थ (Meaning of Measurement)

डॉ. आर.ए.शर्मा के अनुसार "मापन एक परिमाणीकरण की प्रक्रिया है। "(Measurement is a process of quantification) छात्रों ने प्रत्येक विषय कितना सीखा है? इसे हम अंकों में नापते हैं। वह अच्छे अंक लाता है। यह कम अंक लाता है। इस माप के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है कि उसने कितना सीखा है? वह आगे की कक्षा में जाने योग्य है या नहीं, उसकी बुद्धि का क्या स्तर है आदि। शिक्षा में मापन के तीन उद्देश्य होते हैं।

8.8.1 पूर्वानुमान (Prognosis)

सर्वप्रथम परीक्षा के द्वारा यह अनुमान लगाया जाता है कि अगले कार्यक्रम को पढ़ने का सामर्थ्य बालक में है या नहीं। यदि उसने वह न्यूनतम स्तर प्राप्त नहीं किया है जो अगली कक्षा में पढ़ने हेतु चाहिए तो यह अनुमान लगाया जाता है कि वह अगली कक्षा में पढ़ने का सामर्थ्य रखता है या नहीं।

8.8.2 निदान (Diagnosis)

पूर्वानुमान के लिए छात्रों के वर्तमान स्तर की जानकारी तो होती है किन्तु साथ मापन से छात्रों की कमजोरियों का पता भी चलता है। किस विषय में वह कमजोर है? किस तरह की कमजोरी है यह परीक्षा में किये गये कार्य के आधार पर ज्ञात कर लिया जाता है। अधिगम के अगले सोपान के रूप में उसके कमजोर पक्ष पर माता-पिता एवं शिक्षक अधिक ध्यान देते हैं तथा व्यवहार परिवर्तन का प्रयास करते हैं।

8.8.3 शोध (Research)

शिक्षा में विभिन्न प्रकार की शोधों को अभिप्रेरित किया जा रहा है। शोध कार्य में प्राप्त समंज्ञों का विश्लेषण कर कारण-प्रभाव सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं। संख्यात्मक विश्लेषण कर कारण-प्रभाव सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं। संख्यात्मक विश्लेषण की गहराई एवं विस्तार को स्पष्ट कर पाते हैं। इस पर आगे प्रयोग एवं अनुवर्ती कार्य किये जा सकते हैं।

8.9 अच्छी मापन प्रविधियों की विशेषताएं (Characteristics of Good Measuring Techniques)

एक अच्छी परीक्षा की निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए -

8.9.1 वस्तुनिष्ठता (Objectives)

वस्तुनिष्ठता होने पर किसी भी प्रशासित परीक्षण को कितने ही परीक्षकों द्वारा जाँचा जाये-छात्रों के प्राप्तांकों में अन्तर नहीं होता। इसीलिए निबंधात्मक प्रश्न शैली को हतोत्साहित कर ऐसे प्रश्नों का आरम्भ किया गया है जिनमें वस्तुनिष्ठता रहती है।

8.9.2 विश्वसनीयता (Reliability)

एक अच्छी परीक्षा विश्वसनीय होनी चाहिए। यदि किसी परीक्षा को एक ही समूह में दोबारा दे तो उनके दोनों बार, के प्राप्तांकों में अन्तर नहीं आना चाहिए। निबंधात्मक प्रश्नों की अपेक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में विश्वसनीयता अधिक होती है।

8.9.3 वैधता (Validity)

उत्तम परीक्षा वैध होती है। इसका तात्पर्य सार्थकता से है। प्रश्न पत्र जिन उद्देश्यों का मापन करने के लिए बनाये हैं उसे उसी का मापन करना चाहिए। अन्यथा उसमें वैधता का अभाव माना जायेगा। इसको मापने के लिए गणितीय विधियाँ हैं।

8.9.4 व्यावहारिकता (Usability)

किसी भी परीक्षा की रचना छात्रों के अधिगम उपलब्धियों को जात करने के लिए की जाती है। यह आवश्यक है कि परीक्षा का प्रयोग, अंकन एवं उपलब्ध अंकों की व्याख्या सरलता से की जा सके। जटिलता होने पर वह परीक्षण व्यावहारिक नहीं रह जायेगा। अतः परीक्षणों का व्यावहारिक होना अतिआवश्यक है।

8.9.5 विभेदीकरण (Discrimination)

एक अच्छी परीक्षा प्रतिभावान, औसत एवं निम्न योग्यता वाले छात्रों के भेद को स्पष्ट करती है। इसलिए प्रश्न पत्र में तीनों प्रकार के छात्रों के लिए अक्सर दिये जाने चाहिए। कुछ प्रश्न सरल, कुछ सामान्य एवं कुछ कठिन दिये जाने चाहिए। सामान्यतया यह प्रतिशत क्रमशः 25, 50 एवं 25 रखा जाता है।

8.9.6 व्यापकता (Comprehensiveness)

विषय-वस्तु के बड़े भाग को प्रश्न-पत्र में रामिलित किया जा सके तो उसमें व्यापकता का गुण रहता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के द्वारा यह गुण समाविष्ट करना संभव हो पाता है।

स्व-मूल्यांकन-1

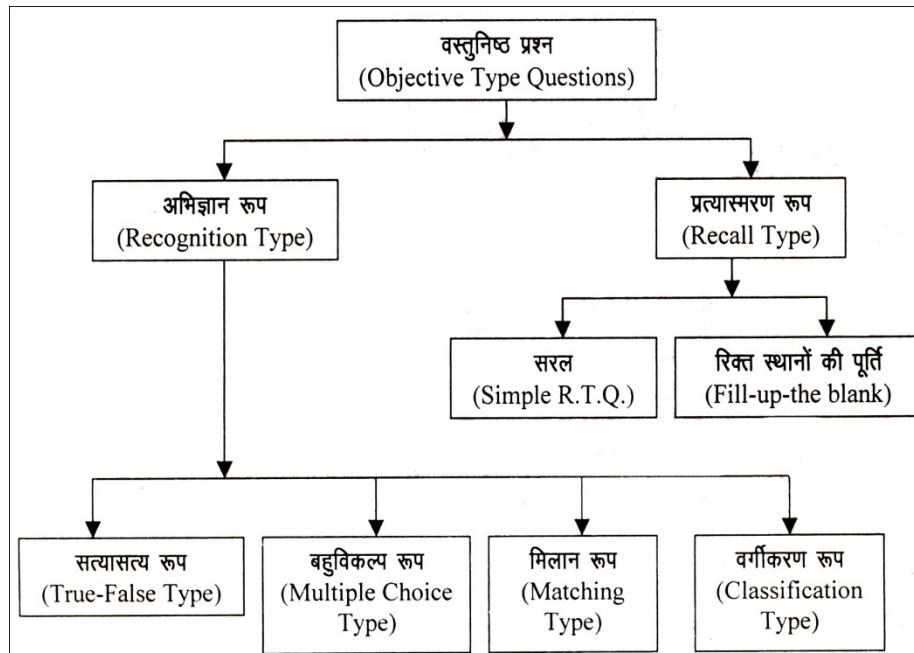
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. मूल्यांकन की परिभाषा क्या है?
2. मापन एवं मूल्यांकन में क्या अन्तर होता है?
3. मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान बताएं।
4. अच्छी मापन प्रविधियों की क्या विशेषताएँ हैं?

8.10 वस्तुनिष्ठ के प्रकार

अर्थशास्त्र में वस्तुनिष्ठ परीक्षा (Objective Type Test in Economics)

वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रश्न विभिन्न प्रकार के हैं जिन्हें निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जाता है-



8.10.1 सत्यासत्य रूप प्रश्न

इन प्रश्नों में दो विकल्प दिये जाते हैं-सत्य/असत्य, हाँ/नहीं आदि। परीक्षार्थियों को संकेत दिया जाता है कि इन विकल्पों में से वह किसी एक का चयन करे।

उदाहरण-निर्देश-निम्नलिखित कथनों को पढ़ो एवं सत्य कथन के समक्ष () का एक गलत के समक्ष (X) का निशान लगाएँ -

- श्रम गतिशील होता है। ()
- आगमन रीति में सामान्य से विशिष्ट की ओर चलते हैं। ()
- भूमि में स्थान-गतिशीलता होती है। ()
- अधिक भारत में सबसे अधिक होती है। ()
- उत्तर प्रदेश सूती वस्त्र उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र है। ()

8.10.2 बहुविकल्प रूप

इस प्रकार के प्रश्नों में कथन के प्रत्युत्तर हेतु अनेक विकल्प दिये जाते हैं। परीक्षार्थी को उसमें से किसी एक का चयन करना होता है।

उदाहरण :- निम्नलिखित प्रश्नों के साथ दिये हुए कई विकल्पों में से जो सबसे अधिक उपयुक्त हो, रिक्त कोष्ठक में उसका क्रमांक लिखिए -

- (1) भाखडा नांगल बाँध स्थित है -

(अ) उत्तर प्रदेश	(ब) बिहार
(स) पूर्वी पंजाब	(द) राजस्थान

 ()
- (2) पूंजी कहते हैं -

(अ) धन	(ब) रूपया पैसा
(स) सम्पत्ति	(द) धन का वह हिस्सा जो और धन कमाने में लगा हो। ()
- (3) उत्पादन का अर्थ है -

--	--

- (अ) किसी पदार्थ को नष्ट करना
 (ब) कोई वस्तु उत्पन्न करना
 (स) पदार्थ की उपयोगिता में वृद्धि करना
 (द) किसी वस्तु का प्रयोग करना ()

8.10.3 मिलान रूप

इसमें छात्रों को दो सूची प्रदान की जाती है। उन्हें कहा जाता है कि प्रथम सूची में दिये गये विषयों को दूसरी सूची में संबन्धित विषय का चयन कर मिलान करें।

उदाहरण :

निर्देश - प्रथम सूची में अर्थशास्त्रियों के नाम दिये गये हैं। दूसरे में इनके द्वारा निर्मित लाभ के सिद्धान्तों के नाम दिये गए हैं। पहली सूची में सामने दिये रिक्त कोष्ठक में उस अर्थशास्त्री द्वारा निर्मित सिद्धान्त का क्रमांक लिखिए -

सूची प्रथम	सूची द्वितीय
1. जे.ए.शुभ्मीटर	() जोखिम वहन करने का सिद्धान्त
2. हाले	() गतिशीलता का सिद्धान्त
3. जे.बी. क्लार्क	() अनिश्चितता वहन का सिद्धान्त
4. टासिंग	() नवप्रवर्तन का सिद्धान्त
5. नाइट	()

8.10.4 वर्गीकरण रूप

इस प्रकार के प्रश्नों में कुछ शब्दों का समूह छात्रों के समक्ष रख दिया जाता है जिसमें यह शब्द अन्यों से भिन्न होता है। छात्र को उसी शब्द को छूटने के लिए कहा जाता है।

उदाहरण-नीचे प्रत्येक प्रश्न में कुछ शब्द समूह दिये गये हैं। प्रत्येक समूह में एक शब्द भिन्न है। ऐसे बेमेल शब्द पर सही () का चिन्ह लगाएँ-

1. उपभोग, उत्पादन, धन, विनियम, वितरण
2. अर्थ, मुद्रा, धन, पुंजी, उपभोक्ता
3. एडम स्मिथ, मार्शल, महाराणा प्रताप, राबिन्सन

8.10.5 सरल प्रत्यास्मरण रूप

इनके द्वारा केवल एक शब्द में उत्तर मांग कर छात्र की स्मरण शक्ति की जाँच की जाती है। जैसे -

1. भारत में प्रमुख चीनी उत्पादक प्रदेश कौनसा है? ()
2. अर्थशास्त्र को धन के विज्ञान के रूप में किसने परिभाषित किया है? ()

8.10.6 रिक्त स्थानों की पूर्ति

इस प्रकार के प्रश्नों में अधूरे वाक्य दिये जाते हैं। उन्हें छात्र अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर पूरित करता है। जैसे -

1. भारत का सबसे बड़ा बँध.....है।
2. भारत व्यवसाय की वृष्टि से.....प्रधान देश है।
3. मातृथस कासिद्धान्त प्रसिद्ध है।
4. राजस्थान की राजधानी.....है।

8.10.7 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के गुण (Merits of Objective Type Questions)

निबंधात्मक प्रश्नों के दोषों को देखते हुए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का प्रचलन हुआ है। इन प्रश्नों के निम्नलिखित गुण होते हैं -

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न अधिक पूछे जाते हैं अतः विषय वस्तु के एक बड़े भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें व्यापकता का गुण होता है।
 2. वस्तुनिष्ठ प्रश्न उद्देश्य आधारित होते हैं तथा एक ही सही उत्तर होता है अतः उनमें वस्तुनिष्ठता पाई जाती है।
 3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न उसी योग्यता का परीक्षण करते हैं जिसके लिए बनाये जाते हैं। अतः उनमें वैधता का गुण होता है।
 4. इन प्रश्नों का अंकन किसी भी परीक्षक के द्वारा किया जाये, अंक समान ही प्राप्त होंगे अतः ये विश्वसनीय होते हैं।
 5. इन परीक्षण में परीक्षक को उत्तर-तालिका दी हुई होती है, अतः सही व गलत उत्तर की जाँच में सरलता रहती है।
 6. छात्रों से कम समय में अधिकतम ज्ञान की जानकारी की जा सकती है।
- 8.10.8 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के दोष (Demerits of Objective Type Questions)
1. वस्तुनिष्ठ परीक्षण में छात्र अनुमान से भी उत्तर दे देते हैं। इससे ज्ञान के सही स्तर का आभास नहीं होता है।
 2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण करना अत्यधिक कठिन कार्य है, समय भी अधिक लगता है।
 3. इसमें छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता का परीक्षण नहीं किया जा सकता।
 4. इस विधि से मानसिक शक्तियों के विकास के अवसर नहीं मिलते।
 5. यह पद्धति - केवल टूटने पर बल देती है।

8.11 निबंधात्मक प्रश्न

निबंधात्मक प्रश्न वे प्रश्न होते हैं जिनमें छात्र पूछे गये प्रश्न का अपनी स्वयं की भाषा में विस्तार से उत्तर देते हैं। यह एक निबन्ध रूप में होते हैं। इसीलिए इन्हें निबन्धात्मक प्रश्न कहा गया है। उत्तर की सीमा क्या हो, यह प्रश्न के स्वरूप, छात्र की योग्यता तथा उपलब्ध समय पर निर्भर करता है।

8.11.1 निबंधात्मक प्रश्नों के लाभ (Merits of Essay Type Questions)

1. सरल - निबंधात्मक प्रश्न निर्माण करने की दृष्टि से अत्यन्त सरल होते हैं। इसके निर्माण करने हेतु न तो किसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है न ही किसी प्रकार की दक्षता की। जिसे विषय-वस्तु का ज्ञान हो वह सरलता से इन प्रश्नों की रचना कर सकता है।
2. व्यवाहारिक-किसी भी विषय से सम्बन्धित समस्त विषय-वस्तु पर निबन्धात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अतः ये अत्यधिक व्यवाहारिक होते हैं।
3. स्वतन्त्र अभिव्यक्ति- इसमें छात्र पूछे गये प्रश्न का उत्तर प्रदान करने हेतु स्वतन्त्र होते हैं। वे भाषा, शैली, विषय-वस्तु के संगठन आदि में अपनी मौलिकता का प्रयोग करते हैं।

4. लिखित अभिव्यक्ति का विकास-इन प्रश्नों के उत्तर में अपनी मौलिकता, भाषा का स्तर, एवं विषय-वस्तु के संगठन जैसे कौशलों का समावेश रहता है जो कि अभिरुचि के लिए आवश्यक होते हैं। जिसकी अभिव्यक्ति जितनी सशक्त होगी वह उतने ही अच्छे अंक प्राप्त करेगा। अतः छात्र अपनी अभिव्यक्ति को सुधारने का प्रयास करते हैं।
5. संज्ञानात्मक योग्यताओं का मूल्यांकन-बालक की कुछ संज्ञानात्मक योग्यताओं का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ परीक्षणों से संभव नहीं हो पाता है। जैसे विश्लेषण, संश्लेषण, कल्पना, तर्क, बुद्धि, प्रयोग, मूल्यांकन आदि की जाँच निबन्धात्मक प्रश्नों से ही की जा सकती है।

8.11.2 निबंधात्मक प्रश्नों के दोष (Demerits of Essay Type Questions)

1. निबंधात्मक प्रश्न सीमित विषय वस्तु का प्रतिनिधित्व करते हैं अतः व्यापकता के गुण का अभाव होता है।
2. इसके उद्देश्य प्रायः अस्पष्ट रहते हैं। कई बार जिस प्रश्न को छात्र की योग्यता को परखने के लिए किया गया है यह परीक्षक को भी ध्यान नहीं होता।
3. प्रश्नों के उत्तर देने के लिए छात्र को अधिक समय एवं श्रम लगता है।
4. इस पद्धति में छात्र सम्पूर्ण विषय-वस्तु तैयार न कर उसमें से चयनित ही अध्ययन करता है।
5. इन प्रश्नों में वस्तुनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। परीक्षक अपने दृष्टिकोण के द्वारा ही अंकन करता है। अतः अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किये गये अंकन कार्य में अन्तराल रहता है।
6. जब परीक्षकों के अंकन में भिन्नता रहती है तथा एक ही छात्र यदि दो बार एक प्रश्न का उत्तर लिखता है तब भी उसमें भिन्नता आ जाती है तो स्पष्ट है कि ये प्रश्न विश्वसनीय नहीं होते।

8.11.3 सुधार हेतु सुझाव (Suggestions for Improvement)

1. निबंधात्मक प्रश्नों को व्यापक बनाया जाये।
2. इनके उत्तरों की जाँच के लिए विस्तृत योजना बनाई जानी चाहिए जिससे आत्मनिष्ठता कम हो सके।
3. छात्रों से समस्त प्रश्नों को करवाया जाना चाहिए। जिससे चयनित अध्ययन की प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया जा सके।
4. ज्ञानात्मक प्रश्न कम व अन्य अधिक दिये जायें।
5. प्रश्नों के स्वरूप ऐसे हों जिससे वस्तुनिष्ठता लायी जा सके।
6. प्रश्नों की भाषा सरल एवं सीधी हो।

8.12 मूल्यांकन एवं मापन में अन्तर (Difference between Evaluation & Measurement)

मूल्यांकन किसी भी वस्तु विषय, शक्ति या स्थिति का मूल्य अंकन करने का वैज्ञानिक प्रक्रम है जबकि मापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी वस्तु अथवा स्थिति का विस्तार, सीमा, अंश, वजन, योग्यता आदि का अभिनिश्चयन किया जाता है। राइटस्टोन (Wrightstone) ने

इसमें अन्तर बताते हुए कहा है कि 'मापन में पाठ्यवस्तु या विशेष कुशलताओं और योग्यताओं की उपलब्धि में एकांकी पक्षों पर बल दिया जाता है, जबकि मूल्यांकन में व्यक्तित्व सम्बन्धी परिवर्तन एवं शैक्षिक कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों पर बल दिया जाता है। वेस्ले (E.W. Wesley) के अनुसार " Measurement is that sub-division of evaluation which is stated in terms of percentage, amount, scores, median, means etc. मूल्यांकन तथा मापन के अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है-

क्र.सं.	मापन (Measurement)	मूल्यांकन (Evaluation)
1.	मापन द्वारा किसी योग्यता या गुण की मात्रा मापी जाती है। यह संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों हो सकती है।	मूल्यांकन द्वारा यह निर्णय लिया जाता है कि मापी गई मात्रा उपयुक्त है या नहीं।
2.	मापन मात्रात्मक होता है।	मूल्यांकन गुणात्मक होता है।
3.	मापन एक बार में किसी एक पक्ष से सम्बन्धित होता है।	मूल्यांकन बहुपक्षीय होता है।
4.	मापन संकीर्ण है-मूल्यांकन का एक भाग मात्र है।	मूल्यांकन विस्तृत है-मापन इसका एक अंग है।
5.	मापन मूल्यांकन का अनिवार्य अंग है।	मापन से मूल्यांकन के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

स्व-मूल्यांकन-2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. परीक्षा हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्न कितने प्रकार से बनाएँ जा सकते हैं ?
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षा हेतु विभिन्न प्रकार के प्रश्न बनाएँ
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षा के गुण - दोष बताएँ
4. निबंधात्मक प्रश्नों से आप क्या समझते हैं ? उनका प्रयोग आप क्यों करेंगे?
5. निबंधात्मक प्रश्नों का प्रयोग किन बातों का ध्यान रखेंगे एवं क्यों?

8.13 इकाई जाँच पत्र निर्माण

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और मूल्यांकन में सुधार लाने के लिए आजकल इकाई शृंखला के रूप में किसी विषय पर पाठ्यक्रम बनाये जाने का प्रयत्न किया जाता है। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक इकाई का पृथक मूल्यांकन किया जाये, यही इकाई परीक्षण कहलाता है। प्रत्येक इकाई के शिक्षण के बाद इसका मूल्यांकन करने से विद्यार्थियों की कमजोरियों का निदान हो सकेगा और इसके अनुसार शिक्षक को अपनी कार्यप्रणाली का ज्ञान हो सकेगा, शिक्षक को शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया की सफलता का ज्ञान हो सकेगा। इकाई परीक्षा द्वारा आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली को अपनाने में सहायता मिल सकेगी एवं वर्ष के अन्त में पढ़ने में परीक्षा के भार को कम किया जा सकेगा।

एक इकाई का आकार क्या होगा? यह इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षा का स्तर कौनसा है? इस स्तर पर विद्यार्थियों को मानसिक परिपक्वता का स्तर क्या है और कितनी गहराई से विषय का अध्ययन करना है? उदाहरण के लिये भारत के प्रमुख उद्योग माध्यमिक स्तर पर एक इकाई के रूप में पढ़ाया जाता है जबकि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कोयला उद्योग एक इकाई होगा। सामान्यतया एक प्रकरण को एक इकाई मान लिया जाता है।

इकाई परीक्षण में उन सभी बातों की ओर ध्यान दिया जाता है जो कि एक अच्छे परीक्षण के बनाने के लिये आवश्यक होती है। इसके बनाने के प्रमुख सोपान इस प्रकार हैं-

1. अभिकल्प (Design) बनाना, उद्देश्यों पाठ्यवस्तु प्रश्न के प्रकारों आदि को भार प्रदान (Weightage) करना।
2. रूपरेखा (Blueprint) बनाना-एक त्रिदशा सूचक चार्ट बनाना जिसमें उद्देश्य, पाठ्य-वस्तु और प्रश्न के प्रकारों को सम्मिलित रूप में लिखा जाता है।
3. रूपरेखा पर आधारित प्रश्न बनाना।
4. परीक्षण का सम्पादन (Edit) करना।
5. कुंजी (Key) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिये और अंक प्रदान योजना (Marketing Scheme) बनाना।
6. प्रश्नवार विश्लेषण (Questionwise Analysis) करना।

इकाई परीक्षण का एक उदाहरण :-

इकाई : कृषि सुधार और विकास

कक्षा : 11

8.13.1 इकाई परीक्षण का अभिकल्प निर्माण

उद्देश्यवार अंक प्रभार योजना :

क्र.स.	उद्देश्य	अंक
1.	ज्ञान	7
2.	अवबोध	5
3.	ज्ञानोपयोग	11
4.	कौशल	2
	योग	25

प्रकरणवार अंक प्रभार योजना

क्र.स.	प्रकरण	अंक
1.	भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व एवं विशेषताएं	8
2.	कृषि सुधार के लिये कार्यक्रम	6
3.	योजना के दौरान कृषि में प्रगति	11
	योग	25

प्रश्नों के प्रकार की दृष्टि से अंक प्रभार योजना :

क्र.स.	प्रश्न का प्रकार	प्रश्नों की संख्या प्रत्येक प्रश्न का अंक प्रभार कुल अंक			
1.	निबंधात्मक	1	5	5	5
2.	लघु-उत्तरात्मक प्रश्न	6	2	10	
3.	अति लघु- उत्तरात्मक प्रश्न	2	1	3	
4.	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	6	1	7	
	योग	16		25	

समय : 45 मिनट पूर्णांक : 25

इकाई : कृषि सुधार और विकास

कक्षा : 11

8.13.2 रूपरेखा निर्माण (Blue Print)

प्रश्नों के प्रकार	उद्देश्य	ज्ञान	अबोध	ज्ञानोपयोग	कौशल	अंकों का का	प्रश्नों का
प्रकरण							
1. भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व एवं विशेषताएं	कृषि सुधार और विकास	नि.ल.अल.व.	नि.ल.अल.व.	नि.ल.अल.व.	नि.ल.अल.व.	नि.ल.अल.व.	योग योग
2. कृषि के सुधार कार्यक्रम	प्रकारण	1(1)	1(1) 2(2)	1(2)	-	-	6 8
3. योजना के दौरान कृषि में प्रगति अंकों का योग प्रश्नों का योग	प्रकारण	1(1)1(1)	1(2)	-	-	-	5 6
				1(2)			
4. योजना के दौरान कृषि में प्रगति अंकों का योग प्रश्नों का योग	प्रकारण	1(2)		1(5)	2(1)	4	11
5. अंकों का योग	प्रकारण	6	4	4	1	25	
6. प्रश्नों का योग	प्रकारण	7	5	11	2		

रूपरेखा ने काम में लिये गये संकेतों का स्पष्टीकरण

1. कोष्ठक के अन्दर का अंक प्रश्नों की संख्या एवं बाहर का अंक कुल अंकों का सूचक है ।
2. नि-निबंधात्मक प्रश्न, अ.ल.-अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न
3. ल.-लघुत्तरात्मक प्रश्न, व-वस्तुनिष्ठ प्रश्न

8.13.3 इकाई परीक्षण निर्माण :

विषय : अर्थशास्त्र

कक्षा : 11

इकाई : कृषि सुधार पर विकास

समय : 45 मिनट

निर्देश :

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दिये जाने हैं ।

2. प्रश्न संख्या 1,2,3,4,5,6,7 में प्रत्येक प्रश्न के साथ चार-चार विकल्प दिये हुए हैं, जिसमें से एक सही है। सही विकल्प के संकेताक्षर (अ ब स ट) को दाहिनी ओर दिये हुए कोष्ठक में लिखिये।
3. प्रश्न संख्या 8,9 और 10 के उत्तर अधिक से अधिक 26 शब्दों में लिखिये।
4. प्रश्न संख्या 11, 12, 13 और 14 के उत्तर अधिक से अधिक 75 शब्दों में लिखिये।
5. प्रश्न संख्या 18 का उत्तर अधिक से अधिक 150 शब्दों में दीजिए।
6. प्रश्न संख्या 1 से 10 एक-एक अंक के हैं।
7. प्रश्न संख्या व 1 से व 5 दो-दो अंक के हैं और प्रश्न संख्या 16 पाँच अंक का है।
1. भारत एक कृषि प्रधान देश है क्योंकि -
- (अ) कुल जनसंख्या का लगभग 76 प्रतिशत हिस्सा गाँवों में रहता है।
 - (ब) कुल श्रम शक्ति का 72.5 प्रतिशत भाग कृषि कर पर निर्भर रहता है।
 - (स) कुल भूमि के 40 प्रतिशत भाग पर खेती की जाती है।
 - (द) यहां पर विभिन्न फसलें उगाई जाती हैं।
2. मारत की राष्ट्रीय आय का कितना भाग कृषि क्षेत्र से उपलब्ध होता है?
- (अ) 52 प्रतिशत
 - (ब) 44 प्रतिशत
 - (स) 37 प्रतिशत
 - (द) 70 प्रतिशत
- ()
3. निम्नलिखित कृषि जन्य पदार्थों में कौनसा पदार्थ सबसे अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने का साधन हैं?
- (अ) चाय
 - (ब) कपास
 - (स) चावल
 - (द) तम्बाकू
- ()
4. अब ग्रामवासियों की उत्पादन सम्बन्धी कुल साख आवश्यकताओं का कितना प्रतिशत भाग सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदान किया जाता है?
- (अ) 29 प्रतिशत
 - (ब) 14 प्रतिशत
 - (स) 60 प्रतिशत
 - (द) 80 प्रतिशत
- ()
5. ऐतिवारी प्रणाली में :
- (अ) खेती करने वाला किसान स्वयं ही भूमि का स्वामी होता है।
 - (ब) भूमि पर सारे ग्राम समुदाय का अधिकार होता है।
 - (स) बिचौलिये के हाथ में भूमि का स्वामित्व होता है।
 - (द) भूमि का स्वामित्व जर्मींदार के हाथ में होता है।
- ()
- रूपरेखा में काम में लिये गये संकेतों का स्पष्टीकरण :
1. कोष्ठक के अन्दर का अंक प्रश्नों की संख्या एवं बाहर का अंक कुल अंकों का सूचक है।
 2. नि.-निबन्धात्मक प्रश्न, अ.ल.-अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

3. ल.-लघुत्तरात्मक प्रश्न, व-वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- 8.13.3 इकाई परीक्षण निर्माण : विषय : अर्थशास्त्र
- कक्षा : 11
 इकाई : कृषि सुधार पर विकास
 समय : 45 मिनट
 निर्देश.
1. सभी प्रश्नों के उत्तर दिये जाने हैं।
 2. प्रश्न संख्या 1,2,3,4,5,6,7 में प्रत्येक प्रश्न के साथ चार-चार विकल्प दिये हुए हैं, जिसमें से एक सही है। सही विकल्प के संकेताक्षर (अ ब स द) को दाहिनी ओर दिये हुए कोष्ठक में लिखिये।
 3. प्रश्न संख्या 8,9 और 10 के उत्तर अधिक से अधिक 28 शब्दों में लिखिये।
 4. प्रश्न संख्या व 11, 12, 13 और 14 के उत्तर अधिक से अधिक 75 शब्दों में लिखिये।
 5. प्रश्न संख्या व 8 का उत्तर अधिक से अधिक 150 शब्दों में दीजिए।
 6. प्रश्न संख्या 1 से 10 एक-एक अंक के हैं।
 7. प्रश्न संख्या 11 से 15 दो-दो अंक के हैं और प्रश्न संख्या 16 पाँच अंक का है।
 1. भारत एक कृषि प्रधान देश है क्योंकि -
 (अ) कुल जनसंख्या का लगभग 76 प्रतिशत हिस्सा गँवों में रहता है।
 (ब) कुल श्रम शक्ति का 725 प्रतिशत भाग कृषि कर पर निर्भर रहता है।
 (स) कुल भूमि के 40 प्रतिशत भाग पर खेती की जाती है।
 (द) यहां पर विभिन्न फसलें उगाई जाती हैं। ()
 2. भारत की राष्ट्रीय आय का कितना भाग कृषि क्षेत्र से उपलब्ध होता है?
 (अ) 52 प्रतिशत
 (ब) 44 प्रतिशत
 (स) 37 प्रतिशत
 (द) 70 प्रतिशत ()
 3. निम्नलिखित कृषि जन्य पदार्थों में कौनसा पदार्थ सबसे अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने का साधन है?
 (अ) चाय
 (ब) कपास
 (स) चावल
 (द) तम्बाकू ()
 4. अब ग्रामवासियों की उत्पादन सम्बन्धी कुल साख आवश्यकताओं का कितना प्रतिशत भाग सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदान किया जाता है?
 (अ) 29 प्रतिशत
 (ब) 14 प्रतिशत
 (स) 60 प्रतिशत
 (द) 60 प्रतिशत ()
 5. रेयतवारी प्रणाली में :

- (अ) खेती करने वाला किसान स्वयं ही भूमि का स्वामी होता है ।
 (ब) भूमि पर सारे ग्राम समुदाय का अधिकार होता है ।
 (स) बिचौलिये के हाथ में भूमि का स्वामित्व होता है ।
 (द) भूमि का स्वामित्व जर्मीदार के हाथ में होता है । ()
6. सातवीं पंचवर्षीय योजना में सिंचाइ के विकास पर कितना व्यय करने का प्रावधान किया गया था?
- (अ) 578 करोड़ रुपये
 (ब) 9,656 करोड़ रुपये
 (स) 16,977 करोड़ रुपये
 (द) 2,534 करोड़ रुपये ()
7. किस पंचवर्षीय योजना को छोड़कर देश की सभी पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को उच्च प्राथमिकता दी गयी है?
- (अ) पहली
 (ब) दूसरी
 (स) पाँचवीं
 (द) आठवीं ()
8. व्यापारिक फसलों के दो उदाहरण दीजिये ।
9. सहकारी खेती का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
10. हरित कान्ति का अर्थ स्पष्ट दीजिये ।
11. भारत में कृषि और उद्योग के सम्बन्ध को समझाइए ।
12. भारत में कृषि में प्रति हेक्टेयर उत्पादन अन्य देशों की तुलना में बहुत कम क्यों है? (केवल दो कारण दीजिये)
13. कृषि में तकनीकी व्यवस्था सुधार के लिये उठाये गये दो प्रमुख कदमों का विवरण दीजिये।
14. हरित क्रान्ति किस सीमा तक प्रभावशील रही है? (केवल दो बातें लिखिये)
15. नीचे विभिन्न वर्षों में हुए खाद्यान्न उत्पादन से सम्बन्धित आकड़े दिये गये हैं :

वर्ष	उत्पादन (लाख टन में)
1950-51	549
1968-69	980
1977-78	1210
1984-85	1500

 इन आँकड़ों के आधार पर दण्ड चित्र बनाइये ।
16. पंचवर्षीय योजनाओं एवं हरित क्रान्ति की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए एक नई कृषि व्यूह रचना (New Agricultural Strategy) प्रस्तुत कीजिये ।

8.13.4 कुंजी तथा अंक प्रदान योजना

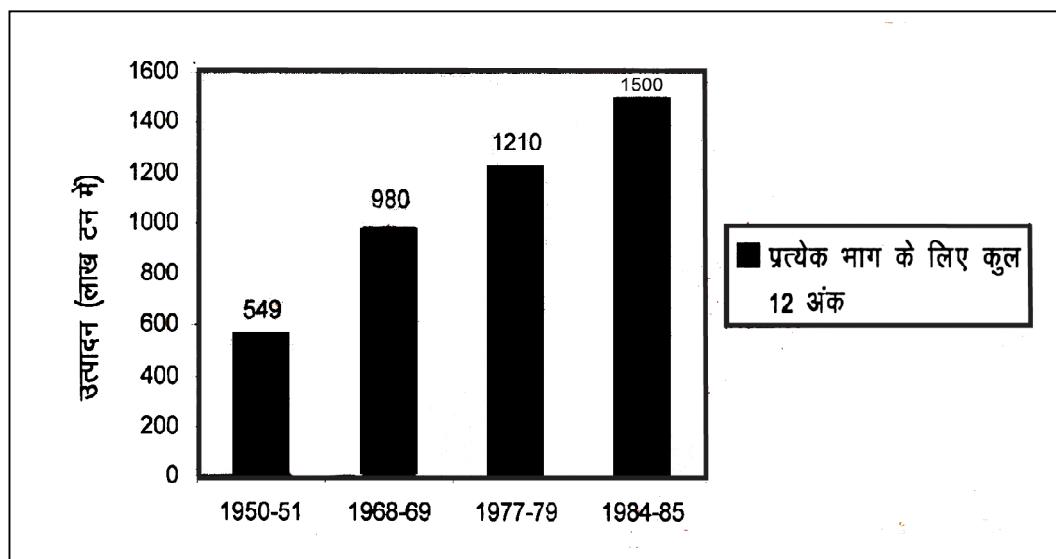
कुंजी तथा अंक प्रदान योजना							
प्रश्न सं.	1	2	3	4	5	6	7
कुंजी	ब	स	अ	द	अ	स	ब
अंक	1	1	1	1	1	1	1
अंक प्रदान योजना :							
प्रश्न सं.	अपेक्षित उत्तर			अंक प्रदान योजना			अंक योग
8.	व्यापारिक फसलों के उदाहरण : गन्ना, कपास, जूट, तिलहन, चाय, रबर, तम्बाकू मसाले (कोई से दो उदाहरण)			प्रत्येक उदाहरण का 1/2 अंक			1
9.	सहकारी खेती का प्रमुख उद्देश्य जोतों के आकार को बढ़ाना होता है।			1 अंक			1
10.	हरित कांति का अर्थ होता है : (1) अल्पकाल में सुस्पष्ट सुधार तथा (2) एक लम्बी अवधि तक ऊचे-ऊचे कृषि उत्पादन के स्तर का बने रहना ।			प्रत्येक बात का 1/2 अंक			1
11.	बहुत से उद्योग जैसे कपड़ा, जूट, चीनी, कृषि पर निर्भर हैं, बहुत से उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से संबन्धित हैं जैसे हथकरघा, तेल निकालना, धान कूटना आदि ।			2			
12.	कृषि भी मशीनों एवं रासायनिक खाद के लिये उद्योग पर निर्भर है । भारत में कृषि में प्रति हैक्टेयर उत्पादन प्रत्येक कारण का अन्य देशों की तुलना में बहुत कम होने के कारण : प्राकृतिक, तकनीकी, संस्थागत, आर्थिक, सामाजिक (किन्हीं दो कारणों की संक्षिप्त व्याख्या)			1 अंक			2
13.	कृषि में तकनीकी व्यवस्था के सुधार के लिये उठाये गये प्रमुख कृषि में नई तकनीकी और आधुनिक प्रबंध का अपनाया जाना, निवेश में वृद्धि, पर्याप्त साधन न उपलब्ध करवाना, सिंचाई सुविधाओं का विकास, उन्नत किस्म के बीच एवं उर्वरक (किन्हीं दो कदमों का संक्षिप्त विवरण)			प्रत्येक कदम का 1 अंक			2

14. हरित क्रांति के प्रभावों को देखते हुए इसकी प्रत्येक बात का 21

प्रभावशीलता की निम्नलिखित सीमायें हैं :- अंक

नयी तकनीक का प्रभाव केवल गेहूं पर
अधिक मात्रा में पड़ा है ।- नयी तकनीक का
लाभ केवल बड़े और धनी किसानों को प्राप्त
हुआ है ।- नयी तकनीक का प्रयोग देश के
सीमित क्षेत्रों में हो सका है ।

15. नयी तकनीक का प्रयोग इसके विकास के आरम्भिक दशक में रहा और यह प्रभाव अब
क्षीण होता जा रहा है (किन्हीं दो बातों की संक्षिप्त व्यवरण्या)



16. पंचवर्षीय योजनाओं एवं हरित कांति की सीमाओं को ध्याने में रखते हुए नई कृषि व्यवहार रचना में निम्न बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिये-

- एक अच्छी भूमि के उपयोग की नीति
- उपज में वृद्धि के लिये निरन्तर सुधार
- वैज्ञानिक साधनों एवं वित्त की पर्याप्त मात्रा तथा सुगम पूर्ति
- शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार सेवाओं का विकास
- भिन्न विकास के स्तर वाले क्षेत्रों के विकास की आवश्यकताओं तथा सम्भावनाओं का समान रूप से विस्तार ।
- विकास को स्थाई बनाए रखने के लिये ।

उपर्युक्त विपणन एवं कीमत नीति का निर्माण
(किन्हीं पाँच का वर्णन)

प्रत्येक बात का

1 अंक

5

8.13.5 प्रश्नवार विश्लेषण (Questionwise Analysis)

प्रश्न सं.	उद्देश्य	विशिष्टीकरण	प्रकरण/उपइकाई	प्रश्न प्रकार	अंक	समय (मिनट)	कठिनाई का स्तर
1.	अवबोध	तर्क देता है।	भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व एवं विशेषताएं	व.	1	1	ब
2.	ज्ञान	पुनर्पहचान	- " -	व.	1	1	ब
3.	अवबोध	तुलना करता है	- " -	व.	1	1	ब
4.	ज्ञान	तुलना के कृषि सुधार लिये कार्यक्रम	व.	व.	1	1	ब
5.	ज्ञान	- " - प्रत्यास्मरण करता है।	ब	व.	1	1	ब
6.	ज्ञान	पुनर्पहचान	ब	व.	1	1	ब
7.	अवबोध	उदाहरण देता है।	भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व एवं विशेषताएं	अ.ल.	1	1	ब
8.	ज्ञान	प्रत्यास्मरण	कृषि सुधार के लिये कार्यक्रम	अ.ल.	1	1	ब
9.	अवबोध	स्पष्टीकरण करता है	योजना के दौरान कृषि में प्रगति	अ.ल.	1	1	ब
10.	ज्ञानोपयोग	सम्बन्ध स्थापित करता है।	भारत के आर्थिक विकास में कृषि का	ल.	2	4	ब

			महत्व एवं विशेषताएं					
11.	ज्ञानोपयोग	कारण बताता है ।	- " -	ल.	2	4	ब	
12.	ज्ञान	प्रत्यास्मरण करता है	कृषि सुधार के लिए कार्यक्रम	ल.	2	4	ब	
13.	ज्ञानोपयोग	मूल्यांकन करता है	योजना के ल. दौरान कृषि में प्रगति	ल.	2	4	अ	
14.	कौशल	रेखाचित्र खीचता है ।	- " -	ल.	1	4	ब	
15.	ज्ञानोपयोग	सुझाव	- " -	नि.	5	10	अ	

- 5 मिनट पुनरावृत्ति के लिये
 - कठिनाई का स्तर :
- अ-कठिन
ब-सामान्य
स-सरल

स्व-मूल्यांकन-3

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिये :

1. इकाई परीक्षण का क्या महत्व हैं?
2. इकाई परीक्षण बनाने के क्या प्रमुख सोपान हैं?

8.14 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण (Diagnostic and Remedial Teaching)

प्रत्येक कक्षा में तीन प्रकार के छात्र होते हैं । 68.26% छात्र औसत होते हैं । शेष में से 16.72% मन्द बुद्धि एवं 16.72% प्रतिभाशाली होते हैं। ये वे हैं जो शिक्षक के पढ़ाने की प्रक्रिया में अतिशीघ्र सीख लेते हैं या कुछ नहीं सीख पाते हैं । इस प्रकार की भिन्नता को दूर करने के लिए शिक्षक को दोनों प्रकार के छात्रों की कठिनाइयों का निदान व उपचार करना होगा ।

8.14.1 कठिनाइयों का निदान

छात्रों की उपलब्धि का स्तर अच्छा हो सके इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम इसका कारण क्या है? कारण के लिए शिक्षक एवं छात्र दोनों ही उत्तरदायी हो सकते हैं । प्रतिभाशाली बालकी को विशेष चुनौतियों की प्रतिपूर्ति नहीं कर पाना अथवा मन्द बुद्धि छात्रों को धैर्यपूर्वक

समझाने के लिये समय व प्रयासों का अभाव शिक्षक जनित कारक हो सकते हैं। दूसरी ओर छात्र की बुद्धि का स्तर, रुचि, ध्यान, सुस्ती आदि कई ऐसे कारण हो सकते हैं जिसके कारण छात्र त्रुटियाँ करते हो एवं अपेक्षित उपलब्धि नहीं रह पाती हो। ऐसी स्थिति में छात्र अर्थशास्त्र में किस प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं, इसको जाँचना पड़ेगा। उनकी त्रुटियों के निदान के पश्चात् ही उपचार की संभावना बनती है।

8.14.2 अर्थशास्त्र में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ (Common Mistakes in Economics)

1. सम्प्रत्यय सम्बन्धी त्रुटियाँ (Mistakes Related to Concepts)

सामान्य एवं अर्थशास्त्र की शब्दावली में अन्तर होता है। प्रायः छात्र उस पर ध्यान नहीं देते हैं। जैसे धन एवं पूँजी, आवश्यकता एवं इच्छा आदि।

2. सिद्धान्तों की अवधारणा सम्बन्धी त्रुटियाँ (Mistakes Related to Understanding the Principles)

अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत, सीमान्त उपयोगिता हास नियम, उत्पादन का नियम, कीमत निर्धारण, माँग एवं पूर्ति सम्बन्धी तथ्यों को छात्रों को समझाने में कठिनाई होती है तथा वे इसको अभिव्यक्त करने में त्रुटियाँ करते हैं।

3. भ्रम के कारण होने वाली त्रुटियाँ (Mistakes due to confusion)

सामान्य जीवन में छात्रों को यह भ्रम रहता है कि -

- कोई भी वस्तु हर समय सन्तुष्टि देती है।
 - उद्योग में एक समय के बाद और निवेश करने पर उत्पादन की दरे नहीं घट सकती है।
 - हर वस्तु सबके लिए समान रूप से उपयोगी होती है।
- आदि-आदि।

इस प्रकार के भ्रम के कारण आर्थिक सिद्धान्तों की व्याख्या को समझ नहीं पाते तथा वे त्रुटियाँ करते हैं।

4. गणितीय ज्ञान की कमी से होने वाली त्रुटियाँ (Mistakes due to lack of Mathematical knowledge)

अर्थशास्त्र में गणित एवं सांख्यिकीय ज्ञान की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार के ऑकड़ों का संकलन, विश्लेषण, औसत एवं मध्यमान की गणना सह-सम्बन्ध एवं अन्तर ज्ञान करना, पूर्वानुमान आदि की गणना करनी होती है। जो छात्र गणना करने में कमजोर होते हैं अथवा सूत्रों को समझ कर उपयोग नहीं कर पाते हैं वे विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं।

5. कौशल के अभाव के कारण होने वाली त्रुटियाँ (Mistakes due to lack of skill)

आर्थिक स्थितियों व कारकों के सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने के लिए चित्रात्मक प्रदर्शन का भी सहारा लेते हैं। ग्राफ, रेखा-चित्र, वृत्त चित्र, मानचित्र आदि में कौशल की आवश्यकता होती है। इसमें कलात्मकता एवं तर्क बुद्धि की आवश्यकता होती है। अतः कौशल के अभाव में भी बालक त्रुटियाँ करते हैं।

छात्रों की इन त्रुटियों के लिए शिक्षण को अपने शिक्षण में उपचार करना होगा। छात्रों द्वारा की जाने वाली सामान्य त्रुटियाँ न हों इसका प्रावधान शिक्षक को अपने शिक्षण में करना होगा।

8.14.3 उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)

- शिक्षक अर्थशास्त्र के शब्दों की व्याख्या करते समय अर्थशास्त्र का शब्दकोश का उपयोग करना सिखाये। प्रत्येक शब्द से जुड़े छात्रों के अनुभवों का प्रयोग करते हुए अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास करें।
- अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों को स्पष्ट करें। जिन सिद्धान्तों की व्यवहारिक क्रिया करता हो, करना चाहिए। जैसे- उपभोक्ता की बचत, उपयोगिता हास नियम आदि का अनुभव दिया जा सकता है।
- सामुदायिक सर्वे/भ्रमण आदि अनुभवों से छात्रों के भ्रमों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।
- गणितीय एवं कौशलात्मक गतिविधियों के लिए अभ्यास करवाने की आवश्यकता होती है।

8.14.4 उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ (Methods of Remedial Teaching)

- शक्तिगत उपचारात्मक शिक्षण - कई बार छात्र ऐसी त्रुटि करते हैं जिन पर व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता होती है। जैसे कौशल विकास करने के लिए व्यक्तिगत की आवश्यकता होती है। छात्र को कार्य दे दिया जाये। व्यवस्थित रूप से जाँचा जाये तथा पुनः निर्देशन दिया जाये।
- समूहिक उपचारात्मक शिक्षण - कई त्रुटियाँ ऐसी होती हैं जो कक्षा में लगभग सभी छात्र कर रहे होते हैं। स्पष्ट है कि उसे समूहिक रूप से पुनर्शिक्षण करके छात्रों को समझाना चाहिए। इससे छात्रों की कमजोरी दूर होगी तथा अर्थशास्त्र विषय में छात्र रुचि लेकर दक्ष हो सकेंगे।

8.15 सार-संक्षेप (Summary)

मूल्यांकन एक व्यापक एवं उद्देश्य आधारित प्रक्रिया है। यह सतत् चलती रहती है। शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इससे शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान होता है। साथ ही शिक्षण प्रक्रिया की प्रभाविता का भी ज्ञान होता है।

इसके द्वारा हम छात्रों का प्रवेश एवं समूह में बांटने का काम करते हैं। इसी से उपचारात्मक शिक्षण हेतु आधार निर्मित होता है। छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा विकसित होती है। छात्रों की योग्यता का ज्ञान होता है। इसकी मौखिक लिखित एवं अवलोकन विधियों प्रचलित हैं। इससे ज्ञान, भाव एवं क्रिया तीनों आयामों की जाँच होती है।

मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन प्रमुख पक्ष हैं- उद्देश्य, अधिगम, अनुभव एवं मूल्यानकन के उपकरण।

मापन एक परिमाणीकरण की प्रक्रिया है। पूर्वानुमान, निदान एवं शोध हेतु मापन किया जाता है। अच्छी विश्वसनीय वस्तुनिष्ठ, वैध, व्यावहारिक, व्यापक एवं विभेदीकरण कर सकने योग्य होती है।

व्यापकता के गुण को बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न सम्मिलित किये जाते हैं। निबंधात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के संयोजन एवं संयोग से अच्छे प्रश्न पत्रों का निर्माण किया जाता है। एक इकाई परीक्षण के विभिन्न सोपानों में निर्माण प्रक्रिया को पाठ में समझाने का प्रयास किया गया है।

विभिन्न प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उदाहरण भी अध्याय में सम्मिलित हैं।

8.16 सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

1. मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रमुख सोपान क्या हैं?

What are the main steps of Evaluation process ?

2. निम्नलिखित प्रकरणों में प्रत्येक पर पाँच निबंधात्मक प्रश्न बनाइये

Frame five essay type questions on following topics :

- (1) राजकोषीय और मौद्रिक प्रणालियों का विकास (Development of Public Finance and Monetary System)

- (2) आय की माप (Measurement of Income)

3. निम्नलिखित प्रकरणों में प्रत्येक पर पाँच लघु उत्तरात्मक और पाँच अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न बनाइये :

Frame short answer and very short answer type questions on following topics.

- (1) निर्देशांक (Index)

- (2) आर्थिक संगठन के विभिन्न (Various frames of Economic organization)

4. निम्नलिखित इकाइयों के लिये इकाई परीक्षण बनाइये :

Construct a unit test on following units-

- (1) विकास योजनाएं (Development Plans)

- (2) सह-सम्बन्ध विश्लेषण (Analysis of co-relation)

- (3) भारत में शुद्ध घरेलू उत्पाद की गणना (Calculation of net domestic income of India)

- (4) पूर्ण तथा अपूर्ण बाजारों में कीमत की प्रवृत्तियाँ । (Trends of Price in complete and incomplete market)
-

8.17 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Arora, P.N., **Evaluation in Economics (Handbook)**, New Delhi, : N.C.E.R.T, 1985
2. Arora, P.N. and Shorie, J.P. **Open Book Examination Questions in Economics**, New Delhi, : N.C.E.R.T, 1986
3. Directorate of Extensive Programme for Secondary Education, **The Concept of Evaluation in Education**, New Delhi : Ministry of Education, 1960

4. Directorate of Extension Programme for Secondary Education, **Evaluation in Social Studies**, New Delhi : Ministry of Education, 1960
5. Lee, N. **Teaching Economics**, London : Heinemann Educational Books, 1975
6. N.C.E.R.T. **Teaching units in Economics for High and Higher Secondary Stage**, New Delhi, : N.C.E.R.T, 1973
7. **National Policy on Education**, 1986 New Delhi : Govt. of India Ministry Human Resource Development, 1986
8. पुरोहित जगदीश नारायण, शिक्षण के लिये आयोजन जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972
9. रूहेला, सत्यपाल और खान, रियाज शाकिर सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण, कोटा खुला विश्वविद्यालय, बीई5
10. Srivastava, H.S. et.al **Unit Test in Economics**, New Delhi, : N.C.E.R.T, 1976
11. **The Curriculum for the Ten Year School A Framework** New Delhi,: N.C.E.R.T, 1985
12. Loright Stone J.W. et.al **Evaluation in Modern Education** New Delhi : Eurasia Publishing House (Pvt.) Ltd. 1964.

इकाई-9

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक

(Text-Books of Economics)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

-
- | | |
|-------|--------------------------------|
| 9.1 | इकाई के उद्देश्य |
| 9.2 | पाठ्य-पुस्तक का अर्थ |
| 9.3 | पाठ्य-पुस्तक का महत्व/आवश्यकता |
| 9.4 | अच्छी पाठ्य-पुस्तक के गुण |
| 9.5 | पाठ्य-पुस्तक चयन के सिद्धान्त |
| 9.5.1 | विषय-वस्तु का स्तर |
| 9.5.2 | प्रस्तुतीकरण |
| 9.5.3 | बाह्य आवृति |
| 9.5.4 | लेखक |
| 9.3.5 | मूल्य |
| 9.6 | पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन |
| 9.7 | पाठ्य-पुस्तक मूल्यांकन प्रारूप |
| 9.8 | सार-संक्षेप |
| 9.9 | इकाई का मूल्यांकन |
| 9.10 | सन्दर्भ पुस्तकें |
-

9.1 इकाई के उद्देश्य (Objective of Unit)

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप -

1. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के महत्व को समझ सकेंगे ।
 2. अर्थशास्त्र के पाठ्य-पुस्तक के चयन के सिद्धान्तों को समझ सकेंगे ।
 3. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन में ध्यान में रखी जाने वाली बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे एवं इस आधार पर आप स्वयं एक पाठ्य-पुस्तक मूल्यांकन मापनी बना सकेंगे ।
-

9.2 पाठ्य-पुस्तक का अर्थ (Meaning of Text-Book)

पाठ्य-पुस्तक शिक्षक एवं छात्र दोनों की ही पथ-प्रदर्शक एवं सहायक होती है । यह पाठ्य-पुस्तक पर आधारित होती है । इसमें संबन्धित विषय-वस्तु व्यवस्थित रूप से संकलित रहती है । पाठ्य-पुस्तक को परिभाषित करते हुए बेकन (Bacon) ने कहा है कि 'पाठ्य-पुस्तक कक्षा-कक्ष के प्रयोग के लिए तैयार की गई पुस्तक है ।' (Text-book is a book designed for classroom use.) लैंग (Lange) ने लिखा है, 'पाठ्य-पुस्तक अध्ययन की किसी शाखा की एक प्रामाणिक पुस्तक होती है ।' (Text-book is a standard book for any

particular branch of study.) एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च के अनुसार आधुनिक तथा प्रचलित अर्थ में पाठ्य-पुस्तक सीखने वाला साधन है जिसका प्रयोग विद्यालयों तथा कॉलेजों में अनुदेशन कार्यकर्मों को पूरित करने के लिए किया जाता है। सामान्य अर्थ में पाठ्य-पुस्तक मुद्रित होती है, इसकी जिल्द मजबूत होती है, यह अनुदेशन अभिप्राय से प्रयुक्त की जाती है और इसको सीखने वालों के हाथों में सौंपी जाती है।"

(In the modern sense and as commonly understood, the text-book is a learning instrument usually employed in schools and colleges to support a programme or instruction. In ordinary sense, the text book is printed. It is non-consumable, it is hard bound, it serves for Instructional purpose and it is placed in the hands of learner.)

हालक्वेस्ट (Hallquest) का कहना है कि पाठ्य-पुस्तक अनुदेशीय अभिप्रायों के लिए व्यवस्थित किया गया एक प्रजातीय चिन्तन का अभिलेख है (Text-book is a record of racial thinking organized for instructional purposes.)

इस प्रकार उक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से जात होता है कि पाठ्य-पुस्तक शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली मुद्रित सामग्री होती है। इसमें विषय-वस्तु से सम्बन्धित विशेषज्ञों के दृष्टिकोण, अनुभव एवं भावनाएँ संकलित होती हैं, जो कि शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है। पाठ्य-पुस्तक एक साध्य है जिसमें दी गई सामग्री से छात्र विषय को समझने का प्रयास करते हैं।

9.3 पाठ्य-पुस्तक का महत्व/आवश्यकता (Need/Importance of Text-Book)

1. विषय-वस्तु के व्यक्तिगत स्वरूप को समझने के लिए।
 2. पुनरावृत्ति के लिए
 3. स्वाध्याय के लिए
 4. गहराई से समझने के लिए
 5. गृह कार्य करने के लिए
 6. परीक्षा की तैयारी के लिए
-

9.4 अच्छी पाठ्य-पुस्तक के गुण (Properties of a good Text-Book)

1. अच्छी पाठ्य-पुस्तक आकर्षक होती है।
2. छात्रों के लिए भाषा व व्यवस्था रुचिकर होती है।
3. मूल सम्प्रत्ययों की तार्किक व्याख्या दी जाती है।
4. परिभाषाओं का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।
5. व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरण दिये जाते हैं।

6. आवश्यकतानुसार विभिन्न स्थलों पर मानचित्र, रेखाचित्र, तालिकाएँ, ग्राफ आदि दिये जाते हैं।
 7. विषय-वस्तु छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप होती है।
 8. अच्छी पाठ्य-पुस्तक में नवीनतम सूचनाएँ, सिद्धान्त एवं जानकारी होती है।
 9. किसी भी संप्रदाय, धर्म या वर्ग विशेष की भावनाओं की पक्षाधर नहीं होती।
 10. किसी भी भावनाओं को आधात नहीं पहुँचाती है।
 11. विभिन्न इकाइयों, उपइकाइयों एवं प्रकरण में बंटी रहती है।
 12. इसमें विषय-सूची, शब्दावली, गृह कार्य व अन्य क्रियाएँ दी हुई रहती हैं।
-

9.5 पाठ्य-पुस्तक चयन के सिद्धान्त (Principles of Selection of a Text-Book)

9.5.1. विषय-वस्तु का स्तर (Level of Text-Book) -

- (1) छात्रों की रुचि, योग्यता एवं मानसिक स्तर के अनुकूल
- (2) समाज के लिए उपयुक्त संदेश देने वाली
- (3) मनोवैज्ञानिक क्रम से व्यवस्थित

9.5.2 प्रस्तुतीकरण (Presentation)

- (1) विषय-वस्तु ग्राह्य हो।
- (2) विषय-वस्तु में सहसम्बन्ध स्थापित किया गया हो।
- (3) व्यावहारिक उदाहरणों से जोड़ा गया हो।
- (4) सीखने के नियमों के अनुकूल हो।
- (5) छात्रों के मानसिक विकास में सहायक हो।
- (6) शिक्षा के शिक्षण को परिपूरित कर सके।
- (7) मनोवैज्ञानिक क्रम में दिया गया हो।
- (8) छात्रों की रुचि जागृत कर सके।
- (9) तालिकाएँ, चित्र, ग्राफ, मानचित्र आदि देकर विषय-वस्तु को स्पष्ट किया गया हो।
- (10) सरस भाषा शैली को अपनाया गया हो।
- (11) विषय-वस्तु को बिन्दुवार दिया गया हो।
- (12) सहायक पुस्तकों की सूची दी गई हो।
- (13) विषय शब्दावली को परिभाषित किया गया हो।

9.5.3. बाह्य आकृति (Title Cover)

- (1) मुख्य पृष्ठ आकर्षक हो।
- (2) सजिल्द हो।
- (3) कागज अच्छा हो।
- (4) मुद्रण आकर्षक हो।
- (5) चित्र स्पष्ट व सुवाच्य हों।
- (6) उपयुक्त मारजिन छोड़ा गया हो।

9.5.4 लेखक (Author)

अनुभवी तथा परिपक्व लेखक द्वारा लिखी गई हो ।

9.5.4 मूल्य (Value)

छात्रों के लिए मितव्ययी हो ।

स्व-मूल्यांकन-1

1. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के महत्व की विवेचना कीजिये ।
2. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के चयन के सिद्धान्तों को स्पष्ट कीजिये ।

9.6 पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन (Evaluation of Text-Book)

एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक का चयन करना एक पेचीदा समस्या है । बाजार में बहुत सी अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हैं, इसलिये इनमें से उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक को चुनने के लिये वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन (Objectvie Evaluation) की आवश्यकता होती है । भारत में इन पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा (Review) भी कम की जाती है फिर समीक्षा एक ओर तो संक्षिप्त होती हैं व सभी पहलुओं को नहीं छू पाती है वहां दूसरी ओर यह दूसरी पुस्तकों के संदर्भ में एक तुलनात्मक विवरण नहीं दे पाती है इसलिये शिक्षक को स्वयं पाठ्य-पुस्तक का चयन विभिन्न पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन करके करना चाहिये । मूल्यांकन का मानदण्ड (Criteria) तय करना एक मुश्किल कार्य है, इसे जितना सोच-समझकर बनाया जायेगा, उतना ही मूल्यांकन में समय कम लगेगा । नीचे अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन से संबन्धित कुछ मार्ग दर्शक बातों का विवरण दिया जा रहा हैं, जिनके आधार पर अर्थशास्त्र का शिक्षक अपना मानदण्ड बना सकता है-

C.D. Harbury ने अपने लेख Economic Text/books and their evaluation में अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन के लिए तीन मानदण्ड बताये हैं-

1. पूर्णता (Coverage) : अर्थशास्त्र के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार हो ।
2. प्रतिपादित (Treatment) विषयवस्तु विशुद्ध (Accurate) और क्रमबद्ध हो एवं साथ में प्रतिपादन विद्यार्थियों के लिये उद्दीपक (Stimulating) हो ।
3. डिजाइन (Design) के अंतर्गत शीर्षक (Heading) उदाहरण अनुक्रमणिका (Index) और दूसरे बहुत से पहलू जैसे कीमत, ग्रंथ सूची (Bibliography) अभ्यासार्थ प्रश्न आदि का मूल्यांकन करना होगा । A.S. Daughtrey ने अपनी पुस्तक Methods of Basic Business and Economic Education, में अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन करने की एक गाइड प्रस्तुत की है, जिसे नीचे दिया जा रहा है -

9.7 पाठ्य-पुस्तक मूल्यांकन प्रारूप

पाठ्य-पुस्तक का नाम.....समीक्षक (Reviewer)

लेखक.....

1. विषय-वस्तु (Content) समीक्षक की टिप्पणी (Comments)
 1. तथ्यात्मक (Factual)

2. वर्तमान (Current)
 3. उपयुक्त शब्दावली.....
 4. कोर्स उद्देश्यों के अनुरूप.....
 5. व्यापक (Comprehensive Coverage)
2. विषय-वस्तु का अवस्थापन एवं संगठन
 (Arrangement and Organisation of Content) :
1. तर्क-सम्मत विकास (Logical Development)
 2. विषय-वस्तु का समुचित ब्यौरा.....
 3. विभिन्न शिक्षण विधियों से अनुकूलित करने के लिए विषय-वस्तु का लचीला व्यवस्थापन.....
3. शिक्षण-अधिगम सामग्री
 (Aids to Teaching and Learning)
1. स्पष्ट व्याख्या (Clear Explanations).....
 2. पर्याप्त विचारोत्पादक प्रश्न (Adequate thought provoking question).....
 3. पर्याप्त समस्या-समाधान क्रियाएं.....
 4. उपयुक्त उदाहरण.....
 5. शक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार समस्यायें.....
 6. उपयुक्त कार्य पुस्तिका सम्बन्धित सामग्री (Appropriate work book material)
 7. अच्छे तैयार किये गये उपलब्धि परीक्षण
 8. अध्यापक के लिये दिये गये संकेत.....
 9. विषय-वस्तु के प्रयोग एवं अध्ययन के लिए विद्यार्थियों को दिये गये निर्देश.....
 10. सहायक सामग्री के बारे में दिये गये सुझाव
4. भौतिक विशेषताएं (Physical Features) :
1. आसानी से पढ़े जा सकने वाला टाइप का साइज.....
 2. आकर्षक आकार (Attractive Format).....
 3. उपयुक्त जिल्ड.....
 4. कागज की श्रेष्ठता.....
 5. उपयुक्त एवं श्रेष्ठ द्रश्य सामग्री.....
 6. पर्याप्त विषय तालिका (Adequate Table of Contents)
 7. पर्याप्त अनुक्रमणिका
5. लेखक (Author)
1. विषय पर लिखने के लिये सक्षम (Competent to write in subject)

2. विषय की शिक्षण विधि में सक्षम एवं अनुभवी.....
3. लेखन शैली में सक्षम.....
6. दूसरी विशेषताएं (Other features).
 1. स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूलन विद्यार्थियों की आवश्यकताएं एवं योग्यताएं भौतिक सुविधाएं.....
 2. दूसरे विद्यालयों द्वारा पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग.....
 3. कीमत.....

स्व-मूल्यांकन-2

1. अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन में किन बातों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए?

9.8 सार-संक्षेप (Summary)

अध्ययन क्षेत्र की किसी भी एक शाखा पर प्रमाणिक पुस्तक को पाठ्य-पुस्तक कहा जाता है। स्वाध्याय, पुनरावृत्ति, गृहकार्य, परीक्षा की तैयारी एवं गहन जानकारी के लिए पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता होती है। अच्छी पाठ्य-पुस्तक आकर्षक, रुचिकर एवं व्यावहारिक जीवन से संबन्धित होती है। पाठ्य-पुस्तक चयन करते समय उसके विषय-वस्तु के स्तर, प्रस्तुतीकरण के तरीके, बाह्य आवरण का आकर्षण, लेखक के अनुभव एवं मूल्य को ध्यान में रखा जाता है। इसी के आधार पर निर्मित मूल्यांकन प्रारूप अध्याय में दिया गया है।

9.9 इकाई का मूल्यांकन

1. माध्यमिक अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर चल रही एक पाठ्य-पुस्तक का मूल्यांकन कीजिये।
Evaluate a text-book of secondary and senior secondary level.

9.10 सन्दर्भ पुस्तकें

1. Bining, A.H. and Bining D.H., Teaching the Social Studies in Secondary Schools, New York : MC Graw Itli Book Co. 1952
2. Daughtrey, A.S. Methods of Basic Business and Economic Education Cincinnati : South-Western Publishing Co., 1965
3. Harbury, C.D., Economic Textbooks and Their Evaluation. In N. Lee (Ed.) Teaching Economics, London : Heinmnan Educational Book, 1975.
4. Wesley, E.B., Teaching Social Studies in High Schools, Bortun : D.C. Health and Co. 1950.

इकाई-10
**अर्थशास्त्र विषय सन्दर्भित शिक्षण सामग्री की तैयारी एवं
मूल्यांकन**
**(Preparation & Evaluation of Teaching Aids in
Economics)**

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- | | |
|--------|--|
| 10.1 | इकाई के उद्देश्य |
| 10.2 | शिक्षण सामग्री की परिभाषा । |
| 10.3 | शिक्षण सामग्री का ज्ञानार्जन में महत्व |
| 10.3.1 | विभिन्न इन्डियों से संबन्धित अनुभवों की प्राप्ति । |
| 10.3.2 | प्रत्यक्ष अनुभवों का स्थान ग्रहण करना । |
| 10.3.3 | अतीत की घटनावली का अध्ययन |
| 10.3.4 | परिवर्तन की सुखद अनुभूति |
| 10.3.5 | सरल व रूचिपूर्ण दृश्य-श्रव्य साधन |
| 10.3.6 | शाब्दिक व्याख्या की सहायक |
| 10.3.7 | ज्ञान के स्थायित्व में वृद्धि |
| 10.4 | शिक्षण सामग्री का चयन |
| 10.4.1 | साधन अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए |
| 10.4.2 | साधन द्वारा प्रकरण का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत होना चाहिए |
| 10.4.3 | साधन विद्यार्थियों अनुभव और उनकी समझ के अनुकूल होना चाहिए |
| 10.4.4 | प्रयुक्त साधन विद्यार्थी के परिवेश के लिये अपरिचित नहीं होने चाहिए |
| 10.4.5 | साधन अच्छी हाल में होने चाहिए |
| 10.4.6 | अत्यधिक साधनों का अनावश्यक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए |
| 10.4.6 | साधन सुन्दर व आकर्षक होना चाहिये जिससे सुरुचि विकसित होती है |
| 10.5 | रेखा-चित्र एवं चार्ट/पोस्टर आदि का निर्माण । |
| 10.5.1 | दण्ड-चित्र |
| 10.5.2 | वृत्त-ग्राफ |
| 10.5.3 | रेखा-चित्र |
| 10.6 | शिक्षण सामग्री के प्रकार/वर्गीकरण |
| 10.6.1 | दृश्य सामग्री |
| 10.6.2 | श्रव्य साधन |
| 10.6.3 | दृश्य-श्रव्य साधन |

10.7	शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन
10.8	सार-संक्षेप
10.9	इकाई का मूल्यांकन
10.10	सन्दर्भ पुस्तके ।

10.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप :

- शिक्षण में सहायक सामग्री का महत्व समझ सकेंगे ।
- सहायक सामग्री को चयन करना सीख सकेंगे ।
- रेखाचित्र, ग्राफ, चार्ट आदि का निर्माण कर सकेंगे ।
- शिक्षण सामग्री के मूल्यांकन का आधार समझ सकेंगे ।

10.2 शिक्षण सामग्री की परिभाषा (Definition of Teaching-Aids)

दृश्य-श्रव्य साधन मुद्रित अथवा लिखित शब्द के अतिरिक्त वे साधन हैं जो वस्तु विशेष की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायक होते हैं । वास्तव में किसी वस्तु की स्पष्ट धारणा बनाने का सबसे अच्छा तरीका है, उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति । हम आम को सबसे अच्छी तरह समझते हैं उसे देखकर, छूकर, सूंघ कर और वास्तविक आम को चख कर । पर इस विशाल और जटिल विश्व की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा नहीं प्राप्त हो सकता । हमें प्रतिरूपों की सहायता लेनी ही पड़ती है । दृश्य-श्रव्य साधन हमें ये प्रतिरूप प्रदान करते हैं और वे दृश्य-श्रव्य साधन इसलिये कहलाते हैं क्योंकि दे श्रवण व दर्शन की दो इन्द्रियों द्वारा ही प्रभावी होते हैं।

Bining & Bining - “ Actually every type of teaching device by which the pupil learns through the sense of vision is a visual aid.

गुरुशरण दास त्यागी के अनुसार - “Visual Devices of many kinds may serve in making the abstract concrete and in arousing interest in studies that would otherwise be unreal and dull.”

‘उनके अनुसार सहायक सामग्रियाँ शिक्षा के वे साधन हैं, जिनके द्वारा छात्रों के निमित्त दुर्बोध पाठ्य-वस्तु को सरल, स्पष्ट, सुबोध एवं रोचक बनाया जाता है ।’

10.3 शिक्षण सामग्री का ज्ञानार्जन में महत्व (Importance of Teaching aids in Learning)

एक प्राचीन चीनी कहावत के अनुसार ‘एक बार देखना सौ बार बताने से अच्छा है ।’ सम्भव है यह बात अक्षरशः सत्य न हो, किन्तु इसमें सत्य की चढ़ी मात्रा पायी जाती है । किसी भाव या रूप को जब शब्दों द्वारा स्पष्ट चित्रण करने में कठिनाई होती है तब श्यामपट्ट पर चित्र बना कर स्पष्टीकरण किया जाता है । जहाँ चित्रण का कार्य वाणी द्वारा नहीं हो पाता है वही लेखनी व तूलिका द्वारा किया जाता है । वास्तव में बालक को सीखने की क्रिया में सभी इन्द्रियाँ सहायता देती हैं । इनमें नेत्रों और कानों का प्रमुख स्थान है । Dr. Summer-“The eye is

the most important gateway to the mind. For the most people the visual impression is the one which can be most easily interpreted, is the most lasting and relate most readily to other sensory experience."

अतः सहायक सामग्री हमारे लिए निम्नांकित प्रकार से महत्वपूर्ण होती है -

10.3.1 विभिन्न इन्द्रियों से सम्बन्धित अनुभवों की प्राप्ति

सीखने के लिये यह आवश्यक है कि बालकों को पर्याप्त इन्द्रियानुभव प्राप्त हो। नये शब्दों तथा अपरिचित बातों को उस समय तक भली प्रकार नहीं समझा जा सकता जब तक कि उनका सम्बन्ध व्यक्ति के अनुभवों से न जुड़ जाय। अतः छोटे बालकों को प्रत्यय अनुभवों की अधिक आवश्यकता है।

10.3.2 प्रत्यक्ष अनुभवों का स्थान ग्रहण करना

जो चीजें बहुत दूर हैं अथवा आसानी से प्राप्त नहीं की जा सकती उनका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकना नहीं होता। अधिकांश लोगों के लिये यह सरल नहीं है कि कश्मीर की यात्रा करें और वही जाकर देखें कि सेब कैसे पैदा किये जाते हैं तथा झेलम नदी पर नावों में पर्यटक कैसे रहते हैं। लेकिन कश्मीर की फिल्मी सैर तो सभी लोग बिना कठिनाई के कर सकते हैं। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने के मार्ग को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना हमारे लिये प्रायः असंभव है पर ब्रिटेन के प्रसिद्ध सूचना चित्र 'काक्वेस्ट ऑफ एवरेस्ट' से हमें उस मार्ग की स्पष्ट धारणा सरलता से हो सकती है जिसे तेनसिंह और उसके साथियों ने हिमालय के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के लिये अपनाया था।

10.3.3 अतीत की घटनावली का अध्ययन

अतीत की घटनावली के बारे में हम निस्संदेह उसी तरह पढ़ सकते हैं जिस तरह व्यापक और विवेकपूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप कुछ लोग शिवाजी, राजा राममोहन राय अथवा अब्राहम लिंकन के युग के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन आज कितने विद्यार्थियों से अतीत का ऐसा अध्ययन करने की आशा की जा सकती है। दृश्य-श्रव्य साधनों की सहायता से अतीत के पुनर्निर्माण की जैसी स्पष्ट अवधारणा संभव है वैसी पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त नहीं होगी। टीवी पर दिखाये गये 'चाणक्य' का ज्ञान कितना प्रभावी था?

10.3.4 परिवर्तन की सुखद अनुभूति

ये साधन बच्चों के लिये नयी चीज होते हैं। स्कूल के सामान्य कार्यक्रम पढ़ना, लिखना, सुनना आदि से हटा कर उन्हें एक परिवर्तन की सुखद अनुभूति देते हैं। साधनों की नवीनता उन विद्यार्थियों के विषय-वस्तु को आकर्षक बना देती है साथ ही कक्षा के वातावरण में परिवर्तन कर देती है। बच्चे उसी प्रकार मुक्त होकर हँसते, बातें करते और प्रश्न पूछते हैं जैसे कक्षा के बाहर अध्यापक का भाव अत्यधिक मैत्रीपूर्ण होता है। यह सुखद व स्वाभाविक वातावरण जानार्जन में बहुत सहायक होता है।

10.3.5 सरल व रुचिपूर्ण

दृश्य-श्रव्य साधन सरलता से समझ में आ जाते हैं। भाषण द्वारा किसी वस्तु का विवरण, वर्णन समझने के बदले बच्चों को इन साधनों में अधिक रुचि रहती है। भाषणों में रुचि तभी होती है जब उनमें समझने की क्षमता विकसित हो चुकी हो, भाषा का ज्ञान हो और सम्बन्धित विषय में वे पहले भी कुछ ज्ञान अर्जित कर चुके हों।

10.3.6 शाब्दिक व्याख्या की सहायक

शाब्दिकता की बीमारी की वे सर्वोत्तम उपलब्ध औषधि हैं कुछ स्थितियों में तो शाब्दिकता बिल्कुल असहाय एवं असमर्थ हो जाती है। उस अध्यापक की स्थिति की कल्पना कीजिये जो अपने विद्यार्थियों को शब्दों के सहारे एक ऐसे जानवर का रूप बोध कराने का उपक्रम कर रहा हो जिसे बच्चों ने कभी देखा ही न हो। वह जानवर की ऊँचाई उसके रंग, सिर, पैर, कान तथा उसकी अन्य विशेषताओं का वर्णन करता है, लेकिन एक भी बच्चा उस रूपाकार की ठीक-ठीक अवधारणा नहीं कर पाता, किन्तु यदि उसका चित्र भी दिखा दिया जाये तो वे उसकी कितनी सही अवधारणा कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में डिस्कवरी चैनल की प्रभाविता को हम समझ सकते हैं।

10.3.7 ज्ञान के स्थायित्व में वृद्धि

विस्मरण की मात्रा घटाने और प्राप्त ज्ञान का स्थायित्व बढ़ाने में दृश्य-श्रव्य साधनों से सहायता मिलती है। अनुभवों का आनन्दप्रद एवं सार्थक बनाने की जो क्षमता इन साधनों में है उसी से यह दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं। यदि किसी प्रकरण में हमें एक बार रुचि उत्पन्न हो जाये और उसे समझ पायें तो उसे हृदयांगम करने, उसे याद रखने की दिशा में हम बहुत आगे बढ़ जाते हैं।

एस.एल.प्रेसी के अनुसार, यदि अन्य सारी बातें समान हो तो जिस अनुपात में कोई विषय हमारे लिये सार्थक होगा उसी अनुपात में वह हमें स्मरण रहेगा।

10.4 शिक्षण सामग्री का चयन (Selection of Teaching Aids)

10.4.1 साधन अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए

किसी साधन की विशेषता अथवा उसके निर्माता की ख्याति जैसी भी हो, हमें इस बात को निश्चित रूप से जानना चाहिये कि बच्चे जिस प्रकरण को सीखने वाले हों उसके सीखने समझने में वह साधन कितना सार्थक है। हमें पूर्ण आश्वस्त हो जाना चाहिये कि कोई फिल्म, चित्र या मॉडल सम्बन्धित प्रकरण के सिखाने-समझाने में वस्तुतः पूर्ण प्रभावी साधन है। भूगोल विषय में नदियों के पाठ पढ़ते समय उससे संबन्धित नक्शा ही उपयुक्त रहेगा-राजनैतिक नक्शा बताने का कोई लाभ नहीं।

10.4.2 साधन द्वारा प्रकरण का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत होना चाहिए

हो सकता है कि साधन प्रकरण से ही सम्बन्धित हो, फिर भी उससे विद्यार्थियों को सही-सही विचार न मिले। कुछ श्रव्य-दृश्य साधनों में संबन्धित विषय के सभी पहलुओं का विवेचन मिल सकता है परं पुराने हो जाने के कारण वे शिक्षण क्षेत्र में अधिक उपयोगी नहीं हो सकते। देश की स्वाधीनता के पहले लायलपुर फूट प्रॉडक्ट्स लेबोरेटरी द्वारा फल संरक्षण के सम्बन्ध में एक फिल्म तैयार की गई थी। उसे देखना-दिखाना आज कौन पसन्द करेगा। जब फिल्म बनी थी तब से आज तक फल संरक्षण की तकनीक और उत्पादन के उपकरणों में काफी परिवर्तन हो चुके हैं। सन् 1948 में दिल्ली के सम्बन्ध में बनी फिल्म कक्षाओं में प्रयोग के लिए आज प्रायः निरर्थक हो गई है। अध्ययन के कुछ क्षेत्रों में परिवर्तन बहुत तेजी से होते हैं और इसलिये उनके सम्बन्ध में साधनों का चुनाव करने में सावधानी से काम लेना चाहिये।

10.4.3 साधन विद्यार्थियों के अनुभव और उनकी समझ के अनुकूल होने चाहिए

साधनों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वे बच्चों के अनुभव व उनकी समझ के अनुकूल हों। बच्चों के औसत स्तर के अनुकूल न होने पर वे कभी भी सहायक न हो सकेंगे। हो सकता है कोई फ़िल्म बहुत अच्छी हो, किन्तु छोटी कक्षा के लिए अत्यधिक कठिन हो सकती है। ब्रे की फ़िल्म 'टाइडस एण्ड दी मून' भूगोल के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिये बहुत ही साधारण हो सकती है। हाई स्कूल के छात्रों के लिए बहुत ही शिक्षाप्रद है, किन्तु प्राथमिक स्कूल के लिये अनुपयुक्त। डेल ने कहा है 'वस्तुतः प्रश्न यह नहीं है कि कोई विशिष्ट सामग्री प्रयोग में लाई जाने पर पर्याप्त अथवा उपयुक्त सिद्ध होती है या नहीं, बल्कि यह कि एक सुनियोजित अध्ययन के अंग के रूप में वह उपयोगी है या नहीं।

10.4.4 प्रयुक्त साधन विद्यार्थी के परिवेश के लिये अपरिचित नहीं होने चाहिए

उदाहरण के लिए कोई अध्यापक सफाई सम्बन्धी पाठ पढ़ाने के लिये एक अत्युत्तम विदेशी फ़िल्म चुनता है जिसमें विषय का पूरा-पूरा दिग्दर्शन कराया गया है। निरापद जल की व्यवस्था की आवश्यकता, भोजन व दूध की सुरक्षा तथा कूड़ा-करकट को फेंकने और लोगों तथा स्थानों को स्वच्छ रखने की आवश्यकता आदि के बारे में वांछनीय बातें स्पष्ट रूप से दिखाई गई हैं, किन्तु यह होते हुए भी हो सकता है कि पाठ बहुत सफल न हो, क्योंकि फ़िल्म में ऐसी दृश्यावली है जो कि भारतीय परिवेश के लिये अपरिचित है।

10.4.5 साधन अच्छी हाल में होने चाहिए

दृश्य-श्रव्य साधनों के चयन में अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है उनकी वस्तुगत स्थिति। फ़िल्में, चित्र, चार्ट, नक्शे, मॉडल आदि जब तक नये होते हैं तब तक उनकी स्थिति संतोषजनक होती है, किन्तु पुराने पड़ते ही उनकी हालत इतनी खराब हो जाती है कि उनका प्रयोग करने में जो समय व श्रम लगता है वह व्यर्थ जाता है। अब वही वह साधन स्वयं बहुत मूल्यवान हो।

10.4.6 अत्यधिक साधनों का अनावश्यक प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए

इससे स्थिति पूरे समय सहायक सामग्री उठाने व रखने की सी हो जाती है व छात्र एक-दूसरे साधनों के उद्देश्यों का सम्बन्धित न कर पाने पर आधा-अधूरा ज्ञान हासिल करता है अतः यह अनुपयुक्त है।

10.4.7 साधन सुन्दर व आकर्षक होना चाहिये जिससे सुरुचि विकसित होती है

इससे अवधान केन्द्रित होने में सुगमता रहती है और अधिगम भी सरलता से हो पाता है

स्व-मूल्यांकन-2

- शिक्षण सामग्री किसे कहते हैं?
- किसी भी कक्षा में प्रयोग करने हेतु आप शिक्षण सामग्री का चयन कैसे करेंगे?
- शिक्षण में सहायक सामग्री का क्या महत्व है?

10.5 रेखा-चित्र एवं चार्ट/पोस्टर आदि का निर्माण

छात्रों को किसी भी स्थिति के तुलनात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करने के लिए रेखाचित्र उपयोगी उपकरण होते हैं। विभिन्न प्रकार के रेखाचित्र निर्मित करने के लिए निम्न संबन्धित सुझावों को ध्यान रखना होगा :-

10.5.1 दण्ड-चित्र (Bar-Graph)

1. दण्ड क्षितिजीय अथवा लम्बवत हो सकते हैं।
2. दण्ड का आकार, लम्बाई एवं रंग विभिन्न मूल्यों को दर्शाने के लिए सम्मिलित करें।
3. सर्वप्रथम ऑकड़ों को देखते हुई कच्चा ग्राफ बनाएं जिससे पैमाना एवं संकेत निर्धारण में सहायता मिलें।
4. कक्षा के आकार को ध्यान में रखते हुए कागज/ड्राइंग शीट/लपेटफलक पर चित्र बनाएं।
5. ग्राफ पेन्सिल व स्केल की सहायता से उपयुक्त पैमाना ले कर पूर्ण रूप से शुद्ध (Accurate) बनाएं।
6. शब्द रेखा के बाई ओर पर्याप्त स्थान छोड़े जिससे आवश्यक लेख लिखा जा सके।
7. इसका उपयुक्त शीर्षक दिया जाये।
8. तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट करने के दिए दण्डों में विभिन्न आकृति/रंग के संकेत चिन्ह अलग से दें।
9. दिये गये संकेतों के अनुसार दण्डों को रंगीन अथवा चित्रित करें।
10. चित्रात्मक ग्राफ (Pictorial Graph) में यह दण्ड चित्रों के द्वारा बनाएं जायेंगे। जैसे- पुरुष व महिला का चित्र, तेल के पीपे/डिब्बे, धान की बोरियाँ/बालियाँ आदि।

10.5.2 वृत्त-ग्राफ (Pie-Graph)

एकत्रित ऑकड़ों के वर्गीकरण/विभाजन को प्रदर्शित करने के लिए वृत्त-चित्र बनाएं जाते हैं। इसके लिए -

1. वृत्त चित्र बनाने के पूर्व उपलब्ध ऑकड़ों से प्रतिशत का आकलन कर लें।
2. कक्षा के आकार के लिए उपयुक्त वृत्त का निर्माण करें।
3. प्राप्त ऑकड़ों के प्रतिशत से डिग्री का आकलन करें।
4. मध्य बिन्दु से एक त्रिज्या को चिन्हित करें।
5. चिन्हित त्रिज्या से आंकलित डिग्री के अनुसार एक-एक कर कोणों का निर्माण करते जायें।
6. समस्त विभागों को दिखाने के लिए वृत्त में कोणों का निर्माण हो जाने पर उसमें विभिन्न रंगों/संकेत चिह्नों से पूरित करें।
7. प्रत्येक खण्ड में सम्बन्धित प्रतिशत लिखें।
8. प्रदर्शित समंकों से सम्बन्धित चित्र का शीर्षक दें।

10.5.3 रेखा-चित्र (Line-Graph)

किसी भी आर्थिक गतिविधि की प्रवृत्ति (Trend) दिखाने के लिए रेखा-चित्र का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए -

1. उपयुक्त आकार का ग्राफ बनाने के लिए पैमाना निर्धारित करें।
2. शुद्धता (Accuracy) के लिए ग्राफ स्केल एवं तीखी/बारीक पेन्सिल की सहायता से ही बनाएं।
3. आधार रेखा (Base Line) एवं शब्द रेखा पर पैमाने अनुसार संख्या लिखें।
4. दोनों रेखाओं पर प्रदर्शन की जाने वाली विषय-वस्तु के शीर्षक लिखें।
5. दोनों रेखाओं के संयुक्त बिन्दु पर संकेत लगाते हुए बिन्दुओं को जोड़ते जायें।
6. एक से अधिक रेखा होने पर भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग करें।

10.6 शिक्षण सामग्री के प्रकार/वर्गीकरण

इन्द्रियों के प्रयोग पर श्रव्य-दृश्य सामग्री को निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

- (अ) अब सामग्री ।
- (ब) दृश्य सामग्री ।
- (स) श्रव्य-दृश्य सामग्री ।

श्रव्य-दृश्य सामग्री के विभाजन को चार्ट रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है -

श्रव्य-दृश्य सामग्री

श्रव्य सामग्री	दृश्य सामग्री	श्रव्य-दृश्य सामग्री
1. रेडियो	1. वास्तविक वस्तुएँ	1. चलचित्र
2. ग्रामोफोन तथा लिंगवाफोन	2. नमूने	2. समाचार सम्बन्धी फ़िल्म
3. टेप-रिकॉर्डर	3. चित्र	3. दूरदर्शन
	4. मानचित्र	4. विडियो-टेप
	5. रेखाचित्र तथा खाके	5. रिकॉर्ड ध्वनि से युक्त मुद्रित सामग्री
	8. ग्राफ	6. ड्रामा
	7. चार्ट	
	8. बुलेटिन बोर्ड	
	9. फ्लेश बोर्ड	
	10. प्लेनलकार्ड	
	11. मेगेनेटिक बोर्ड	
	12. पोस्टर	
	13. छात्राचित्र	
	14. मूक फ़िल्म	
	15. स्लाइड	
	16. जादू की लालटेन	
	17. चित्र विस्तारक यन्त्र	

नोट : इस प्रकरण में दृश्य सामग्री का विस्तार से वर्णन किया जा रहा है । शेष का वर्णन 'संचार माध्यम' (इकाई-6) में किया गया हैं ।

10.6.1 दृश्य सामग्री (Visual Aids)

(1) विभिन्न प्रकार के बोर्ड

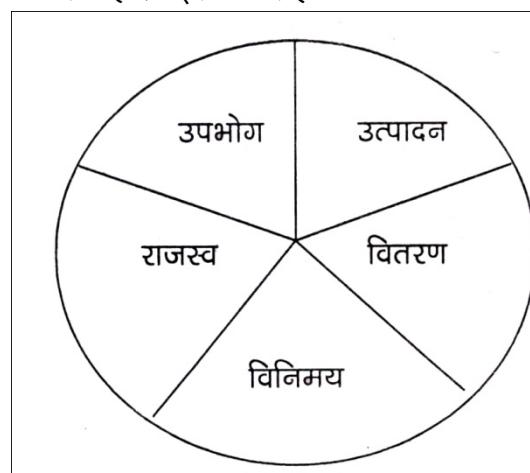
टग बोर्ड, बुलेटिन बोर्ड, प्लेनल ग्राफ बोर्ड, खादी ग्राफ बोर्ड, स्टील बोर्ड आदि सभी का उद्देश्य चित्रों की कटिंग को अपनी समतल ऊपरी सतह पर चिपका कर प्रदर्शन करना है । इससे छात्रों को सीखने में सहायता मिलती है । टेक बोर्ड या बुलेटिन बोर्ड का प्रयोग व्यक्तिगत समाचार, विद्यालय व बाहर के समाचार, विज्ञप्ति, चार्ट, पोस्टरों, चित्रों और सूचनाओं आदि के प्रदर्शन के लिये होता है स्कूलों में शिक्षण कार्य के लिये यह सरल व प्रमुख साधन माना जाता है ।

यह सबसे कम खर्च वाला है। अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती है। वर्तनी को समझने में यह बच्चों की बड़ी सहायता करता है। किसी पाठ के दौरान श्याम पट्ट पर बनाया गया कोई नक्शा चित्र समूची कक्षा का ध्यान पाठ की ओर आकृष्ट कर सकता है। कुछ रेखाओं के सहारे कोई नक्शा या चित्र तत्काल प्रस्तुत कर सकता है। उसके उपयोग के लिये न किसी तकनीकी जान की आवश्यकता है न उच्च कोटि के कलात्मक कौशल की। कोई अतिरिक्त उपकरण पास रखना भी जरूरी नहीं। समय भी नष्ट नहीं होता। वर्तमान समय में काले के स्थान पर हरे व पीले बोर्ड भी प्रयुक्त किये जाते हैं। बुलेटिन बोर्ड की किसी भी विषय पर चित्र श्रृंखला लगाने से बालक अच्छी तरह से समझ सकता है। उदाहरण के लिये प्राचीन काल में डाक ले जाने के साधन व वर्तमान समय में डाक लाने ले जाने के साधनों का चित्र प्रदर्शन किया जा सकता है। इस प्रकार भी छात्रों के जान में वृद्धि सरलता से की जा सकती है। इसी प्रकार छात्रों के लिये महत्वपूर्ण पुस्तकों के आवरण लगाये जा सकते हैं।

(2) चित्र, आकृतियाँ चार्ट तथा ग्राफ -

विशेष रूप से छोटी कक्षाओं में पढ़ाते समय चित्र महत्वपूर्ण सहायक सामग्री का काम दे सकते हैं। जैसे इतिहास पढ़ाते समय महान पुर्खों, विशिष्ट स्थानों, भक्तों, नगरों, उद्योगों, सरकारी योजनाओं अथवा ऐतिहासिक दृश्यों के चित्र से जहाँ रोचकता बढ़ती है वही सरलता भी आ जाती है। इसी प्रकार भूगोल पढ़ाते समय, फसलों, भूमि निर्माण उद्योगों, बाँधों, योजनाओं आदि के चित्र दिखाये जा सकते हैं। सावधानीपूर्वक चुनकर ठीक से दर्शाये गये चित्र प्रभावपूर्ण शिक्षण हेतु बड़े रोचक, प्रेरक तथा उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

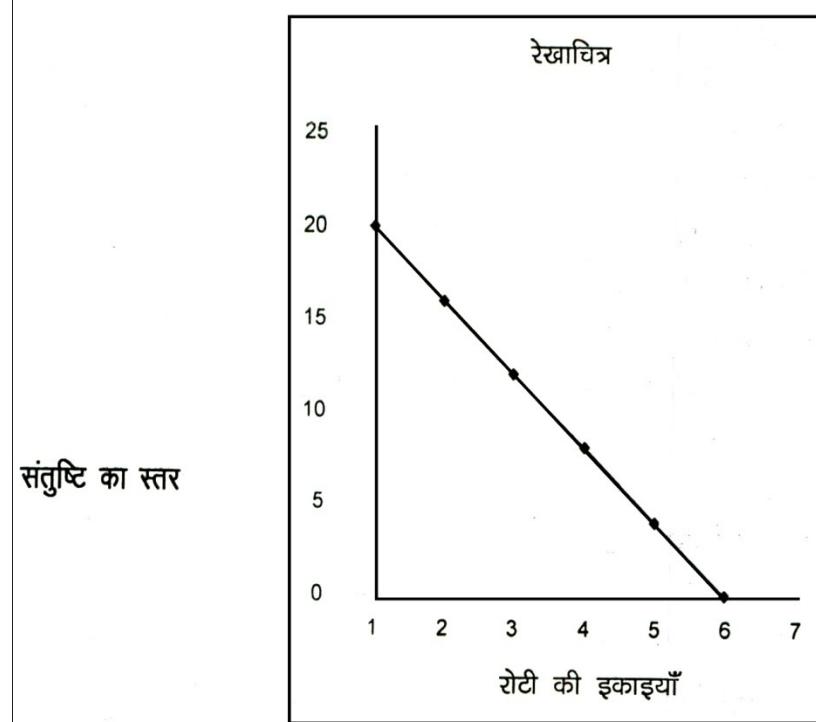
एक दृश्य सामग्री का अन्य वर्ग भी है। इसमें चार्ट, ग्राफ रेखाचित्र आकृतियाँ, विज्ञापन तथा इसी प्रकार की अन्य सांकेतिक सामग्री आती है। ये दृष्टि को प्रभावित करते हैं तथा इनसे करके सीखने के सिद्धान्त की पूर्ति होती है। ये स्वयं में पूर्ण ऐसी सहायक सामग्रियाँ हैं, जो वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करने के स्थान पर उनकी व्याख्या करती हैं। मान लो, आपके अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र को स्पष्ट करना है तो इस प्रकार होगा -



ग्राफ

ग्राफ की सहायता से हम दो विचारों की तुलना द्वारा विकास आदि को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं इन्हें शीघ्रता से पढ़ा व समझा जा सकता है। ग्राफ कई प्रकार के होते हैं। लम्बे ग्राफ, चित्र, वृत, ग्राफ, लाइन ग्राफ आदि।

ग्राफ में शुद्धि सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये । शीर्षक भी स्पष्ट रूप से लिखा हुआ होना चाहिए । संकेत स्पष्ट होने चाहिये ।



नक्शे-

चित्र व ग्राफ के अतिरिक्त नक्शे से अनेक प्रकार के ज्ञान की उपलब्धि होती है । इसमें स्थित भौतिक विशेषतायें, प्राकृतिक विशेषतायें, प्राकृतिक साधन, आर्थिक उत्पादन, राजनैतिक ऑकड़े तथा जलवायु सम्बन्धी बातें आदि आती हैं । कक्षा में इसका प्रयोग करने के अतिरिक्त विद्यार्थियों को भी नक्शे बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये । इस प्रकार के चनात्मक कार्य से बालकों में रुचि भी उत्पन्न होगी तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी । प्रकाशित मानचित्र की अपेक्षा मानचित्र का खाका अधिक उपयोगी ज्ञान पड़ता है क्योंकि खाका अनावश्यक चीजों से मुक्त रहता है । अतः चर्चागत प्रकरण पर पर्याप्त जोर दिया जा सकता है ।

ग्लोब (भूगोलक) -

कुछ प्रयोजनों के लिये मानचित्रों की अपेक्षा भूगोलक अधिक उपयुक्त रहता है इसकी सहायता से हम संसार की भौगोलिक एकता, उसके एक भाग का दूसरे भाग से सम्बन्ध, दिशा, स्थिति देख और समझ सकते हैं । इससे परिवर्तन सरलता से समझाया जा सकता है ।

स्कूलों में काम आने वाले भूगोलक तीन प्रकार के होते हैं - प्राइमरी कक्षा में राजनैतिक भूगोलक का उपयोग किया जाता है । इसमें न्यूनतम विवरण दिये रहते हैं । ऊंची कक्षाओं में भौतिक, राजनैतिक भूगोलकों का उपयोग किया जाता है । इसमें रंग की सहायता से उच्चावचन दिखाये जाते हैं । तीसरी प्रकार का स्लेट पृष्ठीय भूगोलक सभी कक्षाओं के लिये उपयोगी होता है क्योंकि विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार उस पर मानचित्र खींचा जा सकता है ।

मॉडल (अंशानुकृतियाँ)

किसी पदार्थ का मॉडल उसकी एक अभिज्ञेय त्रिमितीय अनुकृति होती है वह सम्बन्धित पदार्थ के समान आकार का अथवा उससे छोटा या बड़ा हो सकता है। मॉडल सामान्यतः अधिक मनोरंजक और शिक्षाप्रद होता है। मॉडलों का उपयोग विभिन्न शैक्षणिक स्थितियों में किया जा सकता है। कुछ यथार्थ वस्तुएँ अतीत काल की या भविष्य की हो सकती हैं अथवा हमसे बहुत दूर की हो सकती कलिपय यथार्थ एवं जीवित पदार्थों की ऐसी कृतियाँ या प्रक्रियाएँ होती हैं कि उनका प्रत्यक्ष ज्ञान उपलब्ध नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थितियों में हम 'उपलब्ध यथार्थ को नये ढंग से व्यवस्थित करते हैं, नया स्वरूप देते हैं व सम्पादन करते हैं। जैसे रातरकेला, भिलाई व दुर्गापुर की इस्पात की प्रयोजनायें मॉडलों की सहायता से छात्रों को सरलतापूर्वक दिखायी जा सकती हैं। मानव शरीर के अंगों जैसे आखें, कान, नाक आदि का अध्ययन केवल उन पर नजर डाल कर नहीं किया जा सकता। ऐसी चीजों के सम्पर्क अध्ययन के लिये भीतरी भागों को दिखाने वाले मॉडलों का सहारा लेना पड़ेगा।

10.6.2 श्रव्य साधन (Audio Aids)

श्रव्य साधनों में शब्दों का संयोग यन्त्रों से किया जाता है। वैज्ञानिक आविष्कारों के परिणामस्वरूप ऐसे यन्त्रों का प्रयोग सम्भव हो सका है जिनके द्वारा शब्दों को उसी रूप में, उसी ध्वनि में, उसी ढंग से उच्चारित किया जाता है जिस रूप में उसकी वक्ता ने उन्हें मुखरित किया है। श्रव्य साधन कर्णन्दिय के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हैं। कर्णन्दियों द्वारा ग्रहण की हुई ध्वनि सीधी मस्तिष्क की चेतनाओं पर प्रभाव डालती है और यदि ध्वनि उद्देश्यपूर्ण विधि से प्रसारित की जाये तो निश्चय ही सीखने की प्रक्रिया में सहायता, सुगमता व सरलता प्राप्त होती है। इसमें टेप रिकॉर्डर, रेडियो आदि आते हैं।

10.6.3 दृश्य-श्रव्य साधन (Audio-Visual Aids)

शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री का महत्व एवं उपयोग विश्व के सभी शिक्षा शास्त्रियों द्वारा आवश्यक माना गया है। ये सर्वाधिक प्रभावी शिक्षण साधन होते हैं। इनमें टी.वी., चल-चित्र आदि आते हैं। श्रव्य एवं दृश्य-श्रव्य साधनों का विस्तृत वर्णन 'संचार-माध्यम' इकाई में दिया गया है।

10.7 शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन

कक्षा में प्रयुक्त शिक्षक सामग्री के मूल्यांकन के लिए निम्न पैमाने का प्रयोग किया जा सकता है।

क्र.स.	मूल्यांकन बिन्दु पर उपयुक्तता	हॉ/नहीं	यदि नहीं तो सुझाव
1.	प्रकरण के लक्ष्य/उद्देश्य।		
2.	विद्यार्थियों के उम्र, ग्राह्यता, क्षेत्र, सामाजिक वातावरण एवं अन्य कारणों के सन्दर्भ में।		
3.	समूह का आकार।		
4.	शिक्षण द्वारा सामग्री का उपयोग		
5.	समग्री की स्पष्टता एवं सुग्राह्यता।		
6.	उपयुक्त समय का प्रयोग।		
7.	ज्ञान के प्रति अभिव्यक्ति निर्माण।		
8.	छात्रों की अधिगम प्रभाविता में वृद्धि।		

9. छात्रों की अधिगम में सक्रियता।
10. छात्रों में मौजूद ज्ञान कमी की पूर्ति

स्व-मूल्यांकन-2

- विभिन्न प्रकार के रेखा-चित्रों का निर्माण आप कैसे करेंगे?
- शिक्षण सामग्री का वर्गीकरण का क्या आधार है ?

10.7 सार-संक्षेप

जो सामग्री शिक्षण को प्रभावी बनाएँ - शिक्षण सामग्री कही जाती है। प्रत्यक्ष अनुभवों का आभास करवाने, जानिंद्रियों से जनित अनुभव करवाने, अतीत की घटनावली को आकर्षक तरीके से समझने, अधिगम को रुचिकर बनाने, ज्ञान के स्थायित्व को बढ़ाने के लिए शिक्षण-सामग्री महत्वपूर्ण है।

शिक्षण सामग्री का चयन करते समय हम देखें कि वह प्रकरण से संबन्धित हो, प्रकरण को प्रभावी बनाकर उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो, छात्रों के बुद्धि/ज्ञान का स्तर एवं वातावरण को पोषित करे। सुन्दर एवं सही हो। हाथ से निर्मित किये जाने वाले महत्वपूर्ण साधनों में वृत्त एवं रेखाचित्र का निर्माण में विशिष्ट लक्षणों का ध्यान रखें। जानेन्द्रियों के प्रयोग के अनुसार श्रव्य-दृश्य सामग्री को तीन प्रकार से बांटा जा सकता है- श्रव्य सामग्री दृश्य सामग्री एवं श्रव्य-दृश्य सामग्री। उनका विस्तार पाठ में दिया गया

10.8 इकाई का मूल्यांकन :

1. अर्थशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री का प्रयोग करने की क्या आवश्यकता है?
Why do we need to use teaching aids in teaching economics?
2. आप किसी प्रकरण के लिए सहायक सामग्री का चयन कैसे करेंगे? उदाहरण दीजिये।
How would you select Teaching Aids to teach one topic in Economics? Exemplify it.
3. उदाहरण ले कर एक वृत्त चित्र एवं दण्ड चित्र की रचना करें।
Construct a Pie and Bar Graph based on one example.
4. विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का वर्णन करें।
Explain different Type of Teaching Aids.
5. कक्षा में प्रयुक्त शिक्षण सामग्री का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे?
How would you evaluate Teaching Aids used in classroom.

10.10 सन्दर्भ पुस्तकें

1. Assistant Masters Association, The Teaching of Secondary School Economics, London : Cambridge University Press, 1974

2. Callahan, J.F. and Clark, L.H. Teaching in the Middle and Secondary Schools, Planning for Competence. New York : Macmillan Publishing Co. Inc-1982
3. Clark L.H. and Start I.S., Secondary School Teaching Methods, London : Macmillan, 1967
4. Lee, N. (Ed.), Teaching Economics London : Heinemann Educational Books, 1975
5. Mafaff. M.R. Social Studies Instrucion, New York : Prentice Hall, 1965
6. Weslay, E.B., Teaching Social Studies in High School, Booton, D.C. Health & Co. 1950
7. Hass & Packer, 1964, Preparation and Use of Audio-Visual Aids, New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
8. Nagar, Divya, 1999 अर्थशास्त्र शिक्षण, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन ।
9. Bining, A.H. and Bining D.H., Teaching the Social Studies in Secondary Schools, New York : MC Graw Itli Book Co. 1952

इकाई-11

अर्थशास्त्र का शिक्षक

(Economics Teacher)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

-
- | | |
|--------|--|
| 11.1 | इकाई के उद्देश्य |
| 11.2 | अर्थशास्त्र शिक्षक की भूमिका |
| 11.3 | अर्थशास्त्र शिक्षक के कार्य |
| 11.4 | अर्थशास्त्र शिक्षक की योग्यताएँ |
| 11.5 | शिक्षक की योग्यता में वृद्धि के उपाय |
| 11.6 | अर्थशास्त्र शिक्षक की समस्याएं एवं समाधान |
| 11.6.1 | अर्थशास्त्र विषय का छिला जान |
| 11.6.2 | नवीनतम जान का अभाव |
| 11.6.3 | स्थानीय जान का प्रयोग न करना |
| 11.6.4 | छात्रों के जीवन से न जोड़ना |
| 11.6.5 | सहायक सामग्री का उपयोग न करना, |
| 11.6.6 | शिक्षण सामग्री एवं उपकरणों की अनुपलब्धता |
| 11.6.7 | सूचना एवं संचारण सम्बन्धी तकनीकी जान का अभाव |
| 11.6.8 | अत्यधिक एवं भारी पाठ्यक्रम |
| 11.6.9 | अर्थशास्त्र की शब्दावली का प्रयोग न करना |
| 11.7 | सार-संक्षेप |
-

11.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

-
- शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।
 - अर्थशास्त्र शिक्षक के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।
 - अर्थशास्त्र शिक्षक की योग्यताएं एवं उनमें वृद्धि के उपाय बता सकेंगे।
 - अर्थशास्त्र शिक्षक की समस्याएं एवं समाधान के बारे में जान सकेंगे।
-

11.2 अर्थशास्त्र शिक्षक की भूमिका

जैसा कि कोठारी कमीशन रिपोर्ट (1986) में कहा गया है कि "Of all the different factors which influence the quality of education and its contribution to national development, the quality, competence and character of teacher are undoubtedly the most significant" डॉ. राधाकृष्णन भी समाज में शिक्षक की भूमिका को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे। भारत के भाग्य का निर्माता शिक्षक ही होता है। प्रत्येक विषय के शिक्षण के साथ वह नींव के एक-एक पत्थर को संजोता है जिस पर भावी भवन खड़ा होना है। अर्थशास्त्र जिसे कि नीरस विषय माना जाता है उसे पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षक

की आवश्यकता होती है तभी यह विषय सरस एवं व्यवहारिक बन पड़ता है। अतः शिक्षक की शिक्षा जगत में अहम भूमिका रहती है।

शिक्षा दर्शन ने शिक्षा हेतु आधार प्रदान किये हैं। शिक्षा मनोविज्ञान ने सीखने और सिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के अधिनियम एवं सिद्धान्त प्रदान किये हैं। शिक्षा नीति ने उद्देश्य व क्रियान्विति दी है। शैक्षिक तकनीक ने विभिन्न प्रकार की व्यूह रचनाएं दी हैं। सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास ने जान का विस्फोट कर नई विषय-वस्तु दी है। किन्तु ये स्वयं में निष्क्रिय हैं, मृत हैं। इसमें प्राणों का संचार करने हेतु शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन सभी को व्यावहारिक रूप देने का दायित्व शिक्षक का है। शिक्षक जितना कुशल होगा उसकी भूमिका उतनी ही सशक्त होगी।

अर्थशास्त्र का शिक्षक अपने शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें एक ओर तो नितान्त व्यावहारिक पक्ष है जो रात-दिन छात्र देखता है। दूसरी ओर उससे सम्बन्धित सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि है जो जटिल से जटिल सम्प्रत्यय लिये हुए हैं। इसमें ऑकड़े समाविष्ट हैं। इनकी चित्रात्मक व्याख्या शिक्षा की अभिव्यक्ति कौशल पर निर्भर करती है। अतः इस विषय के शिक्षण की भूमिका अत्यधिक चुनौतीपूर्ण होती है। NPE, 1986 में शिक्षक की निम्नलिखित भूमिकाओं पर बल दिया गया है-

- शिक्षण और निर्देशन करना।
- विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना।
- सामाजिक और विस्तार सेवाओं में भाग लेना एवं उन विभिन्न सेवाओं और क्रियाओं के प्रबन्ध में भाग लेना, जिन्हें कि शिक्षण संस्थाएं अपने कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए करती हैं।

डेलोर्स (Delors) कमेटी 1996 की रिपोर्ट Education for the Twenty First Century के पृष्ठ 141 पर कहा गया है- "The Importance of the role of the teacher as an agent of change, promoting, understanding and guidance has never been more obvious than today."

सत्य है कि परिवर्तन के ऐजेण्ट के रूप में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। भारत के ही सन्दर्भ में लें तो हमारे संविधान के आर्टिकल 51-। के तहत हमें दस मूल कर्तव्यों का निर्वाह करने को कहा गया है। इनमें से कितने शिक्षक छात्रों को इन मूल कर्तव्यों की जानकारी दे रहे हैं। वैसे तो दसों कर्तव्यों के प्रति छात्रों को जागरूक करने की जिम्मेदारी हर शिक्षक की है किन्तु अर्थशास्त्र का शिक्षक अपने शिक्षण में निम्न चार तो ले ही सकता है जो कि व्यक्ति के आर्थिक व्यवहार से सीधे संबन्धित हैं-

Article 51-A में से चयनित मूल कर्तव्य-

1. हमारी मिश्रित संस्कृति की समृद्ध परम्पराओं को महत्व देना एवं संरक्षण करना।
2. जंगल, नदी, झील, जंगली जीवन आदि युक्त प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करना तथा समस्त जीवों के प्रति दया भाव रखना।
3. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्यों को सर्वश्रेष्ठ करने का प्रयास करना जिससे कि राष्ट्र सतत उच्च स्तरीय प्रयास एवं उपलब्धि हेतु ऊपर उठ सके।

शिक्षक की भूमिका में अगली पीढ़ी को मूल कर्तव्यों के प्रति जाग्रत करना महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि एकांगी अधिकारों की बात कर उपभोक्ता को जाग्रत मात्र कर देना अर्थशास्त्र के शिक्षक की आधी-अधूरी भूमिका होगी । उसे तो छात्रों को एक उपभोक्ता, उत्पादक, विनिमयकर्ता के प्रति भी सचेत करना होगा जिससे देश आर्थिक दृष्टि से उपलब्धियों में उच्च स्तर प्राप्त करें ।

N.C.E.R.T के प्रलेख Teacher Education Curriculum - A Frame work के आधार पर शिक्षक अपनी सफलता हेतु निम्नलिखित भूमिकायें कर सकता है

1. गँधीजी द्वारा बताए गये शिक्षा के मूल्यों जैसे अहिंसा, प्रेम, आत्म अनुशासन, आत्म विश्वास, श्रम की महत्ता आदि का विकास करने का प्रयास करें ।
2. सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में वह एक एजेण्ट का कार्य करें ।
3. समाज का निर्देशन करें ।
4. विद्यालय कार्य को सामाजिक जीवन एवं संसाधनों से समन्वित कर विद्यालय एवं समाज के बीच समन्वयक की भूमिका करें ।
5. पर्यावरणीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक साधनों का प्रयोग, संरक्षण व संवर्धन करें ।
6. बालकों को निर्देशन एवं परामर्श दे ।
7. एक प्रजातान्त्रिक, धर्म निरपेक्ष एवं समाजवादी समाज के लक्ष्यों की प्राप्ति में विद्यालय की भूमिका को समझे ।
8. विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में रुचि ले ।
9. अपने शिक्षण की क्षमताओं को विकसित करे ।

नई एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका 1985 में शिक्षक की भूमिका को दो मुख्य भागों में विभाजित किया है-

1. शाला में शिक्षक की भूमिका:

- शिक्षण
- छात्र व्यवहार का नियन्त्रक
- प्रतिस्थापित अभिभावक
- छात्रों का विश्वास
- उपलब्धि का निर्णायक
- पाठ्यचर्या का संगठक
- अधिकारी
- ज्ञानी एवं शोध विशेषज्ञ
- शिक्षक संगठनों का सदस्य

2. समुदाय में शिक्षक की भूमिका :

- सामाजिक सेवक
- मध्यम वर्गीय नैतिकता का प्रतिनिधि
- ज्ञान के किसी क्षेत्र या कौशल में विशेषज्ञ
- ज्ञान के किसी क्षेत्र या कौशल में विशेषज्ञ
- समुदायिक नेता
- सामाजिक परिवर्तन का एजेण्ट

शिक्षक के राष्ट्रीय आयोग-II (1983-85) ने शिक्षक की निम्नलिखित भूमिका तय की है

- (1) परिवर्तन का ऐजेण्ट
- (2) अपने विषय के नवीनतम ज्ञान का ज्ञाता
- (3) नवीनतम शिक्षण विधियों एवं तकनीक का ज्ञान
- (4) सशजनात्मक भूमिका
- (5) समस्त क्षेत्रों में जानने की अभिवृत्ति
- (6) समुदाय के साथ सहयोग
- (7) विषय सम्बन्धी शोध किया
- (8) आवश्यक प्रबन्धकीय परिवर्तन का प्रणेता
- (9) सरकारी नीतियों एवं योजनाओं में सहभागिता

11.3 अर्थशास्त्र शिक्षक के कार्य (Functions of Economics Teacher)

1. अर्थशास्त्र विषय का शिक्षण
2. कक्षा-कक्ष शिक्षण, प्रायोजनायें शैक्षिक भ्रमण व अन्य क्रियाओं की योजना बनाना।
3. उक्त समस्त क्रियाओं का सूक्ष्म स्तरीय नियोजन कर संगठन करना।
4. छात्रों की उपस्थिति, दैनिक कार्य, गृह कार्य, कार्य की आदतें, व्यावहार आदि का सतत पर्यवेक्षण करते रहना।
5. पर्यवेक्षण के आधार पर आवश्यक निर्देशन देना।
6. छात्रों के व्यवहार, कार्य एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन करना।
7. वर्ष पर्यन्त की क्रियाओं का लेखा-जोखा रखना। प्रतिवेदन तैयार करना।

शिक्षक का सामान्य दृष्टिकोण (General Outlook)

किसी भी देश की भावी पीढ़ी का विकास शिक्षक के हाथ में होता है। विशेष रूप से अर्थशास्त्र का शिक्षक जिसकी विषय सामग्री आर्थिक कुशलता को समृद्ध करेगी - अत्यधिक महत्व रखता है। यदि वह निम्न कोटि का शिक्षण करेगा तो परिणाम उसके अनुरूप होंगे तथा राष्ट्र पर भी वैसा ही प्रभाव होगा। यदि हम चाहते हैं कि हमारी अगली पीढ़ी अपनी जटिल परिस्थितियों को समझा कर उसमें न केवल सुसमायोजन कर सके वरन् अपना श्रेष्ठ योगदान भी दे सके तो हमारे अर्थशास्त्र के शिक्षकों को दृष्टिकोण व्यापक करने की आवश्यकता होगी।

अर्थशास्त्र के शिक्षक का दृष्टिकोण इतना व्यापक होना चाहिए कि भूत, वर्तमान एवं आवी आर्थिक प्रवृत्तियों को समग्र रूप में समझा सके। अतः उसे अपने सम्पूर्ण जीवन में व्यापक दृष्टिकोण रखना होगा। उसे अपना शिक्षण व्यवसाय सेवा एवं समर्पण भाव से लेना होगा। जिससे वह अपने कार्य को आर्थिक प्रतिफल से न तोल कर अपनी जिम्मेदारियों एवं उद्देश्य पूर्ति के सन्दर्भ में देखें। उसे अपने कार्य द्वारा शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति करनी है। इस प्रकार के व्यापक दृष्टिकोण को लेकर ही अर्थशास्त्र का शिक्षक अपनी भूमिका का निर्वाह भली-भाँति कर सकता है।

स्व-मूल्यांकन-1

- 1 National Policy on Education 1986 में शिक्षक की किन भूमिकाओं पर बल दिया गया हैं?
- 2 अर्थशास्त्र शिक्षक के प्रमुख कार्य क्या हैं?

11.4 अर्थशास्त्र शिक्षक की योग्यताएँ (Qualities of Economics Teacher)

इस विषय पर अनेक शोध की जा चुकी हैं कि एक शिक्षक में क्या योग्यताएँ होनी चाहिए। वास्तव में शिक्षक में उन सभी योग्यताओं का होना अनिवार्य माना है जो एक दैवतुल्य पुरुष में होनी चाहिए। हम इसे सीमित कर अर्थशास्त्र के शिक्षक के लिए आवश्यक योग्यताओं की चर्चा करेंगे -

1. व्यावसायिक योग्यताएँ (Professional Qualities)

- अर्थशास्त्र विषय का ज्ञाता
- आर्थिक समस्याओं का ज्ञान
- सम-सामयिक साहित्य का ज्ञान
- मनोविज्ञान का ज्ञान
- शिक्षण कौशल में पारंगत
- सम्मेलनों में सहभागिता
- आर्थिक विषयों पर लेखन
- नवीनतम व्यावसायिक साहित्य की जानकारी
- कार्यगोष्ठियों का आयोजन
- शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन
- क्रियात्मक शोध करना
- सहायक सामग्री का प्रयोग

2. व्यक्तिगत योग्यताएँ (Personal Qualities)

- सहदयता (Warmth)
- व्यवसाय के प्रति निष्ठा भाव
- समर्पित सेवा भाव
- अनुशासन प्रियता
- आकर्षक आवाज
- सुस्पष्ट एवं शुद्ध भाषा
- प्रभावी अभिशक्ति
- सदाचरण

3. नेतृत्व की योग्यताएँ (Leadership Qualities)

- जनतन्त्रात्मक दृष्टिकोण

- व्यावहारिकता
 - मानवीय सम्बन्धों का ज्ञान
 - कक्षा में विचार अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता
 - अभिभावक सम्मेलन बुलाना
4. साधन सम्पन्नता (Resourcefulness)
- अर्थशास्त्र हेतु अध्यापक कक्ष का निर्माण कर सके।
 - कक्ष न हो तो सहायक सामग्री जुटा सके।
 - विभिन्न प्रकार की प्रायोजनाओं के संचालन हेतु सुविधा प्राप्त कर सके।
 - विभिन्न प्रकार की प्रायोजनाओं व भ्रमणों व अन्य कार्यकर्मों का संचालन कर सके।
 - किसी भी प्रकार की समस्याओं का समाधान खोज सके।
5. पहल शक्ति (Initiative)
- विषय वस्तु का संज्ञानात्मक एवं तार्किक विश्लेषण एवं संगठन कर पाना।
 - विषय वस्तु को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत कर पाना।
 - छात्रों की सहभागिता को बढ़ाना।
 - जिज्ञासा द्वारा अधिक से अधिक जानना।
 - अधिक से अधिक पूछताछ की प्रवृत्ति होना।
 - विभिन्न प्रकार की प्रायोजनाओं का निर्माण कर प्रबन्धकों/प्रशासकों को प्रेरित करना।

11.5 शिक्षक की योग्यता में वृद्धि के उपाय

डेलोर्स कमेटी (1996 पृ. 147) की रिपोर्ट में शिक्षक की योग्यता में वृद्धि करने के लिए निम्न पक्षों पर ध्यान देने की आवश्यकता अनुभव की है -

1. व्यवसाय हेतु उपयुक्त व्यक्ति का चयन।
2. प्रारम्भिक शिक्षा का स्तर अच्छा हो।
3. सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम होते रहें।
4. श्रेष्ठ शिक्षकों की नियुक्ति हो।
5. सतत पर्यवेक्षण होता रहे।
6. नवीनतम विधियों व साधना के प्रशिक्षण का प्रबन्धन।
7. व्यवसायिक क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहभागिता
8. सहायक सामग्री उपलब्ध हो।

11.6 अर्थशास्त्र शिक्षक की समस्याएं एवं समाधान (Problems of Economics Teacher Solutions)

अर्थशास्त्र वैसे मनुष्य मात्र के आर्थिक व्यवहार/गतिविधि का विषय है, फिर भी छात्रों में नये विषय के रूप में प्रचलित है। अतः इसे सामान्य से भिन्न एवं कठिन विषय के रूप में पहचाना जाता है। सत्य यह है कि गणित एवं अंग्रेजी की तरह इसके अध्यापकों को भी विशिष्ट

हो कर चलना होगा । यहाँ पर कुछ वो बातें दी जा रही हैं जो अर्थशास्त्र के प्रभावी शिक्षण में बाधक होती हैं तथा शिक्षक की समझ्या या बाधाओं के रूप में उपस्थित रहती हैं ।

11.6.1 अर्थशास्त्र विषय का छिछला जान (Shallow Knowledge of Economics)

यदि शिक्षक से अर्थशास्त्र को केवल पास होकर डिग्री प्राप्त करने तक की भावना से ही पढ़ा है तो उसे शिक्षण में बाधा उत्पन्न होगी । अर्थशास्त्र की शब्दावली एवं सम्प्रत्ययों को पूर्ण रूप से समझा हो तो ही शिक्षक कारण-प्रभाव सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा तथा आगमन तथा निगमन उपागमों का प्रयोग का छात्रों की ग्राह्यता को बढ़ा सकेगा । इसके अभाव में छिछले जान के साथ वह केवल पाठ्य-पुस्तक पढ़ कर रटी-रटायी भाषा से सतही शान ही प्रदान कर पायेगा ।

11.6.2 नवीनतम जान का अभाव (Lack of Latest Knowledge)

अर्थशास्त्र में आर्थिक स्थितियों एवं प्रवृत्तियों को समझाने एवं वास्तविक चित्र प्रस्तुत करने के लिए नवीनतम तथ्यों को जानना आवश्यक है । इसके अभाव में शिक्षक क्या मैं वास्तविक शिक्षण नहीं कर सकता । पुस्तकों में प्रकाशित ऑकड़े कब तक के हैं तथा वर्तमान में क्या परिवर्तन हुआ है-शिक्षकों को इस बात का पूर्ण जान नहीं होने से छात्रों के वर्तमान अनुभव एवं कक्षा शिक्षण में अन्तराल हो जाता है तथा छात्र कक्षा में रुचि नहीं लेते । आयात-निर्यात के अध्याय में प्राचीन सूची प्रस्तुत करें जिसमें इलेक्ट्रोनिक्स उपकरण अथवा स्वर्ण लाने पर पूर्ण रोक थी तो बालक की समझ के परे होगा ।

11.6.3 स्थानीय जान का प्रयोग न करना (Not using local knowledge)

पुस्तकों में दिये गये उदाहरण ही कक्षा में प्रस्तुत कर दिये जाते हैं जो कि छात्रों के अनुभव की परिधि के बाहर हो तो बात न तो छात्र के समझ में आती है न शिक्षक समझा पाता है । जनसंख्या वृद्धि से उदयपुर में माल से भरी हुई गाड़ियों को शहर में आने से प्रतिबंधित कर दिया गया है । इससे बड़े एवं छोटे व्यापारियों पर क्या प्रभाव पड़ा है? उनको लाभ/हानि हुई । यहाँ के उदाहरण से भली प्रकार समझाया जा सकता है । किन्तु विषय की गहराई न होने से वे स्थानीय जान/सूचनाओं का प्रयोग न कर विषय को समझाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं ।

11.6.4 छात्रों के जीवन से न जोड़ना (Not linking with the life of students)

जैसा कि पूर्व में लिखित बिन्दु में बताया गया है, शिक्षक अर्थशास्त्र के प्रकरणों को छात्र के जीवन से नहीं जोड़ पाता है इससे छात्र अर्थशास्त्र को कोई काल्पनिक विषय मान कर चलता है । उसमें रुचि नहीं ले पाता है । यातायात के साधनों की वृद्धि से रोगों में वृद्धि, परिणाम स्वरूप मानव संसाधन की कार्यक्षमता पर प्रभाव, बैंक की कार्य प्रणाली में प्रभावोत्पादकता, उपभोग की प्रवृत्ति में परिवर्तन जैसे व्यवहारों को छात्र के जीवन से जोड़कर ही स्पष्ट किया जा सकता है । समस्त व्यवहारों को यथासंभव छात्रों के निजी जीवन से जोड़ने के लिए शिक्षक को चिन्तन-मनन व पाठ्य-पुस्तक से अलग हट कर विषय को लेना आवश्यक है ।

11.6.5 सहायक सामग्री का उपयोग न करना (Lack of use of support material)

अर्थशास्त्र का शिक्षक सहायक सामग्री का निर्माण कर अथवा निर्मित सामग्री का कक्षा में ले जाकर उपयोग करने में सुस्ती करता है । अनेक बार पाठ्य-पुस्तक में दिये गये मानचित्र अथवा ग्राफ का प्रयोग कर विषय-वस्तु को समझाने का प्रयास करता है जो कि अनुचित है । अर्थशास्त्र में अनेक ऐसे प्रकरण हैं जहाँ सहायक सामग्री का प्रयोग करना आवश्यक होता है

अन्यथा विषय-वस्तु समझ के बाहर ही होती है। शिक्षक भी प्रकरण पूरा मात्र कर लेता है सिखा नहीं पाता।

11.6.6 शिक्षण सामग्री एवं उपकरणों की अनुपलब्धता (Unavailability of Teaching Aids & Equipments)

आज की स्थितियों में शालाओं की हालत से हम भली-भांति परिचित हैं। शालाओं में पर्याप्त मात्रा में समस्त प्रकार के चार्ट, ग्राफ, मानचित्र, ग्लोब, इलेक्ट्रोनिक उपकरण (टी.वी. वी.सी.आर., डी.वी.डी., सी.डी.रोम कम्प्यूटर) आदि का अभाव होता है जिससे अर्थशास्त्र का शिक्षण कक्षा में चाहते हुए भी इसका उपयोग नहीं कर पाते।

11.6.7 सूचना एवं संचरण सम्बन्धी तकनीकी ज्ञान का अभाव (Lack of knowledge of ICT)

कई शालाओं में, विशेष रूप से निजी शालाओं में कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं लगा दी गई हैं। अन्य उपकरण भी उपलब्ध होते

11.6.8 अत्यधिक एवं भारी पाठ्यक्रम (Overloaded Syllabus)

माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि अर्थशास्त्र के अनेक सम्प्रत्यय/सिद्धान्तों/तथ्यों को समाविष्ट किया है। ऐसी स्थिति में शिक्षक को निर्धारित दिवसों में पाठ्यक्रम पूरा करने की अनिवार्यता के कारण वह विषय को उदाहरणों से जोड़कर व्यावहारिक बनाने में कठिनाई का अनुभव करता है। अर्थशास्त्र जैसे विषय को आत्मसात करवाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। अतः अधिक विषयवस्तु का होना भी शिक्षक के लिए समस्या है।

11.6.9 अर्थशास्त्र की शब्दावली का प्रयोग न करना (Not using the terminology of Economics)

अर्थशास्त्र के शिक्षक द्वारा विषय की शब्दावली का सहज प्रयोग नहीं किया जाता। मानो वह केवल पाठ्य-पुस्तक एवं परीक्षा के लिए ही निर्धारित की गई है। इससे छात्र व जन-मानस के लिए संबन्धित शब्दावली नई एवं रटने की विषय-वस्तु बन जाती है। यदि इसका प्रयोग सहज रूप में किया जाता रहे तो छात्रों द्वारा इन शब्दों का सम्प्रत्यय भी सहज ही ग्रहण किया जा सकता है।

स्व-मूल्यांकन-2

- 1 अर्थशास्त्र शिक्षक की व्यावसायिक योग्यताएं क्या होनी चाहिए?
- 2 डेलोर्स कमीटी ने शिक्षक की योग्यताएं वृद्धि के क्या उपाय बताएं हैं?
- 3 अर्थशास्त्र शिक्षक की बधाएं क्या-क्या हैं?

11.7 सार-संक्षेप (Summary)

समाज में शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। अर्थशास्त्र का शिक्षक अपना विशिष्ट स्थान रखता है। क्योंकि इसकी विषय-सामग्री जटिल होती है तथा ऑकड़ों से युक्त होने

के कारण नीरस भी । अतः इस विषय के शिक्षण के लिए शिक्षण विशेष योग्यताधारी होना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका शाला एवं समुदाय दोनों ही स्थानों पर महत्वपूर्ण होती है । अतः व्यापक दृष्टिकोण लिये हुए हो । इसके अतिरिक्त शिक्षक में व्यावसायिक योग्यताएं, व्यक्तिगत योग्यताएं, नेतृत्व की योग्यताएं, साधन-सम्पन्नता, पहल शक्ति, आदि होनी चाहिए । अर्थशास्त्र शिक्षक को विशिष्ट समस्याओं का सामना करना पड़ता है । जिसमें नवीनतम ज्ञान की जानकारी, स्थानीय ज्ञान का प्रयोग, छात्रों के जीवन से जोड़ना, अर्थशास्त्र की शब्दावली का प्रयोग सम्बन्धी हैं।

11.8 इकाई का मूल्यांकन

1. अर्थशास्त्र शिक्षक के प्रमुख कार्यों का वर्णन करें ।
Explain the major functions of Economics Teachers.
 2. अर्थशास्त्र शिक्षक की क्या-क्या समस्याएं हैं? उनका समाधान कैसे किया जा सकता है?
What are the problems of economics teachers ? How it can be solved?
-

11.9 सन्दर्भ पुस्तके -

1. Bining, A.C. and Bining, D.H. Teaching the Social Studies in Secondary Schools, New York : McGraw Hill co. Inc. 1952
2. Mofatt, M.P. Social Studies Instruction, New York: Prentice Hall Inc.1954
3. Programme of Action - National Policy on Education, 1986 Government of India, Ministry of Human Resource Development, 1986
4. Khan, Riaz Shakir, Teacher Education and Student' s Perception. New Delhi : Ashish Publishing House, 1989
5. एहेला, सत्यपाल एवं खान, रियाज शाकिर सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण, कोटा खुला विश्वविद्यालय, बी.ई.5
6. Teacher Education Curriculum - A Framework, New Delhi : N.C.E.R.T, 1978
7. The Curriculum for the Ten Years School - A Frame work New Delhi : N.C.E.R.T, 1975
8. Wesley, E.B. Teacher Social Studies in High Schools, Boston : D.C. Health and Co., 1950
9. Nagar, Divya, अर्थशास्त्र शिक्षण, 1999, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन ।
10. Khan, R.S., Economics Teaching (Hindi).

इकाई-12

अर्थशास्त्र विषय के शिक्षण में संसाधन

(Resources in Teaching Economics)

इकाई की रूप रेखा (Outline of the Unit)

-
- | | |
|--------|---|
| 12.1 | इकाई के उद्देश्य |
| 12.2 | सामुदायिक स्रोत |
| 12.3 | अर्थशास्त्र शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग |
| 12.3.1 | संबन्धित स्रोतों का चयन |
| 12.3.2 | मुख्य सामुदायिक गतिविधियों की प्रायोजना निर्माण |
| 12.3.3 | पूर्व निर्देशन देना |
| 12.3.4 | गतिविधि आधारित औपचारिकताओं का निर्वाह |
| 12.3.5 | वास्तविक गतिविधियों का संचालन |
| 12.3.6 | गतिविधि की समाप्ति पर विचार-विमर्श |
| 12.4 | पुस्तकालयी स्रोत |
| 12.5 | अर्थशास्त्र परिषद् |
| 12.6 | संग्रहालय |
| 12.7 | बुजुर्ग व्यक्तियों से वार्ता |
| 12.8 | विशेषज्ञों की वार्ताएँ |
| 12.9 | सामुदायिक सर्वेक्षण |
| 12.10 | अर्थशास्त्र शिक्षण में पर्यटन (भ्रमण) |
| 12.11 | सार-संक्षेप |
| 12.12 | इकाई का मूल्यांकन |
| 12.13 | सन्दर्भ पुस्तके |
-

12.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

1. सामुदायिक संसाधनों के प्रयोग करने की विधि समझ सकेंगे ।
 2. अर्थशास्त्र विषय के शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों के प्रयोग के उदाहरण तैयार कर सकेंगे ।
 3. पुस्तकालयी स्रोत के महत्व को समझ सकेंगे ।
 4. अर्थशास्त्र के शिक्षण में बुजुर्ग व्यक्तियों के अनुभवों का प्रयोग कर सकेंगे ।
 5. सामुदायिक सर्वेक्षण के सोपानों को सीख सकेंगे ।
 6. आर्थिक गतिविधियों के प्रत्यक्ष अनुभव के लिए भ्रमण का आयोजन कर सकेंगे ।
 7. शाला में अर्थशास्त्र परिषद् कैसे कार्य कर सकती है? इसकी आयोजना बना सकेंगे ।
-

12.2 सामुदायिक स्रोत (Community Resources)

अर्थशास्त्र शिक्षण में सामुदायिक स्रोतों की अत्यधिक उपयोगिता है। विद्यालय समाज की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति के लिए ही स्थापित हैं। अतः शिक्षण प्रक्रिया में समुदाय को एक स्रोत के रूप में उपयोग करने से शिक्षण में व्यावहारिकता आ जाती है। इसके लिये या तो समुदाय को छात्रों के पास बुलाया जा सकता है अथवा छात्रों को समुदाय के पास ले जाया जा सकता है।

12.3 अर्थशास्त्र शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग (Use of Community Resources in Teaching Economics)

अर्थशास्त्र शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग करने के लिए निम्न कार्य करने होंगे :-

12.3.1 सम्बन्धित स्रोतों का चयन (Identification of relevant sources)

छात्रों के पाठ्यक्रम का विश्लेषण कर के आवश्यक महत्वपूर्ण गतिविधियों एवं स्थानीय सामुदायिक स्रोतों (फैक्ट्रीज, फॉर्म्स, बाजार, बैंक, पोस्ट ऑफिस, विषय विशेषज्ञ, प्रोजेक्ट्स आदि) की सूची बनाई जाये जिससे संबन्धित एवं उद्देश्यपूर्ण कार्य किये जा सकें।

12.3.2 मुख्य सामुदायिक गतिविधियों की प्रायोजना निर्माण (Mapping the major Community Activities)

सम्पूर्ण सत्र में किस कक्षा के लिए कौनसी गतिविधि करना उपयुक्त होगा? इसमें समय एवं धन की व्यवस्था कैसे होगी? समय-सारणी में व्यवधान न पहुँचाते हुए कार्य कैसे किया जायेगा? यह सत्र के प्रारम्भ में ही चित्रण किया जाना चाहिए जिससे समय रहते छात्रों की मानसिक तैयारी, गतिविधियों का आयोजन एवं समय का सटुपयोग हो सके।

12.3.3 पूर्व निर्देशन देना (To pass on Instruction)

प्रत्येक गतिविधि के पूर्व छात्रों को विषय का ज्ञान देना, ध्यान केन्द्रित करने के महत्वपूर्ण मुद्दे बताना, प्रश्न व अवलोकनीय बिन्दुओं का लेखन करने हेतु निर्देश देना होगा जिससे सामुदायिक स्रोत का सार्थक उपयोग हो सके।

12.3.4 गतिविधि आधारित औपचारिकताओं का निर्वाह (Activity based formalities)

शाला से बाहर जहाँ-तहाँ भी आवश्यक है लिखित में सम्पर्क करना होगा। ले जाये जाने वाले स्थल, आमन्त्रित सदस्य, अभिभावकों एवं प्रधानाध्यापक से स्वीकृति जैसी गतिविधि आधारित औपचारिकताओं का निर्वाह करना आवश्यक होता है।

12.3.5 वास्तविक गतिविधियों का संचालन (Execution of Actual Activities)

वास्तविक गतिविधियों का संचालन, सावधानीपूर्वक तरीके से करना होता है जिससे छात्रों के समय का सटुपयोग व गतिविधि का पर्याप्त लाभ प्राप्त हो सकें।

12.3.6 गतिविधि की समाप्ति पर विचार-विमर्श (Follow up Discussion)

प्रत्येक गतिविधि की समाप्ति पर विचार-विमर्श कर छात्रों के लिए ज्ञान को उपयोगी बनाया जाता है।

12.4 पुस्तकालयी स्रोत (Library Resources)

अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए पुस्तकालय का होना अत्यधिक आवश्यक है। शाला में उपलब्ध पुस्तकालय में अर्थशास्त्र की नवीनतम पुस्तकें, बैंक की रिपोर्ट (Reserve Bank of India & World Bank), सेन्सस (Sensus Report) प्रतिवेदन, आर्थिक समीक्षाएं, आर्थिक जगत् की सामान्य पत्रिकाएं व दैनिक समाचार पत्रों से शिक्षक की नवीनतम ज्ञान से परिचित रह सकेगा। उसका प्रयोग कक्षाओं में पढ़ाते समय कर सकेगा। छात्रों से विभिन्न प्रायोजनायें करवाने में सन्दर्भ आदि बता सकेगा। छात्रों को सम-सामयिक घटनाओं (Current Events) को पढ़ने व समझने की आदत का विकास जा सकता है। इस प्रकार पुस्तकालय का अर्थशास्त्र शिक्षण में अत्यधिक महत्व है।

मात्र पाठ्य-पुस्तक तक सीमित रह कर अर्थशास्त्र का शिक्षण संभव नहीं है। यह भी कटु सत्य है कि पाठ्य-पुस्तकें लिखने, स्वीकृत होने एवं प्रकाशित होने में जो समय लगता है उतने समय में तथ्यों में परिवर्तन हो जाता है। अतः सामयिक तथ्यों की सतत जानकारी पुस्तकालयों के व्यवस्थित रख-रखाव से ही संभव है।

के कई संसाधन हैं जो अर्थशास्त्र शिक्षण में उपयोगी होते हैं। आगे ऐसे ही कुछ संसाधनों के उपयोग की चर्चा की जा रही है। यदि शाला में धनाभाव के कारण यह अवस्था न दी जा सकती हो तो शिक्षक द्वारा सार्वजनिक पुस्तकालय का उपयोग स्वयं एवं कक्षा के लिए किया जा सकता है। छोटे गाँवों में सार्वजनिक पुस्तकालय के अभाव में अभिभावकों के पास उपलब्ध सुविधा को छात्रों के लिए जुटाना चाहिए।

स्व-मूल्यांकन-1

- 1 सामुदायिक संसाधन का प्रयोग आप कैसे करेंगे?
- 2 पुस्तकालय स्त्रोत का क्या लाभ है?

12.5 अर्थशास्त्र परिषद् (Economic Association)

विद्यालय से अर्थशास्त्र परिषद स्थापित करके शिक्षक विद्यार्थियों को रचनात्मक कार्यों में लगा सकता है, उनको अर्थशास्त्र पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है एवं विषय के शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति आसानी से कर सकता है। अगर विद्यालय में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की संख्या अधिक है तो परिषद की सदस्यता अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को ही दी जाये। अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की संख्या कम होने पर सामाजिक विज्ञानों के सभी विद्यार्थियों को मिलाकर एक परिषद बनाकर उसमें अर्थशास्त्र से संबन्धित क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाना चाहिये।

अर्थशास्त्र परिषद में प्रधानाचार्य एवं अर्थशास्त्र शिक्षक संरक्षक हो तथा सभापति, उपसभापति आदि चुने गये विद्यार्थी हों। यह कार्यकारिणी ही परिषद की क्रियाओं को निर्धारित करेगी। अर्थशास्त्र का शिक्षक समिति के हर कार्य में विद्यार्थियों की मदद करेगा। परिषद के लिये फण्ड चन्दे द्वारा प्राप्त किया जायेगा, विद्यालय भी वित्तीय सहायता देगा।

अर्थशास्त्र परिषद की प्रमुख क्रियाएँ निम्नलिखित हो सकती हैं -

1. अर्थशास्त्र कक्ष की देखभाल करना,
2. अपना पुस्तकालय खोलना,
3. वाद-विवाद, परिसंवाद आदि का संगठन करना,

4. विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करना,
 5. बुलेटिन बोर्ड की देखभाल करना,
 6. समाज सेवा के कार्य नियोजित करना,
 7. संचायिका स्कीम चलाना अथवा सहकारी भण्डार खोलना,
 8. विषय से सम्बन्धित फ़िल्मों को दर्शाने का प्रबन्ध करना,
 9. अतिथि व्याख्याता (Guest Faculty) को बुलाना,
 10. विद्यालय पत्रिका में 'अर्थशास्त्र कॉर्नर' का प्रावधान करना एवं उसका सम्पादन आदि करना।
- अर्थशास्त्र परिषद स्थापित करने से निम्नलिखित लाभ होते हैं -
1. विद्यार्थियों को नेतृत्व एवं जनतंत्रीय जीवन का प्रशिक्षण प्राप्त होगा।
 2. विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र विषय में रुचि उत्पन्न होगी।
 3. उन्हें करके सीखने का अवसर मिलेगा।
 4. उनमें कार्य को नियोजित एवं संगठित करने की क्षमता का विकास होगा।
 5. उनमें सर्वेक्षण करने, तथ्यों को एकत्रित करने, संगठित करने एवं इनका निरूपण करने की क्षमता का विकास होगा।
 6. विद्यार्थियों को सामाजिक कार्यों में भाग लेने एवं अपने उत्तरदायित्व को समझने का अवसर मिलेगा।
 7. उनमें मिलजुल कर काम करने की आदत पैदा होगी एवं सामाजिक गुणों का विकास होगा।
-

12.6 संग्रहालय (Museum)

भारतीय स्थितियों में शालाओं में सामाजिक अध्ययन विषय से संबन्धित म्युजियम का होना तो कल्पना मात्र है। किन्तु यदि कहीं मानव सभ्यता के इतिहास से संबन्धित म्युजियम हो तो रहने व जीने के तौर-तरीकों में जो अन्तर हुआ है कालान्तर में विकास की कहानी को छात्र समझ सकते हैं। इसके द्वारा न केवल थे सम्पूर्ण सभ्यता की कहानी समझेंगे वरन् मानव की आर्थिक गतिविधियों की बदलती तस्वीर के ऐतिहासिक क्रम को भी समझ सकेंगे। ऐसे म्युजियम अमेरिका के वाशिंगटन डी.सी. में तो निर्मित हैं किन्तु भारत में इनकी उपलब्धता पर सन्देह है। अतः वर्तमान आर्थिक संरचना एवं गतिविधि को विकास क्रम में समझने में कठिनाई हो सकती है।

12.7 बुजुर्ग व्यक्तियों से वार्ता (Talks with Senior Citizens)

वास्तव में शाला में म्युजियम तो बनाया नहीं जा सकता किन्तु समुदाय में उपलब्ध जागरूक बुजुर्ग व्यक्तियों से छात्रों की वार्ता करवाना संभव है। वह अपने दादा-परदादा से सुनी आर्थिक क्रियाओं से संबन्धित अनुभवों से लेकर स्वयं के पोते, पड़ पोते तक की जीवन शैली में आए परिवर्तनों का वर्णन कर 100 से 125 वर्ष या इससे कुछ अधिक अवधी में आए जीवन के तौर-तरीकों के बारे में बता सकते हैं। इन गत 100 वर्षों में भी इतना अधिक परिवर्तन आया है कि छात्र कल्पना नहीं कर सकते। अर्थशास्त्र की अच्छी पृष्ठभूमि के लिए यह वार्तालाप

अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इन सूचनाओं का बार-बार प्रयोग करने के लिए सी.डी.रोम/वीडियो भी तैयार कर के रखा जा सकता है।

स्व-मूल्यांकन-2

1. अर्थशास्त्र परिषद का क्या महत्व है?
2. म्यूजियम का आप अर्थशास्त्र शिक्षण में कैसे उपयोग करेंगे?
3. समुदाय में उपस्थित बुजुर्ग व्यक्ति की शिक्षण में क्या उपयोगिता होगी?

12.8 विशेषज्ञों की वार्ताएं (Lectures of Experts)

समुदाय के अन्तर्गत उपलब्ध अर्थशास्त्र विषय से संबंधित अनुभवी विशेषज्ञों को शाला में बुलाकर उनकी वार्ता आयोजित की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति समुदाय के विभिन्न पक्षों की वास्तविकताओं को बताते हुए व्यवहारिकता की ओर ले जाते हैं। छात्रों को इन अनुभवों से अत्यधिक लाभ प्राप्त होता है। ध्यान यह रखना होगा कि वार्ता छात्रों के स्तर के अनुसार तथा आषा समझने योग्य हो तो छात्र अत्यधिक प्रभावित होते हैं। वार्ता के पश्चात् छात्रों की जिजासा को शान्त करने हेतु प्रश्नोत्तर का प्रावधान भी होना चाहिए। इस कार्य में शिक्षक भी सहयोग कर सकते हैं। ऐसे विशेषज्ञों को शाला में अतिथि शिक्षक (Guest faculty) के रूप में स्वीकार कर उपयुक्त स्थान देना चाहिए।

12.9 सामुदायिक सर्वेक्षण (Community Survey)

सर्वेक्षण किसी विशेष आर्थिक दशा अथवा समस्या का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप में विश्लेषण करने की एक विधि है। ये एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे किसी विषय के बारे में छानबीन की जाती है, तथ्यों का संकलन किया जाता है, ताकि समस्या स्पष्ट हो सके और आवश्यक बातों की ओर संकेत किया जा सके।

अर्थशास्त्र शिक्षण में सर्वेक्षण की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इनके द्वारा जनसंख्यालक विशेषताओं, परिवार की रचना, विवाहिक स्थिति, जन्मदर, मृत्युदर, आयु संरचना, परिवारिक नियोजन आर्थिक पर्यावरण, लोगों के व्यवसाय, उनकी आय, मकान, शिक्षा एवं भौतिक सुख-सुविधाओं, रहन-सहन का स्तर, आर्थिक कियाएं-कृषि, उद्योग, सेवायें, आर्थिक समस्याएँ, गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, अभाव आदि का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है। माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम में जो प्रोजेक्ट कार्य रखा गया है उसमें निम्नलिखित सर्वेक्षण सम्मिलित किये गये हैं।

- (अ) आय एवं परिवार के आकार के सम्बन्ध का पता लगाना।
- (ब) स्थानीय कुटीर एवं छोटे पैमाने के उद्योगों की कार्य-प्रणाली का अध्ययन कर्चे माल प्राप्त करने की व्यवस्था एवं उत्पादित वस्तु के बाजार का पता लगाने के लिये करना।
- (स) एक बस्ती (Locality) का सर्वेक्षण कार्यरत एवं बेरोजगार जनसंख्या का पता लगाने के लिये।

सर्वेक्षण की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण होते हैं :-

1. विषय/समस्या का चयन (Selection of Problem)।

2. विषय से सम्बन्धित प्रारम्भिक अध्ययन करना (Preparatory Reading) ।
 3. उद्देश्यों का निर्धारण (Goal Setting) ।
 4. अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण (Delimitation of Field of Study).
 5. सर्वेक्षण समिति का निर्माण (Formation of Research Committee) ।
 6. बजट का निर्धारण (Budgeting) ।
 7. समय तालिका बनाना (Preparation of Schedule) ।
 8. सर्वेक्षण योजना निर्माण (Preparation of Research Design) ।
 9. न्यादर्श का चुनाव (Selection of Sample)
 10. अध्ययन पद्धति का चुनाव (Selection of Research Methodology)।
 11. अध्ययन यंत्रों (Study Tools) का निर्माण, प्रश्नावली (Questionnaire), मापक पैमाना (Rating Scale), निरीक्षण अनुसूची (Observation Schedule), साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule) ।
 12. सर्वेक्षण के लिये विद्यार्थियों का चुनाव एवं प्रशिक्षण (Selection & Training of Students for Survey) ।
 13. अध्ययन यंत्रों का पूर्व परीक्षण (Pre-testing of study Tools) और सर्वेक्षण (Pilot Survey)
 14. अध्ययन यंत्रों व स्टेशनरी आदि का वितरण एवं उनके प्रयोग करने से सम्बन्धित निर्देशों को देना (Distribution of Research Tools and Instructions for use)
 15. समुदाय को तैयार करना (Preparation of Community) ।
 16. तथ्यों का संकलन (Collection of Data)
 17. तथ्यों का सम्पादन (Editing of Data) वर्गीकरण (Classification), संकेतन (Codification), सारणीयन (Tabulation)
 18. तुलना तथा निर्वचन (Comparison and Interpretation)
 19. सामान्यीकरण (Generalization)
 20. तथ्यों का प्रदर्शन (Presentation of Data)
 21. प्रतिवेदन तैयार करना (Report writing)
- सर्वेक्षण की प्रक्रिया को देखने से यह स्पष्ट हैं कि इसके द्वारा किसी आर्थिक विषय का वैज्ञानिक अध्ययन करना सम्भव इसके द्वारा वास्तविक परिस्थितियों का ज्ञान होता है । इसके द्वारा विद्यार्थी प्रभावशाली ढंग से सीखते हैं । क्योंकि यह पद्धति सीखने के सिद्धान्तों पर आधारित है । सर्वेक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में तथ्यों के संकलन, वर्गीकरण, तुलना, विश्लेषण करने आदि की क्षमता और तार्किक शक्ति एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास होता है । इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों में सहानुभूति, निर्णय लेने की क्षमता, सूझबूझ, पारस्परिक का विकास होता है । इस प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों में सहानुभूति, निर्णय लेने की क्षमता, सूझबूझ, पारस्परिक सहयोग, जनकल्याण जैसे गुणों का विकास होने के साथ-साथ समाज और उसकी आर्थिक परिस्थितियों के बारे में सोचने की आदत सी पड़ती है ।

सर्वेक्षण कराने के बारे में शिक्षक को विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की मानसिक परिपक्वता और विद्यालय की परिस्थितियों (समय तालिका आदि) को ध्यान में रखना चाहिये। छोटे-छोटे विषय एवं समस्याओं का स्थानीय स्तर पर अध्ययन सर्वेक्षण द्वारा करना उपयुक्त मालूम होता है।

स्व-मूल्यांकन-3

1. अर्थशास्त्र के किन प्रकरणों के अध्ययन में सर्वेक्षण से लाभान्वित हुआ जा सकता है?

12.10 अर्थशास्त्र शिक्षण में पर्यटन (भ्रमण) (Excursion in Teaching of Economics)

पर्यटन एक सामुदायिक साधन है। क्षेत्र पर्यटन कक्षा-कक्ष से बाहर भ्रमण करने का वह व्यवस्थित रूप है जिसका संचालन विद्यालय द्वारा शिक्षाक्रम का एक आवश्यक अंग मान कर किया जाता है। इसके अन्तर्गत हम छोटी-बड़ी अनेक प्रकार की क्रियाएं सम्मिलित कर सकते हैं। विद्यालय की चार दीवारी का भ्रमण, पास में बहने वाली नदी का अवलोकन या देश की राजधानी या चार सौ किलोमीटर दूर अवस्थित किसी ऐतिहासिक भवन या आधुनिक उद्योग का अवलोकन आदि सभी क्षेत्र पर्यटन के अन्तर्गत आते हैं।

प्रकार :

1. लघु क्षेत्र पर्यटन (Short-Term Field Trip)

लघु क्षेत्र पर्यटन समय तथा क्षेत्र के वृष्टिकोण से अत्यन्त ही सीमित होते हैं। सामान्यतया इस प्रकार के पर्यटन विद्यालय के किसी एक कालांश में ही सम्पादित कर लिये जाते हैं। तथा इनका क्षेत्र भी सीमित रहता है। विद्यालय कृषि फॉर्म का भ्रमण। यह छोटी कक्षाओं के लिये उपयुक्त रहता है।

2. सामान्य क्षेत्र पर्यटन (Normal Field Trip)

सामान्य क्षेत्र पर्यटन उक्त क्षेत्र पर्यटनों की तुलना में समय तथा क्षेत्र दोनों ही वृष्टिकोण से कुछ व्यापक होते हैं तथा कुछ ऊँची कक्षाओं सामान्यतया माध्यमिक कक्षाओं के लिये आयोजित किये जाते हैं। इस प्रकार के पर्यटनों में समय भी अपेक्षाकृत अधिक लगता है तथा पर्यटन स्थान भी विद्यालय प्रांगण से तुलनात्मक रूप में दूर ही होता है। स्थानीय बाजार की दशायें, स्थानीय उद्योग व श्रमिक की स्थिति आदि।

3. दीर्घ क्षेत्र पर्यटन (Long-Term Field)

इस प्रकार के पर्यटनों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है। इस प्रकार के पर्यटनों के लिये कई दिनों की व्यवस्था करनी पड़ती है एवं इसमें उच्च कक्षाओं के छात्र ही सामान्यतया भाग लेते हैं जैसे किसी उद्योग का अवलोकन आदि।

पर्यटन के उद्देश्य (Objectives of Field Trip)

1. नवीन सूचनायें प्राप्त करना।
2. अभिवृत्तियों को परिवर्तित करना।

3. रुचि जाग्रत करना ।
4. नवीन अनुभवों की उपलब्धि ।
5. मानसिक व्यवस्था को परिवर्तित करना ।
6. समाज का व्यावहारिक जान देना ।

पर्यटन का संचालन (Execution of Field Trip)

पर्यटन की सफलता पर्यटन के कुशल संचालन पर निर्भर करती है । अतः पर्यटनों का संचालन करते समय शिक्षक को बड़ी सावधानी रखनी चाहिये । उसे पर्यटन को प्रारम्भ करने के पूर्व एक योजना बनानी चाहिये । इस योजना को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(अ) पर्यटन के आरम्भ होने से पूर्व के कार्य :

1. उद्देश्यों का निर्धारण तथा स्पष्टीकरण ।
2. उसी प्रकार के ज्ञानार्जन के लिये पर्यटन की व्यवस्था की जाये, जो कक्षा-कक्ष में प्रदान की जाने वाली शिक्षा को सशक्त करने के लिए आवश्यक हो ।
3. सभी प्रशासकीय अधिकारियों की स्वीकृति प्राप्त कर ली जाये । इस कार्य हेतु पत्र व्यवहार भी किया जा सकता है ।
4. समय बजट एवं आर्थिक बजट पहले से बनाया जाये ।
5. संबन्धित छात्रों के अभिभावकों का सहयोग एवं स्वीकृति प्राप्त की जाये ।
6. आवागमन के साधनों की व्यवस्था कर ली जाये ।
7. प्रारम्भिक तैयारी के सम्बन्ध में निर्देश दे दिये जायें जैसे-कपड़े, जेब खर्च समय आदि ।
8. पर्यटन के अनुभव लिखने के निर्देश दिये जायें ।
9. सावधानी के लिये कह दिया जाये ।

(ब) पर्यटन के समय के कार्य -

1. पर्यटन क्षेत्र के अधिकारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाये ।
2. छात्रों की प्रत्येक उत्सुकता को शांत किया जाये ।
3. छात्र पर्यटन क्षेत्र को कोई क्षति न पहुँचाये ।
4. छात्रों को शारीरिक चोट न लगे ।
5. समय-समय पर छात्रों की गिनती करते रहें ।
6. छात्रों को विभिन्न टोलियों में बॉट कर प्रत्येक का एक लीडर बना दिया जाये ।

(स) पर्यटन के पश्चात् के कार्य :

1. प्रत्येक टोली से अनुभव लिखवाये जायें ।
2. लिखित अनुभवों को सुनवाया जाये ।
3. विचार-विमर्श के द्वारा विभिन्न शंकाओं का समाधान किये जायें ।
4. पर्यटन की सफलताओं, असफलताओं एवं कठिनाइयों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया जाये और भविष्य के लिये निष्कर्ष निकाले जायें ।
5. संबन्धित शक्तियों को धन्यवाद के पत्र प्रेषित किये जायें ।

क्षेत्र पर्यटन के लाभ :

- पर्यटन छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं। पर्यटनों के दौरान छात्र समाज को उसके वास्तविक रूप में देखते हैं। वे बैंकों में विभिन्न व्यक्तियों को कार्य करते हुए देखते हैं, बैंक की कार्य प्रणाली का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान से कहीं अधिक व्यावहारिक होता है।
- पर्यटन जीवन की अनेक वास्तविकताओं से अवगत करते हैं। दूसरों के साथ किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिये, रेल यात्राओं में क्या-क्या कठिनाइयाँ होती हैं, अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये आदि का वास्तविक ज्ञान छात्रों को पर्यटनों से ही प्राप्त होता है।
- मानसिक स्वस्थता-इस दृष्टिकोण से भी पर्यटन बड़े लाभकारी है। छात्र लम्बे समय तक विद्यालय की चार दीवारी में बन्द रहता है। वह मन में घुटन का अनुभव करता है, फलतः वह बाहर जाना चाहता है। इससे उसे स्वतन्त्रता का अनुभव होता है।
- पर्यटन विभिन्न विषयों सम्बन्धी ज्ञान को संबन्धित करते हैं। पर्यटन के समय हम विभिन्न वस्तुओं को देखते हैं। वे छात्रों के विभिन्न विषयों से संबन्धित होती हैं। अध्यापक उनका ज्ञान प्रदान कर विभिन्न विषयों को संबन्धित करता है। रेल में रेल व्यवस्था का ज्ञान, फसलों का ज्ञान, शहरों की विशेषता, विभिन्न उप जातियों के सम्बन्ध में बतलायी जा सकती है। इस प्रकार विभिन्न विषयों के ज्ञान को संबन्धित किया जा सकता है।

दोष :

- समय व धन की अधिक आवश्यकता होती है।
- सुनियोजित न होने पर प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।
- इसके आयोजन के लिए अनुभवी एवं कुशल अध्यापक की आवश्यकता होती है।

स्व-मूल्यांकन-4

- विशेषज्ञों की वार्ताएं कब सफल हो सकती हैं?
- अर्थशास्त्र शिष्णु में आप सामुदायिक सर्वे कैसे करेंगे ?
- भ्रमण (पर्यटन) के आयोजन के विभिन्न सोपान बताएं।

12.11 सार-संक्षेप (Summary)

किसी भी विषय के शिक्षण को वास्तविकता से जोड़ने के लिए यह आवश्यक है कि समुदाय को एक स्रोत के रूप में काम लिया जाये। किसी भी संसाधन के प्रयोग से न्यूनतम लागत व अधिकतम लाभ को देखना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि एक व्यवस्थित क्रम में इन संसाधनों का प्रयोग हो। विषय-वस्तु छात्रों की समझ एवं उपलब्ध समय एवं धन को ध्यान में रखते हुए स्थानीय स्रोतों की सूची निर्माण करनी होगी। चयनित गतिविधि की आयोजना बनाना, पूर्व निर्देशन देना, सम्पर्क स्थापित करना, गतिविधि का संचालन करना तथा अनुवर्ती विचार-विमर्श करना होगा।

समुदाय में स्थित महत्वपूर्ण संसाधनों के साथ पुस्तकालय, अर्थशास्त्र परिषद्, संग्रहालय, बुजुर्ग शक्ति, विशेषज्ञ, सर्वे एवं भ्रमण आदि भी उपयोगी संसाधन हैं। पर्यटन एवं सर्वे को किन सोपानों में पूरा करना चाहिए-यह भी महत्वपूर्ण है।

12.12 इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

1. अर्थशास्त्र में आप किन सामुदायिक संसाधनों का प्रयोग कर सकते हैं?
What type of community resources you will like to use in Economics teaching?
 2. किसी भी सामुदायिक संसाधन का शिक्षण में आप कैसे प्रयोग करेंगे?
How would you use any community resources in Teaching Economics?
 3. आप सामुदायिक सर्वे कैसे करेंगे?
How would you conduct a community survey?
 4. अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए पर्यटन हेतु एक प्रायोजना बनाएं।
Prepare a project for Excursion to teach Economics.
-

12.13 सन्दर्भ पुस्तकें

1. Jhon Jerolimek, Social Studies in Elementary Education (1982), 7th Ed. N.Y. Mcmillan Publishing Co.
2. Michaells, John, Social Studies for Children in a Democracy, (1955), N.Y., Prentice Hall Inc.
3. Yeager, W.A., School Community Relation, (1951), N.Y., The Dryden Press.
4. Khan, R.S. : Teacher Education and Student's Perception. New Delhi : Ashish Publishing House, 1989
5. Nagar, Divya, अर्थशास्त्र शिक्षण, 1999, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन।
6. Curriculum 2005.

इकाई-13

अर्थशास्त्र शिक्षण में नवाचार

(Innovations in Economics Teaching)

इकाई की रूपरेखा (Outline of the Unit)

- 13.1 इकाई के उद्देश्य
- 13.2 नवाचार की दिशा
- 13.3 पाठ्य-पुस्तकों की बहुलता
- 13.3.1 एकाधिक पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता
- 13.3.2 एकाधिक पाठ्य-पुस्तकों की तैयार करने की विधि
- 13.4 प्रश्न बैंक का अर्थ
- 13.4.1 प्रश्न बैंक निर्माण
- 13.5 खुली पुस्तक परीक्षा
- 13.5.1 घर में ली जाने वाली खुली पुस्तक परीक्षा
- 13.5.2 कक्षा में ली जाने वाली खुली पुस्तक परीक्षा
- 13.5.3 छात्रों की तैयारी
- 13.5.4 खुली पुस्तक के साथ परीक्षा के प्रश्नों के उदाहरण
- 13.6 बहु प्रश्न-पत्र सेट तैयार करना
- 13.6.1 सीमाएँ
- 13.6.2 समाधान
- 13.6.3 बैठक व्यावस्था
- 13.7 सार-संक्षेप
- 13.8 इकाई का मूल्यांकन
- 13.9 सन्दर्भ पुस्तक

13.1 इकाई के उद्देश्य (Objectives of the Unit)

- 1. इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् शिक्षा में नवाचार की दिशा का ज्ञान होगा।
- 2. पाठ्य-पुस्तकों की बहुलता की आवश्यकता को अनुभूत करेंगे।
- 3. मूल्यांकन हेतु प्रश्न बैंक निर्माण को समझ सकेंगे।
- 4. खुली पुस्तक-परीक्षा की तकनीक ज्ञान सकेंगे।
- 5. 'बहु प्रश्न-पत्र' सेट 'परीक्षा प्रणाली' का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

13.2 नवाचार की दिशा (Trends of Innovations)

स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे देश में अत्यधिक प्रगति की है। इसमें शिक्षा की अहम् भूमिका रही है। अतः शिक्षा व्यवस्था की प्रभाविता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। किन्तु प्रगति के साथ समाज में विकसित होती विषमताएं प्रमाणित करती हैं कि शिक्षा व्यवस्था के नवसंस्करण की आवश्यकता है। केवल बौद्धिक विकास के प्रयास ने देश में एकांगी विकास

किया है कि कहीं हमने अपनी आत्मा को खो दिया है । यही कारण है कि सुव्यवस्थित लक्ष्य निर्धारित कर लेने के बाद भी ईच्छित विकास नहीं हो पा रहा । इसीलिए विद्वतजनों का ध्यान बुद्धिलब्धि (IQ) से ऊपर उठा है और चर्चा संवेग बुद्धि (EQ) एवं अध्यात्म बुद्धि (SQ) से जुड़ने लगी है । संवेदनाओं एवं आध्यात्मिकता के विकास के लिए शिक्षा व्यवस्था में निम्न परिवर्तन आवश्यक है

- जान को सूचना के स्थान पर व्यवहार के सन्दर्भ में देखा जाये ।
- समष्टि के स्थान पर समझ एवं व्यवहार का परीक्षण किया जाये ।
- शिक्षण को सार्थक (Meaningful) बनाया जाये ।

उक्त बातों में परिवर्तन के लिए पाठ्य-पुस्तक लेखन एवं मूल्यांकन पद्धति में अपेक्षित परिवर्तन के सम्बन्ध में यहां चर्चा की जा रही है । यही मूल विचार यह है कि शिक्षा में नई तकनीक के प्रयोग करने के स्थान पर शिक्षा से लक्ष्य प्राप्ति की दृष्टि से नवाचार की दिशा तय की जाये ।

13.3 पाठ्य-पुस्तकों की बहुलता (Multiplicity of books)

माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विषय के लिए एक ही पाठ्य-पुस्तक स्वीकृत करने की परम्परा में परिवर्तन की आवश्यकता है । राजस्थान प्रदेश की भौगोलिक स्थिति एवं पडौसी राज्यों के प्रभाव के परिणामस्वरूप अत्यधिक वैविध्य लिए हुए हैं । बागड़ प्रदेश का लेखक जैसलमेर-बाड़मेर की स्थितियों का अनुभव नहीं रखता । अरावली पर्वत श्रुंखला में बसे गांव व शहर गंगानगर से भिन्न हैं । परिणामस्वरूप खान-पान, वेश-भूषा, साधन, आर्थिक गतिविधियां, जलवायु सिंचाई, खनिज, यातायात के साधन आदि के सम्बन्ध में विभिन्न अनुभवजनित उदाहरणों से पाठ्य-पुस्तक की संरचना होने की आवश्यकता होगी । जिससे छात्रों को वास्तविक जान प्राप्त हो सके । इस प्रकार अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों को व्यवहारिकता से जोड़कर हम इसे सहज एवं सुगम्य बना सकते हैं ।

13.3.1 एकाधिक पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता (Need of multiple text books)

पाठ्य-पुस्तक के रूप में मात्र एक पुस्तक को स्वीकृति देने से लेखक का एकाधिकार हो जाता है । तथ्यों की सत्यता/शुद्धता, भाषा, प्रिण्ट, पुस्तक के कागज की गुणात्मकता, विषय-वस्तु से संबन्धित उदाहरण, चित्रात्मक प्रदर्शन आदि किसी भी प्रकार दे दिये जाते हैं । वर्तमान में पुस्तकों में दिये गये तथ्यों पर लम्बे समय से चलता विवाद इसका प्रमाण है । पुस्तकों में से इन से संबन्धित कमजोरियों को दूर करने के लिए स्वस्थ प्रतियोगिता करवाने की आवश्यकता है । दूसरी ओर क्षेत्र विशेष अथवा स्तर विशेष के अनुसार विभिन्न प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध होने पर विभिन्न समूहों/कक्षाओं/शालाओं द्वारा अपनी दृष्टि से उपयोगी एक पुस्तक अथवा एक से अधिक पुस्तकों का चयन कर शिक्षण में उपयोग किया जा सकेगा । छात्रों को भी विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को पढ़ने का लाभ प्राप्त होगा । विशेष रूप से उच्च माध्यमिक स्तर पर इस प्रणाली को विकसित किया जाना चाहिए । जिससे महाविद्यालय में पाठ्य-पुस्तक नहीं होने व विभिन्न सन्दर्भ पुस्तकों से अध्ययन करने की आदत विकसित करने हेतु प्रशिक्षण भी प्राप्त हो सके ।

13.3.2 एकाधिक पाठ्य-पुस्तकों तैयार करने की विधि (Method to prepare multiple text books)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCTE, 133) पर कहा है किपाठ्यचर्या में सार्थक ढंग से बच्चों और उनके विविध सांस्कृतिक सन्दर्भों को, भाषाओं समेत, शामिल किया जाये.....' ' इस मन्तव्य के लिए विभिन्न अनुभवोंयुक्त पुस्तकों का लेखन करना होगा । इसके लिए निम्न प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है-

1. कार्यगोष्ठी कर माध्यमिक स्तर तक की सीमा के आधार पर अर्थशास्त्र शिक्षण की विषय-वस्तु तय करना ।
2. तय की गई विषय-वस्तु को स्तर अनुसार विभाजित करना ।
3. प्रत्येक कक्षा के लिए तय किये गये विषय-वस्तु को प्रकरणों में विभाजित करना ।
4. प्रकरणों में विभाजित विषय-वस्तु का उसी कक्षा के विभिन्न विषयों से सह-सम्बन्ध देखना ।
5. विषय-वस्तु की सीमा तथा सह-सम्बन्ध को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्य-पुस्तक के लेखन हेतु लेखकों को आमन्त्रित करना ।
6. लेखकों को पाठ्य-पुस्तक लेखन के सम्बन्ध में विशेष अपेक्षाओं के सम्बन्ध में (विचार-विमर्श) बैठक आयोजित करना ।
7. तैयार पुस्तकों का विषय-विशेषज्ञों से मूल्यांकन करवाना ।
8. आकर्षक कृति के रूप में प्रकाशन करवाना ।

इस प्रकार विभिन्न कार्यशालाएं, बैठकें एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा ऐसी पुस्तकें तैयार हों जो स्मृति ज्ञान के साथ सांवेदिक एवं अध्यात्मिक बुद्धि का भी विकास करने में सक्षम हों तथा शिक्षण प्रक्रिया को सार्थक (Meaningful) बनाया जा सके ।

13.4 प्रश्न बैंक (Question Bank)

किसी भी वस्तु के अधिकांश को बैंक कहा जाता है । जब किसी विषय वस्तु/प्रकरण से सम्बन्धित अनेकानेक प्रश्न एकत्रित कर लिये जायें तो उसे उस विषयवस्तु/प्रकरण से सम्बन्धित प्रश्न बैंक कहा जायेगा । वर्तमान में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए संबन्धित विषय एवं प्रकरणों पर प्रश्न बैंक की पुस्तकें बाजार एवं इंटरनेट पर उपलब्ध होती हैं । उसके सहयोग से परीक्षार्थी अपने भरसक तैयारी कर के परीक्षा में सम्मिलित होता है । इसी प्रकार से शिक्षण व्यवस्था में विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विषयों में प्रश्न बैंक बनाये जा सकते हैं । प्रश्न बैंक में किसी प्रकरण एवं विषय से संबन्धित समस्त संभावित प्रश्न तथा विभिन्न रीति-नीति से पूछे जाने वाले प्रश्नों को सम्मिलित कर लिया जाता है ।

इससे छात्रों को निम्न लाभ होते हैं -

1. छात्र यह समझ पाते हैं कि किसी प्रकरण विशेष पर कितने व किस-किस प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं ।
2. विभिन्न प्रकार की भाषा शैली में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर क्या व कैसे दिये जा सकते हैं-पूर्व में ही समझ सकता है।

13.4.1 प्रश्न बैंक निर्माण (Preparation of Question Bank)

बैंक निर्माण के निम्न सोपान होंगे :-

1. एक प्रकरण के संभावित प्रश्नों के लिए सर्वप्रथम विषय-वस्तु का विश्लेषण करना होगा । इससे विभिन्न संज्ञानात्मक स्तर के बिन्दु कौशल तथा भावात्मक पक्ष के बिन्दुओं को

- अलग-अलग वर्गीकृत करना होगा । इसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म बिन्दुओं को सम्मिलित कर लिया जायेगा ।
2. दूसरे सोपान में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना करनी होगी जो पूर्व में वर्गीकृत उद्देश्यों की जाँच करते हों । जाँच करते हों ।
 3. एक उद्देश्य की जाँच के लिए जितने भी प्रकार के संभावित प्रश्न बन सकते हों बनाने चाहिए जिससे छात्र उस उद्देश्य पर पूछे जाने वाले समस्त शैलियों से परिचित हो सकें ।
 4. तत्पश्चात् इनको संज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक तार्किक क्रम में जमाना होगा ।
 5. अगले क्रम में प्रत्येक आयाम के लिए पूछे गये प्रश्नों को सरल से कठिन के क्रम में रखने होंगे ।
 6. इसमें नवीन संस्थितियों में ज्ञान के उपयोग की जाँच सम्बन्धी प्रश्नों को अन्त में रखना उपयोगी होगा ।

13.5 खुली पुस्तक परीक्षा (Open Book Examination)

खुली पुस्तक अथवा पुस्तक सहयोगी परीक्षा मूल्यांकन की वह विधि है जिसमें छात्र परीक्षा के प्रश्नों का हल करने में पाठ्य सामग्री का सहयोग ले सकते हैं । उन्हें परीक्षा भवन में निर्धारित सामग्री ले जाने की स्वीकृति होती है वे प्रश्नों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने के पश्चात् उत्तर देने हेतु प्रश्नों की प्राथमिकता तय करते हैं । तत्पश्चात् एक-एक प्रश्न का उत्तर देते हैं । प्रश्नों का उत्तर देते हुए वे उत्तरों को पुष्ट करने हेतु सहयोगी सामग्री का उपयोग करने के लिए स्वतन्त्र होते हैं । भारत में ऐसी परीक्षा व्यवस्था शिक्षक-शिक्षा में दैवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इन्दौर तथा भारतीय प्रबन्ध संस्थानों में है तथा सफलतापूर्वक संचालित की जा रही है ।

यह परीक्षा दो प्रकार की होती है -

1. घर में हल करने की स्वतन्त्रता
2. कक्षा में ही प्रश्नों का हल करना
 - अ. प्रश्न पूर्व में बता देना
 - ब. प्रश्न परीक्षा के समय ही बताना

खुली पुस्तक के साथ परीक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं -

1. विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिन्तन एवं वैज्ञानिक अभिवृद्धि विकसित करना ।
2. परीक्षा में स्मरण शक्ति की भूमिका को कम करना ।
3. विद्यार्थियों में नियमित रूप से अध्ययन करने की आदत पैदा करना ।
4. विद्यार्थियों में मूल्यांकन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने में सहायता करना ।
5. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना ।
6. मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना ।

13.5.1 घर में ली जाने वाली खुली पुस्तक परीक्षा (Open Examination at Home)

जब प्रश्नों को घर से हल करने के लिए छात्रों को दे दिये जाते हैं तो वह प्रथम प्रकार की परीक्षा होती है । छात्र इस प्रकार की परीक्षा के समाधान के लिए पाठ्य-सामग्री एवं स्रोत विद्वानों का सहयोग भी ले सकते हैं ।

विशेषताएँ :-

1. इसमें निर्धारित समय दिया जाता है।
2. प्रमुख रूप से इसमें प्रयोजनाए, शोध कार्य, पुस्तक समीक्षा, लेख समीक्षा अथवा निबन्ध आदि लिखने को दिये जाते हैं।
3. शिक्षक स्वयं इस कार्य को करने के लिए अनुदेशन स्रोतों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
4. समय-समय पर निर्देशन भी देते हैं।
5. इस परीक्षा के लिए केवल आन्तरिक अथवा आन्तरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार के मूल्यांकन की व्यवस्था होती है। हमारे यहां आन्तरिक मूल्यांकन के लिए बी.एड. एवं एम.एड. में ऐसी व्यवस्था देखने को मिलती है।

13.5.2 कक्षा में ली जाने वाली खुली पुस्तक परीक्षा (Open Examination in Classroom)

इसमें छात्रों को प्रश्नों का समाधान कक्षा में बैठ कर ही करना होता है। हाँ, किन प्रश्नों का समाधान किया जाना है- इससे छात्रों को पूर्व में भी अवगत करवाया जा सकता है तथा सामान्य परीक्षाओं की भाँति तत्काल भी करवाया जा सकता है। जब प्रश्न पूर्व में बताएं जायें तो प्रश्नों की रचना एवं परीक्षा/प्रशासन करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा :-

1. प्रश्नों की रचना ऐसी हो कि छात्र अर्जित ज्ञान का प्रयोग नयी स्थिति में करें। संबन्धित आधारित प्रश्न न हों।
2. प्रश्नों से विषयवस्तु के निहित तत्वों का विश्लेषण, संश्लेषण व परस्पर संबंधों की जाँच हो।
3. छात्रों को परीक्षा भवन में लायी जाने वाली सामग्री की सीमाओं के प्रति निर्देश देने होंगे।
4. प्रश्न पूर्व में बता दिये जाने पर केवल सन्दर्भ, सूत्र, तथ्य, सूक्षितयाँ आदि संक्षिप्त लिखित सामग्री ही परीक्षा भवन में लाई जा सकेगी। प्रश्नों के उत्तर विषय-वस्तु का संयोजन व अभिव्यक्ति का प्रयास परीक्षा भवन में ही करना होगा। सम्पूर्ण लिखी हुई सामग्री लाने की अनुमति नहीं हो सकती है। केवल सामग्री के संयोजन को सुपुष्ट करने के लिए सामग्री लाने की व्यवस्था दी जाती है।

यदि प्रश्न अन्य परीक्षाओं की भाँति परीक्षा भवन में ही बताएं जाने की योजना हो तो परीक्षा भवन में पुस्तकें तथा अन्य इच्छित पाठ्य-सामग्री, सन्दर्भ सूचनाएं, तथ्य आदि ले जाने की स्वतंत्रता होती है।

इस प्रकार की परीक्षा में भी केवल स्मृति आधारित प्रश्न नहीं पूछे जा सकते हैं। इसमें अवबोध, ज्ञानप्रयोग कौशल आदि की जाँच हो सकती हैं। जिससे छात्रों द्वारा अर्जित समझ/अवबोध द्वारा ज्ञान का उपयोग किये जाने की क्षमता की जाँच होती है।

13.5.3 छात्रों की तैयारी (Preparation of Students)

सामान्य तौर पर पुस्तक सहयोगी परीक्षा के नाम से छात्रों को यह तसल्ली रहती है कि परीक्षा में हमारे पास पर्याप्त सामग्री रहेगी अतः विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं है। किन्तु छात्रों को यह स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है कि इस परीक्षा पद्धति में भी आपको तैयारी तो करनी ही होगी। जब तक पाठ्य-सामग्री आपकी समझी हुई नहीं होगी-आप परीक्षा में उसका उपयोग नहीं कर सकेंगे। सीमित समय में ही प्रश्नों का उत्तर देना होता है। कहीं पुस्तकों एवं

अन्य सामग्री में उत्तर दूंडने में ही समय चला जाये एवं आप प्रश्नों के उत्तर दे ही न सके। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः परीक्षा हेतु पर्याप्त पूर्व अध्ययन/तैयारी अत्यधिक आवश्यक होती है। अतः छात्रों को निर्देशित करें कि-

1. इस परीक्षा में आपकी स्मशानता की परीक्षा नहीं होगी अतः विषय सामग्री को रटे नहीं।
2. इसमें विषय-वस्तु के सैद्धान्तिक जान का नई स्थितियों में उपयोग करना होगा। अतः आपने पाठों को पूरा समझे।
3. परीक्षा सीमित समय में समाप्त करनी होगी।
4. विषय-वस्तु के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को संक्षेप में लिख लें।
5. सीमित एवं चयनित सामग्री ही परीक्षा भवन में लाएं। बहुत सारी सामग्री वहाँ लाने पर समन्वयित हो जायेंगे व अव्यवस्थित उपयोग नहीं कर सकेंगे।
6. विषय-वस्तु पर स्वयं की टिप्पणी व उदाहरण तैयार रखें। इससे उत्तर देने में सहयोग रहेगा।
7. मोडल प्रश्नों का अनुमान लगाएं। किन्तु मोडल उत्तर तैयार न करें। अन्यथा वे नयी स्थितियों में जान के उपयोग देने के लिए चिन्तन करने में बाधक होंगे।
8. Open Book कहीं जाने वाली आपकी समस्त सामग्री तैयार रखें। परीक्षा में समय नष्ट न हो।
9. परीक्षा भवन में लायी जाने वाली समस्त सन्दर्भ सामग्री से आप भली-भांति परिचित हों, यह आवश्यक है।
10. सन्दर्भ विषयवार पृष्ठ संख्या एवं अनुक्रमणिका तैयार कर लें।
11. सम्प्रत्यय मानचित्र, संकेत चिन्ह, रंगीन चिन्ह, महत्वपूर्ण सारांश लिख कर तैयारी करें।
12. सहज प्रयोग के लिए तथ्य एवं सूत्रों की सूची रखें।
13. स्वीकृत सामग्री ही परीक्षा भवन में ले जायें।

13.5.4 खुली पुस्तक के साथ परीक्षा के प्रश्नों के उदाहरण (Exemplary Question)

1. भारत में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या इतनी गंभीर क्यों है, जबकि साक्षरता की दर इतनी कम है? व्याख्या कीजिए।
2. किसी नगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आवास अवस्थाओं का अध्ययन करने के लिये एक प्रश्नावली का निर्माण कीजिये।
3. 1950-51 से 1985-86 की अवधि में भारत के शुद्ध घरेलू उत्पाद में कृषि (प्राथमिक तथा विनिर्माण गौण) क्षेत्रों से संबन्धित भागों में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है, वर्णन कीजिये।
4. एकाधिकार में कोई विशिष्ट पूर्ति वक्र नहीं होती रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिये।

खुली पुस्तक के साथ परीक्षा विशेषकर उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिये उपयुक्त है। इसे मूल्यांकन की अन्य प्रविधियों के साथ प्रयोग किया जाना चाहिये। यह प्रणाली अभी संपरीक्षण स्तर (Experimental Stage) पर है। इस प्रकार की परीक्षा में सबसे कठिन कार्य अच्छे प्रश्नों का बनाना है।

13.6 बहु प्रश्न-पत्र सेट तैयार करना

माध्यमिक स्तर तक के समस्त विषय की परीक्षाओं में एक ही प्रश्न-पत्र निर्मित किया जाता है। इससे नकल करने की संभावना बनी रहती है। इस स्थिति से बचने के लिए उच्च

शिक्षा में प्रवेश परीक्षा, बैंक व शिक्षक क्षेत्र में रोजगार में नियुक्ति हेतु इसी प्रकार के प्रश्न-पत्रों के सेट निर्मित किये जाते हैं। इसमें निम्न विशेषताएं रहती हैं :

1. समय के अनुसार प्रश्नों की संख्या निर्धारित कर दी जाती है जिससे सभी सेटों में समान संख्या रखी जाये।
2. प्रश्नों के प्रकार निर्धारित कर समस्त सेटों में समानता रखी जाती है।
3. जाँचे जाने वाले ज्ञान के क्षेत्र व प्रत्येक क्षेत्र में पछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या समान रखी जाती है।
4. इसमें विशेष बैठक व्यवस्था रहती है।

13.6.1 सीमाएँ (Limitation)

एक ही प्रकार के, एक ही स्तर के, एक ही उद्देश्य की प्रतिपूर्ति करने वाले विभिन्न प्रश्न तैयार करना दुष्कर कार्य होता है।

13.6.2 समाधान (Solutions)

प्रश्नों का एक सेट तैयार करके प्रश्नों के क्रम में परिवर्तन कर दिये जाते हैं। जैसे कुछ सुझाव इस प्रकार है :

1. सम क्रमांक के प्रश्नों का विषम क्रम में कर दिया जाता है। जैसे प्रथम प्रश्न को दूसरे स्थान पर तथा दूसरे प्रश्न को प्रथम स्थान पर रख देना।
2. प्रत्येक भाग के प्रथम प्रश्न को उस भाग को अन्त में कर देने से भी प्रश्न के क्रमांक बदल जाते हैं।
3. सम क्रमांक के प्रश्नों को आपस में बदल लें। इसी प्रकार विषम क्रमांक के प्रश्नों -पत्रों आपस में बदल लें।

उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त भी कई प्रकार से प्रश्नों के क्रम में परिवर्तन करके विभिन्न प्रकार के सेट बनाये जा सकते हैं। सामान्यतया किसी परीक्षा में चार सेट बनाने का प्रचलन है।

13.6.3 बैठक अवस्था (Seating Arrangement)

1. प्रश्न पत्र क्रम से ही बांटे जाने हैं, निश्चित क्रम में अनुपस्थित छात्रों को आवंटित प्रश्न पत्र रूप (A,B,C & D) को किसी अन्य छात्र को नहीं दिया जाता। अनुपस्थित आवेदक के स्थान पर प्रश्न पत्र रख दिया जाता है तथा आधे घण्टे बाद पुनः उठा लिया जाता है जिससे क्रम में अव्यवस्था न हो।
2. प्रत्येक कमरे में जहाँ तक हो सके 30 परीक्षार्थियों की बैठक अवस्था निम्न चित्रानुसार की जा सकती है।

30 छात्रों के बैठने की व्यवस्था

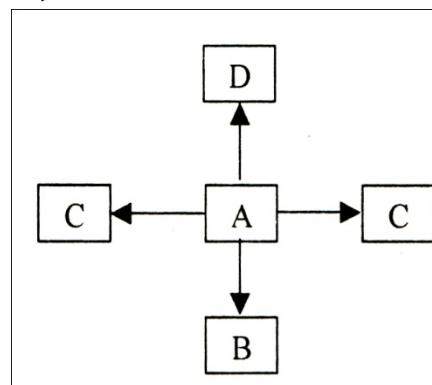
Seating Arrangement of 30 Students

| रोल नं एवं प्रश्न-पत्र का रूप |
|-------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|
| 101001 A | 101007 C | 101013 A | 101019 C | 101025 A |
| 101002 B | 101008 D | 101014 B | 101020 D | 101026 B |
| 101003 C | 101009 A | 101015 C | 101021 A | 101027 C |
| 101004 D | 101010 B | 101016 D | 101022 B | 101028 D |
| 101005 A | 101011 C | 101017 A | 101023 C | 101029 A |
| 101006 B | 101012 D | 101018 B | 101024 D | 101030 B |

Column : 5

Row : 6

इस व्यवस्था में अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है कि एक स्थान पर जिस वर्णमाला की सीरिज का छात्र बैठा हो उसके चारों ओर (आगे-पीछे-दायें-बाये) उसी सीरिज का छात्र नहीं बिठाया जाता है। इस व्यवस्था पर ही इस प्रणाली की सफलता निर्भर करती है । जैसे -



जैसा एक बड़े हॉल में 48 परीक्षार्थी परीक्षा दे रहे हैं जिसकी लम्बाई ज्यादा है तथा चौड़ाई कम । ऐसी स्थिति में पंक्तियों की संख्या क्षमतानुसार ही होगी । लेकिन एक कॉलम या पंक्ति में संख्या 10, 14, 22, 26, 30, 34, 42..... ही होगी । नीचे 48 परीक्षार्थियों के लिए चार कॉलम में परीक्षा करवानी है तो निम्न चित्रानुसार बैठक अवस्था होगी :-

A	C	A	C
B	D	B	D
C	A	C	A
D	B	D	B
A	C	A	C
B	D	B	D
C	A	C	A
D	B	D	B
A	C	A	C
B	D	B	D
C	A	C	A
D	B	D	B
A	C	A	C
B	D	B	D
C	A	C	A
D	B	D	B

कमरे की क्षमतानुसार पंक्तियों की संख्या तय करनी होगी लेकिन प्रत्येक पंक्ति में परीक्षार्थियों की संख्या 10, 14, 18, 22, 26, 30..... हो इसकी पालना अनिवार्य होती है।

13.7 सार-संक्षेप (Summary)

इस पाठ में नवाचार के रूप में वही दिया गया है तो माध्यमिक स्तर पर करना आवश्यक हो गया है। कक्षा में गुणात्मकता की वृद्धि हेतु विषय-वस्तु के सन्दर्भ में एकाधिक पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था व्यावहारिक रूप से अधिक उपयोगी होगी। इसी प्रकार छात्रों के रहने की प्रवृत्ति को रोकने एवं अच्छे अभ्यास की दृष्टि से प्रश्न बैंक का निर्माण कर उससे छात्रों को

परिचित करवाया जाये । छात्र अधिक से अधिक अभ्यास करें । खुली-पुस्तक परीक्षा एक ऐसा नवाचार होगा जिससे छात्रों में रहने की प्रवृत्ति कम होगी तथा समझ कर जान का उपयोग करने का अभ्यास करेंगे । इसी प्रकार के प्रयासों के कम में परीक्षा में बहु प्रश्न-पत्र सेट का प्रचलन भी उपयोगी होगा ।

13.8 सम्पूर्ण इकाई का मूल्यांकन (Evaluation of the Unit)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये :-

1. नवाचार की दिशा क्या हो?
What should be the director of Innovation?
 2. एक से अधिक पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता क्यों है ? हम इसे कैसे तैयार करवा सकते हैं?
Why do we need multiple Text-Books? How we can get it prepared?
 3. प्रश्न बैंक क्या होता है? इसे क्यों तैयार किया जाता है?
What is question bank? Why do we prepare it?
 4. खुली पुस्तक के साथ परीक्षा के प्रमुख उद्देश्यों की विवेचना कीजिये । इस प्रकार परीक्षा के प्रश्नों के कुछ उदाहरण दीजिये ।
Explain the objectives of open book examination system. Give some exemplary questions for this.
 5. बहु प्रश्न-पत्र सेट पर एक निबन्ध लिखें ।
Write an essay on multiple set of question papers.
-

13.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. Arora, P.N., Evaluation in Economics (Handbook), New Delhi : N.C.E.R.T., 1985
2. Arora, P.N. and Shorie, J.P. Open Book Examination Questions in Economics, New Delhi : N.C.E.R.T., 1986
3. Directorate of Extensive Programme for Secondary Education, The Concept of Evaluation in Education, New Delhi : Ministry of Education, 1960
4. Directorate of Extension Programme for Secondary Education, Evaluation in Social Studies, New Delhi : Ministry of Education, 1960
5. Lee, N. Teaching Economics, London : Heinemann Educational Books, 1975

6. N.C.E.R.T. Teaching units in Economics for High and Higher Secondary Stage, New Delhi : N.C.E.R.T., 1973 New Delhi
7. National Policy on Education, 1986 New Delhi : Govt. of India Ministry Human Resource Development, 1986
8. पुरोहित जगदीश नारायण, शिक्षण के लिये आयोजन जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972
9. रुहेला, सत्यपाल और खान, रियाज शाकिर सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण, कोटा खुला विश्वविद्यालय, बी.ई.10.
10. Srivastava, H.S. et.al Unit Test in Economics, New Delhi : N.C.E.R.T., 1976
11. The Curriculum for the Ten Year School a Framework New Delhi : N.C.E.R.T., 1975
12. Loright Stone J.W. et.al Evaluation in Modern Education New Delhi : Eurasia Publishing House (Pvt.) Ltd. 1964

